॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥

॥ ज्ञान भूषण ग्रन्थ. ॥



॥ पिठीका. ॥

॥ दुहो. ॥

प्रसिद्ध अवगाहना । आत्म स्वरूपास्ति
न भूषण ग्रन्थ एह । करुं शुरू प्रणति ॥१॥

भूषण एटले आभूषण के जे वडे आत्मा
मायमान छे. ज्ञानस्वरूप आत्मा अने जाण-
ारूप ज्ञान, ते रूप आभूषण पहेरवाथी शो-
पमान देखाय छे. ते ज्ञान केवुं छे तेनुं महा-
कहिये छिये.

वृक्षमां जेम कल्पवृक्ष, फळदायकमां जेम
ामधेनु, घटमां जेम कामघट, सर्व फळमां जेम
रत्नफळ, सर्व औषधोमां जेम पळंक (पुंख), सर्व
ालमां जेम दक्षिणावर्तशंख, रत्नमां जेम मणि-

ज्ञान कहेवाय छे तेनो खुलासो आगळ आवशे. अने स्वअनुयायिरुप ज्ञानथी संसार समुद्नो पार पामे, भवभ्रमण मटे. अनन्त सुखनो भोगी थाय. पण ते ज्ञान क्यारे मळे के सद्गुरुनो योग मळे ते विना तेवा ज्ञाननी प्राप्ति न थाय. कारण गुरु केवा छे के आ संसारने विशे मुक्तिना दातार. संसारथी छोडावनार राग द्वेष मोहथी छोडावनार, जन्मजरा मरणनां दुःखथी छोडावनार, प्रत्यक्ष देव रुप साक्षात सूर्य सरिखा ज्ञान गुणे भरेला, निज परना जाण एवा जे गुरु दातार छे. ते गुरुने सेवो. जो पोताना आत्मानुं हित वांछो तो एवा सद्गुरुनी सेवा करो, पण भेख देखीने ठगा ना पडो. बहुश्रुत विना बीजाने सद्गुरु जाणवा नहीं. जे एवा सद्गुरु छे, ते पोते तरे छे अने बीजाने तारे छे, ते गुरु शुं शुं उपकार करे? ते कहे छे, माठी बुद्धि तेनो नाश करे. अने भली बुद्धिनी प्राप्ति करे.कुगति जे नरक, तिर्यंचादि गतिमां पडताने हाथ झाली पाछो लावीने स्वर्गादि गतिने विशे मोकले, पाप पुण्यनी ओळखाण करावे, करवा योग्य अने नहि करवा योग्य

रत्न, विहंगमां जेम गरुड, मनवंछीतमां जेम चिन्तामणिरत्न, मन्त्रमां जेम नवकारमंत्र, पर्वतमां जेम मेरु पर्वत, पर्वमां जेम पर्युषणपर्व, नदीमां जेम सीता सीतोदा, वर्षधरमां जेम निषध, नील समुद्रमां जेम क्षीर समुद्र, सुखमां जेम संतोष, सतिमां जेम ब्राह्मिसुंदरी, धैर्यवानमां जेम आदित जशा, देवमां जेम अरिहन्त, साधुमां जेम निर्ग्रंथ, पर्मपदमां जेम मुक्ति, तीर्थमां जेम शत्रुंजय, पुण्यमां जेम पुण्यानुबन्धी पुण्य, शास्त्रमां जेम उत्तम सूत्र, ध्यानमां जेम धर्मध्यान, शुक्लध्यान, ग्रहमां जेम चन्द्र, गजमां जेम ऐरावत, चोपदमां जेम सिंह, तेजमां जेम दिनकर, फूलमां जेम पुंडरीक कमल, मेघमां जेम पुष्करावर्त मेघ, देवमां जेम इन्द्र, तेम सर्वज्ञानमां द्रव्यानुयोग, स्वअनुभव (अध्यात्म) स्वरुपनुं रमण करवुं, स्वघरमां रहे तेवो जगत्रयमां बीजो पदार्थ देखातो नथी. कारण के अनेक शास्त्रनुं ज्ञान छे ते परानुयायि होवाथी भवभ्रमण वधे अने संसार छुटे नहीं, अने मुक्ति वेगळी रहे माटे तेने ज्ञान कहेवा नथी. परानुयायि रुप जाणपणाने पण

ज्ञान कहेवाय छे तेनो खुलासो आगळ आवशे. अने स्वअनुयायिरुप ज्ञानथी संसार समुद्नो पार पामे, भवभ्रमण मटे, अनन्त सुखनो भोगी थाय. पण तेवुं ज्ञान क्यारे मळे के सद्गुरुनो योग मळे ते विना तेवा ज्ञाननी प्राप्ति न थाय, कारण गुरु केवा छे के आ संसारने विशे मुक्तिना दातार, संसारथी छोडावनार राग द्वेष मोहथी छोडावनार, जन्मजरा मरणनां दुःखथी छोडावनार, प्रत्यक्ष देव रुप साक्षात सूर्य सरिखा ज्ञान गुणे भरेला, निज परना जाण एवा जे गुरु दातार छे, ते गुरुने सेवो, जो पोताना आत्मानुं हित वाछंतो तो एवा सद्गुरुनी सेवा करो, पण भेख देखीने छळा ना पमो. बहुश्रुत विना बीजाने सद्गुरु जाणवा नहीं. जे एवा सद्गुरु छे, ते पोते तरे छे अने बीजाने तारे छे, ते गुरु शुं शुं उपकार करे ? ते कहे छे, माठी बुद्धि तेनो नाश करे. अने भली बुद्धिनी प्राप्ति करे,कुगति जे नरक, तिर्यचादि गतिमां पडनाने हाथ झाली पाछा वाळीने स्वर्गादि गतिने विशे मोकले, पाप पुण्यनी ओळखाण करावे. करवा योग्य अने नहि करवा योग्य

पदार्थ ते बन्नेनुं स्वरुप सद्गुरु बतावे, (जदावा) खावा योग्य अथवा नहि खावा योग्य, अथवा पीवा योग्य अथवा न पीवा योग्य, धर्म अथवा अधर्म, इत्यादि पदार्थना जणावनारा सद्गुरु छे, ते आ भवरुपी समुद्रने विशे जहाज समान जाणवा, वळी सद्गुरु केवा छे के संसारमां माता, पिता, भ्राता, भगिनी, पुत्र, कलत्र, स्वजन, सबन्धी चतुरङ्गी सैन्य, राजपाट, इत्यादि ए सर्वे छे ते नर्कनां कुतुहल छे अर्थात् ते नर्के लइ जवानां हेतु छे, पण आपणने कोइ नर्के लइ जतां राखे तेवां नथी, एक सद्गुरु प्रकट धर्म अधर्म देखाडी अधर्मने छोडावी धर्म मार्गे प्रवर्तावी मोक्ष नगरे पहोंचाडे, ते विना कोइ आ संसारने विशे देखातो नथी, वळी गुरु केवा छे के सर्वे ध्याननुं ध्यान तेज गुरु छे, एटले ध्यान कर्ये ते शुं थाय, तेथी पण गुरु अधिक छे तथा विषय त्याग करवाथी पण शुं थाय, ए सर्वेथी एक गुरु सेवा करे तेने अधिक फळ थाय, माटे पूर्ण भाव राखी एक सद्गुरुनी सेवा करवी, इन्द्रियो जीते तो पण लेखामां नथी, ए सर्वेनी प्राप्ति एक सद्गुरुनी

सेवाथी छे, सर्व भवनो नाश कर्ता गुरु छे, अ
शासनने विशे वाकेफ करनार पण गुरु छे. अने
गुरुनो विनय करवाथी आत्मा स्वेत (उज्वल)
थाय, अने सर्व अर्थनी सिद्धि थाय. माटे हे भव्य
जीवो ! सद्गुरुने सेवो अने कुगुरुनो पक्ष तजो
श्री भगवतीजी, उपासक दशाङ्ग प्रमुख सिद्धान्त
मां कुगुरु कह्या छे तेनी लक्षण आचाराङ्ग
प्रमुख सिद्धान्तने विशे खुलासो छे, तथा आव
श्यक निर्युक्ति, आवश्यकनी बृहद्वृत्तीमां छे मा
कुगुरुनो पक्ष तजवो, अने सुगुरुनी सेवा करवी
सुगुरुथी ज्ञान स्वरुप पामशो. ॥ उक्तंचः)

॥ वंशस्थवृत्तम्. ॥

अवद्यमुक्ते पथि यः प्रवर्त्तते ।
प्रवर्तयत्यन्यजनंच निस्पृहः ॥
स एव सेव्यः स्वहितैषिणा गुरुः ।
स्वयं तरस्तारयितुं क्षमः परम् ॥ १ ॥

॥ मालिनी वृत्तम्. ॥

विदलयति कुबोधं बोधयत्यागमार्थं,
सुगतिकुगतिमार्गौ पुण्यपापे व्यनक्ति ॥

अवगमयति कृत्याकृत्यभेदं गुरुर्यो,
भवजलनिधिपोतस्तं विना नास्ति कश्चित्॥

॥ शिखरिणी वृत्तम्. ॥

पिता माता भ्राता प्रियसहचरी सूनुनिवहः,
सुहृत्स्वामी माद्यत्करिभटरथाश्वः परिकरः ॥
निमज्जंतं जंतुं नरककुहरे रक्षितुमलं,
गुरोधर्माऽधर्म्मप्रकटनपरात्कोऽपि न परः ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्. ॥

किंध्यानेनभवत्वशेषविषयत्यागैस्तपोभिःकृतं,
पूर्णंभावनयाऽलमिंद्रियदमैःपर्याप्तमाप्तागमैः
किंत्वेकंभवनाशनंकुरुगुरुप्रीत्यागुरोःशासनं,
सर्वंयेनविनाविनाथबलवत्स्वार्थायनाऽलंगुणा
॥ ४ ॥



॥ अथ श्री ज्ञान भूषण. ॥



॥ग्रन्थ प्रारम्यतेः॥

ज्ञानज भणीए ज्ञानज सुणीए,
ज्ञानमां काल ते काढोरे ॥
ते विना काल ते फोकट दाख्यो,
भव जंजाल ते वाधो रे, ज्ञान पद सेवो रे॥
ज्ञान विना तरे नहीं कोय, ज्ञान गुण मेवो रे.॥१॥
(ए आंकणी).

हे ! भव्यजीवो ज्ञान कहेतां जे आत्मस्वरूपनुं जाणपणुं ते निश्चयज्ञान छे. अने बीजुं रह्युं ते व्यवहार ज्ञान कहेवाय. अध्यात्म ज्ञान तथा डव्यानुयोग (षट्डव्यनो विचार) ते व्यवहारज्ञानः अने (अने अध्यात्म) आत्मस्वरूपनो विचार अभेदपणे ते निश्चयज्ञान. ते ज्ञानने भणवुं. ते ज्ञाननो एक अक्षर भणे तो अनन्त कर्मनी राशि निर्जरे अथवा कोइने

जणावे तोपण अनन्त कर्म राशिनी निर्जरा कं
माटे ज्ञाननुं जणवुं ते आत्माने मुक्तिनो दात
छे, तथा ज्ञाननुं सुणवुं तेथी पण अनन्त क
निर्जरे; माटे ज्ञानने जणवुं तथा ज्ञानने सुणवु
कारण के अज्ञान माणस एक क्रोड़ उपवास कर
ने जेटलां कर्म नार्कीनां निर्जरे, तेटलां कर्म ज्ञा
एक स्वास नीचो लइने उंचो मुके तेटला
नीर्जरे, एवुं श्री वीर परमात्माए विवाह
न्नत्ति (विवाह प्रज्ञप्ति) मां कह्युं छे, तेट
(अहोनिश) दिवस तथा रात्रिनो काल ज्ञ
ननी रमणतामां कहाड्वो, पण ज्ञान विना जे
टलुं बीजुं कार्य करवुं ते सर्वे प्रमादभावमां
तेथी ज्ञान विना फोगट काल खोवो नहीं, क
रण के आर्य क्षेत्र, मनुषनो भव, पांच इन्द्रि स
पूर्ण, निरोगी शरीर, श्री जिनराजनो धर्म, सद्
रुनो उपदेश, एवी जोगवाइ फरीफरीने मले नहीं
अने शुभाशुभ कारण कार्य तो अनन्तवार कर्यां
अने सुख दुःख आ जीवे अनन्तवार भोगव्युं
अने व्यवहार चारित्र, व्रत, पचखाण, तप, जप
आ जीवे अनन्तवार कर्यां कारण के चारे गति
मां जीव अनन्तवार उपजी चुक्यो.

" अनंत खुत्तो जीवाणं. "

एवो पाठ सिद्धान्तमां पण छे, तो कांई आत्मानुं कार्य थयुं नहीं. माटे ज्ञानमां ज काल काढवो पण फोकट काल खोवो नहीं, केमके शुभाशुभ करणीथी संसार वधे पण कंई संसार घटे नहीं. माटे गत्यागति वधवाथी आत्मानुं अहित थाय छे, तेथी शुभाशुभनो पक्ष छोडीने एक ज्ञान पदनो अङ्गिकार करो. हवे "ज्ञान विना तरे नहीं कोई" एटले क्रिया, जप, तप, अनेक विध बाह्यनां कारण छे, पण तेथी मुक्ति थाय नहि अने आज दिन सुधी एकत्वथी कोई जीव मोक्षे गयो नथी अने जतो पण नथी अने जशे नहि. माटे ज्ञान विना कोई जीव तरे नहीं, कारण के मुक्तिनां द्रव्यलीङ्ग पन्दर कह्यां छे, परन्तु भावलीङ्ग विचारीने जोइए तो एकज देखाय छे, कारण के साधु, गृहस्थ तथा अन्यमती ज्ञानस्वरुपना विशे स्थिर भाव थाय, त्यारे राग द्वेषनो नाश थाय, अने मोहनो नाश थाय त्यारे वितराग पद पामे

छे, त्यारपछी अभेद ज्ञान थाय छे,त्यारे अरिहन्त पद पामे छे, अने सर्व योगनो रोध करे अने मननी चराचर सर्व मटे अने शैलेषि करण थाय त्यारे सिद्ध पद पामे, माटे ज्यां सुधी मन वचन, कायानो व्यापार छूटो छे अने मननी चराचर मटी नथी, त्यां सुधी तेने अने मुक्तिने छेटुं अनन्त योजननुं छे, ए अधिकार श्री भगवतीजीथी जाणवो, ते कारण माटे ज्ञान रुप मेवो एटले पद, प्रमाण, सप्तभङ्गि, चउभङ्गि, नयनिक्षेप, षट्कारक, इत्यादि करीने आत्म स्वरुपनुं विचारवुं ए रुप मेवानो स्वाद क्रोडपूर्वना आयुष्ये देशे जणा केवली होय ते पण कही शके नहीं, तो छद्मस्थनो तो शो भार जे कही शके पण जे एनो आनन्द जे हृदयमां प्रगट थाय ते अनुभवनो रस तो छद्मस्थ रूपी रीते जाणे, कारण के ते कहेवानुं सामर्थ्य नथी पण जाणवानुं तेनामां सामर्थ्य छे, जेम घृतनो स्वाद कहेवानुं कोइनामां सामर्थ्य नथी पण जाणवानुं सामर्थ्य छे तेम अहीं अनुभवी ए आनन्दनो रस जाणे छे पण बीजा बाह्यदृष्टिवाळा जाणता नथी, कारण

के तेने बाह्यद्रष्टि छे. आत्म स्वरुपनी खबर नथी. जेम बावना चन्दन छे ते खर उपर भरिये तो तेने कांई तेना गुणनी माह्युम पडे नहि, एतो जे भाग्यवान माणस छे तेने गुणनी खबर पडे छे, तेम बाह्यद्रष्टि अनेक शास्त्र भणे छे, वांचे छे, पण तेने कंई तेना रसना स्वादनी खबर नथी फोकट ते बिचारा काय कष्ट करे छे, अहीं कोई एम कहेशे के तमे महा कठोर वचन बोलो छो. तेनो उत्तर के अमे कंइ कठण वचन बोलता नथी, पण पूर्वाचार्य, ग्रन्थोमां एवुं कही गया छे. उक्तंच.

॥ अनुष्टुप्वृत्तम्. ॥

वेदान्तशास्त्रवित्क्लेशम्, रसमध्यात्म शास्त्रवित्,
भाग्य भृद्भोगमाप्नोतिः वहते चन्दनं खरम् ॥१॥

ते कारण माटे ज्ञान रुप जे मेवो महापुष्टिनो करनार छे, जेम संसारना विशे शरदऋतु प्रमुखना मेवाथी शरीरनी पुष्टि घणी थाय छे, तेम अहीं पूर्वे कह्यो तेवा ज्ञान रुप मेवाथी आत्माने पुष्टि थाय. कारण के संसारना रस

करतां अध्यात्म रस घणो सुन्दर छे. उक्तंच.

॥ अनुष्टपवृत्तम् ॥ *

अध्यात्म शास्त्र हेमाद्रि, मथितादागमोदधे ॥
भूयांसी गुण रत्नानि, प्राप्यन्ते बुद्धे न किं॥१॥

रसो भोगावधि काम, सद्भक्ष्ये भोजनावधि ॥
अध्यातम शास्त्र सेवाय, रसो निरवधि पुनः॥१॥

अथवा विषय प्रमुख संसारना रस छे ते तुच्छ रस छे, पण अध्यात्म रस महा आनन्दकारी छे, ए रसना तोले बीजो रस कशा लेखामां नथी, ईन्द्र, चन्द्र, नागेन्द्र, चक्रवर्ति प्रमुखना इन्द्रिय जनित सुखनो जे रस ते तुच्छ छे, अने आ ज्ञान रस ते महा अमृत रस छे, ए रस पाम्या ते फरीथी पम्या नहि अने आ रस आव्यो फरीथी जाय नहि. एटले बीजा जे सुख रस छे ते विनाशिक छे, अने आ रस छे ते अविनाशिक छे.

शिष्य वाक्य,—

स्वामिन् अध्यात्म रस ते शाने कहो छो?

गुरु वाक्य,—

हे महानुभाव! जे पुरुषनो मोह तथा राग, द्वेष मन्द पड्या होय, अने क्रोधादि त्रण चोकडी गइ होय, अने शुद्ध क्रिया अङ्गिकार करी छे, शुभाशुभ क्रियाने जाणे छे, सदा अन्तर आत्मामां शुभ ज्ञाननी रमणता छे, परभावनो त्यागी छे कृतिम् वस्तु उपर राग नथी, पुण्य-पाप जेने सम भासन् थयुं छे. सदा शुद्ध आत्म-स्वरुपनो उपयोग बे प्रकारे, साकार अने निरा-कारथी षट् द्रव्यनुं स्वरुप जाणे, ते मध्ये पांच द्रव्यना स्वरुपने अजीव जाणीने छांडे अने एक आत्मस्वरुपने ज्ञान रुप चेतना जाणीने आदरे एम हेय, ज्ञेय उपादेयनी रीत जाणे, अने छां-डवा योग्य छांडे, अने जाणवा योग्य जाणे, अने आदरवा योग्य आदरे, एम आत्म स्वरुपमां अन्तर भावे रमे, ते शुद्ध क्रिया कहिये अथवा अध्यात्म कहियें. ॥ उक्तंच. ॥

अनुष्टुपवृत्तम्. *

गतमोहाधिकाराणा, मात्मानमधीकृत्ययाः ॥

प्रवर्त्ततेक्रियाशुद्धा, तदध्यात्मजगूर्जिनाः॥१॥

माटे एवो जे ज्ञान रुप मेवो महा पुष्ट छे, अने महा बलवान छे; माटे हे भव्यजीवो ! प्रमादभावने छांमीने ज्ञान रुप मेवो भक्षवाने अभ्यास करो, अहीं घणा शास्त्रमां एज रीते कहेल छे, पण बधां शास्त्रनी शाक्ति अपाय नहि तेथी अल्प श्लोक मुकेला छे, पण विचारीने जोशो तो सर्व शास्त्रमां एज वस्तु सिद्ध छे, माटे सद्गुरु मुखे शास्त्र समजीने ए अर्थ विचारशो तो तमने (समजाशे) घणो फायदो थशे.

गाथा ॥ २ ॥

स्वधर्मग्राहिनिश्चेभाख्यो, परधर्मग्राहीव्यवहारो रे॥
तेकारणज्ञानमांरमिये, शुद्धनिश्चेनयधारो रे ॥
ज्ञान० ज्ञान विना० ॥२॥

अर्थः—विशेषावश्यक ग्रन्थमां निश्चय तथा व्यवहार नयनुं स्वरुप कह्युं छे तेमां तत्वार्थग्राही निश्चय नय छे, अने लोकाभिमतार्थग्राही व्यवहार नय छे, अने तत्वार्थ युक्ति ते निश्चयसिद्ध

॥ गुणस्य पर्याये एवांतरद्भूतत
पर्यायार्थिके नैव तत् संग्रहात् ॥

जे गुण ते पर्यायने विशे अन्तर
पर्यायार्थिक मध्ये संग्रह्यो छे. ते पयार्य
एक सहभावी अने बीजो कर्म भावी, ते
भावी ते गुण छे. ते पर्यायने विशे अन्त
त्यां द्रव्य पर्यायथी व्यतिरक्त सामान्य
शेष एम बे धर्म छे, माटे सामान्य अने वि
नयवत्ता केम कहेता नथी एम पुछे तेनो

॥द्रव्य पर्यायन्यां व्यतिरिक्तयोः स
विशेषयोरप्रसिद्धेः तथाहि द्विप्रकारं सामान
मूर्ध्वता सामान्यं तिर्यग्सामान्यंच तत्रोर्ध्व
न्यं द्रव्यमेव तिर्यग्सामान्यं तु प्रतिव्यक्ति स
परिणाम लक्षणं व्यंजन पर्याय एव ॥

ए पाठथी ऊर्ध्व सामान्य ते द्रव्यनो
छे, अने तिर्यक् सामान्य ते पर्याय धर्म छे.

॥ विशेषोपि वैसादृश्य विवर्तलक्षणं पय
एवांतर्भवति नैताभ्यामधिकः नयावकाशः ॥

विशेषपणे अनेक रीते वर्तवानो लक्षण छे ते पर्यायने विशे अंतर्भाव छे ते माटे भिन्न नयनो अवकाश नथी ए बे नय मध्येज अंतर्भाव छे ते द्रव्यार्थिकना चार भेद. नैगम १, संग्रह २, व्यवहार ३, रुजुसुत्र. ४, तथा शब्द (१) समभिरुढ (२) अने एवम्भुत (३) ए त्रण भेद पर्यायार्थिक नयना छे, विकल्पान्तरे रुजुसूत्रने पर्यायार्थिकमां पण कह्यो छे.

नैगम नय.

॥न एक गमा आशय विशेषा यस्य स नैगमः॥

नथी एक गमो अभिप्राय जेनो ते नैगम नय. एटले तेना अनेक आशय छे.

तथाचः—

॥ अनेके गमाः संकल्पारोपांशाश्रयाद्या यत्र स नैगमः ॥

ज्यां अनेक नामादि गमा अहवाय तथा संकल्पे, आरोपे अने अंशे पण वस्तुने माने ते नैगम नय. तेना त्रण भेद आरोप, अंश, अने

संकल्प वळी विशेषावश्यकने विशे उपचा
जुदो गणवाथी चार भेद कह्या छे तेमां आ
पना चार भेद, द्रव्यारोप. (१) गुणारोप. (२
काळारोप. (३) कारणाद्यारोप. (४).

॥पंचास्तिकाय वर्तनागुणस्य काळस्य द्रव्य
कथनं एतद्गुणे द्रव्यारोपः ॥

गुणादिकने विशे द्रव्यारोप-जेम वर्त्तमान
पर्याय ते पंचास्तिकायने विशे परिणमन धर्म छे,
तेने काळद्रव्य कहेवो. एटले " काळ " कहीने
बोलाववो ते भिन्न पिंडरूप द्रव्य नथी तो पण
द्रव्य कह्यो ते द्रव्यनो आरोप कर्यो.

॥ज्ञानमेवात्माः अत्र द्रव्ये गुणारोपः ॥२॥

द्रव्यने विशे गुणनो आरोप करवो ते गु-
णारोप, जेम ज्ञान गुण छे पण ज्ञान तेज आ-
त्मा एम ज्ञानने " आत्मा " कहेवो इत्यादिमां
गुणनो आरोप कर्यो.

" वर्त्तमान काळे अतीत काळारोपः "

" वर्तमान काळे अनागतकाळारोपः "

" एवं अतीतानागतेपि ज्ञेयं "

कालारोप एटले कालनो आरोप करवो ते जेम श्री महावीरस्वामीनुं निर्वाण थये घणे काल थयो, पण आज लोक दीवालीने दीने निर्वाण कहे छे ते अतीत कालनो वर्त्तमान काले आरोप कर्यो. वली आज श्री पद्मनाभ प्रभुनुं निर्वाण छे. आ वाक्यमां वर्तमानने विशे अनागत कालनो आरोपण छे, एम वर्तमानना बे भेद थया, तेवीज रीते अतीतना बे भेद तथा अनागतना बे भेद ए सर्व मलीने छ भेद थया.

" कारणे कार्याद्यारोपः "

कारणने विशे कार्यनो आरोप करवो ते कारणाद्यारोप. बाह्य द्रव्य क्रिया ते साध्य साधननी अपेक्षावालाने धर्मनुं निमित्त कारण छे तो पण ते " धर्म " करणी कहेवाय छे ते कारणाद्यारोप.

श्री तीर्थंकर मोक्षनुं कारण छे. छतां " तारयाणं " एटले तारक कह्या. आ बन्ने दृष्टान्तमां कारणने विशेज कर्त्तापणानो (कार्यपणानो)

आरोप छे. ते कारणना च्यार भेद तेनां नाम.– उपादान कारण, निमित्त कारण, असाधारण कारण,अने अपेक्षा कारण एम आरोपना अनेक प्रकार छे.

॥ अंशोपि द्विविधः भिन्नाभिन्नश्चेत्यादि ॥

अंशना पण बे भेद छे, एक भिन्न, ते जुदो अंश स्कंधादिकनो, बीजो अभिन्नांश ते आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविभाग ते.

॥ संकल्पो द्विविधः स्वपरिणाम रूपः कार्यान्तर परिणाम रूपश्च ॥

संकल्प नैगमना बे भेद, एक स्वपरिणाम रूप जे वीर्य चेतनानो नवो नवो क्षयोपशम ते अने कार्यान्तरे नवे नवे कार्ये नवो नवो उपयोग थाय ते. एम बे भेद थया. ईत्यादि नैगम नयना भेद जाणवा.

संग्रह नय.

॥ सामान्य वस्तु सत्ता संग्राहक संग्रहः ॥

(सामान्ये) मूलसर्व द्रव्य व्यापक नित्य-

त्वादि सत्तापणे रहेला धर्म तेनो जे संग्रह करे ते संग्रह नय,

तथाचः—

॥ संग्रह्णाति वस्तुसत्तात्मकं सामान्य स संग्रह. ॥

जे सर्वने संग्रहे, सर्वनुं ग्रहण करे, वस्तुनी छतीने सामान्यपणे ग्रहे ते संग्रह तेना बे भेद सामान्य संग्रह १॥ विशेप संग्रह २॥ त्यां सामान्य संग्रहना बे भेद, मूल सामान्य १॥ उत्तर सामान्य २॥ मूल सामान्यना अस्तित्वादि छ भेद छे, तेनां नाम. अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, सतत्व -अगुरु लघुत्व, तथा उत्तर सामान्यना बे भेद एक जाती सामान्य १ ॥ बीजो समुदाय सामान्य २॥ गायना समुहमां गोत्वरूप जाति छे तथा घटना समुहमां घटत्वपणुं, अने वनस्पतिने विशे वनस्पतिपणु ते जाति सामान्य, अने आंबाना समुहने "अंबवन" कहेवुं तथा मनुष्यना समुहने "मनुष्य" कहेवुं ते समुदाय सामान्य. मूल सामान्य ते अवधिदर्शन तथा केवल दर्शनथी ग्रहवाय छे. (ग्राह्य छे) अने उत्तर सामान्य

चक्षु दर्शन अने अचक्षु दर्शनथी ग्रहवाय छे. वळी संग्रह नयना बे भेद, एक सामान्य संग्रह, अने बीजो विशेष संग्रह. त्यां छ द्रव्यना समुदायने द्रव्य कहेवुं ते सामान्य संग्रह कारण के अहीं एक वचने सर्वनो ग्रहण थाय तथा जीवने "जीवद्रव्य" कही अजीव द्रव्यथी जूदो भेद पाडवो ते विशेष संग्रह वळी विशेषावश्यक ग्रन्थने विशे संग्रहनयना चार भेद कह्या छे (संग्रहणं) एटले एकठो एक वचनमां एक अध्यवशाय उपयोगमां समकाळे ग्रहण थाय, सामान्य रूपपणे सर्व वस्तुनो आक्रोडण ग्रहण करवो ते संग्रह अथवा सामान्य रूपपणे सर्व संग्रह करे ते संग्रह अथवा जेथी सर्व भेद सामान्यपणे ग्रहीये ते संग्रह तेना च्यार भेद कहे छे,-(१) संग्रहित संग्रह. (२) पिंडित संग्रह. (३) अनुगम संग्रह. (४) व्यतिरेक संग्रह.

१. सामान्यपणे व्हेंचण विना ग्रहण थाय एवो उपयोग अथवा वचन अथवा धर्म कोई पण वस्तुने विषे होय तेने संग्रहीत संग्रह कहिये.

२. एक जाति माटे एकपणो मानिने एक वचने सर्वनो ग्रहण थाय जेम "एगे आया एगे पुग्गले" इत्यादि वस्तु अनन्ति छे पण जाति एक माटे ग्रहवाय छे तेने पिंमित संग्रह कहिये.

३. जे अनेक जीवरूप अनेक व्यक्ति छे ते सर्वमां पामिये, जेम "सतचितमयो आत्मा" एटले सर्व जीव, सर्व प्रदेश, सर्व गुण ते जीवनां लक्षण छे तेने अनुगम संग्रह कहिये.

४. जेनी ना कहेवे तेथी ईतरनो सर्व संग्रहपणे ज्ञान थाय ते जेम अजीव छे तेवारे जे जीव नहि ते अजीव एटले कोईक जीव छे एम व्यतिरेक वचने ठेर्यो तथा उपयोगे जीवनो ग्रहण थाय छे तेने व्यतिरेक संग्रह कहिये, वली संग्रह नयना बे भेद कहे छे. (१) महा सत्तारूप. (२) अवांतर सत्तारूप.

॥ गाथा. ॥

सवतिन्नणिएणज, म्हासवन्नाणुप्पवत्तएवुद्धि ॥
तोसबंसत्तमत्तं, नछीतदंतरंकिंचि ॥ १ ॥

यद्यस्मान सदित्येवं, प्रणिते सर्व त्रिभु
त्रयान्तर्गत वस्तुनि बुद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावति
हितत् ॥ किमपि वस्तु अस्ति यत् सदित्यु
जगति बुद्धो न प्रतिभासते तस्मात् सर्व सत्
मात्रं न पुनः अर्थान्तरं तत् श्रुत सामर्थ्यात् य
संग्रहेन संग्रह्यते तेन परिणमन रूपत्वादेव संग्र
हस्येति ॥

एटले त्रण भुवनमां एवी वस्तु कांइ नथी
जे संग्रह नयना ग्रहणमां आवे नहीं, एटले जे
वस्तु छे ते सर्वे संग्रह नयना ग्रहणमां आवे छे.

हवे व्यवहार नय.

संग्रह ग्रहित वस्तु भेदान्तरेण,
विभजनं व्यवहरणं प्रवर्त्तनं वा व्यवहार ॥१॥

संग्रह नय गृहित जे वस्तु छे, तेने भेद
भेदान्तरे (विभजनं) व्हेंचवुं, ते व्यवहार अ-
र्थात् द्रव्य सामान्यपणे कह्यो तेनी व्हेंचण क-
रवी ते व्यवहार नय. द्रव्यना बे भेद. जीव द्र-
व्य, अजीव द्रव्य. जीवना बे भेद. सिद्ध, संसारी.
सिद्धना बे भेद. अनन्तर सिद्ध, परंपर सिद्ध.

इत्यादि. हवे संसारीना बे भेद. अयोगी, स
गी. अयोगी ते चौदमा गुणस्थानना. बाकी
योगी तेना बे भेद. सयोगी केवली, सयोगी
झस्थ. सयोगी केवली तेरमा गुणस्थानना, ब
छद्मस्थ तेना बे भेद. अमोही, समोही. अमोह
जेनुं मोहनीय कर्म क्षय थयुं ते बारमा गुण
नना, बाकी समोही तेना बे भेद. उपश
मोही, उदीत मोही, उपशान्त मोही ते अ
ग्यारमा गुणस्थानना, बाकी उदीत मोही
बे भेद. एक सुक्ष्म कषायि, बीजा बादर कष
सुक्ष्म कषायि ते दशमा गुणस्थानना, बाकी
दर कषायि तेना बे भेद. एक अवेदी, बीजा
वेदी. अवेदी ते नवमा गुणस्थानना, बाकी स
तेना बे भेद. श्रेणीवन्त, अने श्रेणी रहित.
णीवन्त ते आठमा गुणस्थानना, बाकी श्रे
रहित तेना बे भेद, अप्रमत, बीजा प्रमत. अ
मत ते सातमा गुणस्थानना बाकी प्रमत ते
बे भेद. विरती परिणामी, बीजा अविरती. वि
परिणामीना बे भेद. सर्वविरती, बीजा देशवि
सर्व विरती ते छठा गुणस्थाने मात्र, अने

विरती ते पांचमा गुणस्थाने श्रावक, हवे अवि- तीना बे भेद. अविरती समकिती, बीजा अविर मिथ्यात्वी. अविरती समकिती ते चोथा गुणस्था- नना. बाकी मिथ्यात्वी तेना बे भेद, ग्रंथिभेदी बीजा अभेदी. ग्रंथी भेदी ते समकित पामीने पाछा पड्या, मिथ्यात्वे गया तेमणे ग्रंथी भेद करवो छे फरीथी करवो न पडे. विशुद्ध अध्यव- साये चोथा गुणस्थाने आवे ते ग्रंथीभेदी, बाकी अभेदी तेना बे भेद, भव्य, अभव्य, भव्यना बे भेद, कृष्ण पक्षिया, अने शुक्ल पक्षिया एम भेदनुं व्हेंचवुं तेने व्हेंचण रूप व्यवहार कहिये.

हवे प्रवर्त्तन व्यवहार कहे छे. तेना बे भेद एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध, शुद्धना बे भेद. वस्तुगत शुद्ध, व्यवहार साधन शुद्ध. व्यवहार सर्व द्रव्यना शुद्ध स्वरुपनी प्र- वृत्ति जणावे ते वस्तु गत शुद्ध व्यवहार. जेम धर्मास्तिकायमां गतिसहायकता तथा जीवने विशे ज्ञायकता, ईत्यादि वस्तुगत शुद्ध व्यव- हार. बीजो साधन शुद्ध व्यवहार तेना बे भेद.

उत्सर्ग साधन, अपवाद साधन. जे उ
उत्सर्ग (उत्कृष्ट०) नीपजाववा माटे र
यिनी शुद्धता, गुणस्थाने श्रेणी आरोहण
वली शुद्ध व्यवहारना वे भेद. सद्भूत अने
सद्भूत. सद्भूत ते क्षेत्र अवस्थाने अने
रहेला ज्ञानादि गुण तेना भेद कहेवा ते
भूत, अने जे असद्भूत एटले हुं क्रोधी
मानी, हुं देवता हुं मनुष्य, इत्यादि देवत
हेतुपणे ग्रह्या जे देवगती विपाकी कर्म
ते उदयरूप परभाव छे पण यथार्थ ज्ञान
भेदज्ञान शुन्य जीवने एक करी माने छे ते
शुद्ध व्यवहार जे आ शरीर म्हारुं छे अ
शरीर ते हुं तुं, इत्यादि संश्लेषित व्यवहार
जे धन्यधान्यादि राज्यस्त्री वली पूत्र क
कुंटुबादि म्हारुं छे एम कहेवुं ते असंश्लेषित
वहार. वली व्यवहारना बे भेद कहे छे एक
चणरूप व्यवहार, बीजो प्रवृति व्यवहार. ते
तिना त्रण भेद. (१) वस्तु प्रवृति. (२) स
प्रवृति. (३) लौकिक प्रवृति. तेमां साधन प्रवृ
त्रण भेद. (१) जे अरिहंतनी आज्ञाये

वर्त्तमान पर्याये वर्ते तेने वस्तु माने छे. कारण के,-(भूतकाळ) (भविष्यकाळ) नो आरोप करीने वस्तु मानवी कहेवी ते नैगम नयनो पक्ष आरोपरूप छे. अहीं कोई प्रश्न करे के,-" संसारी सकर्मा जीवने सिद्ध समान कहो छो तेतो अनागतकाळे सिद्ध थशे तो तमे अनागतकाळने अवस्तु केम कहो छो तेनो उत्तर.-हे भव्य अनागत भावी माटे हमे तेने सिद्ध कहेता नथी पण वर्तमानकाळे सर्वगुणनी छति आत्म प्रदेशे छे ते आवरण दोषे प्रवर्तति नथी, तेथी तिरोभावीपणा माटे संग्रह नये सिद्ध कहिये पण वस्तुमां सर्व केवळज्ञानादि गुण छता वर्त्ते छे ते माटे तेने सिद्ध कहिये. अने ते वस्तु नामादि पर्याय सहित वर्ते छे माटे नामादि त्रण निक्षेपा तो द्रव्य छे अने भाव ते भाव छे ए व्याख्या कारण कार्य भावनी व्हेंचण करिये ते माटे छे पण वस्तुमां सहजना चार निक्षेपा ते भाव धर्मज छे. तथा ए स्वस्वकार्यना कर्त्ता छे आ रूजुसूत्रना दीगंबर बे भेद कहे छे. [१] सुक्ष्म रूजुसूत्र. [२] स्थूळ रूजुसूत्र. (१) जे वर्त्तमान

काळनो एक समय ते सुक्ष्म रूजुसूत्र. (२) बहु कालि ते स्थूळ रूजुसूत्र. आ काळापेक्षी ठे. तथा ते भाव नय ठे. अने योगावलम्बीप ते बाह्य ठे ते माटे द्रव्यमां पण गण्यो ठे रूजुसूत्र नय कह्यो.

शब्दना अर्थनी ज्यां उत्पत्ति होय तेनेज वस्तुपणे कहे एटले रूजुसूत्रे सामान्य घटगवेष्यो अने शब्दनये सद्भाव जे [अस्तिधर्म] तथ असद्भाव जे [नास्तिधर्म] ते सर्वसंयुक्त वस्तुने वस्तुपणे कहे ते शब्द नय एटले वस्तुने शब्दवडे बोलावतां तेमां अस्तित्व–अने नास्तित्व एम " युगपत् " धर्म सुचवतां शंकानु निराकरण थाय माटे स्हां स्यात् सप्तभंगी उपजे अने तेथी शब्दनयना पण तेटलाज भेद जाणवा. आ शब्दादि नय वस्तुना पर्यायने अवलम्बीने वस्तुना भाव धर्मने ग्राहे छे, ते माटे वस्तुना भाव निक्षेप ते आ नये मुख्य ठे.

शब्दनय.

शप आक्रोशे शपनमाव्हानमिति शब्दः

शपतीति वा आह्वानयती शब्दः शप्यते आहूयते वस्तु अनेनेति शब्दः ॥

वस्तुपणे बोलावे, बोलावीय, ते शब्दः वाच्यार्थने ग्रहण करे ते नयने शब्द नय कहे छे. वस्तुना धर्मवडे धर्मीने (वस्तुने) बोलावाय. एटले शब्दनुं कारण तो वस्तुनो धर्म थयो. कारण के जळ धारण करवानो धर्म जेनामां छे तेने "घट" (घडो) कहिये छिये. तेम अहिं पण शब्दे वाच्य अर्थने ग्रहे ते नयनुं नाम शब्द कहेवाय. जेमरूजु सुत्र नयने वर्तमान काळना धर्म ईष्ट छे तेम शब्दादिक नयने वर्तमानताना धर्म इष्ट छे, कारण के पहोळो गोळ-संकोचित उदर कठिन युक्त जळधारण क्रियाने समर्थ प्रसिद्ध ते घट. एम भाव घटने घटपणे इच्छे पण शेष नाम, स्थापना, अने द्रव्यरूप त्रण घटने शब्द नय माने नहीं. घट शब्दना अर्थने (संकेते) ज घट कहे. "घट" पातु चेष्टा वाची छे तेथी आ शब्द नय चेष्टा कर्ताने "घट" कहे (माने) एटले रूजुसूत्र सामान्ये चार निक्षेपा सं-

युक्तने घट माने. अने शब्दनय मात्र घटने " घट " माने एटलो विशेषपणो छे.

समभिरूढ नयः

यांयां संज्ञां घटादि लक्षणां भापते वदति नांतामेव
यस्मात् संज्ञांतरार्थ विमूखः समभिरूढोनयः ॥

इन्द्र शक्र पुरंदर इत्यादि सर्व इन्द्रना नाम भेद छे. तेमां जे एक पर्याय प्रकटपणे अने शेष पर्याय अप्रकटपणे होय, तोपण तेने सर्व नामे शब्दनय बोलावे पण समभिरूढनय न बोलावे एटलो शब्दनयमां अने समभिरूढनयमां भेद छे "घट"–"कुंभ" इत्यादिमां जे संज्ञानो वाच्य अर्थ देखाय तेज संज्ञा कहे जेमां संज्ञान्तर अर्थने विमुख छे तेने समभिरूढनय कहिये, जो एक संज्ञामध सर्व नामान्तर मानिये तो सर्वनो संकर (जोमाण) थाय. एटले पर्यायनो भेदपणो रहे नहि. अने जे पर्यायांतर (बीजा पर्याय) होय ते नो भेदपणे होय ते माटे पर्यायांतरनो भेदपणोज रह्यो ते माटे लिंगादि भेदने सापेक्षपणे वस्तुनो भेदपणो मानवो आ नयमां भेदज्ञाननी मुख्यता छे. ए समभिरूढनय कह्यो.

॥ उक्तंच-विशेषावश्यके ॥

एकस्मिन्नपि इन्द्रादिके वस्तुनियावत् । इन्दन शकनपुरंदरणादयोर्था घटंते ॥ तद्वशे नेन्द्रशक्रादि बहुपर्यायमपि तद्वस्तु । शब्दनयो मन्यते समभिरूढवस्तुनेवमन्यते ॥ इत्यनयोर्भेदः॥

एवम्भूतनय

एवंजह सद्दथ्थो, संतोभूत्त तदन्नहाभूत्त ॥
तेणेवंभूयनउ, सद्दथ्थपरोविसेसेणं ॥१॥

पूर्वे जेम घटशब्द चेष्टा वाची इत्यादि रुपे शब्द नयनो अर्थ कह्यो. ए प्रमाणे घटादि अर्थ जे विद्यमानपणे वर्ते अने जो शब्दना अर्थने उल्लंघीने वर्ते तो ते ते शब्दनो वाच्य नथी अने शब्दार्थपणो जेमां न होय ते वस्तु ते रुपे नहि, माटे शब्दार्थमांथी एक पर्याय उनो होय तो एवंभूतनय तेने तेपणो कहे नहि, ते माटे शब्द नयथी तथा समभिरूढनयथी एवंभूत नयमां विशेषांतर छे. एवंभूत नयने-स्त्रीने मस्तके चढयो जल धारणपणानी क्रियाने करतो छतो मार्गे आवता जातां चेष्टा करतो होय; तेने "घट"

माने; घरना खुणे पड्यो तेने "घट" माने नहि कारणके-उपर कहेली क्रियाने ते घट करतो नथी. माटे एवंभूत नय तेने "घट" कहे नही. आ ठेकाणे शब्द वडे अर्थनी स्थापना-अने अर्थवडे शब्दनी स्थापनानुं रहस्य समजवुं-जेम स्त्रीने माथे चढयो अने जळधारण चेष्टवंत होय तेवा अर्थने "घट" शब्दे बोलावे तेनाथी अन्य बीजाने ते पण बोलावे नहि जेम सामान्य केवळी ते ज्ञानादि गुणे समान छे तेमने समभिरूढ नय "अरिहंत" कहे पण एवम्भूत नय न कहे. समवसरणादि अतिशय सहित होय तथा सामान्य केवळीने इन्द्रादि पुजता होय तेने "अरिहन्त" कहे पण ते विना न कहे. सार मात्र एटलो छे के वाच्य अने वाचकनी पूर्णता वाच्य स्वरूपने एवम्भूत नय माने छे आ साते नय विशेष्यावस्यकना आधारे कह्या तेमां नैगमना दश भेद, संग्रह नयना बार भेद; व्यवहारना चौद भेद रुजुसुत्रना छ भेद, शब्दना सात भेद समभिरूढना बे भेद अने एवम्भूतनो एक भेद एम सर्व मळीने बावन भेद कह्या.

॥ उक्तंच-विशेष्यावश्यके ॥

एकस्मिन्नपि इन्द्रादिके वस्तुनियावत्
इन्दन शक्रनपुरंदरणादयोर्थी घटंते ॥ तद
नेन्द्रशक्रादि वहुपर्यायमपि तद्वस्तु । शब्दनयं
मन्यते समभिरूढवस्तुनेवमन्यते ॥ इत्यनयोर्भेद

एवम्भूतनय

एवंजह सदथ्यो, संतोभूर्त तदन्नहाभूर्त ॥
तेणेवंभुथ्थनर्त, सदथ्यपरोविशेपेणं ॥१॥

पूर्वे जेम घटशब्द चेष्टा वाची इत्यादि
शब्द नयनो अर्थ कह्यो. ए प्रमाणे घटादि अ
जे विद्यमानपणे वर्ते अने जो शब्दना अर्थ
उलंगीने वर्ते तो ते ते शब्दनो वाच्य नथी अ
शब्दार्थपणो जेमां न होय ते वस्तु ते रूपे न
माटे शब्दार्थमांथी एक पर्याय उंगो होय
एवंभूतनय तेने तेपणो कहे नहि, ते माटे श
नयथी तथा समभिरूढनयथी एवम्भूत नय
विशेषांतर छे. एवंभूत नयते-स्त्रीने मस्तके चढ
जल धारणपणानी क्रियाने करतो छतो मा
आववापणानी चेष्टा करतो होय; तेने " घट

माने; घरना खुणे पड्यो तेने "घट" माने नहि कारणके-उपर कहेली क्रियाने ते घट करतो नथी. माटे एवंभूत नय तेने "घट" कहे नही. आ ठेकाणे शब्द वडे अर्थनी स्थापना-अने अर्थवडे शब्दनी स्थापनानुं रहस्य समजवुं-जेम स्त्रीने माथे चडयो अने जळधारण चेष्टावंत होय तेवा अर्थने "घट" शब्दे बोलावे तेनाथी अन्य बीजाने ते पणे बोलावे नहि जेम सामान्य केवळी छे ते ज्ञानादि गुणे समान छे तेमने समभिरूढ नय "अरिहंत" कहे पण एवम्भूत नय न कहे. समवसरणादि अतिशय सहित होय तथा सामान्य केवळीने इन्द्रादि पुजता होय तेने "अरिहन्त" कहे पण ते विना न कहे. सार मात्र एटलो छे के वाच्य अने वाचकनी पूर्णता वाळा स्वरूपने एवम्भूत नय माने छे आ साते नय विशेष्यावश्यकना आधारे कह्या तेमां नैगमना दश भेद, संग्रह नयना चार भेद; व्यवहारना चौद भेद रुजुसुत्रना छ भेद, शब्दना सात भेद समभिरुढना वे भेद अने एवम्भूतनो एक भेद एम सर्व मळीने बावन भेद कह्या.

॥ प्रकारान्तरे नय स्वरुप. ॥

स्याद्वादरत्नाकरथी कहे छे पदार्थना एक अंशने मुख्य करी कहे अने बीजा अंश तरफ (गौण) उदासीनपणुं राखे तेने नय कहिये ते नयना सामान्ये बे भेद द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक-तेमां द्रव्यार्थिकना च्यार भेद (१) नैगम (२) संग्रह (३) व्यवहार (४) रुजुसूत्र. (आ रुजु सुत्रने केटलाक आचार्य पर्यायार्थिकमां गणे छे तेथी ते भाव नय कहेवाय ते अपेक्षाए द्रव्यार्थिकना त्रण भेद थाय.

॥ नैगमनयनुं स्वरुप ॥

जे धर्मने प्रधानपणे अथवा गौणपणे अथवा धर्मने प्रधानपणे अथवा गौणपणे तथा धर्म धर्मी बेहुने प्रधान्यपणे गौणपणे गवेषवो एटले धर्मोनी प्रधान्यता तेवारे पर्यायोनी प्रधानता थई अने ज्यां धर्मीनो प्राधान्यपणो त्यां द्रव्यनो प्राधान्यपणो तेमज गौणपणो तथा धर्म धर्मीनो प्राधान्य गौणपणो ए रीते द्रव्य पर्यायनो गौण प्राधान्यपणानी गवेषणा ते रूप ज्ञानोपयोग ते नैगम नय अने तेना बोधने नैगम बोध कहिये.

॥ सत्चैतन्यमात्मनीति धर्मयोः ॥

सत्अस्तित्व अने चैतन्यज्ञान ए बे धर्म आत्माना छे. तेमांथी एक धर्मने मुख्यपणे (गवेषे) अने बीजाने गौणपणे राखी न गवेषे ए नैगम नय जाणवो अहीं "चैतन्य" नामे जे व्यंजन पर्याय तेने प्राधान्यपणे गणे–कारण के ते आत्मानो विशेष गुण छे अने "सत्—सत्व" नामे जे व्यंजन पर्याय ते सकल द्रव्य साधारण छे. माटे तेने गौणपणे लेखवे. (गणे) ते नैगमनो प्रथम भेद.

॥ पर्याय वत् द्रव्यं. ॥

द्रव्य पर्यायवन्त छे.–आ ठेकाणे धर्मीनो नैगम छे–ईहां द्रव्यनो मुख्यपणो, वळी वस्तु ने "पर्यायवन्त द्रव्यं" कहेवुं ते वस्तुनो गौणपणो अने पर्यायनो मुख्यपणो छे. ते नैगमनो बीजो भेद.

॥ क्षणमेकः सुखी विषयाशक्तो जीव ॥

"एक क्षणे सुखी अने विषयाशक्तो जीव" ठेकाणे "विषय आशक्त" ए नामथी

जीव जणाय ते धर्मनी मुख्यताना विशेषपणाथी सुख लक्षण धर्मनी प्राधान्यता ते विशेषपणे करीने धर्म धर्मीने आलंबने ज्ञान प्रमाण थाय ए त्रीजो नैगम भेद. ईहां एकनी गौणता अने बीजानी मुख्यता लक्ष्ने ज्ञान थाय, ते माटे नय कहिये, वळी सुक्ष्म निगोदना जीवने सिद्ध कहिये तथा अयोगी केवलीने संसारी कहिये ते अंश नैगम छे. हवे नैगमाभासनुं स्वरुप. वस्तुमां धर्म अनेक छे ते एकान्ते माने पण एक बीजाने सापेक्षपणे न माने एटले एक धर्मने माने अने बीजा धर्मने न माने ते नैगमाभास दुर्नय कहेवाय कारणके आत्माने विशे "सतत्व" तथा "चैतन्य" ए बे धर्म भिन्न भिन्न छे तेमांथी मात्र "चैतन्य" पणुं माने अने "सतत्व" ने न माने ते "नैगमाभास" कहेवाय.

संग्रह नय.

सामान्य मात्र (विशेष रहित) सत्य द्रव्यत्वादिने पिंडपणे विशेष राशीने ग्रहे; पण व्यक्तव्यपणे न ग्रहे; स्वजातिना दीठा जे इष्ट अर्थ तेने अविरोधे करीने विशेष धर्मोने एक

ग्रहण करे ते संग्रह नय. तनो बे भेद.
संग्रह अने (२) अपर संग्रह.

। अशेष विशेषौदासीनं भजमानं शुद्ध
सन्मात्रमभिमन्यमानः पर संग्रह ॥

जे समस्त विशेष धर्म स्थापनानी भजना
एटले विशेषपणाने नहि ग्रहण करतो
द्रव्य सत्ता मात्र माने, ते पर संग्रह.

पर संग्रहा भासनुं स्वरुप.

जे सत्तानो अद्वैत स्वीकारे अने द्रव्या-
दि न माने, समस्त विशेषपणाने नहि ग्र-
रे ते अद्वैतवादी वेदान्त तथा साङ्ख्य
ए पर संग्रहाभास छे; कारण के जे भेद
तो देखाय छे. तथा द्रव्यान्तरपणो, तेने
ने माटे तेने पर संग्रहाभास कहिये. अने
ो विशेष सहित सामान्यने ग्रहे छे, माटे
नय कहिये.

अपर संग्रह नयनुं स्वरुप.

त्वादि नयांतर सामान्यानिमन्यमानः
षु गजनिमीलिकावलंबमानः [illegible]॥

द्रव्य जे जीव, अजीवादी जे अवांतर सामान्यने मानतो अने जीवने विशे प्रतिजीवनो विशेष भेद, भव्य-अभव्य; सम्यक्त्वी-मिथ्यात्वी, नर नारकादि जे भेद तेने गजनिमीलिका कहेतां-मास्ताईये न गवेषवो ते अपर संग्रह.

अपर संग्रहाभासनुं स्वरुप.-द्रव्यने सामान्यपणे माने पण स्वद्रव्यनी पारिणामिकतादि धर्मने न माने ते अपर संग्रहाभास कहेवाय.

व्यवहार नयनुं स्वरुप.

संग्रह नये ग्रहण करेला जे वस्तुना "सत्व" आदि धर्म तेने गुण भेदे व्हेंचे. एटले भिन्न भिन्न गवेषे, तथा पदार्थनी गुण प्रवृत्ति तेने मुख्यपणे गवेषे, ते व्यवहार नय. जेम द्रव्य छे तेना-जीव पुद्गलादि पर्यायना क्रमभावी अने सहभावी एम बे भेद. वळी जीवना बे भेद. सिद्ध अने संसारी. तेमज पुद्गलना बे भेद, परमाणुं अने खंध. इत्यादि कार्य भेदे भिन्न माने तथा क्रमभावी पर्यायना बे भेद, एक क्रियारूप अने बीजो अक्रियारुप एवी रीते व्हेचण

ामर्थ्यादि गुण भेदे परे ते सर्व व्यवहार नय
ये. हवे व्यवहाराभास कहे छे. परमार्थ विना
। पर्यायनो विभाग करे कल्पना करीने भेद
। यत्ती प्रमाण पणे छतो जीव छे पण लोक
कमां दृष्टीगोचर नथी आवतो माटे चार्वा-
ते जीव नथी, एम कहे छे, अने जगतमां
ुतादि वस्तुना मेळापे जीव शक्ती आवे छे
वस्तुरुपे जीव सत्ता नथी एम कल्पना करी
ः लोकने कुमार्गे प्रवतावे तेने व्यवहार
ाभास कहिये.

॥ रुजुसुत्र नयनुं स्वरुप. ॥

सरळपणे अतीत अनागत काळने अण-
तो अने वर्त्तमान समये वर्तता जे पदार्थना
य मात्र तेने प्राधान्यपणे गवेषे ते रुजुसुत्र
ज्ञानोपयोगे वर्त्तताने ज्ञानि कहे, दर्शनो-
गे वर्त्तताने दर्शनी कहे, अकषायपणे
ा जीवने सामायिकवन्त कहे. अहीं
े प्रश्न करे के:-उपर कह्या मुजब तो रुजु-
तथा शब्द नय ए बे एकज थाय तेनो
र:-विशेष्यावश्यकमां कह्युं छे,-

॥ कारणं यावत् रुजुसूत्र. ॥

सम्यक ज्ञानने कारणपणे वर्त्ततो ते रुजु सूत्र अने जे जाणपणा रुप कार्यपणे थाय ते शब्द नय कहेवाय. हवे रुजुसूत्रनयाभास कहेछे. वर्त्तमान काळने ग्रहण न करे छता भावने अछता कहे अथवा विपरित कहे. जीवने अजीव कहे. अथवा अजीवन जीव कहे. आ बौधनो मत छे.–जे छतापणे सदा सर्वदा वर्त्तता जीवादि द्रव्य तेना पर्यायने पलटे सर्वथा द्रव्यने विनाशिक माने ते रुजु सूत्र नयाभास जाणवो.

शब्द नयनुं स्वरुप.

जे वस्तुना एक पर्यायने प्रकट देखे अने बीजा शब्द वाचक पर्यायने तिरोभावे अण प्रगटे पण ते पर्यायने ग्रहे अथवा काळ त्रण, वचन त्रण, लिंग त्रण तेने भेदे शब्दनो भेद पडे, ते भेदे अर्थने भिन्न कहे अथवा जळ धारणादि समर्थने घट कहे तथा कुंभादि भिन्न पर्याय जेटला छे, तेटलानो अर्थ वर्त्तनो न देखाय तोपण तेने नाम कही बोलावे. एम जेमां कार्यनो सामर्थ्य-

जेम,—(१) ईन्डादि धातु परमैश्वर्यने अर्थे छे तेथी परम ऐश्वर्यवन्त ते ईन्ड. (२) शकन् एटले नविन विशक्ति युक्त ते शक्र (३) पुरंदर एटले दैत्यने दरे एटले विदारे ते पुरंदर. (४) शचि एटले ईन्डाणी तेनो पति ते शचिपति. आ सघळा धर्म ईन्द्रमां छे तो पण जे देवलोकनो धणीछे तेनेज ईन्ड ए नामथी बोलावे. पण बीजा नामादि ईन्डने ईन्ड कहे नहीं. टुंकामां एटलुंज केः—पर्याय नामना जे जे अर्थ थाय ते सर्वने भिन्न भिन्न अर्थ सुचवे—कहे ते. समभिरुढ नय. पण एकार्थ न जाणे न ग्रहे ते समभिरुढ नयाभास कहेवाय छे.

एवम्भूत नयनुं स्वरुप.

शब्दनी प्रवृतिनी निमित्तभूत जे क्रिया ते विशिष्ट संयुक्त जे अर्थ, तेने वाच्य जे धर्म तेने जे पहोंचतो होय, एटले कारण कार्य धर्म सहित तेने एवम्भूत नय कहिये. जेम एश्वर्य सहित ते ईन्द्र, शक्र रूप सिंहासने बेसे ते शक्र अने ईन्डाणीनी साथे बेसे ते शचिपति एम

शब्दनां जेटलां पर्याय नाम थतां होय ते सर्वमां पहोंचता जावने ते नामथी बोलावे. अने जे पर्याय पहोंचतो देखे नहीं ते पर्यायनी ना कहे. ज्यां सुधी एक पर्याय ऊणो छे. त्यां सुधी समभिरुढ नय कहेवाय. अने सर्व वचन पर्यायने पहोंचे त्यारे एवंभूतनय कहेवाय. हवे एवंभूत नया नास कहे छे. जे पदार्थना नाम भेदनो भेद देखीने पदार्थनी भिन्नता कहे. जेम हाथी घोडा हिरण्य भिन्न छे तेम भिन्नपणुं माने जेम अर्थ भिन्नपणा माटे घडथी पट भिन्न छे तेम ईन्द्रथी पुरंदरादिपणा भिन्न माने तेने एवम्भूत नयाभास कहिये.

ए सात नयमां पहेला च्यार नैगम. संग्रह. व्यवहार अने रुजु सूत्र नय ते अविशुध्ध छे. कारण के द्रव्यने सामान्यपणे कहेवाने पात्र छे. ए नयनुं नाम (अर्थ) द्रव्य नय. अथवा द्रव्यार्थिक नय छे अने शब्द. समभिरुढ-अने एवम्भूत ए त्रण नय विशुद्ध छे कारण के— शब्दना अर्थनी एने मुख्यता छे पहेला चार नय ते भेदपणे वचनने वांछे छे. अने शब्दादि त्रण नय ते लिंगादि अभेद वचने अभेद कहे तथा

भिन्न वचनने भिन्नार्थ कही माने, अने समभिरूढ नय ते भिन्न शब्द तेने वस्तु पर्याय न माने, तथा एवम्भूत ते भिन्न गोचर पर्यायने भिन्न माने. उदाहरण,–जे चेष्टा करतो होय तेने "घट" माने. पण घरना खूंणे पड्यो होय तेने "घट" कहे नहीं तेम जे चित्रकळा करतो होय अने ते उपयोगे वर्त्ततो होय तेने चित्रकार कहे पण ते चित्रकार सुतो के जमतो होय तेने चित्रकार कहे नहि, कारण के ते वखते उपयोग रहित छे माटे ए नय ते शब्द अने अर्थने अभेदपणो माने छे. अने अर्थ शुन्य शब्द ते ए नये प्रमाण नथी, शब्द प्रधान अर्थ ते द्रव्यने गौणपणे वर्त्तता शब्दादि त्रण नय छे एम "तत्वार्थ टीका" मां कह्युं छे. ए सात नयमां पहेलो नैगम नय ते सामान्य अने विशेष बन्नेने माने. (२) संग्रह नय ते सामान्यने माने. (३) व्यवहार नय ते विशेषने माने अने द्रव्यार्थावलम्बी छे. (४) रुजु सूत्र तो विशेष ग्राहक छे. ए च्यार ते द्रव्य नय छे अने पाछला शब्दादि त्रण नय ते पर्यायार्थिक विशेषा-

ते बहु विषयी छे. रुजुसुत्रनय ते वर्त्तमान विशेष धर्मनो ग्राहक छे माटे व्यवहारथी रुजुसुत्रनय ते अल्प विषयी छे,अने रुजुसूत्रथी व्यवहार बहु विषयी छे रुजुसुत्र नय ते वर्त्तमान कालने ग्रहे अने शब्द नय कालादि वचन लिंगथी व्हेंचना अर्थने ग्रहे अने रुजुसूत्रनय ते वचन लिंगने भिन्न पामतो नथी माटे रुजुसूत्रथी शब्दनय अल्प विषयी छे अने रुजुसूत्र बहु विषयी छे. शब्द नय सर्व पर्यायनो एक पर्यायने ग्रहता ग्रहे अने समभिरुढनय ते जे धर्म व्यक्त ते वाचक पर्यायने ग्रहे ते माटे शब्दनयथी समभिरुढनय ते अल्प विषयी छे अने समभिरुढ नय ते पर्यायनो सर्व काळ गवेष्यो छे) माटे समभिरुढ नयथी शब्दनय ते बहु विषयी छे. एवम्भूतनय ते प्रतिसमये क्रिया भेद निवार्यपणो मानतो अल्प विषयी छे ते माटे एवम्भूत नयथी समभिरुढनय ते बहु विषयी जाणवो.

नय सप्तभंगीनुं स्वरुप.

जे नय वचन छे ते पोताना नयने स्वरुपे



शाता इत्यादि कारणे समजावे वर्त्ते, परवस्तुनुं संबंधपणुं. पूर्वकृत कर्मनुं उदयानुं-सार अनुकुळ प्रतिकुळ मनुष्यादि संबंध मळे, वळी सुखदुःखादि जे जे प्राप्त थाय तेने समजाव पूर्वक काया योगे अव्यापकपणे समताजावे वेदीने निर्जरे एम अंतर्गत ज्ञानोपयोगे अने सहज वीर्यनी स्फुर्णा शक्तिए वर्त्ततो जीव उपरना गुणस्थाने चढे अने आगळना गुणस्थानने गोखे. इत्यादि सर्व साधन निश्रयनयनी दृष्टिये अने शुद्ध व्यवहार अपेक्षाए करे. त्यां आत्मसत्ताए शक्ति जावे तिरोजावीपणे रहेलो धर्म तेने व्यक्तिजावे कार्यपणे प्रकट करे ए पद्धति छे. माटे हे जव्यात्माः-तमे शीघ्र सुखना ईछक, अजिलाषी हो तो अंतर्दृष्टिये स्वधर्मग्राही निश्चयनयनो पक्ष संवर निर्जरारुप तेने धारो एख्ले ग्रहण करो अने बाह्यदृष्टिए परधर्मग्राही शुजाशुज व्यवहारनो पक्ष आश्रव बंध हेतु रुप, तेने तिक्षण ज्ञान खडग धाराए छेदी मह्जगन एकत्व रमणिपणे शुद्ध निश्चय-नय धारो एख्ले तेमां लय पामो. ए बीजी गाथानो अर्थ कह्यो.

तां भिन्न छे, जीवथी पुद्गल जुदो अने पुद्गलथी जीव जुदो, एम विभाग व्हेंचणपूर्वक दीव्य चक्षुवडे प्रत्यक्ष प्रमाणे निर्णय थाय. वळी नव तत्व कह्या तेमां संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए त्रण तो जीवनाज गुण छे, ते जीवमां अभेदरुपे-अभिन्न छे. (जुदा नथी) एम ए चार तत्व ग्रहवा-आदरवा योग्य छे अने पुण्य, पाप, आश्रव अने बंध, ए चार तो पुद्गलनाज गुण भेद छे ते पुद्गलथी अभिन्न छे. (भिन्न नथी) अने पुद्गल कह्यो ते अजीव छे एम पांचे तत्व छोडवा (त्यागवा) योग्य छे ए रीत्ये श्रद्धापूर्वक यथार्थ थाय त्यारे हेयोपादेय बुद्धि कहेवाय त्यांज ज्ञान कहेवाय; हेयोपादेय बुद्धिना अभावे जे ज्ञान होय (जाणपणुं होय) तेनुंज नाम अज्ञान छे हवे हेयोपादेय बुद्धिनुं प्रकटवुं परानुयायिदृष्टि छतां, अने स्वरुपानुयायि दृष्टियनां, उपर कह्युं त्यांज अनुभव प्रकटे, ते अवसरे चेतननुं ईन्द्रि नोईन्द्रिगत व्यापक परिणमनपणुं होय नहि. पाछळीने सहज वीर्यनी शक्तिये, अंतःकरणे तद्गत परिणमाव्युं छे, ते का-



शक्तिवन्त छे, एम हेयोपादेय बुद्धि प्रकट थतां (शुद्ध प्रकाश्युं के०) आत्मसत्ताए परमात्मपद शक्तिभावे तिरोभावीपणे रहेलुं ते चिदानंद स्वरुप, क्षायक लब्धि, ज्योतिमय, प्रत्यक्ष प्रमाणे अनुभवरुप, उद्योतमय प्रकाश थयो, (तेथी के०) उपर कह्युं ते प्रकाशथी वली शुद्धात्म स्वरुप स्पर्शथी. (समकित् शुद्ध हावेरे के०) शुद्ध समकित् गुण, मोक्ष प्राप्ति हेतु, चारित्र रायनो पक्षी, जिनेन्द्रदेवनो आज्ञा धारक, जन्मनानो उच्छेदक पूर्ण समाधि हेतु, धर्मकार्यमां महा मंगलिकरुप, चोथा गुणस्थाने प्रथम प्रकट थाय (एह अर्थ के०) उपर कह्यो ते अर्थ (शुभो के०) सरळभाववर्तिनो, स्वस्वरुपगत् व्यापक-परिणमन-रमण-अनुभव करतां गुण श्रेणी ए गुणस्थाने उत्तरोत्तर चढवानो, अने आगळा गुणस्थानने ओळंववानो मार्ग. हे भव्यात्मा तमे मूळ स्वरुपे समभावपणे ग्रहण करो, अने औदयिक भावमां परिणमो नहि औदयिक भावमां परिणमतां राग द्वेष प्रकटे त्यां आत्माने आवरण लागे, तेनुं नाम भाव हिंसा

ादिनी मिथ्याचाल, वक्रपणे, अज्ञान
। प्रवृत्तिए थइ रही छे, ते चाल ज्ञान
ी (त्यागी) सहज भावे वर्त्तवुं (एम
के०) हे मोक्षार्थी भाइओ ?-तमारा
ात्महित अर्थे अप्रमत्तादि शुद्ध उप-
ा-ठसावो-अने वर्त्तो [विशेषावश्यक
रे के०] एमज विशेषावश्यक ग्रन्थमां
ाणि क्षमाश्रमण दश पूर्वधर तेमणे
कर्यो छे. ते कह्यो. अमारी मति कल्प-
ेता नथी. ए तृतिय गाथार्थ-

ल अरथ जुगती आतम गुण,
निश्चय नय धारोरे;
ोक प्रसिद्ध भाख्यो व्यवहार ते,
तारथ टीकाए विचारोरे. ज्ञान० ॥४॥

-(तत्व अर्थ के०) ज्ञान, दर्शन, चारि-
प्रर्थ हेतु युक्तिपूर्वक विचारीए तो एज
ुण आत्मशक्तिये प्रकटे छे अने ए श-
ाक्तिभावे थाय तेनुंज नाम निश्चय नय
ने जे लोकोने विशे प्रसिद्ध थवुं. एज्ञे

जेम शोना बहु मान पामवुं. लोकमां धर्मी कहेवराववुं ए सर्व व्यवहार जाणवो. ए विशे कांई धर्म छे नहि. तेवुं तत्त्वार्थ ग्रंथनी टीका आदिमां कह्युं छे ते आदि कहेता तीर्थंकर ज्यां ज्ञाननी रमणता नथी अने व्यवहार मार्गनी क्रिया कष्ट तप जप करे लोको तेने तपस्वी तथा व्यवहार मार्ग चालनारा जाणे, घणुं वखाणे, पण परमात्मा-मा-मार तेमने अधर्मी कह्या. धर्मी कह्या नथी. ते श्री आचारांग सूत्र पावाक्कम्मस्सववहारिउज्झगाणंतवाईजावउ इति. ॥

जे स्वस्वरूप जाणतो नथी, रमण करतो नथी अने पर भाव ते व्यवहार क्रिया प्रमुख करे रमण थि तेनुं ए धर्म तो स्वभावमां कह्युं छे अने परभावमां तो कर्म कह्युं छे. माटे ए छेहाण धर्म ते कहेवाय धर्म पंचनाण के हठवादे आत्मा नथी धर्म तो सहज स्वभाव छे परभावना त्याग करे अने राग द्वेष माहथी रहित थाय, पोताना स्वरूपे रमण करे ज्ञान दर्शनमां स्थीर भाव थाय. तेने धर्म तथा चारित्र कहीए. एवुं श्री हेमचंद्राचार्यजीए योगशास्त्रमां कह्युं छे ते श्लोक॥

आत्मैवदर्शनज्ञानचारीत्राण्यथवायन ॥
यन्नदात्मकएवैपशरीरमयितिष्ठन्ति ॥ १ ॥
आत्मानमात्मनोवेत्तिमोहत्यागाद्यमात्मनि ॥
तदेवतस्यचारित्रंतद्ज्ञानंतच्चदर्शनम् ॥ २ ॥

मुक्तितो एक पोताना आत्म स्वरुपमां रमे तेनि थायः अने क्रिया कष्ट करे तेनुं फळ पुन्य, वा पाप एक भोगवे एथी धर्म थाय नहिः एवुं खट दरशन समुचय ग्रंथे कह्युं छे. ॥ तत्रज्ञानादि धर्मेभ्यो, भिन्नाभिन्न विवर्त्तमान् ॥ शुभाशुभकर्म कर्त्ता, भोक्ताकर्मफलस्य ॥ १ ॥ ए रीते व्यवहार ते लोक रंजनपणामां शोभनीक छे, एम जाणीने निश्चेनी रमणता करवी. इति चतुर्थ गाथार्थ. ॥ ४ ॥

एक जीव ज्ञान अभ्यासे,
बीजो कीरीया धारो रे;
अंतर वेहुमां सूर्ज खजुवो जेम,
योग दृष्टि समुच्चये विचारो रे ॥ ज्ञा. ५ ॥

अर्थः—जीवने ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं, क्रिया तो शाशननी जंजाळ मात्र छे.

शा माटे जे कर्मनो नाश करवो अने मुक्तिनुं पामवुं ते तो निजस्वरुपने जळख्या विना न पामिये माटे ज्ञाने करिने षड्द्रव्य जाणे अने तेमां स्वपर भिन्न करे पछी पोतानुं स्वरुप पोते धारे तेवुं जे ज्ञानोपयागीपणुं तेथी कर्मनो नाश थाय अने मुक्ति मळे ते माटे ज्ञान छे, ते सूर्य समान छे अने क्रिया ते परप्रार्थं छे तेथी कर्म नाश थाय नहीं माटे खद्योतना तेज जेवुं कह्युं अने ज्ञाननुं तेज सूर्यना जेवुं छे. तेम योगदृष्टि ग्रंथमां कह्युं छे.

उक्तंच—

तात्विक पक्षपातश्च, भावशुन्या चया क्रिया ॥
अनयोरंतरं ज्ञेयं, भानु खद्योत योरि व ॥ १ ॥

ते माटे समजीने ज्ञाननो अभ्यास करवो अने अंतरंग उपयोग राखवो. ईति पंचम गाथार्थ. ॥ ५ ॥

सोरठ प्रकरण मांहे दाख्युं,
उत्तम ज्ञान सो रंगरे ॥
मध्यम क्रिया रंति ते भाख्यां,
मूरख माने ढोंगरे ॥ ज्ञान० ६ ॥

न्म मरण टले नहीं अने हजी अनंता जन्म मरण परंपराए रह्या पण होय ते माटे एने भव अटवी कहीए.

उक्तंच,—

नास्यात्मीय न तुल्य मेतत्,
प्रमत्त नामं क्रिया पदमेतं ॥
गुण्य स्थानम संख्य वृथा,
प्रमाद हाने प्रवरं ज्ञातव्या ॥ १ ॥

छट्ठा गुणस्थान सुधी चढे अने आत्मानी तत्त्व उपलक्षणे पण न करे अने क्रिया उपर राग राखे तो त्यांथकी उलंगी शके नहीं. जे अप्रमादि साधु आत्मोपयोगी तेज उलंगे, बीजाथी उलंगाय नहीं. अहीं कोई कहेशे जे आटलुं आटलुं कष्ट सहिये छिये, संसारथी अलगा थया छिये, ते हमारुं शुं फोगट थयुं? तेनो उत्तर जे एम कष्ट करवाथी कार्य सिद्ध थतुं होय तो निर्धन पंचेंद्री जीव बहु कष्ट सहे छे. पक्षे घोडा, बळद इत्यादि क्षुधा, तृषा, टाढ, ताप, ताडना, तर्जना, प्रमुख बहु परिसह सहे

ठे माटे तेमनुं कार्य सिद्ध थवुं जोईए कारण के तमाराथी एना जेव्हो परिषह सहेवातो नथी, माटे कष्ट सहेवाथी कार्यसिद्धि थती नथी, एतो लोकनां मन रीझवा अने पोताने लोको माने पुजे माटे ए कष्ट सहन करवुं एम ठरे ठे पण आत्म स्वरुप जाण्या विना स्वपरनी व्हेंचण थाय नहीं, अने स्वपरनी व्हेंचण विना यथार्थ परिसह सहेवाय नहीं, अहीं तो द्रव्यादथी सेवो ठे तथा शास्त्रमां पण वचन ठे.

उक्तंच,— उपदेशमाला मध्ये.

चालइंकठकरेइतिंबधम्मं धारेइजणाणुवित्तीएसोपवयणमगस्सवैरी नुउअहाठंदो ॥ १ ॥

एवा कष्टना करनाराने कंइ साधुपणुं मालम पम्तुं नथी इहां कहे के उग्रकुल, भोगकुल, राजानुकुल, क्षत्रीयकुल, शेठशाहुकार सेनापती, एवा मोटा मोटा कुलमां जन्मेला वैराग्य पामीने धन, धान्य. स्त्री, पुत्रादि रिद्धि ठांमीने चारित्र लीधां ठे अने लाज मूकीने घरघर भिक्षा मागवा जवी ए कंई न्हानुं कष्ट नथी,

केमके कुदिशंबळ मुनिने निरलोभि कह्या, तेमनुं कार्य शुं न थाय? अवश्य थवुं जाइए. तेनो उत्तरः-निद्रावृत्तिथी कार्यसिद्धि थतुं होय तो निद्रावृत्ति करवावाळा घणा जीव मालम पडे ते तो तेनुं कार्य सिद्ध थवुं जोइए, ईहां कहे के ते लोको दोष टाळीने आहार लेता नथी, माटे एनुं कार्य न थाय अने आपणे दोष टाळीने शुद्ध आहार लइए छिये तेथी कार्य थाय. तेनो उत्तरः-ए निद्रु दिन जिवारी दोष टाळ्ता नथी पण षट् दर्शनना वेषधारी सर्वे पोतपोताना कल्प व्यवहार प्रमाणे दोष टाळी निद्रा ले ते माटे तेनुं कार्य थवुं जोइए, अहीं कहे केः-ए वीतरागनी आज्ञा बहार ते एतो अज्ञानी ते माटे अज्ञान कष्टनुं फळ कार्य सिद्ध ते नहीं, अने आपणे आज्ञा महीत छिये माटे आपणुं कार्य सिद्ध थाय तेनो उत्तरः-आपणा घरमां कल्प व्यवहार एक रीतनो ते नहीं अने सूत्र एम कहे ते जे कल्प उलंघवाथी कर्म बंधाय एवो तो निश्चय ते नहीं.

उक्तंच.— सूत्र कृतांग मध्ये.

आहागमांइदुंजंति । अणमणेनकम्मुणा ॥
जीवलित्तेवियाणिजा । अणुवलित्तेत्तिवापुणो ॥१॥
एतेहिंदोहिअणेहि । ववहारोनविजई ॥
एतेहिंदोहिठाणेहि । अणयारंतजाणए ॥२॥

एम्ब्रे सूत्रकारे ए रीते कह्युं ठे ते जोतां कल्पमां धर्म मालुम पडतो नथी पछी तत्व तो केवली जाणे. अने कल्पने विचारी जोइए तो ते कल्पथी भिन्न हरिभद्रसूरि कृत कल्प ठे अने तेथी जे जे पंक्ति पछीथी थया तेमना कल्प ए सर्वे अणमळता जुदा जुदा ठे तो कयो कल्प सत्य मानवा योग्य ठे अने कयो कल्प असत्य मानवा योग्य ठे एम्बा माटे क्रियानी रुचि विशेष ज्ञान विना करे ठे, अने समकित पामेला तेमने मध्यम कह्या ठे. अहीं कहेशे के एथी पुण्य बन्ध थाय के न थाय ? तेनो उत्तरः—जे जेवुं कष्ट ने जेवा प्रणाम तेवुं पुण्यबंध थाय पण एथी अधीक थाय नहीं कारण के,— श्री जगवती सूत्रे कह्युं ठे जे जगवानना हाथ

दिक्षित शिष्य तेमणे बार वरस सुधी चोक्खुं चारित्र पाल्युं, छपण लागवा दीधुं नथी, अने छठ छठनुं पारणुं करता हता ते पहेले देवलोके गया, मध्यस्थ आयुष्यनी स्थितिएतो एवी रीतथी चारित्र पाल्युं ने आराधक कह्या ते पण एथी उंची गतीए गया नथी माटे तमे तमारा मनने विचारी जुओ अने शास्त्रने विषे तो सप्त लवीआ देव सर्वार्थसिद्ध विमाने जवावाला तेमने भवअस्वीमां कह्या छे.

उक्तंच,— उपदेशमाला मध्ये.

जैतालवसत्तमसुरविमाणवासीविपरिवमंति ।
सुराचितिज्जंतंसेसंसंसारेसासयंकयरं ॥ २ए ॥
कहतंभन्नइसुख्खं ॥

सुचिरेणविजस्सडुखमल्लियइ ।
जंचमरणावसाणे । भवसंसाराणुबंधीच ॥३०॥

टीकाः—जइइतियदितावतलवसत्तमाःसुराः सर्वाऽनुत्तरविमानवासिनोदेवा स्तेषांविमानानिअनुत्तरविमानानितन्निवासिनोपिअर्थादनुत्तं विमानस्थितात्र्यपिदेवाइत्यर्थः ॥ तादृशाअपिसुरादे

एवो ने एवो भाव रहे तो ते अवश्य मोक्षे जाय एवुं श्री भगवतीजीमां वचन छे पण उपशमश्रेणि वालो अवश्य मरे अथवा पाछो पडे ते माटे मरे तो सर्वार्थसिद्ध विमाने जाय, पडे तो निचेना गुणस्थाने आवे एमां संदेह नहीं पण ए श्रेणि आरोहण कर्यु त्यां अंतरगत उपयोग होय बाह्योपयोग होय नहि त्यां सर्व अंतरक्रिया अने श्रुत ज्ञानोपयोगी होय पण अवधी मनःपर्यव ज्ञानोपयोग होय नहीं एवा आत्मोपयोगी शुक्ल ध्याननाध्याता उपशमश्रेणि पामीने सर्वार्थसिद्ध विमाने देव थाय तेमनुं पुन्यः भवअटवीरुप कह्युं पण ज्ञानिए वखाण्युं नहीं ते टीकाथी विचारवुं एटले पुण्य तो भवनी वृद्धी करनारुं कह्युं छे एथी संसार घटे नही ए बीजो मध्यम आत्मानो भाव कह्यो.

हवे त्रीजो अधम आत्मानो भाव कहिये छियें. अधम आत्मा कहेतां अज्ञानी समकित रहित ते अथवा कृष्णपक्षीआ जीव जाणवा,- अधम आत्मा ते ज्ञान पाम्या नहीं, अने एक

वेश देखीने (वेश) लींग धारण कर्यु छे एटले माथुं मुंडाव्युं छे. उगो मुहपत्ती राखे छे पण ब्रत्तादि कशुंए रह्युं नथी एटले कञ्चन कामीनि कशुंए छुट्युं नथी. एवा जे परिग्रहधारीने साधु करी माने तेने बाल अज्ञानी जाणवा अथवा पोते एवो लींग राखे अने कहे के हुं माघ महावीरनो भेखधारी भीक्षावृत्ती करुं छुं. तेनो उत्तर जे महावीरे एवो भेख राख्यो न्होतो अने महावीरना शासनमां एवो भेख कह्यो नथी जे केश समारवा, पटीयां पाडवां. तेल, धूपेल. अत्तर घालवां. सारां बुगडां धोवडावीने धोतीजोडा कसबी भारे कींमतना पहेरवा. कपडां सारां ओढवां, काठनी खोसवी. पाखीडुं पाडवी. (बुट) पगरखां पहेरवां एवो वेश भगवानना मार्गमां छे नहीं, ए भगवाननुं शासन कहेवाय नहीं एतो तमारी खुशीथी छेलछबीला थइने फरो छो पण वीतरागनो मार्ग एवो नथी. वळी तमो कहो छो के भिक्षावृत्ती करिये छिये ते तो जेम ग्रहस्थनी पाछळ भांड भोजक भाट लागेला छे तेम तमे

एक वखेर लागला हो तमने दीक्षाथी एमनुं कल्याण थयुं नहीं. तेम तमारुं ए जीकावृत्तीथी कल्याण थयुं नहीं. कारण के जे साधु मुनिराज निग्रंथ ने कंचन कामिनीना त्यागी छे, क्रिया आचार रूडी रीते शास्त्रमां कह्या प्रमाणे पाळे ने भिक्षा लईने आजीवीका करे छे, तोपण शास्त्रवाळा तमने कहे छे के पाछला भवे व्रत लईने ताग्यां तेनुं फल तमने उदय आव्युं छे, पछे पापने उदये ए भिक्षा तमने लेवी पडी छे जो ज्ञान मार्ग होत तो ए भीक्षाथी तमारुं कल्याण थात पण आ भिक्षा ज्ञान विना बाह्य क्रिया करीने त्यां तो ते जाणीए क्रिये. जे पुर्वकृत पापना उदय छे एवुं श्री पंच वस्तु ग्रंथमां कह्युं छे —

॥ उक्तंच. ॥

पडुक्क उकमिकयवयनंगोअविहिपावग।
पुण्ण नद्व नेव ईति. ॥

उक्तंच — ॥ गाथा. ॥

चाण्नि विहिणम्म,
अंतलग पम्म मू अककुम नावम्म ॥

अणाणिणो यका पुण.
मा पम्मिसिद्धा जिनवरे हिं ॥ १ ॥
निकं अर्मतिआरं.
प्रसंगया अपरिसुद्ध परिणाया ॥
दीणा संसार फलं.
पावाउ कुत्त मेयंतु ॥ २ ॥

एह्वे शास्त्रमां एकान्ते व्यवहार मार्ग चाले तेने पापनो उदय कह्यो तो फक्त एक लींग धारण करीने फरे तेथी मुक्ति थाय नहि ते माटे अधम आत्मा तेने कहिये. एह्वे उत्तम ते ज्ञानरागी. मध्यम ते क्रियारागी अने अधम ते लींगरागी एवुं पोडशक प्रकरण मध्ये कह्युंछे.

॥ उक्तंच. ॥

बालःपश्यतिलिंगम् । मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तिम् ।
अज्ञानक्रियागमनतं । बुद्धःपरीक्षतेसर्वयत्नेन
॥ इति अष्टम गाथार्थ. ॥

मेडकचूर्णसम ते निर्जरा.
क्रिया कष्टथी जाणीरे ॥

समुद्रसम निरजरा छे जेहनी.
ज्ञान सुधारस दाखीरे ॥ ॥ ज्ञान. ३ ॥

उपयोगशून्य क्रिया कष्ट करे तेने निर्जरा देरूकाना चूर्ण जेटली थाय अने स्वरूपोपयोगी एवा ज्ञानीने समुद्र जेटली निर्जरा थाय. हवे ज्ञान रहित क्रिया तेना बे भेद. अन्य दर्शन वाळा अज्ञान कष्ट करे तेने बाल तपस्वी कह्या छे तथा समकित रहित तेना बे भेद. शुक्लपक्षिया १, कृष्णपक्षिया २, हवे जेने एक पुद्गलपरावर्त काळ बाकी रह्यो ते शुक्लपक्षिया कहेवाय अने तेथी वधारे संसारकाळ स्थिति बाकी होय ते कृष्णपक्षिया कहेवाय. अहीं जे कृष्णपक्षीया जीव तप, क्रिया, कष्ट, व्रत नेम करे तेने तो संसार उपर राग द्वेष उदयमां होय तेने निर्जरा थती नथी एटले अंश निर्जरा ते अहीं गणाती नथी तेने तो कर्म बंध थाय. एटले ते व्रतादि आश्रवरूप जाणवुं तथा जेने संसारादि उपर राग द्वेषनो उदय नथी अने व्रतादि करे तेने मेडक कहेतां देरूकाना चूरण जेटली निर्जरा थाय पण एथी एवुं क-

श्रावकनां व्रत अङ्गिकार करे तप, जप, क्रिया उत्कृष्टी करे अने संसारादि उपर राग द्वेषनो उदय मट्यो नथी ते जीवने ए सर्व कर्त्तव्यनुं फल आश्रव ने, एटले कर्मबंध ने, निर्जरा कहेवाय नहि तथा जे एवी रीते व्रतादि ग्रहण कर्या ने अने राग द्वेषनो उदय नथी अने वैराग्यवान् ने तेमज कष्ट क्रिया करे ने तेने देडकाना चूर्ण जेवी निर्जरा थाए कहेवाय पण एना आत्मानुं कल्याण थाय नहीं.

हवे जे समकित पामेला जीव तेना त्रण भेद. समकिती अविरती ॥१॥ बीजा समकिती देशविरती ॥२॥ त्रीजा समकिती सर्वविरती ॥३॥ ते मध्ये प्रथम भेद समकिती अविरती तेने व्रत पच्चखाण कर्‍यां ने नहीं अहीं कहे के मिथ्यात्वीने व्रत पच्चखाण कह्यां अने समकितीने व्रत तप पच्चखाणनी ना केम कहो गो तेनो उत्तर के:- ए गुणस्थाननी परिणती एवी ने ए गुणस्थाने सर्वथा व्रत पच्चखाण होय नहीं अत्र दृष्टांतः- जेम कोइ व्यापारीने पासे पुंजी नथी अने जो

धीरनार मळे तो लाखो रूपैयानो व्यापार करे पण अहीं व्यापार करवो ते सर्व लाभनी आशाए छे. पण खोट जाय तो घरमांथी देवा छे नहीं. तेथी निश्चिन्तपणे व्यापार करे पण जेनी पासे पांच रूपीआनी शक्ति छे ते प्रमाणे पोतानो धंधो करी रोख्खा पेदा करे छे तेने लोक कहे के तमे नामरदा छो रांमीरांमनी गोरे व्याज खाइने पमी रहो छो तमारी गोरे अमारी पासे धन होत तो अमे व्यापार करता आ वखत पेदाश सारी छे एवुं मांनळे तो पण वीचारे के खांचु करतां धन खोइ बेसिये माटे आपणुं धन रहेने रोख्खा पेदा थाय तेवो धन्धो करवो अहीं उपनय जोम्ये छिये. जेम ते निर्धन पुरुष तेम अहीं मिथ्याद्रष्टी ते जेम लांबो व्यापार करे तेम आ व्रतनेम कष्टक्रिया घणी करे जेम पेलाने खोट जाय तो घरमांथी कंइ देवुं नथी तेम आने व्रतादिमां दोष लागे तो समकितादि धन जावानुं छे नहीं. जेम ते अल्पपरिग्रहवालो धनसाचवी बेसी रहे तेम समकिती जीव समकित गुणने साचवी बेसी रहे ए रीते जाणवुं

हवे उपला गुणस्थानवाळा जिव व्रतादि व्यवहार करे पण ज्ञानगुणनी समज विशुधीये व्रतती नथी अने व्रतनेम तपजप क्रिया रुडी रीते करे तेने देडकाना चुर्ण जेव्ली निर्जरा थाय अहीं कोइ केशे जे समकित प्रगट्यूं तेने ज्ञानी कहिये ॥ तेनो उत्तर ॥ समकित गुण चोथा गुणस्थाननो छे. अने आ व्रतादि गुण ते पांचमा छठ्ठा गुणस्थानके व्यवहारथि छे एव्ले समकित बे प्रकारनुं छे शुद्ध समकित ॥ १ ॥ अशुद्ध समकित ॥ २ ॥ हवे शुद्ध समकित ते आत्मस्वरुप तद्वत् जाणे तेने कोइ रीतथी शुभाशुभ कर्म लागु थतां नथी ते क्षायिक समकित कहेवाय ते तद्भवे पण मोक्ष जाय तेने ज्ञानी कहिये एव्ले विशेष जाणे. एव्लो विशेष कहीसु पण ज्ञानी छे. अहीं तरतम जोग रह्यो छे हवे जे अशुद्ध समकिती छे तेना बे भेद. उपसम समकित १ क्षयोपसम समकित २ उपसम समकित तो अंतर मुहुरत स्थीतीनुं छे ते अधीक रहेतुं नथी एव्ले तेनुं अहीं कहेवानुं नथी हवे क्षयउपसम समकित तेना रुचक आदि अनेक

भेद छे पण क्षय उपसम एवुं नाम ते शुं जे उदय आवी कर्म प्रकृत्ति तेने क्षय करे अने आत्म प्रदेशे सत्तामां होय तेने उपसमावे एटले बे मलीने क्षयो पसम समकित कह्युं एटले मिथ्या तक्षय करयो ते समकित अने उपसमावी ते मोहनी एटले एनु नाम मीश्र समकित थयुं अहीं समकित मोहनीनो उदय वच्चे वच्चे जणाय तेथी तेने खरो ज्ञानी कहेवाय नहीं. अने व्रत पचखाण ए समकितने अनुसारे घणुं करीने छे. अथवा मिथ्यात्विने पण होय ते माटे अहीं कह्युं के समकिती ज्ञान वीसुधि विना व्रतादि कष्ट करे तेने देसकाना चूर्ण प्राय निर्जरा कही एटले वृत्तादिक धर्म अनेक भेदे छे कारण के भगवतीजीमां दश पचखाणनो अधिकारछे त्यां चारित्र पण ते मांहेलो एक भेद छे. अथवा उपवासादी तप ते ए दश पचखाण मध्ये एक काल पचखाण छे तो अहीं निर्जरा शुं भाग आवे तथा उतराध्यनमां मुनि ज्ञानीने कह्या छे ते माटे क्रियाकष्ट तपजप तेथी निश्चय साधुपणुं थाय नहीं ए कंइ संवर निर्जरा कहेवाय नहीं एनो

व्यवहारथी छे. माटे कष्टक्रिया तो सर्वे जीवने सरखी छे पण फळभेद उपयोग तथा प्रणामथी छे. अने क्रियाकष्टथी कर्मनुं आववुं थाय पण जेवो जेवो प्रणामवर्ते तेवो तेवो बन्ध पडे एटले प्रणामथी बन्ध पडे अने धर्म तो उपयोगमां छे माटे क्रियाकष्टथी निर्जरा केम संभवे माटे देडकाना चूर्ण प्रमाणे कही. अने जोएम नहि मानो तो शास्त्रथी विरुद्ध थाशे. कारण के भगवान श्री वर्धमान स्वामीना शीष्य हाथ दक्षित १४००० साधुछे. तेमां जमालीआदे वेजणा निन्हवथया ते क्रियाकष्ट तपजप कर्ता हता तेमां कशोए भीन छे नहि. एटले तेनी क्रिया उत्कृष्टि कही छे पण ते निची गतीए गया तथा बीजा साधु रह्या तेमां मातसें ७०० साधु मोक्षे गया बाकीना साधु मोक्षे गया नथी. कदापि कोइ कहेशे जे अन्य क्रिया तप ओछो कर्यो हशे. तेनो उत्तर संघकमुनि तापसी दिक्षा लीधी भगवान महावीर पासे चारित्र लीधुं. गुण रत्नाकर संवत्सर प्रमुख तप कर्यो अने मासखमण पाशखमणादि तप कर्यो छेवटे एनां हाडकां

खम खम्यां ए अधिकार भगवतीजीमां छे. वळी धनाकाकंनी प्रमुख बीजा साधुओनां तपथी शरीर शोषाणां तेमने खंधकनी उपमा आपी छे. पण खंधकने कोइनी उपमा नथी एवुं शरीर दुर्बळ थयुं त्यां कोयलाप्रमुख घणां दृष्टांत कह्यां छे छेवटे शरीरनी शक्ति मंद पडी त्यारे अणशण कर्युं तेने भगवंते आराधक कह्या छे पण देवलोक १२ मे गया. एम मेघकुमार आदे साधु महातपस्वीथया पणमोक्षेनगया. तो प्रत्यक्ष अहीं समजवामां आवे के जेवो उपयोग तेवी निर्जरा ते ज्ञानने आधिन छे. बीजाने आधिन उपयोग नथी तथा श्रीभगवतीजीमां कह्युं छे के करोडउपवासे जेटलां कर्मनारकीनां खपे एटलां कर्म ज्ञानीने एकस्वास ऊंचो लेइने निचो मुके एटलामां खपे एवा अधिकार सूत्र तथा प्रकरणे छे तथा श्रीजिनविजयजी महाराजे पांचमना स्तवनमां कह्युं के ज्ञानी एकदाणमां सर्व कर्म नाशकरे. तथा जशविजयजी महाराजे कह्युं के करोडभवसुधी आकरो तपकर्ते करमनखपे एटलां कर्मज्ञानी अर्धक्षणे खेरवे. (श्रीपालना

रासमां चोथे खंमे) ॥ देशनानी ढाले ॥

क्षण अर्धे जे अघ टले,
ते न टले भवनी कोमीरे ॥
तपस्या करतां अतिघणी,
नहीं ज्ञानतणी ले जोमीरे ॥
नहीं ज्ञानतणी ले जोमी,
संवेग गुण पालिये पुण्यवन्तरे ॥ ३० ॥

वळी हेमाचार्यजीये योगशास्त्रमां कह्युं ले.—

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

प्रणिहंति क्षणार्धेन, साम्यमालंब्य कर्मतत् ॥
यन्न हन्या न्नरस्तीव्र, तपस्या जन्म कोटिभिः ॥५१॥

तथा ज्ञानार्णवेः—

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

यज्जन्म कोटिभिः पापं, जयत्यज्ञस्तपो बलात् ॥
तद्विज्ञानी क्षणार्धेन, दहत्यतुल विक्रमः ॥ १० ॥

इत्यादि वचने समजी लेवुं के क्रियाथी कर्मनी निर्जरा विशेष नथी क्रियाने चालनय कही ले. एटले अज्ञानपणुं ले अज्ञानी एकरे अने ज्ञानी एकरे .एमां विशेष नथी तेथी क्रियानुं

वहु मान नथी हवे जे ज्ञानी छे ते समुद जे-
टली निर्जरा करे ते शा माटे के ज्ञानी आत्मो-
पयोगे छे अने आत्मा छे ते स्वधर्मग्राही छे. स्व-
धर्ममां वर्ते त्यां कर्मबन्ध होय नहि कारण के
कर्मबन्धनां हेतु मिथ्यात्वादि ते स्वधर्ममां वर्तता
लागु थाय नहि. अने पोते पोताना धर्मे वर्तता
परधर्मी जे पुद्गलादि कर्म एटले कारमण वर्गणा
ते रही शके नहि. जेम आपणे घरे घणा लोको
पोताना काम अर्थे आवे पण आपणे काममां
होइये त्यारे तेने बोलावीए नही एटले तेओ
तेने स्वभावे पाछो जाय तेम आपणे आत्मोप-
योगे रमिये त्यारे वर्गणाओ कोनी साथे बेसे?
एतो एनी मेळे सर्वे नाश पामे एमां कंइ
संदेह नहीं अने भगवतीजीने विशे निर्जरा
एवुं नाम आत्मानुं छे एटले आत्मा नीज घरमां
रमे एटले निर्जरा थाय अने एम न होय तो
ऐवंता मुनि केवल ज्ञान पाम्या ते स्या थकी
पाम्या. अहीं क्रिया तप कंइ छे नहीं एनी बाल
अवस्था छे एटले आठ वर्षनी उमर छे ए अ-
धीकार भगवतीजी तथा अन्तगड दशाङ्गांथी

जाणवुं तथा प्रश्नचन्द्र राजरुषि क्षण एक पहेला तो सातमी नर्कनां दल मेलवेलां हतां तो तेना दलनो क्षय करीने केवल ज्ञान पाम्या क्रिया कष्ट तो पूर्वे हतुं तेथी सातमी नरकनां दरवाजा मेलव्यां तो क्रिया कष्टनुं कंइ उपज्युं नहीं अहीं तो ज्ञानभाव रूप लाग्यो एटले उपयोग करतां श्रेणिआरोहणकरीने कर्मदल क्षय करी केवल ज्ञान पाम्या एम अनन्ता साधु मोक्षे गया जाय छे अने जशे ते सर्वे ज्ञाननुं बळ जाणवुं माटे ज्ञान सहीत जे पुरुष तेने कर्मनी निर्जरा समुद्र जेटली थाय एटले ज्ञानीनी क्षण घणी सारी छे पण अज्ञानीनो भव रूपनो नथी अने जे निर्जरानुं थवुं एतो ज्ञान उपयोगमां रह्युं छे कारण के समकित गुणस्थानथी मांमीने यावत सिद्धि वरवुं त्यां सुधी निर्जरा थाय ते अंशे अंशे समजवी सिद्धिवर्या एटले सम्पूर्ण निर्जरा थइ चुकी अने गुणस्थान चोथाथि मांडीने विशुधिपणे जेटलो जेटलो आत्मोपयोगे चढतु चढतु तेने गुणस्थान कहेवाय अने त्यां त्यां आवरण तेटलां तेटलां अधिक टलतां जाय ते माटे उप-

रचुत्र कर्णो नाणकजनंच आणाए.

इति सप्तम गाथार्थ.

उपदेश पद ग्रंथे ए जाख्युं,
तेह विचारीने जोजोरे ॥
सर्व आराधक जगवइए ज्ञानी.
देश आराधक क्रिया करजोरे ज्ञान० ॥८॥

आ गाथामां कह्युं के उपदेश पद ग्रंथे जो जो ते पूर्व सातमी गाथाना अर्थे कही गया ते विचारी जोजो एटले समजमां आवशे पूर्वार्धना वे पदनो अर्थ आगलनी गाथामां कह्यो हवे उत्तरना वे पदनो अर्थ एम छे के ज्ञानी सर्वथी आराधक अने क्रिया देशथी आराधक तेनो खुलासो एम छे केः—जगवतीजीना दसमा सतकना विश आराधक अण आराधकना चार प्रश्न श्री गौतमस्वामीए पुछया अने जगवान श्री वीरस्वामी उत्तर आपे छे ते आ प्रमाणे छे.

प्रथम प्रश्न पुछयुं के क्रियावालो आराधक के विराधक वीजु प्रश्न ज्ञानी आराधक के विराधक त्रीजु प्रश्न ज्ञानक्रिया सहित आराधक के विराधक चोथु प्रश्न ज्ञान क्रिया रहित आराधक

के विराधक एवी रीते चार प्रश्न पुछया तेनो जे उत्तर दीधो ते बताविये छिये पहेला प्रश्नमां क्रियानो करनारो देशथी आराधक ने सर्वथी विराधक बीजु प्रश्न ज्ञानी छे अने क्रिया नथी ते सर्वथी आराधक अने देशथी विराधक, त्रीजु प्रश्न जे ज्ञान क्रिया सहित ते सर्वथी आराधक विराधक नथी चोथु प्रश्न ज्ञान क्रिया रहित ते सर्वथी विराधक आराधक नथी हवे तेनो विशेष खुलासो निचे मुजब छे.

क्रियाना करनारापर भावरंगी थया एटले पुद्गल भावने विशे राग छे जेने तेने पर भावरंगी कहे छे एटले बाह्य क्रिया, कष्ट, तप, व्रत, नेम उपर राग रह्यो पण तेने आत्म स्वरुपनुं जाणपणुं करवानो राग नथी फक्त क्रिया उपर बाह्य द्रष्टि थयो तेने बहीरात्मा कहे छे तेना आत्मानुं कल्याण थाय नहीं एतो चारे गती संसारमां रखडे अहीं कहे के एने देश आराधक कह्यो छे अने तमो भव भ्रमण बतावो छो तेनो उत्तर के भगवाननी आज्ञा प्रमाणे व्यवहारे अशुभ आचरण तजीने शुभ प्रवर्तीये चाले

ठे तेथी तेने देश आराधक कह्यो पण निश्चय अपेक्षाये आत्माने जाण्यो ओळख्यो नथी ते जोतां आराधक नथी कारण के व्यवहारे आज्ञा प्रमाणे अज्ञानी चाले तेने देश आराधक कह्या अने समकित धारी जिव आज्ञाथी एक जरा मात्र बहार पग्या तेने विराधक कह्या ते बसे ने ठ अध्यन (२०६) ज्ञाताजीना बीजा सुतस्कंधमां ठे ते (२०६) ए देवीओ चारनी कायनी थइ तेतो आज्ञा विरुद्ध केटलुं काम करे ठे. जे हाथ पग पखाल्या तेथी ए विराधक कही पण समकित सहित ठे. अने आवते भवे केइक मोक्षे जशे तो पण एने विराधक कहि ते सूर्य चन्द्र प्रमुख निराणीयो थइ एटला कारणे विराधक कहेवाणी तो अहीं व्यवहारथी ए सुत्र क्रिया पक्ष अपेक्षाए आराधक विराधक कहे ठे. पण पर्मार्थे जोतां आराधकपणुं ठे नहि वळी देश आराधक कह्या पण एना भावनो नेम बांध्यो नहि अथवा समकित पाम्या न पाम्या ते पण कह्युं नहि अने आ काळे जे क्रिया करे ठे ते आज्ञा प्रमाणे थती नथी शा माटे के बीजु तो ठेटे रह्यं

पण हायला [illegible]
वोने रहेवा [illegible]
केम के पूर्व [illegible]
तेना स्वामी [illegible]
हायमग [illegible]
" नवीशेजा नहीं [illegible]
अहींया तो [illegible]
जिरण रात्रानो [illegible]
धिकार नथी. ते [illegible]
अधिकार नथी [illegible]
सर्वथा साधुने मान [illegible]
शेप काळे मांग नहीं [illegible]
वर्षाकाळे रहेवानो अधि[illegible]
वनी उत्पत्ति रही होय [illegible]
हंसा थती होय एवुं [illegible]
वामीयुं विशेष रहेवानो [illegible]
साधु होय अथवा [illegible]
एवुं न होय तो [illegible]
रहीने वर्ष पुरु [illegible]
होय अने जंघा [illegible]

उपाश्रये जवानी शक्ति न होय तो एक उपाश्रयमां नव भाग कल्पे अने अकेको भाग वापरे बीजा भागने वापरे नहि. एम नव कल्प पूर्ण करे एवी रीतनी आज्ञाओ कल्प आश्रये छे तेमां आपणे शी आज्ञा पालीए त्रिये ते विचारी जो जो एटले समजासे के आराधकमां छु के विराधकमां छु कदापि कोइ क्रियाना आम्बरी वृद्ध तथा गलानपणा विना एक गाममां नव उपाश्रय कल्पीने रहे छे अथवा एक उपाश्रयमां नव भाग कल्पीने रहे छे ए सर्वे कपट क्रिया छे. लोकमां मनावा पुजावा माटे एवां काम करे ए आज्ञा विरुद्ध छे तो विचारी जुवो के शी रीते आराधक थाय अने देश आराधक अही कह्या छे तो देशनाम किन्चितनुं छे एटले आखएडमां देश ते किन्चित मात्र वस्तु छे ते आराधकपणामां शुं कल्याण थाय. अहि कोइ कहे के ज्ञानीने आराधक कह्या ते पण तेवुंज के नहि तेनो उत्तर ज्ञान तो सब्दनयनि प्राप्तिये आतम धरम छे. अने ए नयनि प्राप्ति अभावे रजुसुत्रनय सुधि ज्ञान होय तेनेज अज्ञान कहे छे

वळी अज्ञाननुं नाम मिथ्यात्व छे त्यां सुधि ज-मत्व द्रष्टि छे एटले कायाने विशे चेतनपणानि भ्रांति छे यथार्थ रीति दीठि नथी परन्तु रुजुसुत्र-नय सापेक्ष द्रष्टिये सब्दनयनुं कारण छे ते कारणे कार्यरुप शब्दनय पाम्यां अनुभव प्रगटे स्वस्वरुप अनुभवे त्यारे सम्यक् ज्ञान कहेवाय त्यां जड-चेतननो विभाग एटले जुदापणुं व्हेचणपुर्वक थाय जडसत्ता, चेतनसत्ता, भिन्नभावे सर्मकि-तपणे निर्धार श्रद्धापुर्वक निश्चल थाय त्यां स-मजे के आत्म सत्ताये शक्तिभावे तिरोभावीपणे गुणपर्यायादि अनन्तो धर्म रह्यो छे तेमांथी व्य-क्तिभावे प्रगट थाय ते म्हारो धर्म एम श्रद्धा छतां एने कंइ दुषण लागतुं नथी कारण के ए आत्मानो मूळ स्वभाव सत्वस्तु छे तेने बाह्य क्रिया वळगाम्वी ते कल्प आश्रव छे एटले क-ल्पनी मर्याद राखवा आपणा शासननी ओळ-खाण शाननने दीपाववा माटे छे. वळी कल्प तो अनेक रीतना छे. जे वस्तुनी एकमां हा पाडी ने बीजामां ते वस्तुनी ना पाडी छे. जेम पंच नुमती त्रण गुपनी ब्रह्मचर्य इत्यादिनी पुष्टी सर्व

शास्त्रमां छे अने नगवतीजीने विशे पण तेनी पुष्टी छे. अने तेना पाळनाराने आराधक गाम गाम कह्या छे अने तेज नगवतीजीने विशे तेना पाळनारने विराधक कह्या छे. कल्पनो एक पक्ष नथी केमके साधुने आहारने विशे दूषण लगावे तो ते साधु नरके जाय एवुं दश वैकालीक कहे छे. अने नगवतीजी कहे छे के चारीत्रनो विराधक त्रुवनपतिथी नीचो जाय नहीं अने सुधर्म देवलोकथी उपर जाय नहीं तेमज सुकमणा साधवी बीजे देवलोके गइ ते चारित्र विराध्या छतां गइ तथा ईशान इंडनी आठे अग्र महिषीओ चारित्र विराधीने बीजे देवलोके गइ तो अहियां कल्पनो एक पक्ष मानतां विरोध आवे एटले तेने मिथ्यात्व लागे. तथा समकित धारी जीव देवलोकथी नीचु आयुष्य बांधे नहि. जो प्रथम बांध्युं होय तो ते गतिमां जाय नहि तो अवश्य देवलोक विना बिजु न बांधे तो श्रावक विराधक त्रुवनपती तथा व्यन्तरमां जाय तेथी उपर न जाय अने नीचो न जाय ते वचननुं मळवुं कसे ठेकाणे छे कारण के साधु तथा श्रा-

वक विरतिपणाथी विराधक थया पण समकित गुण तो गयो नथी अने नरक बतावे छे अथवा जुवनपति व्यंतरज्योतिषि बतावे छे. तेनी शी रीत छे ते विचारी जुओ कल्प तो अनेक तरेहना छे माटे कल्प उपर एकान्ते भरोसो राखवो नहि. अने जे आहारनुं दूषण कह्युं हतुं ते पण सुगमाङ्गने विशे आधाकरमी आहारना दोष गणता नथी ते माटे ते कल्प आश्रये गाथाओ सुगमाङ्गजिनी पूर्वे लखी गया छिये तथा आवश्यकने विशे आधाकरमी आहार नित्यपिंड, सध्यातरपिंड, राजपिंड इत्यादि कारणे छुटी छे तथा कल्पसूत्रने विशे बहुश्रुतने कंइ कल्पनो नियम राख्यो नथी. इत्यादि शास्त्र विचारी जोशो तो खबर पडशे माटे क्रियाने देशआराधक कही ते व्यवहारआज्ञा आश्रये छे, बीजो परमार्थ मालुम पडतो नथी पडी तत्वतो केवली जाणे. अने ज्ञानीने सर्वथी आराधक कह्या छे, एटले ज्ञानी तो स्वस्वजावना रमणीक, अने परजावना त्यागी छे, ते ज्ञानीपणुं जेने आत्म स्वरुपनुं जाणपणुं अने रमणता श्रद्धा सहित होय तेने ज्ञानी

कहिये. ते पुद्गलनो अनुभव करे नहि एटले पुद्गलभावनो भोगि न थाय, जे जे करणि करवी तेनो पुद्गलीक छे. अने पुद्गलभाव विनाशी छे ते आत्माने गुण करता नथी. ए तो आत्माथी भिन्न पुद्गल द्रव्य छे तेथी आत्मानुं कल्याण थाय नहि; अथवा ते द्रव्य मळीने पण आत्मकार्य थाय नहि. विनाश चहेतण थयां एक आत्मअनुभवथी कार्य थाय एवुं सुमति प्रमुख ग्रन्थोमां कह्युं छे. माटे पुद्गल तो पुद्गलनुं कार्य करशे एटले पुद्गल पुद्गलने मेळवशे. जो शुभ करणि करशे तो शुभ कर्मबन्ध थशे. अशुभ करणी करशे तो अशुभ कर्मबन्ध थशे; एटले अशुभथी नरक तीर्यचादि गती मळशे अने शुभ करणिथी देव मनुष्यनी गती मळशे त्यां शुभाशुभ भोग मळशे ते सर्व पुद्गल छे, आत्मानुं हित तेमां छे नहि. ए तो सर्व जगतनी एंठ छे एटले अनन्ता जीव पुदगल ग्रहीने वम्या छे एटले अकेके जिवे ए पुद्गल सर्व अनन्ती वार ग्रहण करी करीने वम्या छे तथा सिद्ध जिव अनन्ता ते पण वमीने गया छे माटे ते जगतनी एंठ कहेवाय अने ज्ञानी एंठनो चाखनार न होय, अ-

ज्ञानी होय ते चाहे ए पुद्गलनो अनुभव ज्ञानीने घरे छे नहि तेतो एक आत्मानो अनुभव करे छे एटले आत्मस्वरुप ज्ञानदर्शन चारित्र सहित तेने आत्मा कहिये अथवा भीन्न कल्पनाए भिन्न पणे ज्ञानदर्शन चारित्रनो अनुभव करे ते भेद ज्ञान कहेवाय. पण त्यां अशुद्ध उपयोग छे अने अभेद अनुभव करवो ते शुद्ध उपयोग छे ते विचार पूर्वे नय अधिकारने विशे कह्यो छे तेथी जाणजो. एम अंतर आत्मानुं लक्षण जे जीवमां छे ते ज्ञानी कहेवाय. बहिरात्मानुं लक्षण जे जीवमां छे ते अज्ञानी कहेवाय. एटले बहिरात्मा ते बाह्य क्रियारागी तेने देशथी आराधक कह्या ते व्यवहार आज्ञा आश्रये जाणवा अने ज्ञानीने सर्वथी आराधक कह्या ते आत्मअनुभव आश्रये निश्चयथी जाणवा. एटले ए आठमी गाथानो अर्थ संक्षेपथी कह्यो.

द्रव्यादिक ज्ञान जे पाम्या, समकित शुद्ध तस कहीएरे,तेह ज्ञानी पर्मे नही पावा, एवुं माहानिशीथे लहीएरे. ज्ञान० ९ अर्थ–जे जीव अजीवादि द्रव्यनुं स्वरुप जाणे ते ज्ञानिने समकित शुद्ध होय ते

ज्ञानी समकितथी पाग पमे नहि एवुं महानिसिथ सूत्रमां कह्युं छे. द्रव्यादिकनुं जाणवुं एटले षद्रव्यनुं जाणपणुं जेने छे तेने ज्ञानी कह्या छे. ते षट द्रव्यना नाम कहे छे. धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय ५ अने काल ६ ए षद्रव्यनुं जेने जाणपणुं होय ते ज्ञानी. हवे ते षट्द्रव्य मध्ये पुद्गलास्तिकायनी ओळखाण प्रथम करवी जोइए. अहीं केहेशे के जीवद्रव्यनी ओळखाण करवी जोइए, पुद्गल द्रव्यनुं शुं काम छे तेनो उत्तर के जीव द्रव्य तो अमुर्त छे ते द्रष्टीगोचर छे नहि एतो भगवानना वचनथी सर्दहवानुं छे. अथवा विशेष जाणपणुं थाय तेने पोताना ज्ञानवडे समज्यामां आवे पण प्रथम जीवद्रव्यने ओळखवा जाय तो नहि ओळखाय. केमके अरुपी पदार्थ छे माटे प्रथम रुपीद्रव्यने यथार्थ ओळखवो जोइए तो अरुपी पण उळखाय ते विना अरुपी उळखाणमां आववो मुस्केल पडे. जे प्रत्यक्षरुपी पुद्गल द्रव्य छे तेने यथार्थ समजतां घणी महेनत छे अने प्रतक्ष छए दर्शनवाळा एनां स्वरुप जुदा

जुदा बांधे छे पण एकसरखु बंधातुं नथी तथा जैन दर्शनने विशे दिगम्बर. श्वेताम्बरना मानवामां केटलीक स्वरूपने विशे भिन्नता पडे छे. तथा श्वेताम्बर पदना पंडितोना वांचवामां पण भिन्नभाव पडे छे केमके पुद्गलद्रव्य समजवो ते सहज नथी कारण छे. माटे आत्म स्वरूप अरूपी पदार्थ होवाथी तुरत समजवामां आवे नहीं माटे प्रथम पुद्गलद्रव्यनुं जाणपणुं करवुं जोइए. तो आत्मद्रव्य सुखे समजवामां आवे. माटे अहीं पुद्गलद्रव्यनुं स्वरूप संक्षेपथी कहे छे ते तमे ध्यान पूर्वक एकाग्र चित्ते धारशो अने तेमां रमणता करशो तो तमने एटले श्रोता तथा वक्ताने घणो फायदो थशे हवे जे पुद्गलनो अधिकार ते वर्णादिक तथा संस्थान अवगाहना तथा स्थिति साथे कहेवाशे. पुद्गलद्रव्यनी मूळ वर्गणा आठ छे तेनां नाम–औदारीक १ वैक्रीय २ आहारक ३ तैजस ४ भाषा ५ स्वासोस्वास ६ मन ७ कार्मण ए आठ भेद छे. वळी ते पुद्गलद्रव्य बे प्रकारे छे एक १ जीव सहीत अने बीजा २ जीव रहित. अहीं तो पुद्गलद्रव्यनुं कहेवुं छे परन्तु जीव रहितनी

अपेक्षाए विवक्षा (वर्णन) करतां जीव सहितनी अपेक्षाना वर्णननो अन्तर्भाव आवे तेम जीव सहितनी अपेक्षाए विवक्षा करतां जीव रहीत ए भेद पण उत्पन्न थाय कारण के अन्योअन्य अनादि सबन्धीछे अने इहां तो पुद्गल स्वरूपने ओळखाववुं छे. तेथी सवन्ध बन्नेनो ज्यां जेनो खप हशे त्यां ते आवशे ते समजी लेवुं. हवे पुद्गलद्रव्यना मुल चार भेद-स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ अने परमाणुं ४ हवे स्कन्धनुं स्वरूप कहे छे-जे पुद्गल स्कंध छे तेना भेद त्रण छे. संख्यात् १ असंख्यात २ अनन्त ३ हवे संख्यातिक छे तेमां द्वि प्रदेशीय स्कंध अनंन्ता छे, त्र्यणुक प्रदेशिय स्कंध अनन्ता छे एम चतुष्क प्रदेशिय स्कंध अनन्ता छे एम यावत दश प्रदेशिय स्कंध अनन्त छे यावत संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध ते पण अनन्ता छे एख्ले अकेक प्रदेश वृद्धि करतां तेना संख्याना भेद थाय ते सर्व अनन्त छे एम उत्कृष्ट संख्याताथी एक परमाणु वृद्धि थाय एख्ले जघन्य असंख्यात प्रदेसिय स्कन्ध थाय अने उत्कृष्ट असंख्यात सुधी अकेक प्रदेश वृद्धि करतां तेना

असंख्यात भेद थाय ते सर्व भेदना स्कन्ध अनन्त छे तथा अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध ते अनन्ता छे एटले एक एक प्रदेश वृद्धि करतां अनन्ताना अनंता भेद थाय ते सर्व भेदना पुद्गल स्कन्ध अनन्ता छे. १ एक स्कन्धमांथी कींचित लइने पुछिये ते देश कहेवाय; २ अने जे स्कन्धना जेटला प्रदेश होय ते प्रदेश कहेवाय. ३ जे स्कन्धथि जुदा एकपणे रह्या ते परमाणुं कहेवाय. हवे प्रथम परमाणुं पुद्गलना स्थीति पर्याय कहे छे, तो परमाणु पुद्गलनी स्थीति जघन्यथी एक समयनी छे. अने उत्कृष्टथी असंख्यात काळनी छे एटले अहीं चतुस्थानक (चोभङ्गी) लाग एटले एक समयनी छे ते असंख्यातगुणी हीन छे. अथवा असंख्याताना असंख्यात काळभेदमांथी एक समयने आदिदइने उणी (ओछी) होय तो संख्यात भाग हानि अथवा संख्यातगुणी हानि होय अथवा जेने संख्यातमो भाग न लागे तेने असंख्यात भाग हानि कहे छे एम चार हानिनां अने चार वृद्धिनां स्थान लागु थाय तेथी तेने चतुस्थान पतित कहिये. तेमज द्वीप्रदेशिय स्कन्धथी संख्यात

परदेशिय स्कन्ध एम असंख्यात प्रदेशिय स्कन्धथी अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध सुधी होय. अहीं एक परमाणु पुद्गलमां अनंता पर्याय रह्या छे त्यां कोइ पुछे के एक परमाणुमां अनंता पर्याय ते शुं छे? तेनो उत्तर के द्रव्यथी तो एकज छे अने प्रदेशथी एने बीजा प्रदेश होय नहि पण तेमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे स्पर्श एम एक प्रमाणु पुद्गलमां पांच गुण होय अने अकेक गुणमां अनन्ता पर्याय रह्या छे तेने विशे षट गुणी हानि वृद्धि लागे तथा एक परमाणु पुद्गल अन्य एक परमाणु पुद्गल साथे द्रव्यार्थे तुल्य छे केमके एक द्रव्य छे तेथी अने प्रदेशार्थे पण तुल्य कहेवा कारण के एक प्रदेश छे तथा अवगाहनानी अपेक्षाए तुल्य छे कारण के एक प्रदेश बंनेनी अवगाहना छे अने स्थीति आश्रये कोइनी स्थीति हीन होय. १ तुल्य होय २ अधिक होय ३ जो हीन होय तो असंख्यात भागे हीन होय अथवा संख्यात भागे हीन होय अथवा संख्यातगुणी हीन होय अथवा असंख्यात गुणीहीन होय अथवा अधीक होय तो

४ असंख्यात गुणो अधीक ५ अनन्त गुणो अधीक ६. एम षट्गुणी हानि वृद्धि लागे. माटे तेने षट्स्थान पतित कहिये. एमज काळा वर्णनुं कह्युं ते प्रमाणे रातो १ पीळो २ लीलो ३ धोळो ४ ए सर्वमां ते प्रमाणे जाणवुं. एम गन्ध बे तेने विशे तथा रस पांच मधुरादिने विशे तथा स्पर्श चार ४ (आठ मधेना) सीत १ उष्ण २ स्निग्ध ३ अने रुक्ष ४ ए चार स्पर्श ए सर्वने विशे (छ-ठाणवडीआ) छ स्थान लागे एटले जेम परमाणुनुं कह्युं तेम सर्व स्कन्धनुं समजवुं. त्यां कहे के तमे आठ स्पर्शमांथी चार स्पर्श ग्रहण कर्या. अने चारने पड्या मुक्या तेनुं कारण शुं अने स्कन्धमां तो ८ आठ स्पर्श होय ते अहीं ग्रहण केम न कर्या? तेनो उत्तर के एक परमाणुमां तो बे स्पर्श होय तथा द्वि परदेशिय स्कन्धथी संख्यात प्रदेशिय तथा असंख्यात प्रदेशिय स्कन्ध सुधी चार स्पर्श होय अने अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध छे तेमां केटलाक स्कन्ध तो चतु स्पर्श छे माटे अहीं समुदायना कारणथी चतुस्पर्शनुं वर्णन कर्युं अने अनन्त प्रदेशि स्कंध उपला जे

रह्या तेने आठ स्पर्श ठे हवे जे द्वि प्रदेशिय स्कन्ध ठे तेने विशे अनन्त पर्याय छे ते द्वि प्रदेशिय स्कन्ध अने बीजा द्विप्रदेशिय स्कन्ध माथे द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अने अवगाहनार्थे कोइ हीन १ कोइ तुल्य २ कोइ अधिक ३ हीनते एक प्रदेशे हीन अधिक ते एक प्रदेशे अधीक. हवे जे द्वि प्रदेशि अवगाढ तेथी एक परदेशे अवगाढ ते हीन अने एक प्रदेशि अवगाढथी द्विप्रदेशि अवगाढ ते अधिक अने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श ते उपर कहेला सीत १ उष्ण २ स्नीग्ध ३ रुक्ष ४ ए षट्स्थान पतित कह्या ठे, उपरना चार स्पर्शना नाम कर्कश १ मृदु २ गुरु ३ लघु ४ ए चार पर्याय अहि होय नहि एम त्रण प्रदेशिय स्कन्धमां कहेवुं पण एटलो विशेष के त्रण प्रदेशिय स्कन्धने विशे अवगाहना अधिकारे एक प्रदेश अवगाढ द्विप्रदेशि अवगाढ एम त्रण प्रदेशि अवगाढ एटले समजवानुं के त्रण प्रदेशिय स्कन्ध अने त्रण प्रदेशिय स्कन्धनी साथे द्रव्यार्थे तुल्य, प्रदेशार्थे तुल्य अने अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अ-

धिक जे हीन ते एक प्रदेशेहीन, कोइ बे प्रदेशे हीन अधिक ते कोइ एक प्रदेशे अधिक कोइ बे प्रदेशे अधिक एम एनी स्थापना शामग्री जाणवी ए सर्व बे स्थान पतीन छे वर्णादि सर्व छ स्थानपतित छे ते पूर्वनि पेरे जाणवुं, एम यावत दश प्रदेशिय स्कन्ध सुधी अवगाहनार्थे जेटला प्रदेशनो स्कन्ध तेटला प्रदेशनी हानि वृद्धि करवी जे नव प्रदेशनो स्कन्ध अने बिजो नव प्रदेशनो स्कन्ध तेने विशे द्रव्यार्थे, प्रदेशार्थे तुल्य कहेवो, अवगाहनार्थे कोइहीन कोइ तुल्य कोइ अधिक जे हीन ते कोइ एक प्रदेशेहीन कोइ बे प्रदेशेहीन एम यावत् कोइ आठ प्रदेशेहीन एम जे अधिक होय तेने विशे कोइ एक प्रदेशे अधिक कोइ बे प्रदेशे अधिक यावत् आठ प्रदेशे अधिक एम दश प्रदेशिय स्कन्ध होय तेने विशे द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे तुल्य होय अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अधिक, जे हीन ते कोइ एक प्रदेशेहीन, कोइ बे प्रदेशेहीन, यावत् नव प्रदेशेहीन एम अधिक होय ते कोइ एक प्रदेशे अधिक, कोइ बे प्रदेशे अधिक यावत् नव प्रदेशे

अधिक एम संज्ञाए अवगाहनार्थे हानि वृद्धि करवी ते सर्व द्विस्थानपतित छे अने वर्ण १ गन्ध २ रस ३ स्पर्श ४ तेने विशे षट्स्थानपतित छे, उपरना चार स्पर्श विना कहेवुं, एम संख्यात प्रदेशिय स्कन्धने विशे अनन्तापर्याय कह्या छे. ते कहिये छिये–संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध संख्यात शा माटे जे संख्यातिक द्रव्यना संख्याताभेद होय तेथी अधिक न होय ते माटे द्विस्थानपतित कह्या तेवा तेवा प्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य अने कोइ अधिक जे हीन ते संख्यात् भागहीन १ संख्यातगुणोहीन २ अधिक ते संख्यातभाग अधिक ३ संख्यातगुणो अधिक ४ एम अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य अने कोइ अधिक जे हीन ते संख्यात भागहीन १ संख्यात गुणोहीन २ अधिक ते संख्यातभाग अधिक, संख्यातगुणो अधिक एम ए द्विस्थानपतित् होय अने वरणादि छ स्थानपतित होय. उपरना चार स्पर्श विना कहेवुं. असंख्यात परदेशिय स्कन्ध छे तेने विशे अनन्ता पर्याय कह्या छे. असंख्यात प्रदेशिय

स्कन्ध अन्य असंख्यात परदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन १ कोइ तुल्य २ अने कोइ अधिक ३ जे हीन ते कोइ द्रव्यना प्रदेश असंख्यात भाग हीन १ कोइ संख्यात भाग हीन २ कोइ संख्यात गुणो हीन ३ कोइ असंख्यात गुणो हीन ४ जे अधिक ते कोइ असंख्यात भाग अधिक १ कोइ संख्यात भाग अधिक २ कोइ संख्यात गुणो अधिक ३ कोइ असंख्यात गुणो अधिक ४ एम अवगाहनार्थे पण हीन १ तुल्य २ अधिक ३ प्रदेशार्थनी पेठे कहेवुं. ए चतुस्थानपतित छे कारण के असंख्यातिक द्रव्यना प्रदेशनी अवगाहना असंख्यात भेदे छे माटे तेने चतुस्थान पतित कहिये. पूर्वनी पेठे हवे अनन्त प्रदेशिय स्कन्धने विषे अनंता पर्याय छे ते देखाडीए छीए. अनन्त प्रदेशीय स्कंध अने अन्य अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन १ कोइ तु-
[illegible] २ [illegible] प्रदेश
[illegible] अमं-

ख्यात भागहीन २ कोइ संख्यात भागहीन ३ कोइ संख्यात गुणोहीन ४ कोइ असंख्यात गुणोहीन ५ कोइ अनन्त गुणोहीन ६ एम कोइ अधिक ते अनन्त भाग अधिक १ कोइ असंख्यात भाग अधिक २ कोइ संख्यात भाग अधिक ३ कोइ संख्यात गुणो अधिक ४ कोइ असंख्यात गुणो अधिक ५ कोइ अनन्त गुणो अधिक ६ एम षट्स्थान पतित छे कारण के अनन्त प्रदेशिय स्कन्धना अनन्ता भेद छे माटे षट्स्थान पतित होय. जेम ए परदेशार्थे कह्युं, तेमज अवगाहनार्थे न होय कारण के अवगाहना आकाश प्रदेशनी छे अने आकाश प्रदेश लोकने विशे असंख्याता छे अने पुद्गलनुं स्थान लोकमां छे अने लोकनो आकाश षट्स्थानपतित नथी ते माटे अहियां चतुस्थानपतित होय वर्णादि सर्व षट्स्थानपतित छे स्थीति सर्व स्कन्धनी चतुस्थानपतित छे. हवे स्थीति आश्रये भाव देखाडिये छिये. एक समयनी स्थीतिना जे पुद्गल स्कन्ध तेने विशे अनन्तपर्याय छे एटले एक समयनी स्थीतिना जे पुद्गल स्कन्ध ते अन्य एक

समयना पुद्गल स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य, अने प्रदेशार्थे पट्स्थानपतित होय अने अवगाहनार्थे चतुस्थानपतित होय स्थीति तुल्य होय वर्णादि छगाणवमीआ होय तेम यावत् दस समयनी स्थीतिने वली संख्याता समयनी स्थीति सुधि एमज कहेवुं. पण एटलो विशेष के स्थीति द्विस्थानपतित होय. जे स्थानके पट्गुणीहानि वृद्धि पुर्वे कही गया छिये ते प्रमाणे समजजो असंख्यात समयनी स्थीतिना जे पुद्गल स्कन्ध तेने एमज कहेवुं. पण एटलो विशेष के स्थीति चतुस्थानपतित होय एटले ते स्थीति आश्रये कह्युं. हवे वर्णादि आश्रये कहिये छिये. अकेका वर्णने विशे अनन्त पर्याय रह्या छे तेमां प्रथम काला वर्णने लइने कहिये छिय एटले एक गुणोकालो पुद्गल अने अन्य एक गुणाकाला पुद्गल साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे पट्स्थानपतित होय अने अवगाहनार्थे चतुस्थानपतित होय अने स्थीति चतुस्थानपतित होय अने कालावर्णने कालावर्णना पर्याय पणे तो तुल्य होय अने बाकी जे चार वर्ण तथा

गंध १ रस २ स्पर्श ३ रह्या तेना जे पर्याय तेने विशे षट्स्थान पतित होय एम यावत् दशगुणा-काळा सुधी कहेवुं अने जे संख्यातगुणा काळा वर्णना पुद्गल छे तेने एमज कहेवुं पण एटलो विशेष के काळावर्णना जे पर्याय छे तेने विषे द्वी स्थान पतित कहेवुं. बाकिना वर्ण रसादि जे पर्याय छे तेने विशे षट्स्थानपतित कहेवुं बाकी सर्व पुर्व पेठे. एम असंख्यात गुणकाळा वर्णना जे पुद्गल छे तेने विशे एमज कहेवुं पण एटलो विशेष के जे स्थाने काळावर्णना पर्याय छे तेने विशे चतु-स्थान पतित कहेवुं. बाकिना वर्ण रसादि जे पर्याय छे तेने विशे षट्स्थानपतित कहेवुं. एम अनन्त-गुणा काळावर्णना पुद्गल छे तेने विशे सर्व पुर्वनी पेठे कहेवुं पण एटलो विशेष के जे स्थाने का-ळावर्णादि पर्याय छे ते षट्स्थानपतित छे एटले ए काळावर्णनी व्याख्या कही तेमज काळावर्णनी पेठे रक्तत्वादि वर्णने विशे सर्व वक्तव्यता कहेवी पण प्रत्येक वर्णना स्थानके सहुसहुना वर्ण कहेवुं, नाम जे वर्णनुं होय तेज कहेवुं, एटले ए वर्णनो अधिकार कह्यो. एम गंधनो अधिकार तथा र-

सनो अधिकार तथा स्पर्शनो अधिकार कहेवो. सर्वे ए प्रमाणे जाणवुं. हवे जघन्य तथा उत्कृष्ट अवगाहना आश्रये कहिये छिये. जे जघन्य अवगाहना तो द्विप्रदेशिय स्कन्धनी छे तेने विशे अनन्तपर्याय रह्या छे ते कहिये छिये. जघन्य अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध, अने अन्य जघन्य अवगाहनाना द्विप्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे तुल्य स्थीतिपणे चतुस्थानपतित छे वर्णादि आश्रये षट्स्थानपतित छे उपरना चार स्पर्श न कहेवा एटले असंख्यात प्रदेशिय स्कन्ध लगे तो चार स्पर्शज होय एटले ए जघन्य अवगाहना द्विप्रदेशिय स्कन्धने विशे अनन्तपर्याय कह्या हवे एमज उत्कृष्ट अवगाहनाना द्विप्रदेशिय स्कन्धमां पर्याय अनन्ता जाणवा ए जघन्य उत्कृष्ट अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध तेमां जघन्य अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध तेनो एक प्रदेशि अवगाह होय अने जे उत्कृष्ट अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध छे ते द्विप्रदेशिय अवगाह होय एक १ अने बे २ बचे अन्तर नथी तेथी द्विप्रदे-

रीते देखाके छे जे चतुप्रदेशिय स्कन्ध अने ज
धन्य अवगाहना करे तो आकाशना एक प्रदेश-
ने अवगाही रहे तेने जघन्य अवगाहना कहिये
जे उत्कृष्ट अवगाहनानो स्कन्ध चतुप्रदेशिय
ते आकाशना चार प्रदेश अवगाहीने रहे तेने
उत्कृष्ट अवगाहना कहिये हवे जे अवगाहना
जघन्य नथी अने उत्कृष्ट नथी तेने मध्यम अ-
वगाहना कहिये ते चतुप्रदेशिय स्कन्ध आकाशना
बे प्रदेशने, अवगाहे कोइ त्रण प्रदेशने अवगाहे,
एटले ते एक प्रदेशे अधिक न्युन थइ माटे तेने
अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना कहिये, ए रीते
आगळ सर्व भावने विशे जाणी लेवुं. यावत्
दश प्रदेश सुधी कहेवुं एटले जघन्य अवगाहनानो
दश प्रदेशीय स्कन्ध छे, ते आकाशनो एक प्र-
देश अवगाहे तेने जघन्य अवगाहना कहिये.
जे उत्कृष्ट अवगाहनानो दश प्रदेशिय स्कन्धते
दश प्रदेशने अवगाहे जे अजघन्य अनुत्कृष्ट अ-
वगाहनानो दस प्रदेशिय स्कन्ध, ते बे प्रदेशथी
मांडीने नव प्रदेश सुधी अवगाहे तेने स्थान प्रदे-
शनी हानि वृद्धि कहिये, ए अजघन्य अनुत्कृष्ट

अवगाहना कही. हवे संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावालो तेने विशे अनन्ता पर्याय छे, हवे संख्यात् प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावालो तेथी संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावालो ते द्रव्यार्थे तुल्य, प्रदेशार्थे द्विस्थान पतित होय अने अवगाहनार्थे तुल्य होय अने स्थीति चतुस्थान पतित होय वर्णादि सर्व षट्स्थान पतित होय तेमज उत्कृष्ट अवगाहनाना संख्यात् प्रदेशियने जाणवुं, अजघन्य अजत्कृष्टने तेमज कहेवुं, पण एटलो विशेष के अवगाहनार्थे द्विस्थान पतित होय, तथा असंख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अवगाहनावालाने अनन्ता पर्याय छे ते असंख्यात प्रदेशिय जघन्य अवगाहनावालो अने अन्य असंख्यात प्रदेशिय जघन्य अवगाहनावाला स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य, प्रदेशार्थे चतुस्थान पतित छे अवगाहनार्थे तुल्य अने स्थीति चतुस्थान पतित छे, वर्णादि सर्व षट्स्थान पतित छे. तेमज उत्कृष्ट अवगाहनावाला असंख्यात प्रदेशिय स्कन्धने जाणवा, अजघन्य अजत्कृष्ट अ-

वगाहनाना असंख्यात प्रदेशिय स्कन्धने तेमज जाणवो, पण एटलो विशेष के ते अवगाहनार्थे चतुस्थान पतित छे. हवे जे जघन्य अवगाहनानो अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध, तेने विशे अनन्ता पर्याय रह्या छे ते देखाडिये छिये. जे जघन्य अवगाहनानो अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध अने बीजा जघन्य अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे षट्गुणी हानि वृद्धि लागे, अवगाहनार्थे तुल्य स्थीति आश्रये चतुस्थान पतित छे अने वर्णादि आश्रये षट्स्थान पतित छे, एटले ए जघन्य अवगाहनानुं कह्युं तेमज उत्कृष्ट अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय स्कन्धमां जाणवुं तथा अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय स्कन्धने विशे एमज जाणवुं, पण एटलो विशेष के अवगाहनार्थे षट्स्थान पतित जाणवुं, इत्यादिक पुद्गलद्रव्यनु वर्णन कर्यु. इहांकोइ पुछेके उपर गवेषु तेमां आठ स्पर्शि 'पुद्गल स्कन्धनी वाख्या आवी नही' तेनो उत्तर के पुद्गलनी आठ वर्गणा छे तेमां 'प्रथमनी' चार वर्गणा 'बादर' कही

गाथामां कहे छे. इति गाथा ए नो अर्थ सम्पूर्ण.

कदापि जो कर्म उदयथी,
मिथ्यात्व पाछुं आवेरे ॥
तो पण सागर कोडाकोडी उपर,
बंध एहने न होवेरे. ज्ञान० १०.

अर्थः—हवे कदापि जो कर्म उदयथी एटले पूर्वक्त मिथ्यात्व मोहनी कर्मदल ते सत्ताए रहे छतां ज्ञानी थया पछी उदय आवे अने जीवनी सक्ति मरोभाय तेथी मिथ्यात्व गुणठाणे जाय तो पण एक कोडाकोडी सागरोपम उपरान्त बन्धन पडे कारण के समकित पाम्या त्यारे एक कोडाकोडी सागरोपममां पल्योपमने असंख्यातमा भागे उणी स्थीति माने कर्मनी रही हती एटली ने एटली स्थीतिनां कर्म बांधे पण अधिक स्थितिनो बन्ध थाय नहि. समकित गुण प्राप्ति अवसरे जे स्थिती रह्यो हतो तेथी कदापि काले बन्ध स्थिति वधारे नहि. ॥ उक्तंच ॥ कहा वीती वचनात् ए अभिप्राय नंदिषेणने अधिकारे महानिषिथ सूत्रथी जाणवो एटले ज्ञान गुण ते अप्रतिपाति कह्यो छे तथा उत्तराध्ययन सुत्र मध्ये कह्युं छे.

उक्तंच—

गाथा.

सुइ जहास सुत्ताए,
एस्सई कयवरंमि पमियावि;
ईयजीवेवि ममुत्तोएं.
एस्सईश जवि संमारे. ॥ १ ॥

इत्यादि घणा शास्त्रोमां ज्ञाननुं अमति-
पातिपणुं कहे छे माटे ज्ञानी सर्वथा एक कोमा-
कोमी सागरोपममां, पल्योपमना असंख्यातमा
भागे न्युन एटली स्थितीना पमता भावे कर्म बांधे
अधिक न बांधे एवो अधिकार छे. अत्र ग्रन्था-
धिकार आश्रये किञ्चित् बन्ध प्रकृतिनो विचार
पन्नवणा सूत्रथी कहे छे, अहिं श्री गौतमस्वामीए
र भगवान् प्रत्ये पुछ्युं के केटली कर्म प्रकृति
त्यां भगवान् कहे ठे हे गौतम मूल आठ प्रकृ-
ठे तेनां नामः—ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणी-
२, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयुष ५. नाम ६
७ अने अन्तराय ८. ए आठ कर्म ठे ते मध्ये
ज्ञानावरणीय कर्मना उदय वमे, दर्शनावरणीय क-
उदय विशेष प्राप्त थाय; अने दर्शनावर-

णीय कर्मना उदयवमे दर्शन मोहनीय कर्मनो उदय प्राप्त थाय. अने दर्शन मोहनीय कर्मना उदयथी मिथ्यात्व पामे, अने मिथ्यात्व एटले तत्वने अतत्व जाणे अने अतत्वने तत्व जाणे ए मिथ्यात्वना उदयवमे आठे कर्मनो उदय प्राप्त थाय. एम उदय भोगवतां निश्चय करीने सात आठ कर्मनी प्रकृति बन्धाय छे. एम अनुक्रम जोतां ज्ञानावरणीयथी आठे कर्म बन्धाणां हवे आठे कर्मनो जे जे प्रकारे बन्ध पमे ते कहे छे. ज्ञानावरणीय केटले ठेकाणे बांधे तेना बे भेद. रागथी बांधे तथा द्वेषथी बांधे ते रागना बे भेद, (माया) ते कपट अने लोभ हवे द्वेषना बे भेद, क्रोध अने मान ए चार स्थानके जीवना प्राक्रम वमे उदेयांजे कर्म ते वमे करीने जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधे १ हवे दर्शना वरणीय कर्मथी लेइने यावत अंतराय सुधी पुर्वे कह्या जे राग, द्वेष तेथीज कर्म बंधाय छे, हवे ज्ञानावरणीय कर्म राग द्वेषने वश पडचो थको अत्यंत गाढापणुं बांध्युं ते आत्म परदेश साथे संकलीष्टपणे बंधाणां, यावत ते पुद्गल परमाणु प्रत्ये पामीने दस भेदे भोगवे,

श्रोत इंद्रीयना आवरणे १ श्रोत इंद्रीयनो उपयोग न लाधे २ चक्षु इंद्रीयना आवरणे ३ चक्षु इंद्रीयनो उपयोग न लाधे ४ घ्राण इंद्रीयना आवरणे ५ घ्राण इंद्रीयनो उपयोग न लाधे ६ रस इंद्रीयना आवरणे ७ रस इंद्रीयनो उपयोग न लाधे ८ फरस इंद्रीयना आवरणे ९ फरस इंद्रीयनो उपयोग न लाधे १० ते ते दसे स्थानकनां पुरुष प्रत्ये अथवा विशेष पुद्गल आदे दइने जे छेदाय भेदाय तथा अहार पाणी प्रमुख आदे दइने ए ज्ञानावरणीय कर्मना जोरथी जाणवामां न आवे अथवा जाणवा घणु वांछतो थको पण आवरणे करी न जाणे अथवा पुर्वे जाण्युं होय तेने पछे न जाणि सके ते ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी अथवा पुर्वे ज्ञानी कहेवाता हता ते पुरुष ज्ञानावरणीय कर्म उदय आव्याथी अज्ञानी कहेवाय एम्खे ते ज्ञानावरणीयना दस भेद अनुभववा आश्रये कह्या हवे दर्शनावरणीय कर्म बांध्युं तेना पुद्गल पामीने नव प्रकारे अनुभवाय छे तेनां नाम. निद्रा १ निद्रा निद्रा २ प्रचला ३ प्रच-

ला प्रचला ४ स्थीनद्धि ५ चक्षु दर्शनावरणीय ६ अचक्षु दर्शनावरणीय ७ अवधि दर्शनावरणीय ८ अने केवळ दर्शनावरणीय ए ए दर्शनावरणीय कर्म कह्युं हवे शाता वेदनीय जे जिवे बांध्युं तेना यावत ८ भेद भोगववाना कह्या छे मनगमता प्राण प्रमुख पामे १ मनगमतु स्त्रीआदिकनुं रुप पामे २ मनगमती सुगंध पामे ३ मनगमतो रस पामे ४ मनगमतो स्पर्शादि पामे ५ मननु सुख ६ वचननुं सुख ७ अने कायानुं सुख ८ एम शाता वेदनीय अनुभववी एटले पुष्पमाला, चंदनादि एम अनेक जातीनुं भोग ववुं तथा विशेपादि पुद्गल सीत उष्णादिकनुं भोगववुं पोताने अनुंकुल ते शाता वेदनीय कहिये अथवा मनोज्ञ शब्दादि सर्व स्वअनुकुल वर्ते तेने शाता वेदनिय कहिये तेमज अशाता वेदनीय कर्मने उदये करीने ए पुर्वे कह्या जे आठ भेद ते अकार सहित लक्षण एटले अमनोज्ञ कहिये ए सर्व उपरांठा भेद शाता वेदनीय कर्मथी जाणवा तेने अशाता वेदनीय कहिये एटले ए त्रीजु वेदनीय कर्म कह्युं.

हवे चोथुं मोहनीय कर्म तेनुं स्वरुप कहे छे जे मोहनीय कर्म जीवे बांध्युं तेने पांच प्रकारे भोगवे तेनां नामः-सम्यकत्व मोहनिवडे अनुभवे १ मिथ्यात्व मोहनिवडे अनुभवे २ मिश्र मोहनिवडे अनुभवे ३ कषायवडे अनुभवे ४ अने नोकषायवडे अनुभवे ५ ए पांच प्रकारे मोहनीय कर्मनुं अनुभववुं छे एख्वे मोहनीय कर्म कह्युं हवे आयुषकर्म जीवे बांधेलुं ते चार प्रकारे भोगवे तेनां नाम नारकीनुं १ तिर्यचनुं २ देवतानुं ३ अने मनुष्यनुं ४ ते शुभाशुभ वेदे ए आयुषकर्म कह्युं हवे नामकर्मनुं स्वरुप कहेछे शुभ नामकर्म जे जीवे बांध्युं छे ते जीव चौद प्रकारे अनुभवे तेनांनाम कहे छे. रुडो शब्द १ रुडुं रुप २ रुडो गंध ३ रुडो रस ४ रुडो स्पर्श ५ भली गति ६ रुडी स्थीति ७ रुडो लावण्य एख्वे शरीरनी शोभा ८ रुडी यश कीर्ति ९ रुडी शरीरनी चेष्ट बळवीर्य [illegible] जीवनु सामर्थ्य जे पुरुषाकार अथवा संग्रामने [illegible]शे बळनुं स्फुरावतुं ते १० रुडो स्वर ११ कान्ति [illegible]नोहर १२ अति प्रियपणुं १३ मनने गमना सु[illegible]तुं पामवुं १४ ए चौद प्रकारे शुभ नाम क-

मेना पुद्गलने अनुभवे हवे तेहीज चौद बोल अशुभ नाम कर्मने विशे अनुभवे पण ते अनिष्टपणे भोगवे शुभ कर्मवालो इष्टपणे भोगवे अशुभ कर्मवालो अनिष्टपणे भोगवे एटले नाम कर्मनुं स्वरुप कह्युं हवे गोत्र कर्मनुं स्वरुप कहे छे, ते गोत्र कर्म जीव बांध्युं ते उदय आवे त्यारे ते आठ प्रकारे भोगवे तेनां नाम. उत्तम जातिपणुं १ उत्तम कुलपणुं २ विशेष बलपणुं ३ विशेष रूपपणुं ४ विशेष तपपणुं ५ ज्ञाननुं विशेषपणुं ६ लाभनुं विशेषपणुं ७ मोटुं ऐश्वर्यपणुं ८ ए आठ भेदे उंच गोत्र अनुभवे अने वली ते आठ भेद नीच गोत्रने विशे लेवा पण अनिष्ट लेवा एटले पूर्वे कह्या तेथी (उपरांठा) प्रतिपक्षि जाणवा एटले गोत्र कर्म कह्युं हवे अन्तराय कर्म कहे छे. जे जीव अन्तराय कर्म बांध्युं ते उदय आवेथी पांच प्रकारे भोगवे, तेनां नाम. दान दइ शके नहि १ लाभ पामी शके नहि २ भोग पामी शके नहि ३ उपभोगनी प्राप्ति थइ शके नहि. ४ अने वीर्य स्फुरावी शके नहि ५ ए रीते अन्तराय कर्म पांच

न्तानुबन्धी मान २ अनन्तानुबन्धी माया ३ अनन्तानुबन्धी लोज ४ अप्रत्याख्यानीय क्रोध ५ अप्रत्याख्यानीय मान ६ अप्रत्याख्यानीय माया ७ अप्रत्याख्यानीय लोज ८ प्रत्याख्यानीय क्रोध ए प्रत्याख्यानीय मान १० प्रत्याख्यानीय माया ११ प्रत्याख्यानीय लोज १२ संज्वलन क्रोध १३ संज्वलन मान १४ संज्वलन माया १५ संज्वलन लोज १६ एटले ए कषाय मोहनीय कही, हवे नोकषाय मोहनीयना नव नेद कहे ले स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ नपुंसकवेद ३ हास्य ४ रति ५ अरति ६ जय ७ शोक ८ फुगंछा ए हवे आयुष्य कर्म कहे छे. तेना चार नेद नारकीनुं आयुष्य १ त्रियंचनुं आयुष्य २ मनुष्यनुं आयुष्य ३ देवतानुं आयुष्य ४ हवे नाम कर्मना बेतालीस नेद कहे ले नरकादि गति १ एकेंद्रिआदिनी जाति २ औदारिकादि शरीर ३ शरीरनां अंगोपाङ्ग ४ बन्धना ५ सङ्घातना ६ संहनण ७ संस्थान ८ वर्ण ए गन्ध १० रस ११ स्पर्श १२ अगुरुलघु नाम कर्म १३ उपघात नामकर्म १४ पराघात नामकर्म १५ आनुपुरवी नामकर्म १६ उस्सास नामकर्म १७ आताप नामकर्म १८ उद्योत नामकर्म

१९ विहायोगति नामकर्म २० त्रस नामकर्म २१ स्थावर नामकर्म २२ बादर नामकर्म २३ सुक्ष्म नामकर्म २४ पर्याप्ति नामकर्म २५ अपर्याप्ति नामकर्म २६ साधारण नामकर्म २७ प्रत्येक नामकर्म २८ स्थिर नामकर्म २९ अस्थिर नामकर्म ३० शुभ नामकर्म ३१ अशुभ नामकर्म ३२ सौभाग्य नामकर्म ३३ दुर्भाग्य नामकर्म ३४ सुस्वर नामकर्म ३५ दुस्वर नामकर्म ३६ आदेय नामकर्म ३७ अनादेय नामकर्म ३८ यश नामकर्म ३९ अयश नामकर्म ४० निरमाण नामकर्म ४१ तीर्थंकर नामकर्म ४२ तथा बन्धन सङ्घातन आदे घणा भेद छे तथा पनवणाजीमां पांच पद कर्म प्रकृति आश्रये छे तथा भगवतीजीमां कषायनी चोरासी आदे छे तथा कर्म ग्रंथने विशे चोवीशीउ प्रमुख मोहनीय कर्मनी छे तथा स्थान परत्वे भंगजाळ घणी छे ते सर्व ते ग्रंथोथी जाणवुं अत्रे ग्रंथ गौरव थाय ते माटे कह्युं नथी तथा चोथा कर्म ग्रंथमां बंध हेतु चार कह्या छे तेना उत्तर भेद सत्तावन छे अने अहियां तो राग द्वेष वडे कर्म बंधाय एवुं कह्युं छे तो तेमां

कंइ जीव जेवुं मालुम पमतुं नथी कारण के मिथ्यात्व १ अव्रत २ कषाय ३ अने योग ४ ते सर्वे राग द्वेषथीज कारण दीसे छे अने ज्यां सुधी राग द्वेषने विषे प्रवर्ते त्यां सुधी स्वस्वरुपनी प्राप्ति थाय नहि अने स्वस्वरुपनी प्राप्ति विना ज्ञानी कहेवाय नहि पूर्वे बंधाधिकार कह्यो ते सर्वे व्यवहार छे हवे मुल स्वरुपे आत्मा माथे बंध पडे तेनुं स्वरुप कहे छे त्यां प्रथम जीवनुं स्वरुप तो द्रव्यास्तिकनय पक्षे सदा शुद्ध छे ते कोइ काले मलीन थतु नथी अने ज्ञानरुप ज्योति युक्त विराजमान प्रकटपणे छे आद्यन्ते चेतनालक्षणेकरी शुध ज्ञानमय जीवनुं स्वरुप छे अतिन्द्रिय सुखनो भोगी अव्याबाध सुखेसुखी छे वली अतिन्द्रिय एटले इन्द्रियो रहित तथा मन रहित एटले पुद्गलीक भाव शुन्य एवुं स्वस्वभावीक शांत सुधारसरुप अपूर्व लब्धि युक्त रसनो निरन्तरपणे भोगववानो आचारवन्त छे वली स्फटिक रत्नसम निर्मलपणे सहज अवस्थानरुप शुद्ध स्वरुप प्रकट छे तथाऽपि केवो छे के अविनीस्वर छे. एवी सत्ता सदाकाळ प्रवाह धारारुप प्रणमन स्वभाव छे सर्व

पामवा देतो नथी अने ते स्वरुपथी भ्रष्ट करे छे कारण के रागद्वेष मोहरुप अशुद्ध परिणतिने विशे प्रिणमावे छे, मोहरुप मदिरापान करावीने सहज स्वरुपथी भ्रष्ट करे छे जेम कोइ पुरुष मदिरापान करीने बेभान थयो तेनी पासेथी सर्व वस्तु लोक लै जाय तो पण तेने खबर पडती नथी पोतानी वस्तुनु भान भुली जाय छे तेम आ चेतन मोहने वश पडयो ज्ञानावरणादि कर्मनो बंध करे छे त्यारे शुद्ध स्वरुपनुं ज्ञान अनुभव ते करी शके नहि तथा शुद्ध ज्ञाननो उपयोग रहे नहि.

उक्तंचः— शार्दूल विक्रिडित् वृतम्.

रागोद्गार महारसेन सकलं कृत्वा प्रमत्तं जगत्,
क्रीडंतं रसभावनिर्भर महानाट्ये नवंधुनत्;
आनंदामृत नित्यभोजि सहजावस्था स्फुटं नाटय,
धारोदार मनाकुलं निरुपधि ज्ञानं समुन्मज्जति॥१॥

हवे जे चेतन छे तेतो उपयोगवंत चेतना गुण सहित छे ते उपयोगना बे भेद १ द्रव्य उपयोग २ अने भाव उपयोग ते मध्ये भाव उप-

योग तो स्वस्वरुपनी रमणता करे ते अवसरे छे ते भाव उपयोगतो कोइ जीवने सादिसान्त भांगे छे तथा कोइ जीवने सादि अनन्त भांगे छे अने द्रव्य उपयोग तो अनादि कालनो चेतनने छे ते मुळ वस्तु चेतन तेने रागद्वेष मोहरुप अशुद्ध परिणाम तेणे करीने मिश्रित् भाव थयो माटे अशुद्धपणे परिणम्यो छे तेथी केवल पोते परनी साहाय इच्छे एम परानुयाइपणे संसार ग्राही जीवरासी तेने बन्ध हेतु भवति कहेता ज्ञानावरणादि कर्म वर्गणा बन्धनुं कारण थाय तेनाथी चेतन बन्धाय हवे बन्ध अवसरे जीव केवी वर्गणा ग्रहे ते कहे छे. त्रणसे ने तेतालीस राजप्रमाण लोकाकासना प्रदेशनी राशी पुर्वक कार्मण वर्गणाना प्रमाणु दव्नो समुह अने आत्माना प्रदेशनुं परस परस संबन्धिपणे लोह-अग्नी डग्ध्ते एकत्वपणे मळवु तेनु नाम बन्धाय छे एम समय समय सात, आठ कर्मनो बन्ध बांधे एवी रीते चेतन कार्मण वर्गणाथीज बन्धाय छे इहां कोइ कहे के कार्मण वर्गणाज कर्म ब न्धनु कारण थइ तेने गुरु उत्तर कहे छे के वात तो त्रणे काले संभवे नहि कारण के सि

क्षेत्रने विशे कार्मण वर्गणा भरेली छे जो एम होय तो सिद्ध भगवानने पण कर्म लागे माटे कार्मण वर्गणाथी कर्मनो बन्धनथी बन्ध तो रागादि अशुद्ध परिणामथी बन्धाय छे अने रागादि अशुद्ध परिणाम ज्यां नथी त्यां कार्मण वर्गणानुं कांइ जोर नथी तो कार्मणवर्गणाथी कर्म बंधाय ए वात सिद्ध थइ नही. कर्मनो बंधतो रागद्वेष मोहवमे संभवे छे बीजी कोइ रीतथी कर्मबन्धन संभवतु नथी.

उक्तंचः— गाथा.

नकर्म्म बहुलं जगन्न चलात्मकं कर्मवा,
नानेक करणानि विनाचिद चिद्वधो बंधकृत्;
यदैक्य मुपयोगभू समुपयां तिरागादिभिः
सएवकिलं केवलं भवति बंध हेतुर्नृणां २

अहो भव्य जीवो ते कारण माटे रागादि अशुद्ध परिणतिने तजो आ चेतनने अहित करनार अशुद्धभाव छे, भाव शत्रुए रागादि परिणति छे तेने तजो तो तमने कर्मबन्ध पमे नही अने आत्मानुं कारण कार्य साफल्य थाय एम समजवुं ए भव्य जीवो? जेने सम्यक आत्मानुं जा-

सील कहेतां आचार ते एटले ज्ञानी जीवने बाह्य सामग्रिना कारणथी कर्मनो बंध पडे नहि ए वस्तुनुं स्वरुप एमज छे परन्तु प्रमादि थइने विषयादिने भोगवशे अथवा जीव हिंसा करशे अथवा आर्तरौद्र ध्यानने विशे मनादि योग वर्तशे ए सर्व ठेकाणे जीव हिंसानुंज काम छे ते पोते प्रमादि थै निरंकुशे वर्ते तेनी आज्ञा उपर द्रष्टि नथी कर्म बंधनो भय नथी अने बे अक्षर विद्यानुं भणतर थयुं अथवा जाणपणुं थयुं तेथी ज्ञानीपणुं मनमां धारे तो शुं ते कर्म नहि बांधे अवस्य ते कर्म बांधशे कारण के तेने स्वस्वरुप परस्वरुपनी ओलखाण नथी तथा उदय अनुदयनी खबर नथी एक मन्त्रिनो जर्यो एवां कर्म करशे ने ज्ञानी नाम धरावशे तेने तो अवस्य कर्म लागशे जेने स्वस्वरुप परस्वरुपनुं जाणपणुं छे ते उदय जाणीने तेमां अव्यापकपणे वर्ते तेने कर्म नहि लागे एवो सूक्ष्म ज्ञानीनो छे एटले पूर्वोक्त नीर्मल व्यवहर्ने कहेतां विकल्प बुधिरुप मुग्धजाणपणुं छे अने अंतरंग रुचि करीने वीषय कषायादि सर्व नीरअंकुशपणे आचरे तो ए निश्चय

मिथ्या दृष्टि छे अने राग द्वेष मोहरूप अशुद्ध
परिणाममां खुतेलो तेने ए कारण सर्व कर्म-
बंध हेतु छे एवा थैने ज्ञानी नाम धरावे तेने भ-
गवन्ते भाव मिथ्यादृष्टि कह्या छे ते मिथ्यादृष्टि
तो निश्चयथी कर्मबंधनो कर्ता छे अने जे ज्ञानी
जीव छे ते तो शुद्ध स्वरूप अनुभवी छे तेने कोइ
पूर्वकृत कर्म उदय थयुं तेने विशे तेनी रुचि नथी॥
सर्वथी ते इच्छा रहित छे ए अवांछक रुप क्रिया
कही ॥ तेने विशे रचि पचिने करता नथी अने
केवळ पोताने ज्ञान ध्यानने विशे व्याघात थाय
छे ॥ अने उदययोगे कारण सामग्री तेवीज मळे
तेवारे तेने ए अकार्य जाणे तेने परभाव जाणीने
अरुचि साथे कार्य करे तेने ज्ञानी कहिये अने ते
ज्ञानीने कर्म बंधातुं नथी एवो सिद्धांतनो रह-
स्य जणाय छे॥ हवे अहियां कोई कहे के कर्मने
उदयथी भोग सामग्रि मळे तेमां तेने अन्तरङ्ग
रुचि छे के नहि? रुचि विना तो कंइ वनतुंज
नथी अने शुद्धस्वरुपने अनुभवे छे समस्त कर्म-
ने जाणे छे ॥ ए परभाव छे माटे त्यागवा योग्य
एम कोइ बोले तो ते वात सर्व जूठी छे का-

रणके ए बन्ने वस्तु एक घरमां लाधती नथी ॥ ज्यां ज्ञाननो अनुभव छे त्यां विषयादिनो अनुभव न होय अथवा ज्यां विषयादिनो अनुभव छे॥ त्यां ज्ञाननो अनुभव न होय ए बे क्रिया प्रतिपक्षी ते एक ठामे केम रहे? माटे एतो उदय माफक छे ॥ जेम कोइ पुरुषने ताव ज्वरनो रोग थयो तेवारे कडू प्रमुखनो काथ पीवो पडे त्यारे काथने ते प्रत्यक्ष जाणे के कडवो छे पण शुं करे ताव ज्वरने काढवा ते पीवो पडे ते उपर रुचि वा अभिलाष तेने होय नहि, दृष्टांत जेम चक्षुने गरमीनी व्याधि थए ॥ दुधनां तथा घीनां पेल मुकी पाटो बांध्यो तो जाणे छे के पाटो बांधवाथी हुं देखीश नहि ॥ पण व्याधि काढवा पाटो बांधवो पडयो ते पाटा उपर तेने वह्लभपणुं हशे? तो अवश्य पाटो वहालो न लागे ॥ तेम ज्ञानीने पूर्वोक्त कह्यां जे दृष्टांत तेने विशे रुचि न होय केमके विरुध काम एक जगामां होय नहि॥ तथा जेम अंधारु अजवालुं एक क्षेत्र अने एक काले न होय तेम ए बे अनुभव एक जीवने एक काले न होय॥ एवुं संभवे छे॥ अने पूर्वाचार्य पण एम

ज कहेता आव्या छे ॥ एवी तलतो केवली जाणे ॥ ॥ उक्तं च ॥

तथापि न निरर्गलं चरितुमिष्यते ज्ञानिना ॥
तदा यतनमेव सा किल निरर्गलाव्यापृतिः ॥
अकाम कृतकर्म्म तन्मतमकारणं ॥

ज्ञानिनां द्वयं नहि विरुध्यतेकिमुकरोतिजानातिव ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे जे ज्ञानी पुरुष छे ते शुद्ध स्वरूपनो अनुभव करे अने शुद्धस्वरूपनुं जाणपणुं थयुं छे ते ज्ञानीपुरुषने जे जे कर्मनो उदय थाय ते ते उदय सामग्रिने विषे अभीलाष करे नहि. तो अभिलाष कोण करे? केजे मिथ्यादृष्टि छे, ॥ जेने आत्म स्वरूपनुं जाणपणुं नथी, शुद्धस्वरूपनुं ज्ञान प्रगम्युं नथी, तथा शुद्ध स्वरूपनो उपयोग वर्तमानकाले छे नहि ॥ एवा जीव ते बाहयी वैराग घणो राखे ॥ मन इंडियोने वश करवा चाहे ॥ वहेवार शास्त्र वांचवा भणवानो अभ्यास करे. ते सर्वे सहज दशाना अजाण, तेने मिथ्याती कहिये॥ ते जीव

कर्मनो बंध पामे ए वात अवश्य करीने एमज छे ॥ पण ज्ञानी पुरुषने बंध पमे नहि ॥ तेनुं कारण कहुं ते सांजळो के जे ज्ञानी पुरुष छे तेणे पोतानुं स्वरूप निर्मल अविनाशि अमुर्ति अने अलिप्त जाण्युं तथा मुर्तीवंत अने विनाशिक वर्णादि स्वरूप पुद्गलनुं जाण्युं तेथी एम समजे के वर्णादिनो भोग ते अरूपी. चेतनने होय नहि अरूपिनो भोगतो अरूपी छे अने रुपिनो भोगतो रूपी छे माटे ए भोग मारे होय, नहि परंतु विचारे के पूर्वे में अशुद्ध उपयोगे राग द्वेष मोहने वश रहिने शुद्ध स्वरूपने. अजाणपणे शुभाशुभ कर्म बांधेलां ते अत्यारे उदय आव्यां छे ते भोगव्या विना छुटको नथी दृष्टांत जेम कोइ पुरुष वनमां चाल्यो जाय छे ते वन झाडनां अजाण शहेरमां वसवावालो सुकोमळ अने मदाण सुगंधिमां रहेवावालो ते पुरुष वनमांथी कांअचना झाडना हाथमां छुट्ने जोवा लाग्यो अने घणा सुकोमळ जाण्या केटलाक वस्त्रमां लीधा पछी ते हाथनो तथा वस्त्रनो ज्यां ज्यां शरीरे साथे थयो त्यां त्यां चळ उठी ते चळनी वेदना थइ

वहु गजराणो तेवारे तेने लोके कह्युं के आतो कौंअचना फाफनायी तने थयुं छे तुं नाखी आव्य त्यारे ते नाखी आव्यो पण चलनी वेदना मटी नहि त्यारे लोके कह्युं के गाण शरीरे घसो पत्री पाणीए करीने नाहो एटले चल मटी जशे तेणे तेम कर्युं त्यारे वेदना गटी तो जुवो ने सुगंधिमां रहेवावालो तेने गाण चोलवुं पम्युं ते गाण चोलवानो तेने अनिलाप हतो नहि तेम ज्ञानी पुरुषने पुर्व कृतकर्म उदय आवे त्यारे ते ते कारण सामग्रीने विषे रुचि वा अनिलाषा होय नहि कारणके ए परजावथी मदा ए उदास रहेले अने जेनुं चित्त सदाए वैरागमां वसेलुं छे तथी ते ज्ञानी जीव उदय जोगवतां कर्म न बांधे ते वात निश्चय छे कारण के कर्मनो बन्ध तो राग द्वेशथी पम्े अने राग द्वेष अज्ञानीने होय ज्ञानीने होय नहि ते माटे कर्मबंध होय नहि ॥ शिष्य वाक्यः॥ स्वामी तमे ज्ञानी कहो गो ते सर्वज्ञने कहो गो के सम्यक्तिने कहो गो? जो सर्वज्ञने कहेशो तो तेने घेर तो जोग सामग्रि छे नहि तेने राग द्वेष पण छे नहि जो समकिती देश विरति अने सर्व

विरतीने कहेशो तो तेना राग द्वेष अने मोह गया नथी ते १० दसमा गुणस्थान अन्ते जशे. ते कर्म बांधे के न बांधे ॥ तेनो उत्तर गुरु कहे छे सर्वज्ञ तथा समकित आदे ते तें गुणस्थानना जावनुं कह्युं ते तो व्यवहारनयनी अपेक्षा छे ते ए नय अपेक्षाए सत् छे अने अहींयां तो अध्यात्म अपेक्षाये संसारी जीवना बे भेद कर्यि एक स्वभाव ग्राहि १ अने बीजा विभावग्राहि २ तेमां जे विभावग्रहि छे ते तो अज्ञानी राग द्वेष सहित छे अने जे स्वभावग्राहि छे ते ज्ञानी छे तेने राग द्वेष नथी पण बालदृष्टि लोको तेना उदय भावने देखी तेने रागी द्वेषि कहे छे जेम सुकडाल मंत्री उपर राजा कोप्यो त्यारे जाण्युं के ते मने मारी नाखशे तेम जाणी छोकराने कह्युं के हुं झेहर खाउं छुं तुं राजानी सभामां मने मारजे एटले त्हारुं प्रधानपणुं कायम रहेशे. आपणे घेरथी प्रधानपणुं जशे नहि ते पुत्रे तेमज कर्यु तो लोके जाण्युं के दीकरे बापने मारी नाख्यो अने राजाए प्रधानपदवी दीकराने आपी पण दीकराए तो बापने मा-

रयो नथी ग्राप तो पोताने हाथे केदेर खाइने मु
तेम अहीं कर्मनुं स्वरुप ज्ञानीए जाण्युं तेथी पू
बंध उदयमां आवेलो तेने खरे पण तेमां राग द्वे
करी नवुं कर्म बांधता नथी जेम ते छोकराने बाप
उपर द्वेष नहोतो तद्वत ते माटे मिथ्यादृष्टि
जिव आत्माने जाणतो नथी तेथी कर्मबंध करे
अने ज्ञानी जिव आत्मस्वरूपने जाणे तेथी तेने
कर्मबंध थतो नथी ए वात सिद्ध थइ ॥

॥ उक्तं च ॥

जानाति यः सनकरोति करोति यस्तु ॥
जानात्ययं न खलु न किलकर्म रागः ॥
रागं त्व बोधमयमध्यवनीयमाहु ॥
मिथ्यादृश मनियतं म च बंध हेतुः ॥ ५ ॥

अर्थ हवे जे मिथ्यादृष्टि जीव छे तेने ममत्वमा
मेंर वस्तु अज्ञानी छे तेनुं स्वरुप किंचित् देखाडे
छे के अमुक पुरुषने अमुके मारी नाख्यो अ-
मुक पुरुषने अमुक जीवाड्यो अथवा ए सुखी
छे दुःखी छे अथवा ए पुरुषने अमुके सुखीयो क-
र्यो अने अमुक दुःखीयो कर्यो. ए वात सर्व मिथ्या

छे जे पूर्व कृतकर्म जेणे जेवां बांधेलां तेवां ते भोगवे. मरण जीवन सुखी दुःखी कोइ कोइने करवा समर्थ नथी पोतपोताना कृत्य प्रमाणे भोगवे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी एतो प्रत्यक्ष जोवामां आवे के एक बीजाने मारी नाखे, अने एक एकने ठगावे, एक एकने सुखीयोये करे, एक एकने दुखीयोये करे ते सर्व जोवामां आवे छे. अने तमे असत्य केम कहो छो तेनो उत्तर गुरु कहे छे ॥ हे भद्रे जेणे जेवां कर्म उपार्ज्यां अने जेवो संबंध बांधेलो छे तेवे संबंधे उदयमां प्राप्ति थाय जेम कोइ पुरुषने सहज भूमि खोदतां निधान मले. कोइ पुरुषने व्यापारथी मले एम अनेक प्रकारे प्राप्ति थाय अने कोइ पुरुषने सर्वथी महेनत करतां मलतुं नथी माटे जेने जे संबंधे प्राप्ति थवानी होय तेम मले अहिं कोइनुं कर्युं थतुं नथी पूर्व कृतकर्म प्रधान्य छे आयुष्य कोइनुं तोड्युं तुटतुं नथी अने सांध्युं संधातुं नथी माटे परनी आश तथा त्रास एकल्पना करवी ते सर्व असत्य छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी सात प्रकारे

आयुष्य तुटे एवुं संगेण प्रकरणमां कह्युं छे अने तमे ना केम कहो छो? ॥ तेनो उत्तर ॥ हे भद्रे! संगेणमां सात प्रकारे आयुष्य तुटवानुं कह्युं नथी त्यांतो कह्युं छे के ॥

सता ए आयु सी जंती इति वचनात्-ए सात प्रकारे आयुष्य पुरु थाय एम कह्युं छे आयुष्य तुटवानुं कह्युं नथी ते साते प्रकारनां नाम ॥ शस्त्रथी १ झहेरथी २ अग्निथी ३ पाणीथी ४ फांसाथी ५ सर्पादिवना झहेरथी ६ अने झंपापात थी ७ ए साते प्रकारे आयुष्य पुरु थाय पण जेनुं आयुष्य आवी रह्युं होय तेनुंज अने जेनुं आयुष्य बाकी होय तेने ए साते उपक्रममां वाइ नाश करवा समर्थ नथी कारणके जे शस्त्रनुं उपक्रम कह्युं ते केटक पुरुषने सोसो झटका अंग उपर दीसये छिये तथा बाण, गोळी समुख वागेलां एम घणा जोवामा आवे छे पण ते पुरुष मुवा नहि अने जेनुं आयुष्य आवी रह्युं होय तेने होरेक शस्त्र, टाकनी. अथवा पत्थर अथवा बीजां शस्त्र अडकवाथी तुरत मरे माटे जेनुं आयुष्य तुट्युं होय ते मरे छे हवे बीजुं उपक्रम झहेर

[illegible] मंगमोगेआ-

[illegible] [illegible] प्रमा-

[illegible] जीव

[illegible] अन्यत्र

[illegible] आयुष्य

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] थयुं

[illegible]

[illegible]

[illegible] आयुष्य [illegible]-

इ नहि हवे पांचमुं उपक्रम फांसाथी जीव मरे पण सर्व जीव मरे एम निश्चय नथी, कारण के फांसाना खावावालाने फांसो गले वेसतो नथी अथवा तुटी पमे तेथी तेने जीवता जोवामां आवे ठे तो फांसाथी आयुष्य तुटयुं एम नथी तथा सर्पादि फ्हेरी जनावरना करडवादियी जीव मरे छे पण जेनुं आयुष्य आवी रह्युं होय ते मरे ठे, अने जेनुं आयुष्य उन्नुं होय तेने ए फ्हेर लागु पडतुं नथी अथवा जेने लागु पमे तेने उतारनारा मले अथवा औषधीथी पण उतरी जाय ठे तेथी मरता नथी ए वात प्रत्यक्ष ठे एटले फ्हेरी जनावरना फ्हेरथी पण आयुष्य तुटतुं नथी ए ठट्ठुं उपक्रम तथा सातमुं उपक्रम फंपापातथी मरे पण जेनुं आयुप तुटयुं होय ते मरे. जेनुं आयुप उन्नुं होय ते मरे नहीं, शामाटे जे सात माळनी हवेली उपरथी पडे ते जीवता रहे, अने एक हाथना फंटला उपरथी अथवा ठेस वागवाथी पमे ते मरे. माटे फंपापातथी आयुप तुटतुं नथी, एम ए साते उपक्रमथी जेनुं आयुप आवी रह्युं होय ते पुरुं थाय एवुं संग्रहणी-

सुत्रमां कह्युं छे के सात प्रकारे आयुष पुरुं थाय तेनो अर्थ कोइए अनाम्नायथी तुटवानो कह्यो ते उपर श्रद्धा करवी नहि. शामाटे के श्री भगवतीजीमां आयुष बांधवाना बे प्रकार कह्या छे. एकनी रुपक्रमी १ अने बीजुं स्वोपक्रमी २ हवे जे रोगादीथी तथा बगासुं, छींक, प्रमुख आववाथी मृत्यु थाय तेने नीरुपक्रमी कहीए. अने जेने ए उपक्रम कह्यां ते उपक्रमादी लागवाथी मरे तेने स्वोपक्रमी कहीए, एटले पुर्वे जेवो बंध बांध्यो हशे, तेवी रीते मरशे, पण कोइनो मार्यो मरतो नथी, अने कोइनो जीवाड्यो जीवतो नथी तथा आयुष कर्मने हेमय सरखुं कह्युं छे, तेथी कोइ जीव अनेक उपाय मरवा सारु करे पण ते आयुष आवी रह्या विना सर्वथा मरे नहि, ते वाक्याथी पन्नवणाजीमां तथा कर्मग्रंथमां छे ते माटे कोइ जीवने कोइ मारवा समर्थ नथी तेम जीवाड्वा समर्थ नथी, जेवो पुर्वे बंध बांध्यो हशे तेवी रीते भोगवशे तथा सुख दुःख पण कोइ कोइने देवा समर्थ नथी. जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्तिये ब्राह्मणने सुखीउं करवो धार्यो

पण ते दुःखीज रह्यो तद्वत. तथा श्री श्रीपाळ-रायने धवळशेठे दुःख देवाना घणा उपाय क-र्या पण ते सुखीआज रह्या तद्वत. माटे मरण जीवन सुख दुःख ए सर्व पोतपोताना पुर्वकृत्य प्रमाणे छे. पण मिथ्यादृष्टि जीव एम जाणे छे के, अमुके मारुं नलुं कर्युं अथवा अमुके मारुं बुरुं कर्युं. ए जीवने ज्ञान प्रगट्युं नहीं अने शु-भाशुभ कर्मनुं जाणपणुं थयुं नहि. तथी एम जाणे. पण एम नथी समजतो के ए सर्व सं-सारी जीवराशी छे, ते सुख दुःखादी पोतानां कृ-त्यकर्म भोगवे. जेणे शुभकर्म उपार्ज्या ते सुख भोगवे, जेणे अशुभकर्म उपार्ज्या ते दुःख भो-गवे एटले पोताना परिणाम शुभ कहेतां करु-णामय छे तेथी सर्व जीवनी दया चिंतवे. पण कोइ जीवनुं बुरुं चिंतवे नहि. अथवा देवगुरु धर्म उपर रुडो भक्ति राग करे, तेथी शुभकर्म-नुं बांधवुं थाय अने ते जीव सुखीओ पण थाय. वळी अशुभकर्म कहेतां संक्लिष्ट परिणाम एटले राग द्वेष मोह विषय कषाय प्रमुख करवा अथवा देवगुरु धर्मनो प्रत्यनीक अथवा साधु

प्रमुखनी निंदा करवाथी अथवा अनेरानुं वुं
ताकवाथी अशुभकर्म बंधाय तेथी दुःखनी परं
परा पामे माटे पोतपोताना कृत्यथी सुख दुःख
दी पामे पण अहींआं कोइनुं कर्यु थतुं नथी
ए वातमां शंका छे नहि. इहां मिथ्यात्वी जीवे
परने माथे दोष दे छे ए वात सत्य छे नही.

उक्तं च–

सर्वं सदैव नियतं भवती स्वकीयं
कर्मोदियान्मर जीवीत दुःखसौख्यं
अज्ञानमेतदि हयत्तु परपरस्य
कुर्यात्पुमान् मरण जीवित दुःखदुख्यं ॥६॥

हवे अज्ञानी जीवराशीनुं स्वरुप कहे
छे ए अज्ञानी जीवो केवा होय के में
अमुकने मारी नाख्यो. हुं अमुकने जीवाडुं
छुं, में एने दुःख दीधुं, में एने सुखीउ कर्यो,
हुं आवां आवां कामो करुं छुं, हुं करुं ते बी-
जाथी न थाय. अथवा में धन उपार्ज्युं, अथ-
वा में राज्य लीधुं, अथवा हुं साधु छुं अथवा
हुं श्रावक छुं, अथवा हुं धर्मीष्ट छुं, अथवा हुं

तपस्वी छुं, अथवा हुं विरती छुं, एवो पोते अहंकृत पद पोताने विषे, माने अथवा हुं मनुष छुं. अथवा हुं तीर्यंच छुं, अथवा हुं पुरुष छुं. अथवा हुं स्त्री छुं. अथवा नपुंसक छुं इत्यादि अहंकृत पद पोताने विषे माने ते शायी के ए जीव अज्ञानी छे. एनी दृष्टि मिथ्यात्वरुप छे. एना परिणाम अशुद्ध छे, तेथी ए अशुद्धना जोगे पोते कर्त्तापणुं तद्रुप थइने माने तेथी ए निश्चय मिथ्यादृष्टि छे सर्व प्रकारे जोतां ए महा अज्ञानी छे. शा माटे जे ए कर्म जनीत पर्याय छे, तेने विषे आत्म बुद्धि धरीने मग्न थाय, तेथी तेने कर्मनो उदय यावत् जे जे कीरीया करे, शुभ वा अशुभ, तेनो पोते मालीक बने. ते माटे एने अज्ञानी जीव कहीए. शामाटे के अज्ञानी विना पुद्गल नुं कर्युं चेतनने विषे माने नहि. अने एम मानवाथी पोताना आत्मानी घातनो करनार थयो, एटले आत्मगुणनो नाश करनार थयो. तेथी आत्मानी सत्ता दबाइ गइ. अने पुद्गलनी सत्ता दीपावी, ते माटे ए अज्ञानी जीव आत्मघाती छे.

उक्तं चः—

अज्ञानमत्त दवीगम्य परात्परस्य,
पस्यंती ये मरण जीवीत दुःख सौख्यं
कर्माएयहं कृतीरसेन चीकीर्ष वस्ते
मिथ्यादृशो नियत मात्महनो ज्नवति ॥७॥

हवे मिथ्यादृष्टि जीव विज्ञावशील छे एटले एनो अज्ञिप्राय परज्ञाव देखीने पोतापणो मानवो एज एनो आचार छे एटले अमुके अमुकने मार्यो, अमुके अमुकने जीवाड्यो, इत्यादि अज्ञिप्राय ते कर्मबंध हेतु. एटले अज्ञानी जीवो ते विज्ञावने ग्रहण करवाथी ज्ञानावरणादि कर्मनो बंध करे ए परिणाम ते सर्व मिथ्या छे, एटले तेनी बुद्धि एवी रहे के फलाणाने मार्यो, फलाणाने जीवाड्यो, एटले ए अज्ञानरुप मिथ्याज्ञाव देखाय छे, एटले मिथ्यादृष्टि जीव पोतानुं आत्म स्वरुप परमानंद स्वरुप तेनो स्वाद लेतो नथी, अने पर्याय वस्तु विकल्पे करी ने सत्य माने, ते वात सर्वथा त्रण लोकमां अथवा त्रण काळमां छे नही. एतो

नीःकेवळ विनाशीक वस्तु छे अने अज्ञ
वनो स्वभाव एमज रह्यो, जेवा पर्याय
गीकार करे, अथवा जेवा पर्याय पोते दे
भावे परिणमे, तो समस्त ए पर्यायने
जाणी अनुभवे पण ते कर्मनुं स्वरुप तथा
वनुं स्वरुप जुडुं जुडुं करी जाणतो नथी,
मिश्रभावने जीव जाणी अनुभव करे. एना
ध्यवसाय परने पोतानुं मानवाना छे.
परीणामे करीने एम जाणे के हुं सुखी हुं,
दुःखी हुं अथवा अनेराने पण एमज जाण
थको ए अज्ञानपणे प्रवर्तावे एज पोतानी घे
ग छे, शामाटे के सुख वा दुःख आदे दे
जे जे जीवने थाय, ते पोतपोतानां स्वकर्म उ
दयमां आवीने प्राप्ति थाय पण अहींयां कोइने
वश नथी; अने कोइनु कर्युं थतुं नथी, ज्यां
तो सर्व उदय माफक थाय. पण ते जीव पोते
पोताना अज्ञानने लीधे सुख दुःखादी वीकल्प
करे ते वीकल्प सर्व जुठा छे अथवा कोइनुं सु-
ख स्य अथवा कोइनुं सुख स्य देखीने एवा
वीकल्प करे अथवा मुखथी एमज कहे के पणे

मार्यो. पण जीवाओ. एटले पृथ्वी १ पाणी २ अग्नि ३ वायु ४ वनस्पती ५ बेंद्री ६ तेरेंद्री ७ चउरींद्री ८ इत्यादी सूक्ष्म जीवोने काया न्हानी देखी तेने हणवानो भय गणवो नथी अथवा केटलीक जातना पंचेंद्रीने पण हणवानो भय गणवो नथी शामाटे के काया न्हानी होय ते जीव पर्णी गणतरीमां नथी अने मोटी कायाना जीवोने बचाववानी फीकरमां रहे ए पण अज्ञानपणुं छे. शामाटे के जीव तो सर्वे असंख्यात प्रदेसि लोकाकाश प्रमाणे सरखा छे तथा ज्ञान दर्शनादि गुण करी जोइए तो ए सर्वे जीवो बराबर छे, नीगोदथी मांडीने चार गतिमां भिन्नभाव छे नहि जेवा सिद्ध परमात्मा छे तेवाज सत्ताये जोतां संसारी जीव छे. तेनी काया नानी मोटी देखी तेने अधिका ओछा जाणे ते मुर्खाइ छे शामाटे के कायानी प्राप्ति तो कर्मथी छे. तो ए सर्व पर्याय कर्म नावी कल्हीए कर्म नावी पर्यायवडे चारे गति छे जेणे जेवी गति उपार्जी तेने तेवी काया मळे अने कायाना नाना मोटापणे जीवनुं सूक्ष्म तथा स्थुलपणुं थयुं नहि जीवनो पोताना

स्वभाव पर्यायवमे सदाय छे तेवो ने तेवो छे ए-
टले जीव सुक्ष्म अथवा स्थुळ थयो नहि. माटे
जे सुक्ष्म जीवने हणशे तो ते जीवमां अने मो-
टा जीवमां कांइ फेर नथी. माटे ए अज्ञानना
लीधा थका एवा विकल्प करे, ते विकल्पोथि
तेने नवां कर्म अनंतां बंधाय अने जीवतो को-
इनो हण्यो हणातो नथी तेने तो पोताना उ-
दय मारूक थाय ते वात्या पुर्वे कही गया छी-
ए तथा कंइ जीव जीवने हणे नहि शामाटे के
ए तो जीवे जीव स्वजाती छे अने तेने अवि-
नाशी पद छे तेनो नाश होय नहि पण इहां
तो प्राणनो घात थाय अने प्राण छे ते पुद्गळ
छे, वळी विनाशी छे ते हणाय पण तेनी स्थिती
पुर्ण थया विना तो हणातो नथी. अने फोकट
हणवानो मालीक थइने कर्म बांधे ए सर्वे अ-
ज्ञानीजीवनुं लक्षण छे तेना एवा अध्यवसाय रहे
के आ मारुं आ तारुं एम राग द्वेषमां परिणाम वर्ते
ते सर्वे अज्ञानी जीव तेपर पर्यायने पोताना
मानी अनुभवे तेथी कर्म बंधाय, अने ज्ञानी
जीव तोपर पर्यायने पर जाणे अने उदय मा-

फक्त भोगवे तेमां पण सर्व पर्यायने भोगवतो नथी. एटले ज्ञानी ए परवस्तुने पर जाणी तेमां परिणाम पामतो नथी. अव्यापकपणे उदय भोगवे छे. अंतर शुद्ध स्वभाव दृष्टि स्थायी छे. स्वभाविक पर्यायनो अनुभव करे तेथी ज्ञानी जीवने कर्म बंधातां नथी. ए रीते ज्ञानी अज्ञानीनो भेद समजीने अज्ञान दशा दूर करवी. पर्यायदृष्टि राखवी नहि. स्वभाव दृष्टि आदरवी ए ज्ञाननुं लक्षण छे ते कह्युं.

उक्तंच–

मिथ्यादृष्टेः स एवास्य बंधहेतुर्विपर्ययात
य एवाध्यवसायो य मज्ञानात्मास्य दृश्यते ॥७॥

अनेनाध्यवसायेन निःफलेन विमोहिता
नाकिंचनापि नैवास्ति नात्मात्मानं करोति यत् ९

विश्वाद्विभक्तोपि हि यत्प्रभावा । दात्मानमात्मा
विदधाति विश्वं । मोहैककंदोऽध्यवसाय एष ।
नास्तीह येषां यतयस्त एव ॥ १० ॥

हवे जे ज्ञानी जीव ते केवा होय के आपणुं शुद्ध स्वरूप चिदानंद रूप तेने विषे

स्थिर भावे रहे छे. सुखनुं घर जाणीने पोते पोताना स्वभावमां स्थिरता करी छे पोतानो महीमा शुद्ध स्वरूपनो जाणवामां आव्यो छे एटले शुद्ध स्वरुप केवुं छे ? के राग द्वेष मोहे करीने रहित एवुं जे ज्ञान कहेतां चेतना गुण तेनो जे आणंद तेनो घन कहेतां समुद्र छे एवुं जे चिदानंद घननुं स्वरुप जाण्युं ते स्वरुप सम्यक प्रकारे अविनाशी छे. संकल्प विकल्पे करीने रहित छे एवुं वस्तु धर्म मुळ स्वभावे जुवे तो तेवुंज अनुभव गोचर छे ते विनाता मालुम पडे नहि एम निश्चय करीने समजवुं, वळी आत्मा केवो छे के उपाधिए करीने रहित एटले विषय कषाय आदि शुभाशुभ उपाधीए करीने रहित एवुं मुळ स्वरुप आत्मानुं तेने ज्ञानी जाणे एवुं श्री परमात्मा परमेश्वर केवळज्ञाने विराजमान तेमणे कह्युं छे ते जाणीने मिथ्यात्वभाव अवश्य छोडवो, ए ज्ञानीनुं लक्षण छे ते कह्युं. ॥ नीतीत्र अपि व्यवहार त्याजीत एव ॥ हवे जे व्यवहार मार्गे चालवुं कल्प आश्रये अथवा परंपरा आश्रये ते सर्वने मिथ्याभाव कहे छे. सतरुप व्यव-

हार होय अथवा असतरुप व्यवहार होय पण शुद्ध स्वरुपथी तो विपरीत ए बाह्यभाव छे. हवे जे सत व्यहार ते शेने कहीए एटले पंच महाव्रत पाळवां. पंच सुमति, त्रण गुप्ति, दश विधी यतीधर्म इत्यादिने सत व्यवहार कहीए, एथी जे उपरांत तेने असत व्यवहार कहीए तथा कल्प व्यवहार कहेतां साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका ए चतुर्विधी संघने वर्तवा आचरवा योग्य जे मार्ग बांध्या तेने कल्प व्यवहार कहीए तथा परंपरा व्यवहार कहेतां परा पुर्वे महा पुरुषो आचरण करता आव्या ते करवुं तेने परंपरा व्यवहार कहीए, तेना अनेक भेद ते तो प्रवर्तन रुप छे. आत्म स्वरुपना स्वभावमां ते समाय नहि, तेथी तो सदाय काळ विपरीतपणे छे तथा सिद्धांतकारे पण कल्प व्यवहार उपर भरोसो राख्यो नथी केमके श्री भगवतीजीमां चारित्र संवर, निर्जरा आदे देइ तेने आत्मा कह्यो छे. एटले आत्मस्वरुपमां रमे तेने ए पद छे पण परस्वरुपमां रमे तेने कंइ चारित्र आदि गुण छे नहि. तो अहीआं कोइ कहेशे के दशविधी यतिधर्मने तमे ध-

र्ममां कहो गे के नहि. तेनो उत्तर के श्रमे कंइ ते वस्तुने उत्थापता नथी पण वस्तुमां जेखुं धर्म होय तेखुंज कहेवाय. तथा उपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराजे श्रध्यात्मसार ग्रंथ आदि घणा शास्त्रोमां गम गम कह्युं छे तथा बीजा पंमितो पण सर्वे कहेता आव्या छे तथा शुद्ध स्वरुपने विषे खंनी प्रमुख विकल्प छे नहि अने जो विकल्प सहित आत्माने मानीशुं तो ए अशुद्ध आत्मा थशे अने अशुद्ध आत्मानी मुक्ति त्रण काळमां थवानी नथी, वीतराग अथवा अरिहंत अथवा मुक्ति शुद्ध स्वरुप थया विना ए पद मळे नहि, माटे ज्यांसुधी विकल्प जाव छे त्यांसुधी मिथ्यात्व छे. शिष्य वाक्य. स्वामी, विकल्पने तमो मिथ्याजाव कहो गो तो आपणे एम कहीए गीए के आत्माने विषे अनंतु ज्ञान, अनंतु दर्शन छे, इत्यादि जेद कहीए गीए ते पण विकल्प छे के शुं छे? तेने शुं मिथ्यात्व कहो गो. तेनो उत्तर, के ए पण मिथ्यात्व छे कंइ सत्य वस्तु नथी. शिष्यवाक्य. स्वामी एतो जेद ज्ञान छे, अने शुक्लध्यान ध्याता छे तेने मिथ्यात्व

अने ज्यां सुधी विकल्प छे त्यां सुधी अशुद्ध आत्मा छे अने अशुद्ध आत्मा छे एज मिथ्यात्व छे. माटे जे व्यवहार छे ते शुद्ध आत्माथी तो विपरीत छे माटे मन. वचन अने कायाना जोग वडे जे जे विकल्प उठे अथवा एवा विकल्पवडेज व्यवहारनुं बांधवुं छे. एटले व्यवहार तथा मिथ्यात्वमां काइ भिन्नपणुं जणातुं नथी. माटे अवश्ये ए मार्ग छांडवो अने ज्यारे ए मार्ग छांडशो त्यारे शुद्ध स्वरूपनी प्राप्ति थशे.

उक्तंच–

सर्वत्राध्यवसानमेवमखिलं त्याज्यंयदुक्तंजिनै।
स्तन्मन्येव्यवहारएवनिखीलोप्यन्याश्रयस्त्याजितः॥
सम्यग्निश्चयमेकएव तदमीनि कंपमी क्रम्याकिं।
शुद्धज्ञानघनेमहिम्निनिजेवघ्नंतिसंतोधृतिं ॥१०॥

हवे शुद्ध स्वरूप वस्तुनी प्ररूपणा थाय छे. तो एक प्रश्न इहां करवामां आवे छे के ए चीना रागादि अशुद्ध भाव एटले राग द्वेष मोह इत्यादि असंख्यात लोक मात्र विभाव परिणाम बंध निदान कहेतां ज्ञानावरणादि कर्म बंधको कारण एवुं

शास्त्रमां कह्युं छे ते प्रमाणे जाणवामां मानवामां पण छे अने शुद्ध भावना कहेतां शुद्ध चिन्मात्र एटले शुद्ध ज्ञान चेतना मात्र छे एम एवो ज्यो-तिःस्वरूप वस्तु ते तो अतिरिक्त कहेतां तेथी जु-दो छे. संप्रति एक प्रश्न तो ए छे तथा रागद्वेष मोहादि परिणामनुं थवुं तेनुं कारण कोण छे एटले आत्मा कहेतां जीवद्रव्य कारण छे ते पररूप कहेतां मोहरूप पण ए छे अथवा पुद्ग-लद्रव्य छे ते पीमरूप कारण छे हवे ते बन्ने प्र-श्नो उत्तर एवी रीते छे के वस्तुस्वभाव कहेतां ए वस्तुनुं स्वरूप तो प्रगटपणे सदाय निर्लेप छे तथापि जे कारण आश्रीने कहेवुं छे तेनो वि-चार कहे छे जीवद्रव्य छे ते त्रण काल एटले भूत, भविष्य अने वर्तमानकालमांहि जे आत्माने विषे रागादि अशुद्ध परिणति ते तो निमित्त मात्र ए पोता संबंधि छे एटले आत्माज ज्यां राग द्वेषनुं जो निमित्त कारण छे जे रागद्वेष मोह इत्या-दि अशुद्ध परिणाम तेनुं कारण तो आत्मस्वरूप परिणाम तो नथी एटले ज्यां भावार्थ समजवानो एवी रीते छे के द्रव्यना परिणमननुं कारण बे

णमां छे. शामाटे जे चारित्रमोहनी तथा दर्शनमोहनी ते हेतुवमे कर्म बांधे छे ते जीवना अने कर्मना प्रदेश एकक्षेत्र अवगाही रहे छे ते पुद्गल द्रव्यनो पींम तेनो उद्योत कहेतां जे उदय मोहनीकर्म रुप पुद्गलनो जे छे तेने बाह्यथी जे कर्मनी प्रकृतिनो उदय होय ते नाम कहीने बोलावे छे जेम देव अथवा मनुष्य इत्यादि पण ते चेतन तो एथी न्यारो छे ए रुप तो पुद्गलनुं देखाय छे. शामाटे जे पुद्गलद्रव्य शुं कर्म व्याप्य व्यापक रुप छे पण जीवद्रव्य शुं व्याप्य व्यापक नथी तथापि मोहनीकर्म उदय थतां जीवद्रव्य आपणे विभाव परिणामरुप परिणमे छे एवो वस्तुनो स्वभाव छे ए वात तो कही छे नहि. इहां दृष्टांत कहे छे.

जेम स्फटीक रत्न रातुं, पीळुं इत्यादि देखाय छे ते निमित्तकारणथी छे पण उपादान कारण ते नहि. शामाटे के स्फटीक रत्न स्वभावे निर्मल छे तेनुं उपादान कारण ए पोते छे. हवे उपादान ते आत्मस्वरुप स्वस्वभाविक छे. हवे निमित्तकारणनुं स्वरुप किंचित् देखाडे छे के जेने

जेवी संगत मळी ते तेवुं थयुं. जो सत्संगत मळी तो साधु कहेवाणो. असत्य संगत मळी तो असाधु कहेवाणो. पण ए सारो वा नरसो कहेवाणो ते आत्मा नहि. एतो संगतना जोगथी छे अथवा धर्म आश्री जेने जेवा गुरु मळ्या तेणे तेवुं धर्म कर्यु, पण ते वस्तु धर्म वस्तु नहि. धर्म तो एक न्यारुं छे, एक निमित्त वा उपादान एक आत्माने विषे परिणति छे ते आत्मा विषय साथे बंधाणो तेथी जेवी संगत तेवुं धर्म करे छे.

उक्तं च,—अध्यातम सारग्रंथे.

विषयात्मानुबंधैर्हि, त्रिधाशुद्धंयथोत्तरं ।
ब्रुवते कर्म तत्राद्य, मुक्त्यर्थ पतनाद्यपि ॥२२॥
अज्ञानिनांद्वितीयंतु, लोकद्वयमादिकं ।
तृतीयं शांतवृत्त्या तत्तत्व संवेदनानुगं ॥२३॥
आद्यानाज्ञानबाहुल्यान्मोक्षबाधकबाधनं ।
सद्भावाशयलेशेनो, चितंजन्मपरेजगुः ॥ २४ ॥
द्वितीया दोषहानिः स्यात् कचिन्मंडूकचूर्णवत् ।
आत्यंतिक्तितृतीयातु, गुरुलाघवचिंतया ॥२५॥

अर्थ-जे ए धरमने विषे त्रणे प्रकार कह्या

ते त्रणे प्रकार एक एकथी शुद्ध छे ते मध्ये प्रथम भेद कहे छे जे पोताना आत्माने कर्मथी मुकावीने सिद्धि वरवाने वास्ते कोइक तो क्रिया करे कोइक कान फडावे, कोइक जटा वधारे, कोइक राख चोळे, कोइक पाणी माटीथी पवित्रपणुं माने, कोइक पंचाग्नि तापे. कोइ उंधे माथे झुले, कोइ अन्न पाणीनो त्याग करे कोइ झंपापात करे, अथवा कोइ जनावरना कलेवरमां पेसीने वाघ पासे पोतानुं शरीर खवरावे, इत्यादि अनेक तरेहथी कष्ट करीने मुक्ति माने ते सर्व अज्ञान छे ए पहेलो भेद कह्यो. हवे अज्ञानिनां द्वितीयंतु कहेतां जे अज्ञानी जीव आत्मशुद्धिने वास्ते करणी करे ए बीजो भेद तेनो अर्थ कहे छे के लोकदृष्टि यमादिकं एटले लोकदृष्टिए पांच यम, त्रण नियम तेनुं स्वरुप किंचित् कहे छे. के जे पोताना मननी इच्छा थाय तेने स्थिर करे, एटले व्रत, नियम आदि देखने करे ए निज शक्ति एटले पोतानी शक्ति प्रमाणे करे हवे तेमां प्रथम यमने विषे जे हिंसादि कारण त सर्व तजे.

अहिंसादिनी भावना उपर बहु प्रेम राखे. अने पाळवानो तथा सांभळवानो ए जीवने प्रेम घणो छे. वळी एम जाणे के हुं भगवाननी आज्ञा आराधुं तुं अने बीजी वात सर्व एने माठी लागे ए प्रथम यम कह्यो ? बीजे यमे प्रवृत्तो थको भगवाननी आज्ञामांहि घणो अग्रेसरी थइने चाले. व्रत. नियम आज्ञा प्रमुख पाळवाने वास्ते ए साधु तत्पर रहे. पण त्यां प्रमाददशा घणी छे ए बीजो यम जाणवो. २ हवे त्रीजा यमने विषे निरतिचार चारित्र पाळे. अप्रमत्तभावे अने शुक्लरूपे रहेतोथको जे जे परिसह उपजे. देव. मनुष्य. अने तिर्यचना करेला अनुकूल प्रतिकूल ते रूडी रीते समभावे तेनुं मर्दन करतो थको संतरूप रहे ए त्रीजो यम कह्यो. ३ हवे चोथा यमने विषे शुद्ध भाव भेद ज्ञान साथे अथवा चतुर्थ गुणस्थान अथवा ध्याता. ध्येय शुद्धपणुं व्यवहारथी इत्यादि भावे वर्ते. एम जोगदृष्टि समुच्चयमां कह्युं छे. ए बीजो भेद जाणवो.

हवे त्रीजे भेदे शांत वृत्ति एटले ज्ञान. दर्शन चारित्रनुं वदवुं ए त्रीजो भेद छे. ए त्रण

नद मग ज प्रथम नेद कह्यो तेने विषे तो अ
ज्ञानने अद्दलना कहेना पाणुंज अज्ञान जेसुंजे
ने ाप ज्ञानना नजा ने नहि पनो तलसी ध
मना नाश कर न म्याकवाधक बाधनं कहेतां
। पाक्र नाना मार कहेनां आत्मोत्क्राम थइने
न न ।भ्या ा ान कहेतां नियम यघला कर्म बंधन
आत्मान थाय तथा मडावाशय खेगनो कहेतां
प क मडार शुन प्रकृतिना खशमात्र गुण प्रगत्र्यो हे
ा पथा शुं प्राप्ति थशे. तज्यते कहेतां ते कहे छे.
नन जन्मपरजगु कहेतां जगदीश एटले परमात्मा
का लं नगवान पम कहे ने जे जन्म मरणनी
माग र ाार एटले अनंतो संसार चार गतिमां
। जय भ्र फ जीवने कष्ट करवाथी कंइ पो
तानु कल्याण थाय नहि एटले ए पहेला नेद
ना अर्थ कह्या.

हवे बीजो नेद आत्मशुद्धि नाम छे तेनो
अर्थ कहे ने जे प्रमादि कह्या ने अप्रमादि
मनु निरतिचार चारित्र पालनाला आदि पूर्व
कना न जाग पाल्याथी केवल कहेश ने एकदेश
मात्र अहिंया दोषनी हानि थाय पण पहेला ए

करवो, तथा लघु कहेतां आत्म स्वभाव तें
विचार करवो एटले पुद्गलपींड अनंती कर्म
वर्गणाउं आत्मा माथे लागी छे तेनो विच
करतां शुक्लध्याननो पहेलो पायो प्रगट थाय तथ
आत्म स्वरुप अरुपी पदार्थ एकत्वपणे अने स
प्रभावरहित ए विचार शुक्लध्यानना पहेला प
यामां छे एटले ए त्रणे शुद्धि कही एज द्रव्य
गुण, पर्याय एकत्वभावे स्थिर थाय त्यारे शुक्
ध्याननो बीजो पायो आवे. ए जे यमादि वा
प्रवर्तन ते निमित्त कारण छे. ते कंइ आत्मस्व
रुपनुं उपादान कारण नथी. बाह्यदृष्टि अज्ञा
नी जीव निमित्त कारण देखीने तद्रुप तेने मा
छे. जेम कोइ कहेशे के घीनो घडो लाव्य त
तेने अज्ञानपणे निमित्त उपादाननी खबर विन
बोलवुं थयुं पण घट तो माटीनो छे. घृतनो घ
थाय नहि ते घटमां घी भर्युं ते निमित्तमात्र
अने निमित्त ते कंइ ते द्रव्यमां छे नहि तेम आ
त्माने विभावपर्यायना जोगथी अनेक कर्म उ
पाधि उदय थयो ते तो निमित्तमात्र छे त्यां तेने
भावे परिणमे तेने बाळजीवो तेवोज करी माने

पण जे निमित्तकर्मादि ते आत्म द्रव्यमां छे नहि, तेथी आत्मद्रव्य तो भिन्न छे माटे निमित्त तथा उपादान कारण नयना ग्रंथथी समजवां. उक्तं च.-

न जातु रागादि निमित्तभावमात्मानो याति यथार्ककान्तः, तस्मिन्निमित्तं परसंग एव वस्तु स्वभावो यमुदेति तावत् ॥ १३ ॥

हवे जे ज्ञानी जीव केवा होय ते कहे छे. पूर्वे कही गया जे जे भेद ते द्रव्यथी तथा भावथी पोते जाणे एटले वस्तुनो धर्म कहेतां जे द्रव्यनुं स्वरुप शुद्ध चेतननुं स्वरुप जाणे अने तेनो अनुभव सदाय करे ते धणी सरागभाव करे नहि एटले राग द्वेष मोहरूप अशुद्ध परिणाम तेमां न प्रवर्ते. पोते तेनो अनुभव न करे अने जे जे कारण बने ते सर्वे पूर्वकृत्य कर्मना उदयनी उपाधी छे एम जाणे पण पोते ते रागादि अशुद्ध परिणामनो कर्ता न थाय. पोते तो शुद्ध स्वभावमां रमे पण परनुं स्वामीत्वपणुं न करे ए ज्ञानीनुं लक्षण छे. एम जाणवुं.

उक्तं च.

इति वस्तु स्वभावंहि, ज्ञानी जानाति तेनसः
रागादीन्नात्मनः कुर्यान्नात्योभवतिकारकः ॥१७॥

एवी रीते आत्मस्वरुपनो जाण ते पुरु
कांइ कर्म बांधतो नथी. ए अध्यात्मपदार्थी वि
चार लख्यो, तथा कर्मग्रंथना पक्षथी बंध श
रीते बांधे ? ते कहे छे. अपितु कर्मपयमीने विषे
तो राग द्वेष भावकर्म एहीज चेतनने दुःखदाइ
छे, अने एवमेज संसारमां रखमवुं थाय तथापि
कर्मग्रंथने विषे द्रव्यकर्म ग्रहण कर्या तेना आठ प
भेद तेनी प्रकृतिबंध आश्रीने १२० एकशो ने वीश
कहीछे तेनो विचार पूर्वे पन्नवणाजीना अधिकारमां
कह्यो छे. अने इहां पण किंचित् बंध आश्रीने कहे
छे.केमके ज्ञानीने बंधनी ना पामी अने कदापि को
इ कर्मना उदयथी मिथ्यात्व गुणठाणामां जाय ते
पण तेने एक कोमाकोमी सागरोपमनो बंध कह्योछे,
ते माटे ज्ञानी पदतो कंइ पहेले गुणठाणे नथी, ए
तो चोथा गुणठाणाथी उपला भागमां लाधे, हवे
अहींआं गुणठाणे बंधनी प्रकृति कहे छे. इहां
गुणठाणानो शब्दमात्र अर्थ साथे नाम कहे छे के

जीवने प्रमाद दुःखदाइ छे, ए छठुं. ६ तथा सातमुं अप्रमत्त गुणठाणुं ते ठेकाणे प्रमादनो प्रवेश नथी एक आत्मस्वरूपनी रमणता स्वभावानंदीपणुं छे, ए सातमुं गुणठाणुं. ७ आठमुं अपूर्व गुणठाणुं एटले पुर्वे आत्मानो स्वभाव प्रगट न थयो अने अहिंआं थयो माटे अपूर्व, ए आठमुं गुणठाणुं ८ नवमुं अनिवृत्तिबादर गुणठाणुं (कहेतां) अहिंआं बादर कषायनो तथा वेदनो आद देइने त्याग थाय अने आत्मज्ञान विशेषे प्रगटे, ए नवमुं गुणठाणुं. ९ दशमुं सुक्ष्म संपराय गुणठाणुं (कहेतां) एक सुक्ष्म लोभ अणुमात्र उदयमां होय. अहिंआं बाकी सर्व मोहनीकर्मनी प्रकृतियो उदयमां नथी कोइक जीवने सत्तामां पण नथी अहिंआं आत्मगुण पर्याय, स्वभाव लक्षण विशेषे प्रगट ए दशमुं गुणठाणुं. १० अगीयारमुं उपशांतमोह (कहेतां) मोहनीकर्म संपुर्ण उपशमी गयुं त्यां वीतरागपद थयो पण ते उपशम भावनो छे, सत्ताये मोहनीकर्म साबीत छे, ए अगीआरमुं गुणठाणुं. ११ बारमुं क्षीणमोह (कहेतां) मोहनी कर्मनो क्षय थयो ए संपुर्ण वीतराग हवे पात्र

स्रो नामकर्म १०, साधारण नामकर्म ११, हुंमक संस्थान १२, आताप नामकर्म १३, छेवटु संघयण १४, नपुंशकवेद १५, मिथ्यात्व मोहनी १६ ए मोळ प्रकृति. ११७ एकशोंने सत्तरमांहिथी काढीए एटले एकसोने एक प्रकृति रही. ए १०१ प्रकृतिनो बंध बीजे गुणठाणे लाभे. हवे त्रीजे मिश्रगुणठाणे ७४ चुंवोतेर प्रकृतिनो बंध होय, त्यां प्रकृति २७ घटी तेनां नाम. तिर्यचनी गति १, तिर्यचनी आनुपूर्वी २, तिर्यचनुं आयुष्य ३, थीणद्धी निंद्रा ४, प्रचलाप्रचला निंद्रा ५, अने निंद्रा निंद्रा ६, दुर्जाग्य नामकर्म ७, दुस्वर नामकर्म ८, अनादेय नामकर्म ९, अनंतानुबंधी क्रोध१० अनंतानुबंधी मान ११, अनंतानुबंधी माया १२, अनंतानुबंधी लोज १३, मध्यनां चार संस्थान १७ अने मध्यनां चार संघयण २१, नीच गोत्र २२, उद्योत नामकर्म २३, अशुजवीहाउ गति २४, स्त्रीवेद २५, मनुषनुं आयुष्य २६ अने देवतानुं आयुष्य २७, ए सत्तावीश प्रकृति १०१ मांथी घटाडीए एटले ७४ चुंवोतेर प्रकृतिनो बंध रहे, ए त्रीजा गुणठाणानो विचार कह्यो ३. हवे

प्रमत्त गुणठाणे जाणवुं. ६ हवे अप्रमत्त सातमा गुणठाणे ५९ उंगणसाठ प्रकृतिनो बंध होय, तो अहिंआं प्रकृतिनो विवरो कहे छे. शोक १, अरति २, अस्थिर नामकर्म ३, अशुभ नामकर्म ४, अयश नामकर्म ५, अशाता वेदनीय ६, ए छ प्रकृति अथवा देवनुं आयुष्य बांधे तो सात प्रकृति. ए सात घटतां ५६ छपन प्रकृति रही. जो देवतानुं आयुष्य न बांधे तो, अने बांधे तो सत्तावन रही देवतानुं आयुष्य बांधे त्यारे देवतानां अंगोपांग पण बांधे तो ५८ अठावन प्रकृतिनो बंध थाय अथवा ए देवतानुं डुग न होय तो ५६ प्रकृति ठरे. अहिंआं चरचा घणी छे. पण ६३ त्रेसठमांथी ६ काढामीए एटले ५७ प्रकृति रही अने तेमां २ प्रकृति वधारीए एटले ५९ उंगणसाठ प्रकृति रही एम समजवुं ए सातमा गुणठाणानो विचार तेमां देवतानुं आयुष्य बांधीने आव्यो होय तो अंगोपांग इहां बांधे तो अठावन प्रकृतिनो बंध होय ७ हवे अपूर्वकरण आठमुं गुणठाणुं तेनो विचार कहे छे. तेना सात भाग छे तेना पहेले

प्रमत्त गुणठाणे जाणवुं. ६ हवे अप्रमत्त सातमा गुणठाणे ५९ उंगणसाठ प्रकृतिनो बंध होय, तो आहिंआं प्रकृतिनो विवरो कहे छे. शोक १, अरति २, अस्थिर नामकर्म ३, अशुभ नामकर्म ४, अयश नामकर्म ५, अशाता वेदनीय ६, ए छ प्रकृति अथवा देवनुं आयुष्य बांधे तो सात प्रकृति. ए सात घटतां ५६ छपन प्रकृति रही. जो देवतानुं आयुष्य न बांधे तो, अने बांधे तो सत्तावन रही देवतानुं आयुष्य बांधे त्यारे देवतानां अंगोपांग पण बांधे तो ५८ अठावन प्रकृतिनो बंध थाय अथवा ए देवतानुं द्रुग न होय तो ५६ प्रकृति ठरे. आहिंआं चरचा घणी छे. पण ६३ त्रेसटमांथी ६ काढामीए एटले ५७ प्रकृति रही अने तेमां २ प्रकृति वधारीए एटले ५९ उंगणसाठ प्रकृति रही एम समजवुं ए सातमा गुणठाणानो विचार तेमां देवतानुं आयुष्य बांधीने आव्यो होय तो अंगोपांग इहां बांधे तो अठावन प्रकृतिनो बंध होय ७ हवे अपूर्वकरण आठमुं गुणठाणुं तेनो विचार कहे छे. तेना सात भाग छे तेना पहेले

वमुं अनिवृति बादर गुणठाणे पहेले भागे २२ बावीश प्रकृतिनो बंध होय. इहां च्यार प्रकृति घटे तेनां नाम. हास्य १, रति २ डुगंछा ३ अने भय ४, ए च्यार प्रकृति छवीसमांथी काढीये त्यारे २२ बावीश प्रकृतिनो बंध रहे अने छेल्ले भागे १० अढार प्रकृतिनो बंध रहे. ए च्यार प्रकृति घटे तेनां नाम. पुरुषवेद १, संज्वलनो क्रोध २, संज्वलनो मान ३, संज्वलनी माया ४ ए चार प्रकृति बावीशमांथी घटामीए एटले १० अढार प्रकृतिनो बंध रहे. संज्वलनो लोज घटामीए तो दशमे सुक्ष्म संपराय गुणठाणे १७ सत्तर प्रकृतिनो बंध रहे अगीआरमुं तथा बारमुं तथा तेरमुं ए त्रण गुणठाणे तो एक शातावेदनीयनोज बंध छे. अने चउदमुं गुणठाणुं अबंध छे ए कर्म- ग्रंथना पदथी गुणठाणे गवेखीने कर्म बंध कह्यो हवे ए प्रकृतिजना बंधनी जे स्थिति ते पांचमा कर्मग्रंथथी जाणजो अहिंआं कही न- थी शामाटे के ग्रंथ वधी जाय. हवे ए कर्मनो बंध शावमे थाय छे ते चोथा कर्मग्रंथने विषे चार बंध हेतु कह्या छे मिथ्यात्व) १ अव्रत, २

पशमना बळथी जाणवामां आवे छे, ए लक्षण स्वभाव स्याद्वादशैलीए जे जाणपणुं थाय ते यथार्थ स्वरुपने जाणे तेने केवळज्ञानी कहीए. एटले केवळज्ञानीमां अने द्रव्यानुयोगना जाणवावाळा पुरुषमां कंइ पण अंतर न जाणवो. जेम केवळज्ञानी केवळज्ञानवडे जाणे अने केवळ दर्शनवडे देखे छे तेमज श्रुतकेवळी अनुभव ज्ञानवडे जाणे देखे छे स्वरुप यथार्थ प्ररुपे छे अने जाणवामां पण यथार्थ छे. माटे ए बेमां कांइ भीन्नपणुं जाणवुं नहि. एवुं बृहत्कल्पनी भाष्यने विशे कह्युं छे अने समजवामां पण एमज आवे छे. पछी तत्व तो केवळी जाणे.

उक्तं च-

गीयत्थोय केवळीए चउव्वीहे जाणणेय कहणेय॥
तुल्ले रागद्वेशे अणंत कायस्सर्वज्ञ जाणवा ॥

एम जाणीने जे द्रव्यानुयोगना जाण ज्ञानी पुरुष तेमनो अविनय न करवो तेमनी सेवा भक्ति करवी. तेमनी आज्ञा माथे चढाववी एम करे ते जीवने सुखे सुखे धर्मनी प्राप्ति थाय

अने ते जीव वहेलो कर्मनो नाश करीने मोक्षे पण जाय. अने अविनय आदि करवावाळा ते दुर्लभबोधी थाय, तथा बहुल संसारी थाय एम समजवुं. हवे प्रसंगे द्रव्यानुयोगनी वारता किंचित् कहे छे ते द्रव्यनां नाम. धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकाशास्तिकाय ३, पुद्गलास्तिकाय ४, जीवास्तिकाय ५ अने काळ ६. ए छ द्रव्य छे. हवे ते द्रव्यनी ओळखाण करवी एटले द्रव्य कहेतां शुं तो जे गुण पर्याय सहित होय अने त्रणे काळ एक रुपे रहे तेने द्रव्य कहीए. जेम पर्याय पलटे, तेम द्रव्यनुं पलटवुं न थाय तेने द्रव्य कहीए एटले गुण पर्याय कहेतां जीवद्रव्यनो ज्ञानादि गुण अने पुद्गल द्रव्यनो रक्तत्वादि गुण इत्यादि पर्यायनी पेठे द्रव्य पलटे नहि. जेम मृत्तिका द्रव्य तेनो जे गुणपर्याय घटादि ते सर्वे पर्याय छे मृत्तिका ते द्रव्य छे आधाराधेय ते गुण छे. ए रीते समजवुं. इहां द्रव्य शक्ति भावे गुणपर्यायमां रही छे अने व्यक्ति भाव ते गुण पर्यायनो प्रगटपणो आवरणना अभावे थाय. हवे ते द्रव्य बे प्रकारना

ठे एक सामान्य, अने बीजो विशेष: सामान्य ते द्रव्य स्वरुप ठे, अने विशेष ते गुणपर्यायरुप ठे एम जुदो जुदो भिन्नपणानी वक्तव्यताने सुमतिग्रंथ- थी जाणजो हवे एम भिन्नपणुं एकांते जो मा- नीए तो द्रव्य गुण अने पर्याय ए त्रणे भिन्न थइ जाय तो मोटो विरोध आवे शामाटे के गुण पर्यायने ज्यारे जुदा मानीए त्यारे द्रव्य ते शाने कहीए ? जेम सुवर्ण द्रव्य ठे अने तेना घाट अनेक ठे ते कंइ सुवर्णथकी भिन्न नथी. तेमज ज्ञानादि गुणो ने आत्माथकी जुदा नथी आ- त्मा एज ज्ञान, अने ज्ञान एज आत्मा ठे. अ- हिंयां कोइ एकांतवादी एम जाणशे के अमो एमज मानीए ठीए, शामाटे के मृत्तिकाथकी घट जुदो नथी, तेमज आत्मा अने ज्ञान एक रुपेज ठे पण भिन्न कोइ काळे मनावे नहि. तेने उ- त्तर के, जे एकत्व वचन तुं कहे ठे ते एकत्व मार्ग विनगगनो नथी अहिंयां तो स्याद्वादमा- र्ग ठे. कोइ जगाए भेद होय अने कोइ जगाए अभेद पण होय. एमां कंइ विरोध न- थी. अहिंयां शिष्य प्रश्न करे ठे. के स्वामी एक

द्रव्यने विषे भेद अने अभेद ए बे धर्म केम पामीए एतो प्रत्यक्ष विरोध छे ज्यां भेद होय त्यां अभेद न होय, अने ज्यारे ए बे धर्मनी एक स्थानके प्राप्ति थाय त्यारे तो महा विरोधकारी दीसे. जेम जे जगाए अंधारुं होयने जगाए अजवालुं न होय तेम जे जगाए अजवालुं छे त्यां अंधारुं न होय तेमज एक द्रव्यमां भेद अने अभेद केम संभवे. तेनो उत्तर जे श्रुतज्ञाननी रमणता करो एटले तमोने समज पडशे. अने ज्यांसुधी श्रुतज्ञाननी रमणता न थाय, त्यांसुधी चारित्रधर्म पण फलदायक थतो नथी. अने कोइ चारित्रीओ समाधि पण पामे नहि. ते श्रीआचारांगजीमां कह्युं छे.

यदुक्तं-

वीतीगीछ समावनेणं अप्पाणेणं तं लनंती समाहीं.

जे घट पट भावादिकने यद्यपि विरोध छे तो हे पण भेदाभेदने विरोध नथी शामाटे के सर्व द्रव्यने विषे अथवा सर्व गामने विषे बे धर्म रह्या छे. भेद धर्म छे अने अभेद धर्म पण छे. ए बे धर्म अविरोधी भावे रह्या छे. एकत्व

वर्तीपणे दीसे छे, एटले एकत्वभाव अभेद स्वभाव ते माचो, अने भेद स्वभाव उपाधिपणे माटे जुगे. एम कोइ कहे ते पण अनुभव सत् भासन थतो नथी. एटले व्यवहारनयपर अपेक्षा ए बेहुनो गुणादिकनो भेद, अथवा गुणादिकनो अभेद. ए वचन तो एक गमे नथी जे घटादि द्रव्यने विषे सर्व लोकनी शाखे प्रत्यक्ष प्रमाणे दीसे छे. के रक्तत्वादि गुण पर्यायनो भेदाभेद जे लहीए छीए तो तेनो विरोध कहो केम कहीए. जे प्रत्यक्ष ते घटने विशे वर्ण गंध रस स्पर्श रह्या छे, अने सर्व नोखा नोखा कार्यना कर्ता छे अने एक द्रव्य आश्रीने वरती छे. ते आपणने प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे तो विरोध कहो केम कहेवाय ? तेज रीते सर्व द्रव्यने विषे भेदाभेदनुं जाणवुं.

उक्तं च—नहि प्रत्यक्ष दृष्टेऽर्थेविरोधाना मत धा प्रत्यक्ष दृष्टं हवे दृष्टांतनुं पण कार्य नथी. उक्तंच–केदमन्यत्र दृष्टत्वा मोहनी पुर्णता तत्र दृष्टांत पाचं सेयत्वं प्रत्यक्षप्यनुमानवत् ॥१॥

हवे ते भेदाभेदनुं स्वरुप प्रत्यक्षपणे पुद्गल-

कहेवाय. एक अंश स्वरुपे अने एक अंश पररुपे विवक्षा करीए त्यारे छे अने नथी. एक अंश स्वरुपे अने एक अंश युगपत् एम बंन्नेनी विवक्षा करीए तो छे अने अवाच्य एक अंश पररुपे अने एक अंश युगपत् एम बंन्नेनी विवक्षा करीए त्यारे नथी अने अवाच्य ए तो अभेद छे अने श्याम, रक्त अवस्थाये भेद छे. पण घट अवस्था ये एकज छे तो अहिंआं विरोधनी शी वात. हवे आत्मद्रव्यमां भेदाभेदनो अनुभव देखाडे छे जे एक प्राणी बाळभावने विषे बाळक हतो तेज जीव तरुण अवस्था आवे थके भिन्नपणे दीसे छे. शामाटे के रुपरसादि बधुवे फरी गयुं पण मुख्य भावे तो जीव एकज छे एटले मनुष पर्याय एकज रह्यो तथा नाम पण एनुं एज छे अने जीव भावे पण एनो एज छे तो बाळ तरुणभावे भिन्न छे पण नामादिक भावे अभिन्न छे तो अहिंआं कशोए विरोध नथी.

उक्तं च–

पुरिसंमीपुरीससद्दो जनम्माइ मरण काळप-

वरीने विशेषपणे देखामे ढे. जे द्रव्यने विषे नेद होय ते द्रव्यने विषे रुपांतर सहितनो अनेद पण होय, जेम श्वास कोश कुशला घटादिनो नेद ढे अने तेहीज मृड द्रव्य विशिष्ट अनर्पित ढे एटले स्वपर्यायनो अनेद ढे तेनो रुपांतरथी नेद होय, जेम ते घट ढे तेनी जे ग्रीवा अथवा रक्तत्वादि ए घटथकी नेद ढे. शामाटे के घटनुं ग्रीवा अथवा घटनो रक्तत्वादि वर्ण ए रुपांतर जोतां घटनो नेद ढे अने तेहिज मृड कहेतां मृत्तिका द्रव्य ए विशेष ढे अणारोपित ढे एज स्वपर्याय ढे ते तो अनेद ढे अने रुपांतर वस्तु विचारीने जोइए तो नेद होय. जेम श्वास, कोप कुशलादि पर्याय ए विशेष करीए तो मृड द्रव्य ए तेनोज नेद होय एम नेद ने अनेद ढे, ते नयनो मुळ हेतु सुगम ढे तेथी विस्तार्युं नथी. एवी रीते द्रव्यपर्यायनुं आरोपण तथा अणारोपण थाय. ते सतं नयचक्रने विशे अकेक नयना सो सो नेद करेला हता ते नयचक्रना अध्येनमांहे ए नेद सर्वे कहेला हता, अने हमणां द्वादश सार नयचक्रनी मांही बार बार नेद अकेक न-

अर्थ कह्या जाय नहि. संकेतित शब्दपणे एक-ज केहेवाय पण बे रुप शब्दे करी न कही शकाय. जेम पुष्पदंतादिक शब्द पण एको ज्ञक्त छे जेम चंद्रमा सूर्य कहीए पण भिन्न पणे न कही शकीए एम बेहु नयना अर्थ मुख्य-पणे भिन्नपणेज कहेवा घटे. एम शास्त्रथी घणी युक्तिउ जोइने विचारी जोजो. ४ अथवा प्रथम पर्यायार्थकनयनी कल्पना करीए पछी एउभयनयनी करीए तेवारे कथंचित् भिन्न अने अवक्तव्य एम कहीए ५ अथवा प्रथम द्रव्यार्थिकनयनी कल्पना करीए. पछी एकादो बे नयनी कल्पना करीए तेवारे कथंचित् अभिन्न अने अवक्तव्य एम थाय. ६ अथवा अनुक्रमे बे नयनी कल्पना करीए. पछी बे नयनी एकेवारे कल्पना करीए तेवारे कथंचित् भिन्न अभिन्न अने अवक्तव्य एम कहेवाय. ७ एटले ए भिन्न अभिन्नमां सप्तभंगी कही एम भेदाभेद पर्यायमां पण सप्तभंगी कहेवी. एम सर्वत्र सप्तभंगीउ जोडवी. अहियां शिष्य प्रश्न पूछे छे जे बे नयना विषयनी ज्यां विचारणा होय त्यांतो एकेक गुण मुख्य

ए नये वचीये प्रमाण खरीके नहि तेने कहीए के माइ ए नयो कंइ कल्प व्यवहार वास्ते प्ररुपी नथी, अने तमे कल्प व्यवहारमां ए लगावीने शुभाशुभ मार्गने स्थापो छो, ते कुनय थाय शा माटे के व्यवहार छे ते मूळमा त्रीजो एकज नय छे तेमां तमे सात नय शी रीते उतारो छो? ए तो प्रत्यक्ष कुनय थाय माटे सवळुं समजीने नयनो विचारनय ग्रंथोथकी जाणवो जोइए अने भगवाने नय अधिकार प्ररुप्यो छे. ते द्रव्य पर्याय ग्रहण करवा वास्ते छे एटले वस्तु धर्म ग्रहण करवा अने अंशे अंशे भिन्नपणुं देखाम्बुं, अने वस्तु स्वरुपनुं उळखाववुं, तेने वास्ते नयो कही छे पण कंइ कल्प व्यवहारवास्ते कही नथी, ए तो कुनय छे. ए अधिकार सम्मत्ति ग्रंथ मध्ये छे. एटले द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक ए बे नय अद्यापि छे, ते मध्ये द्रव्यार्थिकनी चार (४) नय अने पर्यायार्थिकनी (३) नय ए द्रव्यार्थिकनि द्रव्य ग्रहण करता छे, अने पर्यायार्थिकनी पर्याय ग्रहण करता छे, ए तो वस्तु धर्ममां छे, पण कल्प व्यवहारमां लगाववी ते

विषे कहीए तो विरोध आवे, ए नय अहिंयां लागु पम्तो नथी जे समभिरूढ नयने मते सविकल्प छे, अने एवंभूत नयने मते तो विकल्प छेज नहि. ए नय तो निर्विकल्प छे एम बे भंग जाणवा. अथवा अर्थ नय प्रथमनी चार नय तो व्यंजन पर्यायने मानेज नहि; एटले व्यंजन पर्यायवाळो तो प्रथमनी चार नयोने मानतोज नथी. ते माटे नयनी अहिंयां प्रवृत्ति नथी, अने अधिकुं जोवुं होय तो अनेकांत विवक्षाथी जाणवुं. ते माटे सप्तभंगनो दृढ अन्यास करवो, सर्वने विषे ए सप्तभंगी लागे जे जे देशे जे जे वस्तुने ग्रहण करीए त्यां सप्तभंग प्रमाण होय. सिद्धमां पण सप्तभंगी लागे, अने नयो तो कोइ जग्याए लागे अने कोइ जग्याए न लागे, अथवा सिद्धमां तो लागेज नहि. माटे सप्तभंगनो अन्यास करवो. अहिंयां परमार्थे जीवाजीवादिक भेद अथवा द्रव्य पर्याय ग्रहण करवाने वास्ते स्याद्वाद परिज्ञान छे. ते जैनशासननुं मूळ छे अने ए तर्कवाद छे तेने जैनी कहीए अने तेनोज जैनभाव लेखे छे एम

निश्चयथकी समकितादि परिज्ञान तेने समकित कहीए. तेने साधु पण कहीए. तेने ज्ञानी कहीए. अने तेनीज मुक्ति थाय छे ते विना जे व्यवहार क्रिया करे छे अथवा चरणसित्तरी अने करणसित्तरी जे पाळे छे ते जीव तो संसारमां रखडशे तेनी मुक्ति थवानी नथी. ज्यारे त्यारे ए स्याद्वाद परिज्ञान पूर्वोक्त थशे, ते दहाडे ते आत्मानुं कल्याण थशे, अने सर्व कर्मथी रहित थइने मुक्तिनां सुख भोगवशे एवुं सम्मतिग्रंथमां कह्युं छे. उक्तं च.

चरण करणप्पहाणा,
ससमय परसमय मुक्कवावारा ॥
चरण करणस्ससारं,
निच्छय सुद्धं न याणंति ॥ १ ॥

हवे नय प्रमाणे किंचित् विवेक करीने देखाडे छे. के जे घट पटादि पदार्थ अथवा जीवाजीवादिक पदार्थ अथवा द्रव्य गुण पर्यायरुपे त्रण त्रण स्वरुप भेद थाय तेनो अर्थ एकज छे. शामाटे के घटादिक पदार्थ मृतिकारुप छे. ते

द्रव्य घटादि रुपे सजाति छे. ए द्रव्य पर्याय, तेमां रुप रसादि घणा गुण छे, एम जीवाजीवादिकमां जाणजो. एवुं प्रमाण स्याद्वाद वचने जुर्ज शामाटे, जे प्रमाण ए सप्तभंगी आत्मिक तरीके स्वरुपपणुं ए मुख्य रीते जाणीये. नयवादी जे एक अंशवादी ते पण मुख्यवृत्तिए छे अने उपचारे एक अर्थने विषे त्रयरुपपणुं जणाय छे. यद्यपि नयवादीने एक अंश वचने एकज शक्ति छे, अर्थ पण एकज छे, तो ए पण लक्षण भेद उपचारे करीने बीजा अर्थ पण जणाय छे. एकदावृत्तिथी एम होय तेमां कंइ पण भर्हीतंत नथी. यथा गंगायाम गोसे इत्यादि ए स्थळे जे तेनी बे वृत्ति मानीए छीए. अहिंयां मुख्यपणे अने अमुख्यपणे अनंतु धर्म आत्मिक वस्तु जणाववाने एक नय शब्दनी बे वृत्ति मानतां विरोध नथी, अथवा नैयात्मिकशास्त्रने करमक्रिमागधीए पण ए अर्थ जणाय अथवा एक बोध शब्दे बोध अर्थ एम अनेक भंग जाणवा एम जे वारे ज्ञान उपयोग जोइने देखवुं थाय ए सत्य छे. हवे जे पूर्वे अर्थ कह्यो, तेज शब्दने

द अने न्याय छे तो द्रव्यार्थिक नये अथवा पर्यायार्थिक नये ए बन्ने नय भिन्नाभिन्नग्राही छे एटले मुख्य अने अमुख्य प्रकारे तथा साक्षात् संकेते तथा व्यवहित संकेते एम ए अनुसारे ए नयनी प्रवृत्ति छे, अने ते नयनो उपचार कहीए, जेम गंगापदनो साक्षात् संकेत प्रवाहरूप अर्थने विषे छे. ते माटे प्रवाह ते शक्ति तथा गंगातीरे ते गंगानो एक संकेत छे, ए व्यवहित संकेत ते माटे ए उपचार कहीए. तेमज द्रव्यार्थिक नयनो साक्षात् संकेत ते अभेद छे अने तेने ज्यारे शक्ति भेद करीए त्यारे व्यवहित संकेत थाय. ते व्यवहित संकेत ए उपचार छे, तथा पर्यायार्थिक नयनो पण भेद शक्ति उपचारने विषे जाणवो. अहियां कोइ एवुं कहे छे के एक नय एकज नयना विषयने ग्रहण करे. बीजी नयनो विषय न ग्रहे. ए वात पण असंगत छे, शामाटे, जो नय ज्ञानमांही सर्वथा मुख्य अर्थज मानीए तो अमुख्य पण न भासे. तो स्वतंत्र भाव सर्वथा नयांतर विमुख थइ जाय. त्यारे तो मिथ्यादृष्टि ग्राहक ए कु-

नय थाय पण सुनय न थाय एम समजवुं. ए अर्थ तो विशेषावश्यके तथा सम्मतिग्रंथे कह्यो छे.

उक्तंच.

दोहिविणं एहिंणीयं सयं मुलएण तहविमिछत्तं॥ जेसविपयंप्पहाण, त्तणेणयणुण तिरवेरंक ॥१॥

अर्थ–के जे शब्दनो अर्थ करता होइए जे शब्द नयने गुण करतां अंतर बीजी नयो खेपवीए तेने सुनय कहीए, अने जे अर्थने उपघात करे तेने कुनय कहीए एम नयादिकनां भेद विचार सद्गुरुसाय आदिक पामेथी जाणवा, तथा पूर्वे अमे पण कह्या छे. तेथी समजवा तथापि अध्यात्म भावना जाण ते मुनीश्वरोए बेहु नय मानेला छे अने ए बेहु नयनी प्ररुपणा पण करे छे एक निश्चयनय अने बीजो व्यवहारनय त्यां निश्चयनयना बे भेद. एक शुद्ध निश्चयनय, अने बीजो अशुद्ध निश्चयनय. जीव ते केवळज्ञानादि रुप छे. ए निरुपाधिक केवळज्ञानादि शुद्ध गुणविषे आत्माने अभेद संबंध देखाड्यो ए शुद्ध निश्चयनय. हवे मतिज्ञानादिक गुणने आत्मा कहीए ते अशुद्ध

गुण ग्रहण थयो ए उपाधिसहित छे. तेने अ-
शुद्ध निश्चयनय कहीए. तथा चौदे गुणठाणां ते
पण अशुद्धतामांज लखे छे. शुद्ध स्वरुपना द्रव्य
ते देखवावाळो जे चेतनद्रव्य तेनेज शुद्ध माने छे
ए द्रव्य संग्रहने विषे कह्युं छे. उक्तं च.

मग्गण गुणठाणेहिं, चउदसहिं हवंतितह ॥
अशुद्धनया विणेयासंसारी, सवशुद्धाहु शुद्धनया॥१

अर्थ-अथवा व्यवहार नयपदे सिद्ध अने संसारि
जीवना भेद वेहेंचीए त्यां पण चउदे गुणठाणे व्य-
वहार कह्यो तो ए पण अशुद्धज छे शामाटे के सदा-
य काळ उपाधिसहित ते अशुद्धज छे, अने उपा-
धिरहित ते शुद्ध छे एटले निश्चयनयना शुद्ध अ-
ने अशुद्ध ए बे भेद कह्या. एटले निश्चय कहे-
तां भेद ज्यां न होय एकलो अभेद वस्तुने ग्र-
हण करे तेने निश्चयनय कहीए, अने व्यवहार
नय कहेतां भेद वहचें वस्तुने अंशथकी भिन्नभिन्न
दर्शावे तेने व्यवहारनय कहीए ते व्यवहारनयना
बे भेद. एक सद्भूत व्यवहारनय अने बीजो
असद्भूत व्यवहारनय एक द्रव्य आश्रित ते सद्-

भूत व्यवहार, परविषयता ते असद्भूत व्यवहार
हवे पहेलो भेद जे सद्भूत व्यवहार कह्यो तेना बे
प्रकार छे एक उपचरित सद्भूत व्यवहार, १ अने
बीजो अणउपचरित सद्भूत व्यवहार २. जे
उपाधिसहित गुण गुणी भेद देखाडे जेम जीव
शमतिज्ञानी. ते उपाधिसहित थयो. उपाधि
ते उपचारे छे अने जीव ज्ञान ए सद्भाव छे, ए-
टले ए सद्भूत उपचरित ए पहेलो भेद कह्यो.
हवे अणउपचरित सद्भूत व्यवहार ते गुणगु-
णी भेद करे. ए बीजो भेद जेम जीव ते केवलज्ञा
नी तो केवलज्ञान. उपाधिरहित छे एटले उप-
चार अहिंयां छेज नहि अने जीवने. ज्ञान ए बे
भेद थया एटले ए त्रणे भेदमां उपचरित सद्भूत
व्यवहार थयो. हवे असद्भूत व्यवहारनयना पण
बे भेद छे, एक उपचरित असद्भूत व्यवहार अने
बीजो अणउपचरित असद्भूत व्यवहार. त्यां
पहेलो भेद असंश्लेषित योग जेम जीवनां क-
र्म ए ससंबंध स्वलामित्व भाव रूप कल्पित छे,
शामाटे के कर्म छे ते जुदां उपचारे छे, केमके ज्यारे
त्यारे ए कर्मनो नाश थाय, अने जीव ते कर्म बंधन

ठेदिने जुदो पमे अथवा कर्म सर्व सादी सांत भां ठे ते स्थिति प्रमाणेज आत्मप्रदेशे रहे माटे ए उपचलित अने जीवथि कर्म जुदां तेथी असद्भूत एम समजवुं, एटले ए असद्भूत उपचलित व्यवहार कह्यो. हवे बीजो भेद जे ठे ते संसलेक्षितजोगे ठे. ए संबंध एम जाणवो. के जेम जीवने रागादिक परिणाम ए संबंध कर्मनी परे नज जाणवो, तेनो अनादि संबंध ठे, तो ए विपरीतभावथकी आत्मा जुदो थायज नहि. ए तो श्रेणीग ते शुक्लध्याननो पहेलो पायो ध्याइ रहे, अने बीजे पाये ध्यानारुढ थको वितराग भावे जाय ते वखते पुद्गलथी आत्मा ताद्रश जुदो पमे ते माटे ए कंइ उपचारकृत्य ठेज नहि माटे अनुपचलित कहीए, अने जीवनो विषय शुद्ध अने रागादिकनो विषय अशुद्ध एम भिन्न विष्य ठे माटे अणउपचलित असद्भूत व्यवहार थयो, एम नयभेदना अनेक विकल्प थाय ठे. वस्तु धर्म अंशे ग्रहीने द्रव्यना अनेक भेद थाय ठे, ते पण द्रव्यनी ओळखाण करवा वास्ते मुळभेद त्रण कह्या ठे उत्पाद ॥१॥ व्यय ॥२॥ अने ध्रुव ॥३॥

ए त्रण पदे करीने सहित होय तेनेज द्रव्य कहीए. हवे ए त्रणे पदनी ओळखाण. सर्व अर्थ व्यापकपणुं धारवुं एटले जीनशासनने मते ए त्रण गुण विना कोइ द्रव्य छेज नहि. इहां केटला-एक आत्मादि द्रव्यने नित्य माने, केटलाएक अ-नित्य माने, अने केटलाएक द्रव्यना एकांकि भेद वर्हेचे छे ते रीत सत्य छेज नहि. नित्य अनेकांत अने अनित्य अनेकांत, एवुं जे बोलवुं ए पद पण लोकथकी विरुद्ध छेज ते माटे सर्वे पदार्थने विषे उत्पादव्यय ध्रुवसहित द्राढणे मानवुं एम श्री हेमचंद्राचार्यजी कृत्य स्याद्वादमंजरी ग्रंथमां-हे पण प्रमाण छे. उक्तं च.

आदिप्तमाव्यां समस्तं वस्तु स्याद्वादमु-द्रानती भदी वस्तु तन्नीत्यमे वैक मनित्यमन्य, दितित्वदाज्ञाद्दिशतां प्रलापः ॥ १ ॥

अर्थ—के अदीपं एटले दीपादार कहेतां त्रुवन प्रकाश दीपक बोम्य मरजादा करे त्यां स-र्व वस्तु पदार्थ स्वरूप समस्त भाव एटले सर्व प-दार्थने देखाडे के आपदार्थ स्वरूप द्रव्यपर्यायाली-

कमिति तथा च वाचक मुख्य उत्पाद व्यय अने ध्रुव उक्तंच स्तदीति समसभाव करत येहीज भाव वीतरीने कहेले के उत्पाद १, व्यय २, अने ध्रुव ३ ए त्रण लक्षण तो षट् द्रव्यमांही समय समय प्रणमे ले अहिंआं कोइ पणी शंका करशे के ज्यां उत्पादव्यय होय त्यां ध्रुवपणुं होयज नहि, अने ज्यां ध्रुवपणुं होय त्यां उत्पादव्यय होयज नहि, ए तो विरोधनी वारता ले. तो त्रण लक्षण एक ठामे होय ले ते केम मनाय? ज्यां गया ले त्यां ताप होयज नहि, अने ज्यां ताप ले त्यां गाया होयज नहि ए एक ठामे बे वानां होयज नहि, तेम ए त्रण लक्षण पण एक ठामे होयज नहि, एम कहेनारनी शंका टाळवाने वास्ते सद्गुरुराय उत्तर कहे ले के जे शीत तथा उष्ण जळने विषे तथा वह्निने विषे परस्पर मांहोमांहे एक एकना विरोधी होय. ते एक ठामे नज होय. ए प्रत्यक्ष विरोधी लेज पण अहिंआं तो आ त्रणे लक्षण सर्व पदार्थने विषे प्रत्यक्षपणे दीसे ले तेहनो परस्पर त्याग केम थाय? प्रत्यक्ष सिद्ध ले तेनो ना केम पमाय? अहिंयां विरोध केम कहेवाय? अनादि काळना

एकांतवासनाए मोहदृष्टिमां व्यापीने नया प्रणमीने रहेला जे जीव होय तेने एनो विरोध भासे पण जे ज्ञानि जीव होय ते परमार्थ विचारीने जुवे तो तेनो विरोध थावतोज नथी. समय तत्ताइ परनी एज वचन विरोधभंजकछे. तेहिज स्वरुप देखाडेछे. के एकज कंचन डव्य छे. तेनो पूर्वे कुंम्ळ घाट हतो ते कुंम्ळघाटनो नाश थयो अने मुगटाकारे उत्पत्ति थइ अने कंचनाकारे स्थिति छे ए त्रणे लक्षण प्रगट दीसे छे शामाटे के हेम कुंम्ळ भागीने मुगट कर्यो छे तेवारे घाटनो नाश थयो माटे कुंम्ब्याकारे व्यय थयो ए सत्य छे अने हेम मुगटाकारे उत्पत्ति थइ एटले उत्पात ए पण सत्य छे अने हेम डव्ये स्थिरभाव छे एटले ध्रुव छे एम उत्पाद व्यय साधीए अथवा बीजो दृष्टांत कहे छे यथा गोरस. एटले गोरस शब्द एक छे हवे गोरस कहेतां डधनो नाश, त्यां दधिनी उत्पत्ति. अने गोरसभावे स्थिति एटले डधनो नाश एटले व्यय कहीए अने दधिनी उत्पति ते उत्पात कहीए अने गोरसभावे स्थिति एटले ध्रुव कहीए ए रीते उत्पाद व्यय. अने ध्रुव ए त्रणे लक्षण एक द्रव्यमां छे. अ-

हिंयां उत्पादव्यय विना कोइ द्रव्य दीसतोज नथी तेम ध्रुवतापणा विना कोइ द्रव्य दीसतोज नथी जे मुगटाकारे स्पष्ट उत्पाद छे ते पण हेम द्रव्य विना नथी. अथवा हेम द्रव्य पण कोइ घाट विना नथी. हेम पर्यायनुं परावर्तन धर्म छे त्यां उत्पादव्यय थाय छे अने ध्रुवतापणानुं ध्रुवता धर्म छे त्यां ध्रुवपणुं रहे छे एम ए त्रणे गुण मळीने द्रव्य थाय छे तेवारे ध्रुवतापणानी परतीत पण थाय छे तेमाटे तद्भाव आत्मा ए नित्य ए लक्षणे परिणमे माटे ध्रुव छे अने अभेदपणामां आद्रव्य एम सर्व भाव उपचारे छे. हवे उत्पाद व्यय. ध्रुवनो अभेद संबंध तेनो भेद सरूप पणे देखाडे छे के जेम हेम घाटनो व्यय अने मुगटनी उत्पत्ति ते एकाकार जाणीए छीए ते माटे विनाश पर्यायनी उत्पत्ति तथा व्यय ते संतान छे तेथी घाटनो नाश थाय एम व्यवहारे संभवे छे ते माटे उत्तर पर्यायनी उत्पत्ति त्यां पूर्व पर्यायनो नाश जाणवो, अने कंचन द्रव्यनी ध्रुवता पण तेहीज छे. ए त्रणे लक्षण एक द्रव्यमां एक समये वर्ते छे, एम नित्य तथा अनित्य शक्तिभेद अने कारणभेद समजवुं; सामान्यथी द्रव्य

ावो अने विशेषरूपे उत्पादव्यय जाणवो एमां
ये विरोध आवे नही, एम आत्माने विषे त्रण
ण मानवां; पूर्व पर्यायनो नाश त्यां नवा पर्या-
उत्पत्ति अने आत्मद्रव्ये स्थिति एटले पूर्वे
व्यनुं जाणवुं हतुं ते द्रव्य बीजे समये न्यून्य
पणे जाणवामां आव्यो, तेवारे पूर्वना जाणप-
ा नाश थयो, नवा जाणपणानी उत्पत्ति
अने ज्ञानभावे ध्रुव छे एम त्रण लक्षण
ावां; अथवा पहेले समये दीठुं बीजे समये
युं अने आत्मभावे स्थिति एटले पूर्व पर्या-
नाश, त्यां नवा पर्यायनी उत्पत्ति अने द्रव्य
पे ध्रुव एम षट गुण हानि वृद्धि ते पण
य छे, त्यां स्व परपर्यायनो विचार जाण-
त्यां नाश उत्पत्ति तो थइज रही छे, पण
लस्वरूपे ध्रुव छे एम स्वभाव लक्षण गुणप-
आदे विचार घणो छे ते सद्गुरुना मुख-
ी जाणजो. अहियां पण प्रसंगे आवशे ते
ग्रंथमां नाखीसुं, इत्यादिक द्रव्यानुयोगनुं
णपणुं जे पुरुषने तादृस्य थयुं छे तेने केवळ-
नी कहीए, ते पुरुषमां अने केवळज्ञानीमां

केइपण भिन्नपणुं जाणवुं नहि, जे भिन्नपणुं जाणे छे ते मिथ्यादृष्टि छे, अने समकितदृष्टि तो सरखा भावे जाणे, शामाटे जे गणधरदेवे तो बन्नेने सरखा कह्या छे तेनी साख बृहत्कल्पना भाष्यनी गाथा माथे पूर्वे कही गया छे तेथी जाणजो.

एटले गणधरदेवना कहेवामां तो बन्ने सरखा छे तेमणे तो ओछा अधिकतापणुं कह्युं नहि अने ते वचनने अणसद्दहनो ओछा अधिकतापणुं कहे छे ते गणधरदेवना वचनथकी उपरांठा थया तेवारे भगवान्‌ना वचननी श्रद्धा तेमने रही नहि तेथी प्रत्यक्ष तेमने मिथ्याभाव प्रगट थयो माटे एने मिथ्यादृष्टि कहेवा; ए वातमां कांइ दूषण छे नहि, एटले ए अगीयारमी गाथानो अर्थ कह्यो.

चारित्र गुणे जे छे हीणा, पण ज्ञानगुणे जे वासी रे। इत्था योग लक्षण कालादिके, प्रवीन विस्तोर साख सासी रे ॥ ज्ञान० ॥१२॥

अर्थ—चारित्र गुणे जे छे हीणा कहेतां जे व्यवहार चारित्र एटले चरणसीत्तरी अने करणसी-

तरीयकी जे हीण छे तोपण ज्ञानगुणने विषे जेनी रमणता छे ते पुरुषनी मुक्ति थशे एवुं पूर्वे अगीयारमी गाथाना अर्थ विषे सम्मति ग्रंथनी शाख आपेली छे त्यांथी जोइ लेजो एटले इच्छा योग कहेतां सूत्र अर्थ ज्ञानने विषे रमणता तेमने कांइ प्रमादी साधु कह्या नथी; अने कालादिक विकल योगी एटले काल ग्रहणादिक व्यवहार क्रियायकी जे उपरांठा छे अने इच्छा जोग ज्ञानने विषे रह्या छे. ते विशेषे करीने मुक्तिपंथनो साधक छे एवुं ललित विस्तरा टीकामां कह्युं छे.

उक्तं च-

कर्तुमिच्छोः श्रुतार्थस्य, ज्ञानिनोपि प्रमादिनः ।
कालादिविकलोयोग. इच्छायोग लक्षणं ॥१॥
॥ ललित विस्तरादौ ॥

अर्थ-एने विषे ज्ञाननुं बहुमान कह्युं पण व्यवहारनुं बहुमान कह्युं नथी. माटे आत्मा ज्ञान गुणमां वासेलो होय तो तेने कांइ व्यवहारादिकनी जरूर नथी. पण जेनो आत्मा ज्ञानगुणमा वासित न थयो होय तेने व्यवहार सपनो छे,

तेम तेनना आवरण जे पुरुषने पडेला म
तेमने कांइ तेथी तेनां आवरणनो क्षय नथ
पण तेज तेनादि आवरण ते मूल तो ते पु
तेथी यदि आवरणनो क्षय करेज. जे पडेला श
आवरणरहित करे तेथी तो ए घणो मार्ग देखाय
परंतु तेज ज्ञान गुण प्रगट ते तेमने कल्प क
रहीमन क्षय तेथी तेमने तो एक ज्ञाननो क्षय
॥ हवे ए अत्र यामनागमेत्र योगो अधिकार
नय प्रतियोगिमित्र स्वार्थे कामसंवेदनात् ।
ज्ञान तमोपि नयान्त यान्दयायोपजायते ॥ ६ ॥

अर्थ परंतु शुद्धकर्म तो ज्ञानमार्गने ि
ए मतन तेथी ए तो मार्ग जनो आत्मोत्र वृंग
अहन छे ते मार्ग अहं तो व्यवहारमार्ग अ
मान अनिनकार ते आत्माने हानकारी त
एक ज्ञानमार्ग छे ते ज्ञानने तो कोइ वस्तुन
प्रतिबंध होयज नहि तो शुद्ध व्यवहारनो प्रतिबं
तेम होय अने ते योग शुद्ध व्यवहार ग्रहण
करे तेथी ज्ञान ध्याननो नाश थाय. ए ते
मोटो विकार थाय एम तो धर्म रहे नहि अने
आत्म स्वरूपनो समरणा थाय नहि अने आत्म

स्वरुपनी रमणता थया विना आत्मानी तादृश उ
उळखाण थाय नहि, अने आत्मा उंळख्या वि
ना समकितगुण आवे नहि तो चारित्र धर्मनी
आशा सेनी राखवी; माटे प्रथमज आत्मद्रव्य-
ने उंळखे पछी धर्म आवे माटे धर्मनी खप होय
तेमने पहेली आत्मानी उंळखाण करवी ते आ
त्मानी उंळखाण शावडे थाय ते कहे छे: आ-
त्माजनां लक्षण तथा स्वभाव, ए बे वस्तु प्रथ-
म जाणवी जोइए, ते लक्षण बे प्रकारनां छे
तथा स्वभाव पण बे प्रकारना छे ते स्वरूप
नाम साथे कहे छे; आत्माने विषे सामान्य ल-
क्षण ८ छे विशेष लक्षण ६ छे अने सर्व द्रव्य
आश्रीने कहेतां सामान्य लक्षण १० छे अने
विशेष लक्षण १६ छे तथा सामान्य स्वभाव ११ छे,
अने विशेष स्वभाव १० छे ए सर्व उंळखवां जो-
इए ते अनुक्रमे नाम कहे छे पछी तेनो अर्थ
आगळ कहीशुं: १ अस्तित्वं २ द्रव्यत्वं ३ प्र-
मेयत्वं ४ अगुरुलघुत्वं ५ प्रदेशत्वं ६ चेतनत्वं
७ अचेतनत्वं ८ मूर्तत्वं ९ अमूर्तत्वं १० ए
दश सामान्य लक्षण कह्यां, हवे विशेष लक्षण

कहे छे. १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वी
वर्णरस ६ गंध ७ स्पर्श ८ गतित्वं ९ स्थि
त्वं १० अवगाहनात्वं ११ वर्तनात्वं १२ स्
चेतनत्वं १४ अचेतनत्वं १५ मूर्तित्वं १६
र्तित्वं ए सोल लक्षण कह्यां. हवे स्वभाव
छे. प्रथम सामान्य स्वभाव–१ अस्तिस्वभाव २
स्तिस्वभाव ३ नित्यस्वभाव ४ अनित्यस्वभा
एकस्वभाव ६ अनेकस्वभाव ७ भेदस्वभाव
अभेदस्वभाव ९ भव्यस्वभाव अने १० अ
व्यस्वभाव ए द्रव्यनो सामान्य स्वभाव क
हवे विशेष स्वभाव कहे छे. १ चेतनस्वभाव
अचेतनस्वभाव ३ मुरतिस्वभाव ४ अमुरतिस्व
५ एकप्रदेशस्वभाव ६ अनेकप्रदेशस्वभाव ७
भावस्वभाव ८ शुद्धस्वभाव ९ अशुद्धस्व
१० उपचरितस्वभाव. ए दश विशेषस्वभाव
व्यना जाणवा. हवे प्रथम जे अगीयार सा
न्य स्वभाव कह्या तेनो अर्थ कहे छे.

उक्तं च–द्रव्यगुणपर्यायना रासथी.

ढाल ११ मी.

हवे भेद गुणना भाषीजे,

ता कहियेंजी । सद्भुतता वस्तुता जाति, व्यक्ति रूपता लहियेजी ॥ द्रव्यभाव द्रव्यत्व प्रमाणे, परिछेद्य जे रूपजी, प्रमेयत्वं आगमम सुपीम, (सूक्ष्म) अगुरु लघुत्व रूपजी ॥ १ ॥

अर्थ—हवे अस्तित्वभाव जे प्रथम भेद छे ते गुण सेने कहीए के जेथकी सद्भूतपणानो व्यवहार थाय एटले सद्भूत कहेतां जे यथार्थ द्रव्यनुं अस्तित्वभाव ग्रहण थाय. १ अने वस्तुत्वं कहेतां वस्तु गुण तेने कहीए; एटले जेथी जाति शक्ति रुप हतुं ते व्यक्तिरुपे जणाय. जेम घट ते सामान्यथी जाति रुप छे अने विशेषथी तद्व्यक्तिरूप छे एटले ए अविग्रह सामान्य रुपे सर्वत्र भासे छे, अने अपाय विषे स्वरुप भासे छे, एटले पुरण प्रयोगथी ए संपूर्ण वस्तु ग्रहण थाय छे. हवे द्रव्यत्वं कहेतां द्रव्यभाव जे गुण पर्याय धारता तो भिन्नव्यंग्यजाति विशेष छे ते द्रव्यत्वं ए जाति रुप माटे गुणपर्याय न होय ए गुणपर्यायनी वासना नैयायिकादिमतवाळाने छे ए आसंका न करवी; सहभुवो गुणाः क्रमभुवः पर्याया एवी जैनशासननी व्यवस्था छे

कहे छे. १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वी
वर्णरस ६ गंध ७ स्पर्श ८ गतित्वं ९ स्थि
त्वं १० अवगाहनात्वं ११ वर्तनात्वं १२ स
चेतनत्वं १४ अचेतनत्वं १५ मूर्तित्वं १६
र्तित्वं ए मोक्ष लक्षण कह्यां. हवे स्वभाव
छे. प्रथम सामान्य स्वभाव–१ अस्तिस्वभाव २
स्तिस्वभाव ३ नित्यस्वभाव ४ अनित्यस्वभा
एकस्वभाव ६ अनेकस्वभाव ७ भेदस्वभा
अभेदस्वभाव ९ भव्यस्वभाव अने १० अ
व्यस्वभाव ए दशनो सामान्य स्वभाव क
हवे विशेष स्वभाव कहे छे. १ चेतनस्वभाव
अचेतनस्वभाव ३ मूर्तिस्वभाव ४ अमूर्तिस्व
५ एकप्रदेशस्वभाव ६ अनेकप्रदेशस्वभाव ७
भावस्वभाव ८ शुद्धस्वभाव ९ अशुद्धस्व
१० उपचरितस्वभाव. ए दश विशेषस्वभाव
स्वना जाणवा. हवे प्रथम जे अगीआर सा
न्य स्वभाव कह्या तेनो अर्थ कहे छे.

उक्तं च–द्रव्यगुणपर्यायना रासथी

ढाल ११ मी.

हवे भेद गुणना भाखिए, जिहां अस्ति

ना कहियेंजी । सद्भुतना वस्तुता जाति, व्यक्ति
रूपना लहियेजी ॥ द्रव्यभाव द्रव्यत्व प्रमाणे,
परिछेद जे रूपजी, प्रमेयत्वं आणागम सुधीम,
(सूक्ष्म) अगुरु लघुत्व रूपजी ॥ १ ॥

अर्थ–हवे अस्तित्वभाव जे प्रथम भेद छे ते गुण तेने कहीए के जेथकी सद्भूतपणानो व्यवहार थाय एटले सद्भूत कहेतां जे यथार्थ द्रव्यनुं अस्तित्वभाव ग्रहण थाय. १ अने वस्तुत्वं कहेतां वस्तु गुण तेने कहीए; एटले जेथी जाति शक्ति रूप हतुं ते व्यक्तिरूपे जणाय. जेम घट ते सामान्यथी जाति रूप छे अने विशेषथी तद्व्यक्तिरूप छे एटले ए अविग्रह सामान्य रूपे सर्वत्र भासे छे. अने अपाय विषे स्वरूप भासे छे, एटले पुरण प्रमाणथी ए संपूर्ण वस्तु ग्रहण थाय छे. हवे द्रव्यत्वं कहेतां द्रव्यभाव जे गुण पर्याय धारवा नो नित्यंन्वयजाति विशेष छे ते द्रव्यत्वं ए जाति रूप माटे गुणपर्याय न होय ए गुणपर्यायनी धारना नैयायिकादिमतवालाने छे ए आशंका न करवी; सहभुवो गुणाः क्रमभुवः पर्याया एवी जैनागमननी व्यवस्था छे

रहे; तेने एकप्रदेशत्वं कहीये ३. हवे चैतन्यत्वं कहेता जीवात्मानो अनुजवरुप गुण कहीय, ते सुख अथवा दुःख चेते छे (जाणे) छे अथवा तेथकी जाति, कुल, वृद्धि, हानि इत्यादिक स्वरूपने जे जाणे छे ते धर्म चैतन्यपणानो छे ७. अचैतन्य कहेतां चेतनाप णारहित एटले चेतनपणाना गुणथकी रहित एटले तेथकी जपरांठो मुक्ति संसार सुख दुःख न जाणे तेन अजीव कहीए एटले अचैतन्यत्वं ८. मूर्त्तित्वं कहेतां जे मूर्त्तिगुण ते रूपादि समावेश कहेतां जे वर्ण गंध रस स्पर्शादि ए पुद्गलद्रव्यमां छे ए. अमूर्त्तित्वं कहेतां जे अमूर्त्तिगुण ते वर्णादिकरहित ए स्वजाव छे; तेने अमूर्त्तित्वं कहिये १०. हवे अचेतनत्वं अने मूर्त्तित्वं अने सचेतनत्वं अने अमूर्त्तित्वं जावरूपत्वान गुणत्वं मीतिनामकं नोहं. एटले अचेतनपणुं अने अमूर्त्तिपणुं अने सचेतनपणुं अने अमूर्त्तिपणुं ए गुण चेतनने विषे नहि लाधे अने अचेतनपणुं अने मूर्त्तिपणुं ए जे बे गुण छे; ते कार्य कारणने विषे हेतु छे. ए व्यवहार विशेषने माने छे. ए प्रथक्त्वगुणत्वात्

विशेष लक्षण कहे छे.

ज्ञान दृष्टि सुख वीर्य स्पर्श रस, गंध वर्ण
गाणोजी । गति स्थिति अवगाहना वर्तन,
भाव मन आणोजी ॥ चेतनादि चारे भे-
विशेष गुण ए सोळेजी । षट् पुद्गल आत-
तिनहु, अन्य द्रव्यने टोळेजी ॥ ३ ॥

अर्थ—आत्मानां छ लक्षण विशेष छे. ज्ञा-
दर्शन, चारित्र, वीर्य, चेतनत्वं, अमूर्त्तित्वं ए
गुण आत्माने विषे छे. वर्ण, गंध, रस, स्पर्श
र्त्तत्वं, अचेतनत्वं ए छ गुण पुद्गलद्रव्यने वि-
छे. अमूर्त्तिपणुं अने अचेतनपणुं ए चार द्र-
ने विषे छे अने अकेको गुण जुदो छे. ते कहे
गतिहेतुत्वं, स्थितिहेतुत्वं, अवगाहनाहेतुत्वं
ने वर्तनाहेतुत्वं. ए गुण अकेक तथा प्रथमना
गुण लइने जोमवा; एम्ले त्रण त्रण गुण
य. ए प्रमाणे विशेष गुणने समजवा. आहिं
कोइना मनने शंका पमशे जे, चेतन, अचे
, मूर्त्ति, अमूर्त्ति ए चार गुण सामान्य स्व-
वमां कह्या छे अने विशेष स्वनावमां पण क-

अहिंयां तो संक्षेपथी कह्युं छे, एटले ए गुण ल क्षण अनुवर्ति, व्यावृत्ति संबंधे धर्म मात्रनी विवक्षा करीने पोताना स्वभाव गुणथी तो ए वेगळोज छे. पण पोतपोताना रूपनी मुख्यता लइने अनुवर्ति संबंध मात्र अनुसरीने स्वभाव छे ते माटे गुण विभाग कहीए छीए; हवे स्वभाव विभाग कहीने देखामे छे. त्यां सामान्य स्वभाव प्रथम अगीयार छे, ते मधे प्रथम भेद अस्तित्व स्वभाव छे ते कहे छे, हवे आप आपणेरुपे प्रत्येके प्रत्येक द्रव्यने विषे अस्तिस्वभाव स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र,, स्वकाल अने स्वभावरुपे अस्तिपणुं छे जेम स्वस्वभावे अस्तिपणुं अने परभावे नास्तिपणुं एम अनुभव थाय छे, एटले स्वभावेज अस्तिपणुं छे कदापि अस्ति स्वभाव न मानीए तेवारे परभावनी अपेक्षाए नास्तितापणुं छे तेमज स्वभावनी अपेक्षाए अस्तितापणुं थाय तेवारे सर्व शून्यता थइ जाय, नास्तिकनो मत आवे माटे स्वद्रव्यनी अपेक्षाए अस्ति स्वभाव मानवो; हवे परभाव परद्रव्य अपेक्षाए नास्तिस्वभाव कहीए, कदापि कोइ कहेशे के, प-

जावे जणाय छे, केटलीएक वस्तु आश्रीने जणाय छे एम विचित्र प्रकारनो छे, पण कोइनी तुच्छता कहीए तो व्यवहारनो लोप थाय.

उक्तं च—

समालिर्लोपा रहस्य प्रकरणे ॥ ते हुंति परावेर कालंज मुह दांसिणो तिणाय उग्ग ॥ दिलमिणं वेचीत्तं सराया कप्पुर गंधाणंति ॥१॥

हवे तेज कहीए छीए, आपणा जे कर्मभावि पर्याय नाना प्रकारना छे. श्याम, रक्त, इत्यादिक भेदक छे. एटले जुदा देखाय छे, पण ए द्रव्य तेहिज जे पूर्वे अनुभव्यां हतां ते ज्ञान तेथीज थाय छे, ते माटे तेने नित्य स्वभाव ज कहीए, तद्भावाऽव्ययं नित्यं पर्यायनी परिणतिने विषे अनित्य स्वभाव कहीए एटले ए रूपे उत्पाद, व्यय ग्रहण थाय छे, तेणे रूपे अनित्य स्वभाव छे, छती वस्तुने रूपांतरथकी पर्याय विशेषथी नाश थाय छे तेणे करी ए द्विविध छे, आ रूपे नित्य छे, आ रूपे अनित्य छे एटले द्रव्यथकी नित्य छे, पर्यायथकी अनित्य छे,

अथवा विशेषनय सामान्य रुपथी अनित्य त्या जेम घट द्रव्यनो नाश थये थके पण मृत्तिका द्रव्यनो नाश नथी, तथा सामान्यनये मृत्तिकादि पण स्थूलादिके घटादिनो नाश ए अनित्यता घट रुपेज एम प्रतित थाय छे, अथवा सामान्य रुपे मृत्तिकाने विषे स्वस्वरूपे घट एम युक्त तो छे अने नयपदे अनेक रीतना भेद थाय, पण कुनय टाळीने भेद करजो. अने जो नित्यपणुं नहिज मानो तो अनित्यपणुं मानतां एकांत क्षणिकवादिनो मत आवे छे ते कहे छे; के एकांत क्षणिकज स्वरुप लक्षण छे, तेवारे समये समये पर्यायनुं पलटवुं ते अनित्यपणुं थयुं तेवारे नित्य स्वरूप न रह्युं, अनित्यपणाथकी कारणनो अनुवर्तन थाय अने अनुवर्तन विना कार्य निपजे नहि, शामाटे के कारण क्षण रह्युं तो कार्य पण क्षण थाय त्यारे उत्पत्तिकाळे नाश थयो एवो अनुभव ए अभूतानो थयो, तेवारे कार्यने क्षणमणती केम करीए, एतो अवृतु कारण क्षण कार्य क्षण करे तो विनीष्ट कारणथी कार्य नीपजवुं जोइए, अथवा अणउत्पन्न कार्य

नीपनुं जोइए एम तो कोइ काळे बनेज नहि; एतो कार्य कारण जावनी विटंबना थाय ठे, अविहित जे कारण क्षण ते कार्य क्षण करे एम कहीए तो ए रूपतो लोकमांही तिरस्काररूप थाय, शामाटे के क्षण रूपादिकने विषे तो उपादान मानीए अने आलोकादिकने विषे निमित्त मानीए तो ए विविक्षा केम घटे? जे माटे अनुव्यय विना शक्ति मात्रे पण उपादानमां निमित्त नहि पण कही न शकीए. ते माटे उपादान ठे तेहीज अनुव्यय जाणवो अने अनुव्यय पण तेहीज नित्यस्वजाव ठे, हवे जो सर्वथा नित्य स्वजावज मानीए अने अनित्य स्वजाव सर्वथा न मानीए तो अर्थ क्रियारूप न घटे, शामाटे जे दखने कारण नय कारणरूपता परिणति कथंचित् ए उत्पन्नपणुंज आव्युं सर्वथा अनउत्पन्नपणुं विघटे ठे. अने जो एम कहीए के तेहीज नित्य तक्षर्तिकार्य ते अवर्जे तो कार्य कारणने अजेद संबंध ते केम घटे? अने जेद संबंध माने तो ते संबंधने जुदीजुदी गवेषणा थाय, ते वारे समय फेरे अवस्था थाय त्यारे अनवस्था

कामां मत्ता अनेक वस्तु शेनी ठरे ते माटे एक स्वनाव अनेक स्वनाव मानवो जोइए. ए ठहो न्नेद कह्यो. हवे न्नेद स्वनाव कहीए छीए. गुण गुणीने पर्याय पर्यायने कारक कारकीने संज्ञा संका लक्षणादि न्नेदे करीने न्नेद स्वनाव जाणवो ए सातमो न्नेद. ७ अने अन्नेद स्वन्नावनीजे वृत्ति ते लक्षणवंत ए अन्नेद स्वनाव जाणवो. हवे जो न्नेद स्वनाव नहि मानीये तो सर्व द्रव्य गुणपर्यायनुं एकपणुं होय तेणे करी एज द्रव्य एज गुण एज पर्याय एवुं थाय तेवारे व्यवहारनां विरोध थाय तेवारे घट श्यामवर्ण कहेवो न रह्यो. मनुष्य तेज जीवने जीव तेज मनुष्य एम जोतां नास्तिकपणुं आवे अने ज्ञानादिक गुण ते तो सरखा छे नहि. तेवारे गुणपर्याय द्रव्य एक न्नावे केम थाय. गुण पण सामान्य विशेष ठे. पर्याय पण निन्नन्नाव ठे. माटे न्नेद स्वरूप मानवुं जोइए. अहींयां कोइ कहेशे के ए तो पर अपेक्षा थइ गइ तेने कहिये के पर अपेक्षाए पण एज अर्थ आवे. ने स्व अपेक्षाए पण एज अर्थ थाय शामाटे के पर्यायनुं परान-

अतिक्रमीने अन्य स्वभाव परिणमे. तेने पलटन स्वभाव कहीए तेनुं नाम भव्य स्वभाव छे ए नवमो भेद कह्यो ए. हवे अभव्यस्वभाव एटले त्रणे काल परद्रव्यमांहि रहेतां थकां पण परस्वभावमां न प्रणमे, तेने अभव्यस्वभाव कहीए

॥ उक्तं च ॥

अनोन्नं पविसत्तादिना ॥ उगासमं एस्समे ल्लतावियणिनं ॥ सगसगभावं णविजहंति ॥१

तो भव्यस्वभाव विना शुभाशुभ कार्यने विषे शून्यपणुं थाय तो प्रभावमां प्रवेश न होय अने स्वभावेज रहे, अथवा भव्यस्वभाव मानीए अभव्य स्वभाव नहि मानीए तो द्रव्यने संयोगे द्रव्यंतरपणुं थवुं जोइए, शामाटे जे धर्माधर्मादिकने अने जीव पुद्गलादिकने एक अवगाहना त्याग कारणे कार्य संक्र स्वभाव अभव्य न थाय, एतो द्रव्यने तत्त्व कार्यहेतु त्यां कल्पना पण अभव्य अभावगर्भित छे. आत्मा देश विरति अनंतकार्ये जननी शक्ति ए भव्यत्व स्वभावने सहकारी संबंध छे. शामाटे के भव्यस्वभाव

तथा अनव्यस्वभाव सर्वे द्रव्यमां छे एटले स
द्रव्य पोताना मूल धर्म वस्तुता जोतां अनव्य
स्वभाव छे अने परसंगते मळता भव्यस्वभाव छे
जेम चेतन स्वरूपनो मूळस्वभाव वस्तुताए निर्म
ल, निरावण, निष्कलंक, अदाय, अमूर्त्ति स्वभाव
छे, ते अनव्य स्वभाव छे अने कर्मादिसंयोगे
पर्यायनुं पलटवुं ते भव्य स्वभाव छे, अथवा ज्ञा
ननुं जाणवापणुं ए अनव्य स्वभाव छे. परज्ञेय-
नी संगाते उपजवुं, वीणसवुं, हानि वृद्धिनुं थ-
वुं ते सर्वे भव्यस्वभाव छे. पर्याय कहेतां जेम
घट जळधारणादि करवुं ते अभव्य स्वभाव छे
अने श्याम रक्त नवादिनुं पलटवुं ते भव्य स्व-
भाव छे. एम सर्वे द्रव्यने विषे भव्य तथा अ-
भव्य स्वभाव जाणवो ए दसमो भेद थयो १०
हवे अगीयारमो प्रमेयत्व स्वभाव कहीए छीए.
स्वलदाभूत परिणामिकभाव ते प्रधानताए परम
भाव कहिये. जेम ज्ञानस्वरूपी आत्मा परमभाव
स्वभाव न कहिये तो द्रव्यने विषे प्रसिद्ध रूप
केम कहेवाय ? अनंत धर्मात्मिक वस्तु छे एक
धर्म पुरुषाकारे बोलावीये तेने परमभाव कहिये.

ए अगीयारमो स्वभाव जाणवो. ए अगीआरे सामान्य स्वभाव कह्या. हवे दस विशेष स्वभाव कहे छे. विशेष कहेतां ते कोइमां लाधे अने कोइमां न लाधे, तेने विशेष स्वभाव कहिये. हवे प्रथम चेतन स्वभाव कहिये. जे चेतनापणानो व्यवहार थाय छे तेने चेतनस्वभाव कहिये. तेथी उलटो ते अचेतन स्वभाव जो जीवने चेतन स्वभाव न कहिये तो राग द्वेष न टरे, तेवारे ज्ञानावरणादिकर्मनो अभाव थाय.

उक्तं च.

स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य, रेणुनाश्लिष्यते यथा ।
गात्रं रागद्वेषाक्लिन्नस्य, कर्मबंधोभवत्येवमिति ॥१

जो जीवने सर्वथा चेतन स्वभाव कहिये अने अचेतन स्वभाव न कहिये, तो अचेतन कर्म अने नोकर्म तो ए द्रव्य उपलक्षितजनित विकार विना थाय, तेवारे शुद्ध सिद्धिपणुं ता द्रश्यपणे थाय तेवारे ध्याना ध्येयपणुं न रहे, गुरु शिष्यनी परवा न रहे. सिद्ध संसारीपणुं कहेवुं न रहे, तेवारे सर्व शास्त्र व्यवहार ते फोक थइ

जाय तेवारे शुद्ध नय जे अविद्या छे तेनी निवृत्ति करवी तेनो शो उपकार थाय. तेमाटे अचेतन आत्मा एम पण कथंचित् कहिये ए वातमां कांइ दूषण नथी. स्याद्वाद मतनुं लक्षण एज छे. हवे त्रीजो मूर्त्ति स्वभाव कहिये छीए. मूर्त्ति कहेतां जे वर्ण, गंध, रस स्पर्शादि सन्निवेष ते जेथी धारिये, तेने मूर्त्ति स्वभाव कहीये. तेथकी विपरीत ते अमूर्त्ति स्वभाव जो जीवने कथंचित् मूर्त्तिभाव न मानीये तो शरीरादिक संबंध जीवने संभवे नहि अने शरीरादि संबंध विना गतागति केम थाशे? अने गतागति नहि थाय त्यारे संसारनो अभाव थशे अने जे लोकव्यवहार छे ते पण सर्व दृष्टिमान् छे अने दृष्टिमान्ने तो मुर्त्तिस्वभावज आत्मा मनाय छे ते मूर्त्तिस्वभावना हेतु शास्त्रगम्य छे पण अमूर्त्तिनो हेतु नथी, एम ज्यारे अमूर्त्तिपणुं पण न मानीये तेवारे मुक्ति न घटे अने मुक्ति न घटे त्यारे धर्मादिक कारणनो नाश न थाय तेवारे शून्यवादि मत साचो ठरे तो ए वात खोटी, माटे अमूर्त्तिस्वभाव मानवो जोइए, केवी रीते मानवो के, संसारीजीव

कर्मना जोगथकी आज मूर्तिपणुं पाम्या छे ए पण अंतरथकी चेतनस्वभाव वस्तुने. जोतां तो अमूर्त्ति स्वभावज छे, एम समुं समजवुं अथवा ए चर्चा पूर्वे पण केटलीक आवी गइ छे एटले मूर्त्ति ने अमूर्त्ति स्वभाव कह्योज हवे एक प्रदेश स्वभाव कहे छे. एक प्रदेश कहेतां एकत्वपरिणती अखंड आकारबंध कहेतां सन्निवेष तेनो निवास कहेतां भाजनपणुं छे, अनेक प्रदेश स्वभाव कहेतां भिन्न प्रदेश संयोगे तथा भिन्न प्रदेश कल्पनाए थाय, अनेक प्रदेश व्यवहार कारणयोगपणुं छे, जो एक प्रदेश स्वभाव न होय तो असंख्यात प्रदेशादि योगे बहुवचन प्रवृत्ति थाय तेवारे एक द्रव्य धर्मास्तिकाय कहिये नीए, ते व्यवहार न रहे, तेवारे घणा धर्मास्तिकाय थया जोइए एम सर्वे द्रव्यमां आरु आवे छे; तथा अनेक प्रदेश स्वभाव द्रव्यमान कहीए तो घटादिक अवीअवी (अवयवी) देशथी सकम अथवा निसकम देखीए छीए ते केम मलशे एवी एव कंपेण अवी हवी न कंपे एमजो कहीए तो चलीत एम प्रयोग केम थाय एटले देशविरति कंप-

जाय तेवारे शुद्ध नये जे अविद्या छे तेनी निवृत्ति करवी तेनो शो उपकार थाय. तेमाटे अचेतन आत्मा एम पण कथंचित् कहिये ए वातमां कांइ दूषण नथी. स्याद्वाद मतनुं लक्षण एज छे. हवे त्रीजो मूर्त्ति स्वभाव कहिये छीए. मूर्त्ति कहेतां जे वर्ण, गंध, रस स्पर्शादि सन्निवेष ते जेथी धारिये, तेने मूर्त्ति स्वभाव कहीये. तेथकी विपरीत ते अमूर्त्ति स्वभाव जो जीवने कथंचित् मूर्त्तिभाव न मानीये तो शरीरादिक संबंध जीवने संभवे नहि अने शरीरादि संबंध विना गता गति केम थाशे? अने गतागति नहि थाय त्यारे संसारनो अभाव थशे अने जे लोकव्यवहार छे ते पण सर्वे दृष्टिमान् छे अने दृष्टिमान्ने तो मुर्त्तिस्वभावज आत्मा मनाय छे ते मूर्त्तिस्वभावना हेतु शास्त्रगम्य छे पण अमूर्त्तिनो हेतु नथी, एम ज्यारे अमूर्त्तिपणुं पण न मानीये तेवारे मुक्ति न घटे अने मुक्ति न घटे त्यारे धर्मादिक कारणनो नाश न थाय तेवारे शून्यवादि मत साचो ठरे तो ए वात खोटी, माटे अमूर्त्तिस्वभाव मानवो जोइए, केवी रीते मानवो के, संसारीजीव

कर्मना जोगथकी आज मूर्त्तिपणुं पाम्या छे ए पण अंतरथकी चेतनस्वभाव वस्तुने जोतां तो अमूर्त्ति स्वभावज छे, एम सर्मु समजवुं अथवा ए चर्चा पूर्वे पण केटलीक आवी गइ छे एटले मूर्त्ति ने अमूर्त्ति स्वभाव कह्योज हवे एक प्रदेश स्वभाव कहे छे. एक प्रदेश कहेतां एकत्वपरिणती अखंड आकारबंध कहेतां सन्निवेष तेनो निवास कहेतां भाजनपणुं छे, अनेक प्रदेश स्वभाव कहेतां भिन्न प्रदेश संयोगे तथा भिन्न प्रदेश कल्पनाए थाय, अनेक प्रदेश व्यवहार कारणयोगपणुं छे, जो एक प्रदेश स्वभाव न होय तो असंख्यात प्रदेशादि योगे बहुवचन प्रवृत्ति थाय तेवारे एक द्रव्य धर्मास्तिकाय कहिये नीए, ते व्यवहार न रहे, तेवारे घणा धर्मास्तिकाय थया जोइए एम सर्व द्रव्यमां आठ आवे छे; तथा अनेक प्रदेश स्वभाव द्रव्यमान कहीए तो घटादिक अवीअवी (अवयवी) देशथी सकम अथवा निसकम देखीए छीए ते केम मलशे एवी एव कंपेण अवी हवी न कंपे एमजो कहीए तो चलीत एम प्रयोग केम थाय एटले देशविरति कंप-

अवीअव छे (अवयवी) तेथी देखाय छे, पण जो तंतु छे त्यां नथी देखातुं माटे अवयवी न कंपे तो ए तो अचलित प्रयोग थयो पण चलित प्रयोग केम थाय, ए तो देशविरती कंपनो परंपरा संबं- छे तेम देशविरती कंपाभावनो पण परंपरा संबंध मानवो जोइए, शामाटे जे तंतुए अनेक प्रदेश स्वभाव थयो अने अवीअव(अवयव) कहीए. अने पट छे ते एकप्रदेश स्वभाव छे, अने अवीअव कही- ए ते माटे देशथी चले छे, देशथी नथीए चलतो ए अस्खलित व्यवहार छे, अथवा बीजो दृष्टांत पण कहे छे. जे आकाशने विषे परमाणुनो सं- योग केम घटे, केमके परमाणु तो आकाश द्र- व्यना एक प्रदेशने अवगाहे तेवारे आकाश अ- वगाह्यो केम कहेवाय, तेवारे तो आकाशने अ- णुनो संयोग न कहेवाय, ते उपर दृष्टांत कहे छे के जेम इंद्रने काने कुंडल छे ते देशथी छे अने वस्त्र छे ते सामान्ये करी सर्वथी छे एटले कुंडल ते एक काननेज स्पर्शे छे एम अन्योन्य- न्य दूषण आवे छे एम परमाणुने आकाशादिने देशविरति मानतां तो आकाशादिकना प्रदेश

विभाव स्वभाव छे. कदापि कोइ कहेशे जे
भाव स्वभाव ते शुं हशे, तेने कहीए के जे
रूपथी भणनी तेज चेतनने विभाव स्वभाव
तेने अशुद्ध चेतन पण कहीए छीए. ने कंइ
ज नवो स्वभाव थयो नथी ए अनादि स्वभा
छे एटले ए सातमो स्वभाव भेद कह्यो ७. ह
शुद्ध स्वभाव कहे छे. शुद्ध कहेतां ते केवलपणुं
एटले निष्केवल उपाधि भावरहित जे परिणाम
तेने शुद्ध स्वभाव कहीए. अने तेथकी विपरीत
भाव तेने अशुद्ध स्वभाव कहीए. हवे जो शुद्ध
स्वभाव एकलो मानीए तो चेतन नो कर्म लेप
लेपाणो केम घटे? माटे कर्म उपाधिसहित सर्व
संसारीजीव मालुम पडेछे. कदापि अहिंयां वेदा-
न्तवादी एम कहेशे जे चेतन तो शुद्धज छे एने
कंइ लेप लागतो नथी एम कहे छे ने पोते कृत
शुभाशुभ क्यो करे छे अहिंयां कर्त्तापणुं पोताने
विषे मानतो नथी तो कोइ अनेरो कर्त्ता जोइए
शामाटे जे शुद्ध चेतनमां तो कर्त्तापणुं छेज नहि
अने अशुद्ध चेतनने मानतो नथी तो ए मन
सत्यदा असत्य छे माटे एम तेने अवगो मर्ते

द्रव्यनो चेतनने विषे उपचार करीने चेतनने मुर्तिमान मानवो छे ते कर्मजनीत उपचार छे, हवे सहज स्वाभाविक जे उपचरित भेद ए बीजो भेद छे. जेम सिद्धने अनंतु ज्ञान कहेवुं ने सिद्धात्माने ज्ञान कंइ जुदुं नथी, सद्भावे ज्ञानने आत्मा एकज छे, अहिंयां भेद करीने ज्ञान भिन्न देखाड्युं ते उपचार थयो ए सहज स्वभाव उपचरित थयुं, त्यां तो सिद्धने विषे कर्म उपाधि तो छेज नहि माटे ए स्वभाविकज भेद थयो माटे उपचार जाणवो एवुं आचारांगसूत्रमां कहेलुं छे,

उक्तं च.

अकम्मस्स ववहारो ए विज्जइ कम्मुणा उवाहि जायत्तिति ॥

एम्हे ए दश विशेष स्वभाव कह्या. एम्हे ए द्रव्यनी भ्रती छे माटे कह्या, अने पूर्वोक्त सामान्य स्वभाव अगीयार साथे मेलवतां एकत्रीस स्वभाव थाय ते कह्या. ते मध्ये जीवने तथा पुद्गलने विषे एकत्रीस स्वभाव होय तथा कालद्रव्यने विषे पंदर स्वभाव होय ते पूर्वोक्त एकत्रीश

नास्ति स्वभाव छे ते परद्रव्यमां छे, तो ते परद्र-
व्यादिकग्राही नय जाणीए.

उक्तं च—

सर्वमस्ति स्वरूपेण, पररूपेण नास्ति च ॥१॥

तथा उत्पादव्ययनी गौणताए, सत्ताग्रा-
हक द्रव्यार्थिकनय नित्यस्वभाव कहीए, ए को-
हक पर्यायार्थिकनये करीने उत्पादव्यय ग्राहक
होय तेने अनित्यस्वभाव कहीए. भेद कल्पना
रहित शुद्ध द्रव्यार्थिकनये अनेक स्वभाव कहे-
वाय, अने भेद कल्पनासहित ते अनुभवीए ते
द्रव्यार्थिक नये अनेक स्वभाव कहेवाय, अने
सद्भूत व्यवहारनयथी गुण गुणीपर्यायनो भे
थाय ते माटे भेद स्वभाव कहेवो अने भेद क
ल्पनानी अपेक्षा न करवी, त्यारे शुद्धद्रव्यार्थि
कनये अभेद स्वभाव थाय, भव्य स्वभावने
भव्य स्वभाव ए बे स्वभाव परमभाव ग्राहक
द्रव्यार्थिक नये जाणवा. हवे चेतन स्वभाव
छे, अहींयां स्वपर प्रवर्तन न होय, शुद्धा
नो विचार नहि त्यां चेतन स्वभाव अने
भूत व्यवहार नयथी अचेतन कहीए,

ज्ञानावर्णीयादि अने नोकर्म जे मन, वचन अने कायादि तेने चेतन कहीए. ते चेतन कृत संयोग माटे तेहीज मारुं शरीर, हुं आम करुं इत्यादि परमन्नाव ग्राहक नये ते अचेतन स्वन्नाव. शामाटे जे कर्म अने नोकर्म सर्वे अचेतन ठे, असद्भूत व्यवहारनयथी जीवने अचेतन स्वन्नाव कहीए, शामाटे ए जम हुं चेतन इत्यादि व्यवहार ठे ते अनुमान जाणीने प्रतीत विरुद्ध एटले ज्ञानशुद्धि वेदांतने मते सद्भूत व्यवहार जाणवो, परम न्नाव ग्राहकनये कर्म अने नोकर्म ए मूर्त्ति स्वन्नाव एटले असद्भूत व्यवहारनयथी जीवने मूर्त्तिस्वन्नाव पण कहीए एटले एम आत्मा हुं देखुं हुं जाणुं हुं ए व्यवहार ठे, परम न्नाव ग्राहक नय पुद्गल द्रव्य विना बीजा सर्व द्रव्यने अमूर्त्ति स्वन्नाव कहीए. जेम चेतनने संयोगे दयादिकने विषे जेम चेतनत्व उपचारे ठे तेम अमूर्त्ति उपचारता नथी तेमाटे असद्भूत व्यवहारथी पण पुद्गलने अमूर्त्ति स्वन्नाव न कहीए, त्यां केम न उपचार कहीए के जो एक संबंधने देखी जे न्नाव ते व्यवहार ठे, ते उपचारे

पण सर्व धर्मनो उपचार न होय ए भाव तत्त्व-
ति ग्रंथनांही कह्यो छे एहवे अनुमान संबंध अ-
तंत एहवे सर्व अर्थ कीर नैतनी परे गलुं.
विशेषे करीने शुद्ध पुद्गल जीवद्रव्य तथा औ-
दारिकादिक वर्गणा निमग्न छे अने ज्ञान ध्यान
आत्माने असंख्यात प्रदेशी लिंग छे.

॥ अत्र गाथा-उक्तं च ॥

अन्नाणमाणं इम संबंध विलक्खणमडुत्तं ॥
तह दुब्बाणिभाव जावंत विशेष पज्जायाः॥१॥

तेथी उपचारे पण अमूर्ति स्वभाव पुद्गल-
ने न होय एम कहेतां तो एकवीसनो स्वभाव
होनाइ जाय तेवारे एकवीसनी मर्यादा जीवे
पुद्गलोते मानो ए वचन अन्यथा थइ जाय. ने
वचनने वखताने वाले असद्भूतव्यवहारनय क-
रीने पोतानो छे पुद्गल पलाइ छे तेने अमूर्ति-
करीर. सानाइ के व्यवहारथकी कंइ दृष्टिगो-
चर आवतो नथी अने मूर्ति होय तो दृष्टिगो-
चरावुं जोइए. अने व्यवहार छे ते मनदर्शने अ-
हवडां छे. हवे जीव तथा पुद्गल पला-
ए बेनो परमभाव ग्राहकनय एकवीस स्वभ-

ज्ञानावर्णीयादि अने नोकर्म जे मन, वचन अने कायादि तेने चेतन कहीए. ते चेतन कृत संयोग माटे तेहीज मारुं शरीर, हुं आम करुं इत्यादि परमभाव ग्राहक नये ते अचेतन स्वभाव. शामाटे जे कर्म अने नोकर्म सर्वे अचेतन छे, असद्भूत व्यवहारनयथी जीवने अचेतन स्वभाव कहीए, शामाटे ए जड हुं चेतन इत्यादि व्यवहार छे ते अनुमान जाणीने प्रतीत विरुद्ध एटले ज्ञानशुद्धि वेदांतने मते सद्भूत व्यवहार जाणवो, परम भाव ग्राहकनये कर्म अने नोकर्म ए मूर्त्ति स्वभाव एटले असद्भूत व्यवहारनयथी जीवने मूर्त्तिस्वभाव पण कहीए एटले एम आत्मा हुं देखुं छुं जाणुं छुं ए व्यवहार छे, परम भाव ग्राहक नय पुद्गल द्रव्य विना बीजा सर्व द्रव्यने अमूर्त्ति स्वभाव कहीए. जेम चेतनने संयोगे दयादिकने विषे जेम चेतनत्व उपचारे छे तेम अमूर्त्ति उपचारता नथी तेमाटे असद्भूत व्यवहारथी पण पुद्गलने अमूर्त्ति स्वभाव न कहीए, त्यां केम न उपचार कहीए के जो एक संबंधने देखी जे भाव ते व्यवहार छे, ते उपचारे

थाय छे ते जाणवो. शुद्ध द्रव्यार्थिकनय शुद्ध स्वभाव एटले शुद्ध स्वभावे ज्ञान, दर्शन, चारित्रनो पुंज भेद कल्पनासहित एकत्व भावे शुद्ध वस्तु तेने सुद्ध स्वभाव कहीए. ते सुद्ध द्रव्यार्थिके सुद्ध ग्रहण थाय, तथा असुद्ध द्रव्यार्थिकनये अशुद्ध ग्रहण थाय, जेम रागद्वेषनी परिणति तथा विषय कषाय सर्वे अशुद्ध चेतन छे तथा ज्ञानआत्मा दर्शनात्माए कहेवुं ते सर्वे अशुद्ध चेतन छे, ज्यां परपरिणतिनुं मळवुं अथवा एक वस्तुना भेद करवा ए सर्वे अशुद्ध स्वभाव छे, असद्भूत व्यवहारनयथी उपचरित स्वभाव छे एटले चेतनने मूर्त्तिपणुं अचेतनपणुं कहेवुं ते सर्वे उपचरित स्वभाव छे. ए एकवीस स्वभाव भेदज्ञाननी अपेक्षाए करीने देखाड्या छे, अने ए एकवीश स्वभाव जाणवामां घणो सार छे. ए स्वभाव ओळखवाथकी जीव अजीवादि षड्द्रव्यनी ओळखाण थाय अने जीवनी परिणतिना स्थानकने पण ओळखवामां आवे. तथा सत्य स्वरूप सर्वे द्रव्यनुं ओळखवामां आवे तथा संसारीनुं तथा सिद्धनुं स्वरूप स-

मजवामां आवे माटे ए लक्षण गुण स्वभाव जे जाणे तेने कोइक दिन सिद्धि वरवानी वखत पण आवे, पण ते विना जे कांइ कोर व्यवहारादिकथकी सिद्धि वरवानी आशा राखे छे ते आकाश कुसुमवत् जाणवुं. शिष्यवाक्य-तमोए कह्युं जे ए जाणवाथकी सिद्धि केम थाय? करवा विना सिद्धि थशे? अजवी पण जाणे छे तो तेनी सिद्धि थवी जोइए. तेनो उत्तर-जे ते कह्युं जे जाणवाथकी सिद्धि थाय, कर्या विना ते जाणवाथकी सिद्धि छे. शामाटे जे यथार्थ वस्तु जे उंलखवामां आवी तेवारे सद्वस्तु होय ते ग्रहण थाय. अने असत्य वस्तु होय ते पमी रहे. तेने कोइ ग्रहण करे नहि. जेम बाल्यावस्थाने विषे, धूलखीलाने विषे अनेक क्लेश करे छे. तेज युवावयथकी ते धूलनी लीलाना घर केम करतो नथी. तेणे जाण्युं जे ए घर कंइ रहेवा खप लागे नहि माटे असत्य हतुं ते छूटी गयुं ने सत्य हतुं ते अंगीकार कर्युं. एम सत्य धर्म पोताना चिदानन्द भगवाने जाण्युं तेवारे शुद्ध धर्म अंगीकार कर्यो, परधर्म हतो ते

पर जाणवुं ते छुटी गयुं एटले ए चेतननुं कल्याण थइ गयुं. हवे ते कह्युं के कर्या विना नहि थाय ते केने कराय छे जे शुद्ध चैतन्य छे तेमां तो करवानी शक्ति नथी अने जे करवानी शक्ति तो विभावमां रही छे अने विभाव तो अनादि कालनो चेतनने वळगेलोज छे ते विभाव ज्यारे छुटशे अने स्वभाव आदरशे त्यारेज चेतननी मुक्ति छे पण करवामां मुक्ति छे नहि. करवाथकी तो चारगति संसारज छे. शिष्यवाक्य—जे अनादि विभावनुं छुटवुं अने स्वभावनुं आदरवुं ते कर्या विना शी रीते छुटशे? तेनो उत्तर जे विभावनुं छुटवुं अने स्वभावनुं आदरवुं ते कंइ बे काम नथी, एकज काम छे. जेम सूर्यनुं उगवुं, अने अंधारानुं नासवुं ए बन्ने एकज छे, तेम अहिंयां स्वभावनुं उत्पन्न थवुं एटले विभावनो नाश छेज. हवे ते कह्युं के, कर्या विना केम थाय? तेनो उत्तर—के अहिंयां कृत्य बे प्रकारनां छे. एक परानुयायी, बीजो स्वानुयायी. तेनां करावनारा आचार्य बे छे. एक शुभाशुभ आचार्य, जे शुभाशुभ आचार्य, बीजो शुद्ध आ

चार्य. जे कर्माशुभ आचार्य छे तेनो उपदेश अने तेना उपदेशने विषे परानुयायी कृत्य छे, एटले परानुयायी कहेतां प्रभाव, व्रत, नियम, तप, जप, तीर्थयात्रा, क्रिया, आचार तेने विषे ते मुक्ति माने छे पण ए कारण शुभाशुभ छे. तेने विषे पुण्यबंध थाय, तो एतो चार गति संसारमां रखडवानुं छे, एमां कंइ मुक्ति छे नहि. अकृत्यने धर्म माने छे ए मोटुं अज्ञानपणुं छे, अने एथकी पुण्यबंध थाय. कदापी सुख मळे ते पण कंइ सुखमां गण्युं नथी. एतो एक औपचारिक सुख छे एवुं विशेषावश्यकग्रंथे पण कह्युं छे

उक्तं च–

जनोचीय पचम्मं, सोम्म सुहं नछि दुःखमेवेदं ।
न पन्यिारविनत्तं, तो पुन्न फलंति दुक्ति ॥१॥

अर्थ–ते सुख जे छे ते पौद्गलिक छे. ए कंइ आत्मानुं सुख नथी, अने पौद्गलिक सुख छे ते पण दुःखरूप छे, जे तत्वज्ञानना अजाण छे ते पोताना अज्ञानना खोटायका पुण्यने सारु कहे छे. पापने नठारुं कहे छे. सुखदुःख पौद्गलिक अनुभवे छे पण एम नथी समजता के, पूर्व

कृत्य जे कर्म ते पोताने भोगववुं तेमा आत्माने शुं फायदो थयो. एतो उलटा आत्माने हानि करता. एक विषयसुखनी इच्छाना जर्या थका तत्त्वस्वरूप आत्मधर्म,पामता नथी अने एक पुण्य पाप पोकारता फरे ठे पण ए बन्ने दुःखरूप ठे.

उक्तं च–

औत्सुक्यमात्रमवसाय्यति प्रतिष्ठ ॥कृत्वाति लब्ध परिपालन वृत्तिरेव ॥ नतिश्रमापगमनाय यथा श्रमाय ॥ राज्यं स्वहस्तधृत दंडमिवातपत्रं ॥ १ ॥ विसयसुहं डःखंमिय डःखपडिआर उत्तिग ठव ॥ तं सुहमुवयाराउ न उयारो विणा तत्तं ॥ १ ॥ सायासायं डःखं,सबिरहंम्मि य सुहं जउ तेणं ॥देहं दियसु डःखं,देहं दीयाजावो ॥

अर्थ–जे पुण्य फल ठे ते तत्त्वथी एनुं स्वरूप विचारीने जोइए तो डःखरूप ठे अने वि[षयसुख] ठे ते पण तत्त्वथी विचारीने जोइए तो [...]न डःखरूपज छे जेम रोगी ठे, एक क्वाथनुं [...]वुं अथवा शस्त्रप्रमुखे छेदवुं अथवा अग्निप्रमु[खे डा]मवुं इत्यादिके चिकित्सानुं करवुं जेम हि

तजाणए थाय ले तेमज ए पुण्यहित जाणए था य पण परिणामे जोतां तो दुःखरूपज लतुं ले एमां कंइ शंका करवी नहि ए सुखनो एक उपचारमात्र नासे छे, एने उपचार ले ते तो परमार्थे जोतां सुख नथी. सुखनो एक उपचाररहित आत्माने मुक्तिरूप स्वनाविक ए प्रतिकाररूप आत्मिक आनंदज छे, तेज सुख सत्यरूप छे, तथा जे सत्ताने उदये पण दुःख ले, तेनुं कारण कहुं ते सांजलो. जे शाता ले ते पण कर्म छे, अने ते कर्मनो विपाक ते गुणरोधक ले, अने स्वगुणनो ज्यां रोध ले, तेने सुख कोण कहे ले. तेनो अज्ञान होय ते सुख माने छे, ते माटे संसार सर्व दुःखरूप ले, एटले शुनाशुन सर्व दुःखज ले, सर्व नतावथकीरहित तेज सुख स्वनाविक आनंद ले, तेने परमानंद कहीए, एम समजीने जे करवुं, करावयुं, ते सर्व परानुयायी ले, तेना उपदेश करनारा जे आचार्य ते शुद्ध स्वरूप पाम्या नथी. हवे जे शुद्ध आचार्य छे ते तो स्वअनुयायीवृत्तिवाला ले, ते नतावनी पोषणता करता नथी, एक स्वनावनो उपदेश

करे छे के जेथी संसारमां रखडवुं न पडे, अने प्रभाव छे, एतो संसारमां जन्म मरण करवानुं कारण छे, माटे करवुं करावुं एतो मोटुं अज्ञा-न छे, ते पूर्वे सम्मतिनी गाथा साक्षी माटे लखी छे तेमां पण चरणसित्तरी अने करणसित्तरीनुं फळ चार गति संसारमां रखडवानुं बतावेलुं छे, माटे शुद्धस्वरूप निरावरणता तेज मुक्तिनो हेतु छे, ते ज कल्याणकारी छे, तथा पूर्वे ते जे कह्युं हतुं के, अभवी पण जाणे छे तो तेनी पण मुक्ति थवी जोइए? तेनो उत्तर–जे अभवी छे ते कंइ जाणतो नथी, अहींयां कोइने शंका पडे के अ-भवी नव पूर्व सुधी जाणे ते केम नथी जाणतो तेनो उत्तर–ए अधिकार कंइ सिद्धांतमां छे न-हि, एक प्रकरणथकी लइ नागवुं दृष्टांत छे, तथा जे जाणवापणुं छे तेना पण बे प्रकार छे एक तो पोताना क्षयोपशमथकी पोताना स्व-रूपने जाणे, एक कोइना कीधाथकी जाणे, ह-वे जे पोताना क्षयोपशमथकी जाणे तेनुं तो कल्याण थायज, अने जे कीधाथकी जाणे ते-ना बे भेद. १ श्रद्धासहित, २ श्रद्धारहित. एटले

कहेवा मात्रज छे जे श्रद्धावान् छे ते सद्गुरुना उपदेशथकी तथा शास्त्रना वांचवाथकी आत्मस्वरूपनी श्रद्धा करी छे. तेनुं पण कार्य थाशे अने जेने श्रद्धा नथी तेना सद्गुरुना वचनथकी अथवा शास्त्रना वांचवाथकी आत्मस्वरूपनी वार्त्ताउ करीने जाणे पण पोताने श्रद्धा नथी, यथा शुकवत् एटले जे पोपट छे ते राम कृष्ण इत्यादिक नाम ले छे. पण तेने राम कृष्णनी उळखाण नथी. ते मनि उपर बेसीने विष्ठा करे छे. तेमज बीजा जे जीव छे ते श्रद्धारहित अनेआत्मानी चर्चा करे छे ते ए पोपट सरीखा जाणवा, अने अन्तरीने तो श्रद्धा होयज नहि, अने उळखाण पण होय नहि माटे एनुं जाणपणुं तो कल्याण रूपनुं नथी. जेम मावठानो वरसाद कमोय पण गुणकारी नथी, तेम तेनुं जाणपणुं ते कंइपण कामनुं नथी माटे शुद्ध स्वरूपनुं जाणवुं एज सत्य छे. करवुं करावबुं ए असत्य छे माटे जे शुद्ध स्वरूप जाणे ते कर्म खपावीने सिद्धि वरे. एटले सिद्धपद छे ते महा सुखदायी छे. तेने शरीरथकी जन्म मरण नथी,

माटे एवा सिद्धपदनी जेने रुप होय ते तो शुद्ध स्वरूपनेज समजे. अहींयां करवाथकी कंइ मुक्ति हे नहि, शामाटे के कखुं तो एक भेद हे, अने सिद्धना तो पंदर भेद हे, जेम कोइ जैन धर्मनुं वा नोकारनुं नामे नथी जाणता ते पण स्याद्वाद रीते आत्मतत्त्व प्राप्त करीने मोक्षे जाय हे माटे सिद्धपद तो एक आत्मस्व रुपमां हे, ते सिद्धना भेद पंदर प्रकारे हे ते क हे हे ॥

उक्तं च पन्नवणासूत्रे ॥

१ तिच्छसिद्धा, २ अतिच्छसिद्धा, ३ तिछयरसिद्धा, ४ अतिच्छयरसिद्धा, ५ स्वयंबुद्धसिद्धा, ६ प्रत्येकबुद्धसिद्धा, ७ बुद्धबोहियसिद्धा, ८ स्त्रीलिंगसिद्धा, ९ पुरुषलिंगसिद्धा, १० नपुसकलिंगसिद्धा, ११ स्वलिंगसिद्धा, १२ अन्यलिंगसिद्धा, १३ गृहिलिंगसिद्धा, १४ एकसिद्धा अने १५ अनेकसिद्धा.

१ तिछसिद्ध-तीर्थ प्रवर्त्या पछी मोक्षे जाय तेने तीर्थसिद्ध कहीए.

२ अतिछसिद्ध-तीर्थ प्रवर्तावेला मोक्षे जाय.

करीने कह्यो. हवे विस्तारीने कहे छे. हवे तीर्थसिद्ध कहेतां जे तीर्थ चतुर्विधसंघमांही उपजीने कहेतां जे साधुपणुं तथा साध्वीपणुं तथा श्रावकपणुं तथा श्राविकापणुं पाम्या पछी अथवा एज चतुर्विधसंघ स्थापना थया पछी, अने सिद्धांतनु प्रवर्तन थया पछी सिध्या तेमने तीर्थसिद्धया कहीए. तथा तीर्थ कहेतां जे संसारसमुद्रनो त्याग ए नित्यतीर्थ कहेवाय. यथार्थथी तथा जीवाजीवादिक पदार्थ प्ररुपक परमगुरु प्रणीतवचन देशना प्रवर्ते छे. तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. अथवा निराधार न जवति कहेतां सिद्धांत प्रवर्तन थया विना नहि, अथवा संघ स्थापन थया विना पण नहि, ए रीते जे सिद्धिवर्या तेमने तीर्थसिद्ध कहीए, अथवा गणधरादिक व्यवहार प्रवर्तन उत्पादव्यय ध्रुव निरुपण थया पछी मोक्षे जाय तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. ए पहेलो भेद जाणवो १. हवे बीजो भेद कहे छे. अतीर्थसिद्ध कहेतां तीर्थंकरना वारा विना तीर्थ प्रवर्तावी सिद्धांत गणधरादि व्यवहार थया पहेलां मोक्षे गया तेमने अतीर्थसिद्ध कहीए, ते मरुदेवा

प्रमुख सिद्धिवर्या अथवा श्रीसुविधिनाथथी मांडी ने धर्मनाथसुधी वच्चे आंतरे आंतरे धर्म विच्छेद गयो छे त्यां कोइ जीव शुद्ध स्वरूप स्वभावे अनुभवी एकत्वभाव ग्रहीने कर्म खपावी मोक्षे गया तेमने पण अतीर्थसिद्ध कहीए ए बीजो भेद २. हवे त्रीजो भेद. तीर्थंकरसिद्ध कहेतां, जे तिर्थंकर पदवी पामीने चोत्रीश अतिशय, पांत्रीश वाणी गुण. बार गुणे करी विराजमान एहवी पदवी पामीने मोक्षे गया. ऋषभादि चोवीस तीर्थंकर अथवा अनंता तीर्थंकर मोक्षे गया तेमने तीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए त्रीजो भेद ३. हवे चोथो भेद अतीर्थंकरसिद्ध कहेतां जे तीर्थंकरनी पदवी पाम्या विना सामान्यकेवली गौतमादिक अनंता सिद्धि वर्या अथवा, अंतगडकेवली गजसुकुमार प्रमुख अनंता सिद्धि वर्या, तेमने अतीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए चोथो भेद ४. हवे स्वयंबुद्धसिद्ध कहेतां जे गुर्वादिकना उपदेश विना पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने दीक्षा प्रमुख अंगिकार करे, कर्म खपावी मोक्षे जाय ते तीर्थंकर सर्व, अथवा सामान्यकेवली, कपिल केवली आ

करीने कह्यो. हवे विस्तारीने कहे छे. हवे तीर्थसिद्ध कहेतां जे तीर्थ चतुर्विधसंघमांही उपजीने कहेतां जे साधुपणुं तथा साध्वीपणुं तथा श्रावकपणुं तथा श्राविकापणुं पाम्या पछी अथवा एज चतुर्विधसंघ स्थापना थया पछी, अने सिद्धांतनुं प्रवर्तन थया पछी सिध्या तेमने तीर्थसिद्धया कहीए. तथा तीर्थ कहेतां जे संसारसमुद्रनो त्याग ए नित्यतीर्थ कहेवाय. यथार्थथी तथा जीवाजीवादिक पदार्थ प्ररुपक परमगुरु प्रणीतवचन देशना प्रवर्ते छे. तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. अथवा निराधार न जवनि कहेतां सिद्धांत प्रवर्तन थया विना नहि, अथवा संघ स्थापन थया विना पण नहि, ए रीते जे सिद्धिवर्या तेमने तीर्थसिद्ध कहीए, अथवा गणधरादिक व्यवहार प्रवर्तन उत्पादव्यय ध्रुव निरुपण थया पछी मोक्षे जाय तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. ए पहेलो भेद जाणवो १. हवे बीजो भेद कहे छे. अतीर्थसिद्ध कहेतां तीर्थकरना वारा विना तीर्थ प्रवर्त्या वी सिद्धांत गणधरादि व्यवहार थया पहेलां मोक्षे गया तेमने अतीर्थसिद्ध कहीए, ते मरुदेवा

प्रमुख सिद्धिवर्या अथवा श्रीसुविधिनाथथी मांडी ने धर्मनाथसुधी वचे आंतरे आंतरे धर्म विछेद गयो छे त्यां कोइ जीव शुद्ध स्वरूप स्वभावे अनुभवी एकत्वभाव ग्रहीने कर्म खपावी मोक्षे गया तेमने पण अतीर्थसिद्ध कहीए ए बीजो भेद २. हवे त्रीजो भेद. तीर्थंकरसिद्ध कहेतां, जे तिर्थंकर पदवी पामीने चोत्रीश अतिशय, पांत्रीश वाणी गुण, बार गुणे करी विराजमान एहवी पदवी पामीने मोक्षे गया. ऋषभादि चोवीसे तीर्थंकर अथवा अनंता तीर्थंकर मोक्षे गया तेमने तीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए त्रीजो भेद ३. हवे चोथो भेद अतीर्थंकरसिद्ध कहेतां जे तीर्थंकरनी पदवी पाम्या विना सामान्यकेवली गौतमादिक अनंता सिद्धि वर्या अथवा, अंतगडकेवली गजसुकुमार प्रमुख अनंता सिद्धि वर्या, तेमने अतीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए चोथो भेद ४. हवे स्वयंबुद्धसिद्ध कहेतां जे गुर्वादिकना उपदेश विना पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने दीक्षा प्रमुख अंगिकार करे, कर्म खपावी मोक्षे जाय ते तीर्थंकर सर्वे, अथवा सामान्यकेवली, कपिल केवली आ

करीने कह्यो. हवे विस्तारीने कहे छे. हवे तीर्थसिद्ध कहेतां जे तीर्थ चतुर्विधसंघमांही उपजीने कहेतां जे साधुपणुं तथा साध्वीपणुं तथा श्रावकपणुं तथा श्राविकापणुं पाम्या पछी अथवा एज चतुर्विधसंघ स्थापना थया पछी, अने सिद्धांतनुं प्रवर्तन थया पछी सिध्या तेमने तीर्थसिद्धया कहीए. तथा तीर्थ कहेतां जे संसारसमुद्रनो त्याग ए नित्यतीर्थ कहेवाय. यथार्थथी तथा जीवाजीवादिक पदार्थ प्ररूपक परमगुरु प्रणीतवचन देशना प्रवर्ते छे. तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. अथवा निराधार न जवनि कहेतां सिद्धांत प्रवर्तन थया विना नहि, अथवा संघ स्थापन थया विना पण नहि, ए रीते जे सिद्धिवर्या तेमने तीर्थसिद्ध कहीए, अथवा गणधरादिक व्यवहार प्रवर्तन उत्पादव्यय ध्रुव निरुपण थया पछी मोक्षे जाय तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. ए पहेलो भेद जाणवो १. हवे बीजो भेद कहे छे. अतीर्थसिद्ध कहेतां तीर्थकरना वारा विना तीर्थ प्रवर्त्या वी सिद्धांत गणधरादि व्यवहार थया पहेलां मोक्षे गया तेमने अतीर्थसिद्ध कहीए, ते मरुदेवा

प्रमुख सिद्धिवर्या अथवा श्रीसुविधिनाथथी मांने
ने धर्मनाथसुधी वच्चे आंतरे आंतरे धर्म विछेद
गयो छे त्यां कोइ जीव शुद्ध स्वरूप स्वभावे अ-
नुभवी एकत्वभाव ग्रहीने कर्म खपावी मोक्षे ग-
या तेमने पण अतीर्थसिद्ध कहीए ए बीजो भेद
२. हवे त्रीजो भेद. तीर्थंकरसिद्ध कहेतां, जे ति
र्थंकर पदवी पामीने चोत्रीश अतिशय, पांत्रीश
वाणी गुण, बार गुणे करी विराजमान एहवी प
दवी पामीने मोक्षे गया. ऋषभादि चोवीसे ती-
र्थंकर अथवा अनंता तीर्थंकर मोक्षे गया तेमने
तीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए त्रीजो भेद ३. हवे चो-
थो भेद अतीर्थंकरसिद्ध कहेतां जे तीर्थंकरनी प-
दवी पाम्या विना सामान्यकेवली गौतमादिक
अनंता सिद्धि वर्या अथवा, अंतगडकेवली गज-
सुकुमार प्रमुख अनंता सिद्धि वर्या, तेमने अ-
तीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए चोथो भेद ४. हवे स्वयं
बुद्धसिद्ध कहेतां जे गुर्वादिकना उपदेश विना
पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने दीक्षा प्रमुख अं-
गिकार करे, कर्म खपावी मोक्षे जाय ते तीर्थंकर
सर्वे, अथवा सामान्यकेवली, कपिल केवली आ

करीने कह्यो. हवे विस्तारीने कहे छे. हवे तीर्थ सिद्ध कहेतां जे तीर्थ चतुर्विधसंघमांही उपजीने कहेतां जे साधुपणुं तथा साध्वीपणुं तथा श्रावकपणुं तथा श्राविकापणुं पाम्या पछी अथवा एज चतुर्विधसंघ स्थापना थया पछी, अने सिद्धांतनुं प्रवर्तन थया पछी सिध्या तेमने तीर्थसिद्धया कहीए. तथा तीर्थ कहेतां जे संसारसमुद्रनो त्याग ए नित्यतीर्थ कहेवाय. यथार्थथी तथा जीवाजीवादिक पदार्थ प्ररुपक परमगुरु प्रणीतवचन देशना प्रवर्ते छे. तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. अथवा निराधार न भवति कहेतां सिद्धांत प्रवर्तन थया विना नहि, अथवा संघ स्थापन थया विना पण नहि, ए रीते जे सिद्धिवर्या तेमने तीर्थसिद्ध कहीए, अथवा गणधरादिक व्यवहार प्रवर्तन उत्पादव्यय ध्रुव निरुपण थया पछी मोक्षे जाय तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. ए पहेलो भेद जाणवो १. हवे बीजो भेद कहे छे. अतीर्थसिद्ध कहेतां तीर्थकरना वारा विना तीर्थ प्रवर्त्या वी सिद्धांत गणधरादि व्यवहार थया पहेलां मोक्षे गया तेमने अतीर्थसिद्ध कहीए, ते मरुदेवा

प्रमुख सिद्धिवर्या अथवा श्रीसुविधिनाथथी मांडी ने धर्मनाथसुधी वच्चे आंतरे आंतरे धर्म विछेद गयो छे त्यां कोइ जीव शुद्ध स्वरूप स्वभावे अनुभवी एकत्वभाव ग्रहीने कर्म खपावी मोक्षे गया तेमने पण अतीर्थसिद्ध कहीए ए त्रीजो भेद २. हवे त्रीजो भेद. तीर्थंकरसिद्ध कहेतां, जे तिर्थंकर पदवी पामीने चोत्रीश अतिशय, पांत्रीश वाणी गुण, बार गुणे करी विराजमान एहवी पदवी पामीने मोक्षे गया. ऋषभादि चोवीसे तीर्थंकर अथवा अनंता तीर्थंकर मोक्षे गया तेमने तीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए त्रीजो भेद ३. हवे चोथो भेद अतीर्थंकरसिद्ध कहेतां जे तीर्थंकरनी पदवी पाम्या विना सामान्यकेवली गौतमादिक अनंता सिद्धि वर्या अथवा, अंतगडकेवली गजसुकुमार प्रमुख अनंता सिद्धि वर्या, तेमने अतीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए चोथो भेद ४. हवे स्वयंबुद्धसिद्ध कहेतां जे गुर्वादिकना उपदेश विना पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने दीक्षा प्रमुख अंगिकार करे, कर्म खपावी मोक्षे जाय ते तीर्थंकर सर्वे, अथवा सामान्यकेवली, कपिल केवली आ

करीने कह्यो. हवे विस्तारीने कहे छे. हवे तीर्थ सिद्ध कहेतां जे तीर्थ चतुर्विधसंघमांही उपजीने कहेतां जे साधुपणुं तथा साध्वीपणुं तथा श्रावकपणुं तथा श्राविकापणुं पाम्या पछी अथवा एज चतुर्विधसंघ स्थापना थया पछी, अने सिद्धांतनुं प्रवर्तन थया पछी सिध्या तेमने तीर्थसिद्धया कहीए. तथा तीर्थ कहेतां जे संसारसमुद्रनो ताग ए नित्यतीर्थ कहेवाय. यथार्थथी तथा जीवाजीवादिक पदार्थ प्ररुपक परमगुरु प्रणीतवचन देशना प्रवर्ते छे. तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. अथवा निराधार न जवति कहेतां सिद्धांत प्रवर्तन थया विना नहि, अथवा संघ स्थापन थया विना पण नहि, ए रीते जे सिद्धिवर्या तेमने तीर्थसिद्ध कहीए, अथवा गणधरादिक व्यवहार प्रवर्तन उत्पादव्यय ध्रुव निरुपण थया पछी मोक्षे जाय तेमने तीर्थसिद्ध कहीए. ए पहेलो भेद जाणवो १. हवे बीजो भेद कहे छे. अनीर्थसिद्ध कहेतां तीर्थकरना वारा विना तीर्थ प्रवर्त्ती सिद्धांत गणधरादि व्यवहार थया पहेलां मोक्षे गया तेमने अनीर्थसिद्ध कहीए, ते मरुदेवा

प्रमुख सिद्धिवर्या अथवा श्रीसुविधिनाथथी मांडी ने धर्मनाथसुधी वच्चे आंतरे आंतरे धर्म विच्छेद गयो छे त्यां कोइ जीव शुद्ध स्वरूप स्वभावे अनुभवी एकत्वभाव ग्रहीने कर्म खपावी मोक्षे गया तेमने पण अतीर्थसिद्ध कहीए ए बीजो भेद २. हवे त्रीजो भेद. तीर्थंकरसिद्ध कहेतां, जे तिर्थंकर पदवी पामीने चोत्रीश अतिशय, पांत्रीश वाणी गुण. बार गुणे करी विराजमान एहवी पदवी पामीने मोक्षे गया. ऋषभादि चोवीसे तीर्थंकर अथवा अनंता तीर्थंकर मोक्षे गया तेमने तीर्थंकरसिद्ध कहीए. ए त्रीजो भेद ३. हवे चोथो भेद अतीर्थंकरसिद्ध कहेतां जे तीर्थंकरनी पदवी पाम्या विना सामान्यकेवली गौतमादिक अनंता सिद्धि वर्या अथवा, अंतगडकेवली गजसुकुमार प्रमुख अनंता सिद्धि वर्या, तेमने अतीर्थंकरसिद्ध कहीए, ए चोथो भेद ४. हवे स्वयंबुद्धसिद्ध कहेतां जे गुर्वादिकना उपदेश विना पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने दीक्षा प्रमुख अंगिकार करे. कर्म खपावी मोक्षे जाय ते तीर्थंकर सर्व, अथवा सामान्यकेवली, कपिल केवली वा

दे देश्ने, अथवा अंतगमकेवली मरुदेवानी आ
दे देश्ने जे सिद्धि वर्या तेमने स्वयंबुद्धसिद्ध क
हीए ५. हवे छठो प्रत्येकबुद्ध ते कोइ निमित्त
कोइ कारण देखी धर्म पामीने मोक्षे गया तेमने
प्रत्येकबुद्धसिद्ध कहीए, करकंडु प्रमुख ए छठो भेद
६. शिष्यवाक्य–स्वामी स्वयंबुद्धमां अने प्रत्येक
बुद्धमां शो फेर हशे? बन्ने पोतानी मेळे बोध पा
मीने मोक्षे जाय छे तो भिन्नपणुं शाथी कह्यो
छे? तेनो उत्तर गुरुराज कहे छे के हे भाइ बन्ने
मां भिन्नपणुं कारणे छे ते कहे छे, तेना चार भे
द छे. १ बोध, २ उपधि, ३ श्रुत, ४ लिंग. ए
चार प्रकारे स्वयंबुद्धमांही विशेष छे. हवे बुद्ध
कहेतां कोइना उपदेश विना अने कोइ कारण
पण दीठुं नथी अने सहेजेज जातिस्मरणादिक
ज्ञान पामीने बुझे. शिष्यवाक्य–स्वामी मृगापुत्र
साधुने देखी बोध पाम्या तथा कपिलकेवली जा
तिस्मरण विना प्रतिबोध पाम्या तो तमे कारण
नी नापाम्री अने जातिस्मरणज्ञाननी हा पाडी
तो ए वात शी रीते छे? तेनो उत्तर के सिद्धांत
मांही तो कारण वा जातिस्मरण कह्युं नथी, प

रंतु टीकाकारे आ गवेषणा करी ने ते वचनो प
राश्क छे, ते उपरथी कंइ शंका करवा राखवी
नहि. हवे जे स्वयंबुद्ध ने तेना बे भेद. १ ती-
र्थकरबुद्ध, २ तीर्थंकर विनाना स्वयंबुद्ध, एटले
ए बोध कह्यो. हवे उपधि कहे छे के स्वयंबुद्धने
बार उपगरण पण होय. बार ते मध्ये सात तो
पात्रांना होय, त्रण पोताना अने उघो, मुहप-
त्ति होय, ए बार उपगरण होय अने प्रत्येकबु-
द्धने तो उघो ने मुहपत्ति ए बे उपकरण ज
होय ते जघन्यथकी जाणवा तथा उत्कृष्ट नव
उपगरण होय ते मध्ये सात पात्रांना होय अने
उघो, मुहपत्ति होय एटले ए नव थया, ए उ-
पधिनो अधिकार कह्यो तथा हवे सूत्रनो अधि-
कार कहे छे, स्वयंबुद्धने पूर्वभवनुं श्रुत होय,
कोइने न पण होय, जेने न होय ते गुरु पासे
जइने पण सीखे अथवा अन्य हरकोइ गच्छमां
रहीने शीखे, जेने पूर्वभव रहित सूत्र होय तेने
तो लिंग देवता आपे, जेने पूर्वाधित श्रुत नथी
अने अनेरा पासे श्रुत पामीने पोतानुं सामर्थ्य
होय तो एकाकीपणे विचरे, स्व इच्छाए विहार

करे ए पूर्वाधीत श्रुतवाळाने तो ए निश्चयज छे अने जेने पूर्वाधीत श्रुत नथी ते तो सामर्थ्य होय तो एकाकी विचरे, नहि तो हरकोइना गच्छ भेगो विचरे, अने प्रत्येकबुद्ध जे छे तेमने तो पूर्वाधीन श्रुत निश्चय छे, जघन्यथकी ११ अंगनुं श्रुत होय अने उत्कृष्टा देशे उणो दश पूर्वनुं ज्ञान होय, तथा लिंग जे छे ते प्रत्येकबुद्धने देवता आपे. तथा कोइ लिंगरहित पण होय इति स्वयंबुद्धमां तथा प्रत्येकबुद्धमां एम विशेषाधिक जाणवानुं छे ए अधिकार टीकाथकी जाणजो. ए वचनमां शंका कंखा करवी नहि, यथानुं वचन प्रमाण करवुं ए छठो भेद ६. हवे बुद्धबोधितसिद्ध कहेतां जे तीर्थंकर, केवली, गणधर, साधु आदि देइने उपदेश करीने जे जीवने प्रतिबोध पमाड्यो ते जीव बोध पामी मोक्षे गया तेमने बुद्धबोधित कहीए.ए सातमो भेद ७. हवे स्त्रीलिंगसिद्ध कहेतां ते स्त्रीलिंगना त्रण भेद छे. वेद १, शरीराकार २, नेपथ्य ३. तेमांही स्त्रीलिंग ते शरीराकार जाणवो एटले जे शरीरनो आकार तेने लिंग पण कहीए जे त्रणी वेद त्रण छे ते

ने ज्यारे छेदे तेवारे केवल पामे अने पद्म क-
ा जे वस्त्र आभुपणादिक वेप पहेरलो तेने स्त्री
हीए, तो ते वातनो तो कंइ निश्चे नथी ते तो
ष पण स्त्रीनो वेप पहेरे छे तथा स्त्री पण पु-
नो वेप पहेरे ढे तेथी ए वात अप्रमाण ढे ए
द तो कंइ खपना नथी तथा लिंगने शरीरा-
र ए वे भेद कह्या ते एकज ढे, शामाटे जे
रीरनो आकार तेनेज लिंग कहीए, अहिंया
न्नपणुं नथी, एकज भाव जाणवो, अहिंयां
इ दिगम्बरमती एम कहे ढे जे स्त्री तो कंइ
दि जाय नहि ए तो असत्य वचन छे अने
शुद्ध पण ढे जे माटे जे शुद्धज्ञान, शुद्धदर्श-
, शुद्धचारित्र जे जीव पामे ते जीव मोक्षे जाय
ां कांइ लिंगनुं कारण ढे नहि, पुरुष वा स्त्री
ा नपुंसक ए त्रण वेदमां एके वेदे मोक्षे जता
थी स्यामाटे के अवेदी पदनो मोक्ष छे, अने
; तो त्रणे वेद ढे ते कंइ मोक्षे जता नथी. अ
हिंयां तो शुद्ध ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए रत्न
य तेज मोक्षे जाय, मोक्षनो मार्ग तो ए त्रण
त्नत्रय शुद्ध एकत्व थये मोक्षे जाय, तथा व्य-

वहार मार्गे पण स्त्रीउं पुरुषनी पेठेज धर्म आराधे ठे श्यामाटे के स्त्रीउं पण सूत्र ज्ञान, अगीयार अंग सुधी जाणे तथा स्त्रीउं शुद्धसमकित तथा व्यवहारसमकित पण धारण करे ठे, सत्तर भेदे संयम पाले ठे. मासक्षमणादि तप पण करे ठे ते माटे स्त्रीउं मोक्षे केम न जाय? दिगम्बरोवाच ॥ जे स्त्रीउंने शुद्ध ज्ञान दर्शन होय पण चारित्र होय नहि श्यामाटे जे स्त्रीउंने वस्त्रनो परिग्रह घणो होय ठे अने ज्यां परिग्रह होय त्यां चारित्र ठे नहि अने वस्त्र ते तो नव प्रकारना परिग्रहमां गणेलां ठे अने स्त्रीवस्त्र न राखे तो नग्नमुद्राए विकृताकार दीसे अने पुरुषने अनीतनी पण होय तथा लोकमध्ये पण घणी हांसी निंदा थाय ते माटे वस्त्रनो परिग्रह होय अने परिग्रह होय त्यां चारित्र होय नहि तेनो उत्तर. जे परिग्रह ते तो मूर्छा नथी त्यां परिग्रह मानता नथी अने जो परिग्रह मानीए तो सिद्धांतथकी विरुद्ध थाय, अने ग्रहस्थ लिंगादि भेद सर्वे जुठा पडे श्यामाटे जे भरतचक्रवर्त्ति महापरिग्रह आरंभमां रह्याथका केवल

ज्ञान पाम्या जो मूर्छा नहि हती तो एटलावचा परिग्रहथकी केवलज्ञान पाम्या ते परिग्रह तो कंइ केवलज्ञान पामतां नड्यो नहि तो शुं व-स्त्रनो परिग्रह मोटो जनां अथवा केवलज्ञान पामतां आमो पमदो थइने रहेशे, माटे विचारी जुओ के मूर्छा तेज परिग्रह छे के मुछा परिगहो वुत्तो इति वचनात्, माटे जे वस्त्र छे ते तो चा-रित्रना उपगरण छे ते परिग्रहमां केम गणाय? दिगंबरो उवाच ॥ सर्वथकी उत्कृष्ट पुरुषनुं स्थानक परिग्रह आरंभना योगथी सातमी नरके जाय, एटली शक्ति पुरुषमां छे, अने वीर्य ए शक्ति स्त्रीने विषे नथी केमके सातमी नरके तो स्त्री जाय नहि तो सर्वथकी सुखनुं स्थानक उ-त्कृष्टमां उत्कृष्ट मुक्ति छे तो त्यां केम करीने जशे, अथवा वासुदेवादिक पदवी पण तेमने प्राप्त होती नथी तथा पूर्वधर लब्धि ते पण ए-मने न होय एटले पूर्वनुं ज्ञान पण एमने आवे नहि एटलो क्षयोपशम तो एमने छे नहि अने केवलज्ञान तो क्षायिकभावनुं छे ते केम प्राप्त थशे? तथा चारणादिक लब्धि तेपण एने आवे

तमी नरकसुधी केम न जाय ? एनो उत्तर-जे भुजपरिसर्प त्रीजी नरकलगी जाय अने खेचर पंखी त्रीजी नरकसुधी जाय तथा वाघ, सिंह चोथी नरकसुधी जाय तथा उरपरिसर्प पांचमी नरकसुधी जाय तथा मछादिक सातमी नरकसुधी जाय, एम अधोगति तिर्यंच पंचेंद्रिय सर्वेनी भिन्न भिन्न छे, अने उर्ध्वगतिए तो सर्वे तिर्यंच पंचेंद्रिय आठमा सहस्रार देवलोकसुधी जाय तो अहिंयां उर्ध्वगति तथा अधोगतिनुं कंइ सरखुं प्रमाण नथी. जे कंइ उर्ध्वगतिए आटलो जाय ते अधोगतिए आटलो जाय एवो तो कंइ नियम छे नहि, ते माटे स्त्री सातमी नरके न जाय पण मोक्षे तो जाय. अहिंयां तो केवलज्ञान केवलदर्शन अने क्षायकचारित्रना आराधनवडे जावुं छे, पणे तो कर्मप्रकृतिना बंधवडे जावुं छे माटे आत्मिकस्वभाव अने पौद्गलिकस्वभाव ए बे सरखां न होय. पौद्गलिकभाव पुद्गलमां राखो अने आत्मिकभाव आत्मामां राखो. एम सत्य स्वरूप समजीने स्त्रीने मोक्षे जवुं कबुल राखो ने करतां अमारुं कह्युं कबुल न करो तो भले तो

पण तमारा मतनो ग्रंथ " गोमट्टसार " नामे छे तेने विषे पण स्त्रीने मोक्षे जवानुं कह्युं छे. ते ग्रंथनी गाथा साक्षी माटे लखीए छीए.

॥ उक्तं च ॥

अट्ठयाल पुंवेया, इत्थिवेयापहुंतीचालीसा ॥ वीसनपुंसकवेया, समएगेण सिझंति ॥ १ ॥

अर्थ–उत्कृष्ट पुरुषवेदे सिझे तो एकसोने आठ सिद्धि वरे अथवा अड्डताळीस पण सिद्धि वरे अने स्त्रीवेदे तो एकसमये चाळीस सिद्धि वरे अने नपुंसक सीझे तो एकसमये वीस सिद्धि वरे, ए उपर लखेली गाथानो अर्थ छे. तथा अड्डताळीस कह्या अथवा एकसोने आठ कह्या तेनो विचार आगळ वर्णवामां आवशे. ए गाथामां तो अड्डताळीसज कह्या छे पण बन्नेनो भाव आगळ कहीशुं. एम तमारा ग्रंथने अनुसारे स्त्री चाळीस मोक्षे जवानी कही छे ते माटे स्त्रीने मोक्षे जवानुं कबुल राखवुं जोइए तथा साधु साध्वीने वस्त्र राखवानुं ते परिग्रहमां गणातुं नथी ते तमारा " भगवतीसार " ग्रंथने विषे वस्त्र राखवानी साधुने छापामी छे माटे वस्त्र

छे ते कंइ परिग्रहमां गणातां नथी माटे एम समु समजीने स्त्रीने मुक्ति पामवी ए वात सत्य जाणवी. ए वातमां शङ्का राखवी नहि एटले स्त्रीने मोक्षे जवानो आठमो अधिकार कह्यो. ८ तथा पुरुषलिंगे सिद्ध–कहेता जे पुरुषवेदे मोक्षे जाय एटले पुरुषाकारे छे, पण वेदनो तो क्षय थयो छे वेदरहित पुरुषाकारे मोक्षे जाय तेने पुरुषलिंगसिद्ध कहिये, एटले ए नवमो अधिकार कह्यो ए. हवे दसमो नपुंसकलिंग कहे छे. नपुंसक कहेतां नहि पुरुषवेद अने नहि स्त्रीवेद बन्नेथकी न्यारो ते नपुंसकना बे भेद छे. एक जन्मनपुंसक १ ने बीजो कृत्रिमनपुंसक २. ते मध्ये जन्मनपुंसक सिद्धि न वरे ने कृत्रिम नपुंसक सिद्धि वरे ए अधिकार भगवतीजीमां कह्यो छे. कृत्रीमनपुंसक जे मोक्षे गया ते, गंगीआ (गांगेय) प्रमुख जाणवा एटले ए दसमो भेद कह्यो १०. हवे स्वलिंगसिद्ध कहेतां जे कोइ श्री, जैनशासनना मतनो लिंग कहेता जे वेषधारण करे, ते लिंग साथे मोक्षे जाय तेने स्वलिंगसिद्ध कहीए. ते लिंगना त्रण भेद छे. प्रथम तीर्थंकरना वारानो

लिंग भिन्न छे अने बावीस तीर्थंकरना वारानो लिंग पण भिन्न छे तथा जिनकल्पी तथा स्थविर कल्पी इत्यादिक अनेक भेद छे पण ते सर्वे लिंग ए जैनमतनो जाणवो. ते लिंग धारण कर्या पछी मोक्षे गया तेमने स्वलिंगसिद्ध कहीए. ए अगियारमो भेद कह्यो ११. हवे अन्यलिंगसिद्ध कहेतां ज्यां जैननो लिंग नथी ते विनानां अनेक लिंग छे. खाखी, योगी, वैरागी, सन्यासी, फकीर प्रमुख अथवा आर्य, अनार्य, सर्वे जैनलिंग विनाना जे मोक्षे जाय तेमने अन्यलिंगसिद्ध कहीए, एटले वंकचूल प्रमुख अनेक जीव मोक्षे गया तेमने अन्यलिंगसिद्ध जाणवा ए बारमो भेद कह्यो,१२. हवे गृहस्थलिंगेसिद्ध कहेतां जे गृहस्थपणे जैनधर्मनो पण भेख (वेष) लीधो नथी, तेम अन्य धर्मनो, आर्य अनार्यनो भेख लीधो नथी अने गृहस्थावासमां रह्याथकां कोइ कारण वैरागनुं मळ्याथकी अनित्यादिक भावना आवी अने शुद्ध स्वरूपनी रमणता, आत्म स्वरूपनुं एकत्वपणुं थातेथके मोक्षे गया तेना बे भेद छे. १ अंतगमकेवली. तुर्त शैलेशी करण

करीने मोक्षे गया ते मरुदेवा प्रमुख तथा २ जे जेनुं आवखुं वधारे होय ते एकत्वजावादिकथकी केवलज्ञान पामे पण आयुष्य वधतुं छे तेथी जेने लिंग देवता आपे त्यां परमात्मपद तो ग्रह स्थीपणाथकोज थयुं छे केमके केवलज्ञान तो ग्रहस्थावासमांज उत्पन्न थयुं माटे एने ग्रहस्थलिंगसिद्ध कहीए, एमां कंइ दूषण छे नहि. भरतादिकनीपेरे एटले ए ग्रहस्थीलिंगे सिद्ध कह्या ए तेरमो जेद थयो १३. एकसिद्ध कहेतां जे एकलाज मोक्षे गया साथे कोइ साधु प्रमुख बीजा नथी गया तेमने एकसिद्ध कहीए, ते महावीरस्वामी आदे जाणवा, ए एकसिद्धनो चौदमो जेद कह्यो १४. अनेकसिद्ध कहेतां घणा पुरुषादि साथे मोक्षे गया पार्श्वनाथ प्रमुख तेमने अनेकसिद्ध कहीए, ए पंदरमो जेद जाणवो १५. हवे सिद्धि वरवानो विचार कहे छे के–एक समये केटला सिद्धि वरे अथवा केटला समयसुधी लागट सिद्ध थाय अगर सिद्धि वरे अने केटलो विरहकाळ आवे, तेमनो विचार कहे छे ते आ बे गाथाथकी जाणजो.

॥ उक्तं च ॥

बत्तीसा अमयाला. सठी बावत्तरीय बोधषा ॥
चुलसीइ छन्नऊइ, डुरहिय महुत्तरसयं च ॥१॥
अम्रसगतपन्न चउ,तिनिदुन्नइक्कोयसिन्नमाणेसु॥
बत्तीसाइ सुसमीया, निरंतरं अंतरं उवरी ॥ २॥

अर्थ–हवे प्रथम समय जघन्यथकी एक जीव सिद्धि वरे, उत्कृष्टा बत्रीस सिद्धि वरे एम बीजे समये पण जघन्यथी एक ने उत्कृष्टा बत्रीस एम यावत् आठ समयसुधी जो सिद्धि वरे तो ते उपरांत अवश्य विरहे पडे. तथा प्रथम समये जघन्यथी तेत्रीस अने उत्कृष्टा अडतालीस सिद्धि वरे. एम बीजे समये पण जघन्यथी तेत्रीस उत्कृष्टा अडतालीस एम सात समयसुधी जो यावत् सीझे तो ते उपरांत विरहे काल अवश्य पडे. तथा प्रथम समय जघन्यथी उंगणपचास अने उत्कृष्टा साठ एम बीजे समये पण जघन्यथी उंगणपचास अने उत्कृष्टा साठ एम छ समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह काल पडे. तथा प्रथम समये जघन्यथकी एकसठ अने उ

त्कृष्ट बोतेर एम बीजे समये जघन्यथी एकसठ अने उत्कृष्ट बोंतेर एम पांच समय लागट सिद्धि वरे तो विरह पडे. तथा प्रथम समये जघन्यथी तोंतेर अने उत्कृष्ट चोरासी एम बीजे समये जघन्यथी तोंतेर अने उत्कृष्ट चोराशी एम चार समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह पडे. तथा प्रथम समये जघन्यथी पंचासी अने उत्कृष्ट छन्नु एम बीजे समये जघन्यथी पंचाशी अने उत्कृष्ट छन्नु एम त्रण समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह काल पडे. तथा प्रथम समये जघन्यथी सत्ताणुं अने उत्कृष्ट एकसोने बे एम बीजे समये जघन्यथी सत्ताणुं अने उत्कृष्ट एकसोने बे एम बे समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह काल पडे. तथा प्रथम समये जघन्यथी एकसोत्रण अने उत्कृष्ट एकसोनेआठ एक समयनाज सिद्धि वरे तो फरी विरहे काल पडे ते छ माससुधी मुक्तिनो मार्ग बंध रहे तथा उंचा वधता जीव सिद्धि वरे तेना विरहकाल उंचा वधता ते अधिकार घणा छे ते सर्वे शास्त्र थकी जाणजो. शिष्यवाक्य–स्वामी ए विरहका-

ख ते आ भरतक्षेत्र आश्रयीने कह्यो छे के प-
न्नरे क्षेत्र आश्रयीने कह्यो छो तेनो उत्तर. जे
हे भद्र ! सिद्धांतमां तो एक क्षेत्रनुं कंइ वचन
नथी अहियां तो समुदाय सर्व सिद्धपद आश्र-
यीने छे मोक्षमार्गनोज विरह काल कह्यो छे.
पण एम जो समुदाये बोलीए तो परंपरा लो-
किकव्यवहारने बाधकपणुं लागे, शामाटे जे जे-
टला आ भरतक्षेत्रमां तीर्थंकर थया तेमना पांच
कल्याणक दशे क्षेत्र सरखा लहीए छीए ने श्री
रीषभदेव स्वामी तो एकसोने आठ पुरुष साथे
मोक्षे गया ते तो सर्वे उत्कृष्टी अवगाहना
वाला छे ते तो मोक्षे जवानुं आश्रीत मानीए
छीए बीजा नानी अवगाह नाना घणी जो एक
समये एकसोने आठ मोक्षे जाय तोपण छ मा-
सनो वीर हे काळ कह्यो छे ए तो उत्कृष्टी अ-
वगाह नाना घणी मोक्षे गया तो अहीयां अव-
श्य विरह काल छ मासनो होय ए जोता समु-
दाय मोक्ष मार्गनो विरह काल लेनां चक्रक्षे-
त्रे मुक्तिनो मार्ग छ मास सुधी बंध रह्यो जोइए
तेवारे नवक्षेत्रे भगवाननां कल्याणक अहीना

[illegible] समय मल्लनां न आवे ते [illegible] आगाक अने आर्द्रीना [illegible] आगम पाकल थइ जाय [illegible] कल्याणना नमनां कल्या- [illegible] आर्द्रा अना- [illegible] मांटे आ [illegible] ॥ जे विरहे [illegible] नार्गना देरूक [illegible] शुं आ दृत्र आयन [illegible] ना आ दृत्र आयन [illegible] आ दृत्र आयन [illegible] आयन [illegible] ना [illegible] आनि भूत्र [illegible] अने [illegible] आयन [illegible] वमाण [illegible] मुनिना [illegible] कालना [illegible] आयन [illegible] आयन [illegible] आर्थन [illegible]

ऊपजे छे अने ते गतियोना जीव सर्व गतियोमां ऊपजे छे; अने विरहे काल ते गतिने आश्रीनेज छे पण मुक्तिना विरह कालनुं तें पुछ्युं तेनो विरह काल त्यां तो समुदायेज वचन छे पण अहींयां समुदाय कहेतां पूर्वोक्त विचार आमो आवे छे. तेथी हमे एक क्षेत्र आश्रीने संभववानुं कह्युं पण शास्त्रने विषे जोता तो मुक्ति गति आश्रीने छे; ए वातनो विचार तो केवली होय तो कहे अने अहींयां तो विचार घणानो छे. पण परुपणामां तो एक क्षेत्र आश्रीनेज करवी पडे, पछी तत्त्व तो अरीहंत जाणे. शिष्य वाक्य स्वामी एम विरह काल पडे त्यारे मुक्तिनो मार्ग बंध रहे तो केटलाएक लोको एम कहे छे जे मुक्तिनो मार्ग तो कीमी मंकोमीनी हारनी गोमे वहे छे तो ए वात केम बनशे? तेनो उत्तर जे एम कोइ अज्ञानी लोक सदगुरुना चरण कमल सेव्या विनानां वहु श्रुतनी भक्ति रहीत एवा जे जीवमती कल्पना करवा थकी बोले ते कंइ शास्त्रनी साथे मेलववानां वचन नथी ए पोतानी खुशी पडे तेम लवे तेनो उत्तर तो कंइ शास्त्र-

व्यने उंळखी स्याद्वादशैली लही पोतानुं स्वरूप एकत्व भावे थाय ते घणी सिद्धिवरः शिष्य वाक्य स्वामी एकत्व भाव शीरीते थाय ? तेनो उत्तर जे प्रथम लक्षण गुण स्वभाव कहीने आव्या ते रीते षट् द्रव्यने उंळखीने चार द्रव्य तो अरूपी छे, ते कंइ आत्माने नमता नथी ते आला भेगा छे पण नही अने पांचमो द्रव्य जे पुद्गल छे ते आत्माने अनादि काळनो भेगो वळगेलो छे, अने तेहीज आत्माने अनादिकाळ-नो संसारमां भमाडे छे माटे पुद्गल तथा आत्मा ए बे द्रव्यनी सद्गुरु पासेथी उंळखाण करवी, पण पोतानी मति कल्पनाए चालवुं नही, ते द्रव्यने सारी रीते उंळखीने जड चेतनना विभाग जाणीने जड भावनो त्याग करीने पोताना एकत्व स्वरूपमां रमण थाय तेमने एकत्व भाव कहीए, अहींयां किंचित् जीव स्वरूप उंळखावे छे, के जीव कहेतां आत्म द्रव्य ते तो शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्रनो पुंज छे, महा ज्योति स्वरूप साक्षात् छे, एवो जे आत्मस्वरूप दीसे छे एटले सर्व पदार्थ छे तेमां एक आत्माराम प्रत्यक्ष

वस्तु मात्र आश्चर्यकारी छे, अनेक भव रुप एक समय देखाय छे ए सर्व पोत पोतानी द्रष्टिवडे जोवामां आवे कारण के अहीयां द्रष्टि कहेतां ज्ञान द्रष्टि समजवी. चर्म चक्षुवालो न जाणे, बाह्य द्रष्टिवालाने ए वस्तु समजवामां आवे नहीं पनो जे घणी बाहीर आत्माना भावने छोडीने अंतर आत्मानो भाव जेने प्राप्त थयो छे ते धणीना जाणवामां आवे छे, अहीयां कोइ कहेशे के देखाडो ने वस्तु कंई देखाडवा जेवी नथी शामाटे के अरुपीना भाव तो अरूपी जाणेः ए वात रुपीना जाणवामां न आवे, ए तो जेनी विभावदशा ओछी होय राग द्वेष जेना पातला पड्या होय समकित गुण प्राप्त थयो होय ते धणी, ए वस्तुने जाणे पण जेनुं मिथ्यात्व गयुं नथी अने अज्ञानमां गर्वाने रह्या छे अने इंद्रिय सुखने विषे जेनी इच्छा छे शुभाशुभ भावने विषे धर्म मानी बेठा छे ते धणी सर्वथा ए वस्तु नज देखे, एतो जेने ज्ञाननी रमणता छे ते ए आत्मस्वरूपने जाणे ए वातमां कंइ पण असत्यपणुं नथी ए प्रत्यक्ष पण जोतां स्वरूपज छे. शुद्ध चैतन्य मात्र वस्तुं

ते एक शब्द मात्रथी जणाय छे. एटले शुद्धनय वस्तु मात्र आ एक कहेतां शुद्धनयने वस्तु धर्म प्राप्ति छे एटले एनो अनुभव करतांज समकितनी प्राप्ति थाय. शुद्ध स्वरूप ते केवुं छे के एक वस्तु शुद्ध एकत्व ज्योति स्वरूपेज शुद्धपणुं छे ते कोइ काळे छुटशे नही, जेवो छे तेवो ने तेवोज वस्तु ए रहेशेज एज स्वरूप सिद्धनुं ए छे, अने ए स्वरूप सर्व जीवनुं ए छे, अहींयां कोइ कहेशे के जीव शुद्धता क्यारे थाशे ज्यारे आ संसारभावथी छुटशे त्यारे शुद्ध थाशे तेनो उत्तर कहे छे के जीववस्तु तो दृष्टिए विचारी जोशो तो त्रणे काळ सदाए शुद्धज छे जेम कंचन चेपारुप छे. एनुं मुल्य पण चेपानुंज अपाय छे, तोलनुं अपातुं नथी, जेटलो तोल वधारे हशे, तेटलो ताप देवे बळी जाय एटले मुळ होय एटलुंज रहे. तेम आत्मा पण रागादि विभावनी संगे अनेक नाम धरावे तथापी ते आत्माथकी सर्व भिन्न छे. आत्मा तो शुद्ध रुपज छे तथा जे नव तत्त्व कहीए छीए. जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आसव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष ए

तो वचन रूप आत्मा परमात्मा छे तथापि ए आत्माना नाम वचन छे पोते पोताना शुद्ध स्वरूपमांज छे तेम अज्ञान दशाए अनेक नाम धरावे छे. कारण नारक इत्यादिक अनेक नामथी अग्नि कहेवाय छे पण परमार्थे अग्नि त्यारेज छे के ज्यारे ते दाहक स्वभाव छे ते- नेज अग्नि कहेवाय छे. अग्निरूपी कुंड ए आ- कारनुं नाम छे अग्नि नथी तेम आत्मा पण शुद्ध स्वरूपनुं नाम छे जेम ए अग्निना आकारे पण देखीने लोक जुदा जुदा नाम दे छे पण अग्निना स्वभाव ना एक दाहकपणुं छे तेम चेतन विभावना संगथी अनेक नाम धरावे छे पण चेतन स्वरूप तो शुद्धनुं नामज छे अने ए नाम तो सर्वे विकल्प छे विकल्प छे ते सर्वे जुठा छे. पोते पोताना एकत्व भाव ज्ञान दर्शन चारि- त्रनो पुंज शुद्ध स्वरूप। साक्षात परमानंदरूप तेहीज सत्य छे बाकी सर्व ए विकल्प छे उक्तंच॥

अन-शुद्ध नयोपनं । सत्य गुज्यं निश्च कामितं ॥
नयतत्त्व गतेन पियदन्नंमुचत ॥ ७ ॥

एवुं शुद्ध स्वरूप तेने आत्मा कोइ काळे

तजे नहीं. हवे एवो आत्मा छे तोपण भेदनय थी बे पक्ष छे; एक तो अशुद्ध आत्मा ने बीजो शुद्ध आत्मा कहेतां जे विभाव दशा एटले रागादि परिणाम शक्तिरूप ए सर्व जीवने विषेज पामीए. बीजो जे शुद्ध चेतन कहेतां जे वस्तु द्रव्य रूप छे तेनी कोइ मर्यादा नथी जे आटलो काळज जीववस्तु रहेशे, एनो तो सदाय अमर्यादा काळ छे एटले शाश्वतोज छे, अने जे रागादि विभाव सहीत ते अशुद्ध चेतना छे, तेना काळनी मर्यादा छेज अहींयां कोइ शंका करशे जे भवी अजवीने विभाव साथे छुटको क्यारे थशे? तेनो उत्तर जे भव्य जीव छे तेतो समकित पाम्यो त्यांथी विभावनो नाश थयो अहींयां पण कोइने शंका थशे जे समकित तो चोथे गुणठाणे छे अने विभावनो नाश तो दशमा गुण स्थानकने अंते छे तेनो उत्तर जे गुणठाणां छे ते पण एक व्यवहार कथनी छे तथापि चोथे गुणठाणे जे समकित छे तेतो अशुद्धज छे अने शुद्ध समकित तो त्यां दशमा गुण स्थानकने अंते क्षपक श्रेणिनी अपेक्षाए छे, शामाटे जे चोथे गु-

णनाणे समकितनी प्राप्ति थइ त्यानो मिथ्यात्व स्वजाव रह्यो ने श्रहीयां नो कंइ जपशमे ने, कंइ क्षय जपशम थाय ने नो जपशम नो ए मिथ्यात्वसत्ताए मानीनज ने अथवा क्षय उपशम थयुं तो ए सत्ताए मानीन ने. शामाटे जे अगीयारमा गुणस्थानकना परेला निगोदादिकने विषे रखमे ने नो शा कारणथी के मिथ्यात्वादिक हतुं ते खेइने गया, सत्तामां हतुं ने जदयमां आव्युं तेथी ए जीव रखमे ने. अथवा कोइ कहेशे के क्षायक समकितवालाने चोथे गुणस्थानके शुद्ध स्वरूप ने के नहीं? तेनो उत्तर के आगळ जे बे समकित कह्यां तथी तो ए अनंत घणुं शुद्ध ने परंतु संपूर्ण शुद्ध नो नथी शामाटे जे त्यां संपूर्ण सत्य ने सत्य ने असत्यने असत्य जाणवुं ते ज्ञान हजु एने प्रगट्युं नथी अने एकत्व आत्म स्वरूपनी प्राप्ति थइ नथी अने ज्यां सुधी नेद ज्ञान ने त्यां सुधी किञ्चित् मिथ्यात्व ने अने अहीयां नेदज्ञानने विषे तो आत्माना नेद करवा, ज्ञान आत्मा प्रमुख अथवा उत्पाद व्यय प्रमुख तो आत्मा कंइ जिन्न नथी अने ज्ञानदर्शन ने तेहिज

आत्मा छे माटे आत्माने विषे भेदपणुं छे नहि. अने भेदपणुं मानवुं तेज मिथ्यात्व छे अने अभेदपणुं एकत्वभाव थवो ए बारमे गुणस्थानके छे त्यां तो कंइ मिथ्यात्व छे नही ते कंइ हवे पाछा पण पडे नही, जेम कोइए वृक्ष कापी नांख्युं पण तेनां मूळीयां पृथवीमां रह्यां छे तो ते वृक्ष पाछुं प्रगट थायज अने जेनुं मुळ सुद्धां गयुं ते पाछुं प्रगट न थाय तेम मिथ्यात्वनुं मूळ मांही रहेलुं ते अगीयारमा गुणस्थानक सुधीना जीवोने पाछो मिथ्यात्व रूप वृक्षनो फेलावो थाय छे ते जीव संख्यातादिक काळ संसारमां रखडे छे, जे जीवने बारमुं गुणस्थानक स्पर्श्युं ते जीवने मिथ्यात्व वृक्षनुं मूळ छे नही, तेथी ते जीव संसारमां पाछो न पडे; अने ते जीव तरत मोक्ष जाय, हवे अहीयां जे चोथे गुणस्थानके क्षायिक समकित कंइक शुद्ध कह्युं तेनी कोइने शंका पडशे जे चोथा गुणस्थानकनो जीव तो पाछो पडे तेने कहीए के चोथा गुणस्थानकनो जीव पाछो न पडे अने चोथाथी दशमा गुणठाणा सुधीनुं मिथ्यात्व रह्युं ने मिथ्यात्व किंचित् छे अने

तद्भवमांज ए मिथ्यात्वनो नाश थशे अने ते जीव तद्भव मोक्षे जशे माटे एने शुद्ध समकिती कहीए छीए, जेम कोइ पुरुष मरवा सुतो अने गले श्वास छे तेने मुवोज जाणीए ते कंइ हवे जीववानो नथी तेम अहीयां मिथ्यात्व पण कंइ रहेवानुं नथी माटे एने शुद्ध समकित कहीए छीए; पण शुद्ध समकित जे संपूर्ण तेतो रागादि विभाव दशानो नाश थये बारमे गुणस्थानकेज होय एम जाणवुं माटे ते काळनी मर्यादा त्यां आवीज रहे माटे भव्य जीव अशुद्ध चेतनावाळो रागादि विभाव संगतिनी काळमर्यादा तो पूर्ण थाय पण शुद्ध चिदानंदघन ज्ञानदर्शन चारित्रनो पुंज ज्योति स्वरूपी तेनी तो कंइ काळमर्यादा छे नही. तथा जे विभाग रूप रागादि परिणाम अशुद्ध चेतना जे छे ते पर्याय मात्र छे. विचारीने जोइए तेवारे ए ज्ञानरूप नवतत्त्वरूपमां ढंकाइ गयुं छे एटले पूर्वोक्त शुद्ध चिदानंद स्वरूप नवतत्त्वरूप (तेने) वादळे करीने आच्छादित थयुं छे एटले जीव वस्तु अनादिकाळनो ए कर्ममां मां ढंकाइ गयो छे तेतो ज्ञानी पुरुष होय तेज

मांहीथी खोळी काढे, बीजाने जमे तेवुं नथी.

॥ उक्तं च-

पाषाणेषु यथा हेम दुग्धमध्ये यथा घृतम्॥
तिलमध्ये यथा तैलं, देहमध्ये तथा जीवः॥
काष्ठमध्ये यथा वह्निः, शक्ति रूपेण तिष्ठति॥
अयमात्मा शरीरेषु। यो जानाति स पंमितः॥

अर्थ-शामाटे के अनादि संबंधे के जेमां धातु कहेतां सोनुं, रुपु, त्रांबु, कथइ, जसत, इत्यादिनी पाषाणमांही उत्पत्ति ठे ते कोइने समजवामाज नथी के आ धातु फलाणा पत्थरमाही ठे एवुं तो जाणपणुं कोइने ठे नहि एतो जे अक्कलकला ठे तेज ए कांकरीउने उंळखे ठे के आ पत्थरमांही सोनु ठे अने आ पत्थरमांही कथीर छे जेम जे पंमित पुरुष छे तेज आत्माने उळखे छे ने जेम पत्थरमां सुवर्णादिक रह्युं छे तेमज आपणी कायाने विषे आपणो आत्मा परमात्मा सर्व उपद्रव रहित साक्षात् बिराजमान छे तथा जेम दुग्ध कहेतां दुधमांही जेम घृत रह्युं ठे तेमज आपणी देहनी मांहळी कोरे

शुद्ध परमानंद स्वरूप साक्षात् परमानंद पोते वि-राजमान छे तथा जेम तिलमांही तेल रह्यं छे तेम आपणी कायाने विषे साक्षात् परमब्रह्म पुरुषोतम ज्योति स्वरूप विराजमान स्वरूप छे तथा जेम काष्ठनी मांहली कोरे अग्नि रही छे ते शक्ति भावे छे कदापि काष्ठना कटकेकटका करीए तोए पण दीठामां आवे नही शामाटे के ए सक्ति भावे छे ते व्यक्तिभावे क्यारे एना कहाष्टनारा वनचरादि लोक कसवी मळे त्यारे नीकळे. तेमज आ शरीरने विषे परमात्म स्वरूप छे तेने जे जुव्खे कहेतां जे जाणे छे तेहीज पंम्नित छे. ते आत्मस्वरूप जाण्या विना जे कोइ बीजा भणी गणीपंम्नित नाम धरावे छे ते लौकिक पंम्नित छे. पण लोकोत्तर पंम्नित तो आवी रीते आत्म स्वरूपनुं जेने जाणपणुं थयुं तेने लोकोत्तर पंम्नित कहीये.

शिष्यवाक्य–लौकिक पंम्नित अने लोकोतर पंम्नितमां शो फरक हशे ?

तेनो उत्तर–जे लौकिक पंम्नित छे ते संसारी जीवने संसार थकी छुटीने मोक्षे जवा न दे

शा माटे जे एना समजवामां एम छे के जे आ- पणो वाडो तुटी जाय अने आपणा मतनी मान वृद्धि न थाय अने सर्वे आत्मज्ञानी थइ जाय ते वारे आपणो मत केम चाले? माटे हरेक रीते आपणा वाडामांथी नीकळवा देवो नहि. जेम मोह राजानी साथे कोइ जीव सद्गुरुने मेळवे ते वारे महा संताप थाय जे आपणुं नाटक तुटी जशे एम जाणीने घणो शोकमां पडे छे. तेम लौकिक पंडित छे. ते पण कोइ जीव आत्म ज्ञान पाम्यानी खबर सांभळे तेवारे तेना जीवने केवुं थाय छे के जेम कोइ घरमांथी अत्यंत व- ल्लभ वस्तुनो नाश थातां तेनुं जेटलुं दुःख वेदाय तेथी अनंत गणुं दुःख वेदे छे ते माटे एमने लौ- किक पंडित कहीए. अने लौकिक पंडित ए वाडाना मतनां चलावनारा छे तेना थकी ज्ञान मार्ग गणो दूर छे तेथी कोइ जीव धर्म पामी शके नहि तथा लोकोत्तर पंडित ते तो एक आ- त्मा स्वरुपनी ओळखाण करावे अने धर्म पमाडी मोक्षे पहोंचाडे.

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे जे लौकिक पं-

शुद्ध परमानंद स्वरुप साक्षात् परमानंद पोते वि-
राजमान छे तथा जेम तिलमांही तेल रह्युं छे
तेम आपणी कायाने विषे साक्षात् परमब्रह्म पु-
रूषोतम ज्योति स्वरूप विराजमान स्वरूप छे तथा
जेम काष्ठनी मांहली कोरे अग्नि रही छे ते
शक्ति भावे छे कदापि काष्ठना कटकेकटका करी
ए तोए पण दीठामां आवे नही शामाटे के ए
सक्ति भावे छे ते व्यक्तिभावे क्यारे एना क-
हाम्नारा वनचरादि लोक कसवी मळे त्यारे
नीकळे. तेमज आ शरीरने विषे परमात्म स्वरूप
छे तेने जे उळखे कहेतां जे जाणे छे तेहीज
पंम्डित छे. ते आत्मस्वरूप जाण्या विना जे
कोइ बीजा भणी गणी पंम्डित नाम धरावे छे ते
लौकिक पंम्डित छे. पण लोकोत्तर पंम्डित तो
आवी रीते आत्म स्वरूपनुं जेने जाणपणुं थयुं
तेने लोकोत्तर पंम्डित कहीये.

शिष्यवाक्य—लौकिक पंम्डित अने लो-
कोतर पंम्डितमां शो फरक हशे ?

तेनो उत्तर—जे लौकिक पंम्डित छे ते सं-
सारी जीवने संसार थकी छुटीने मोक्षे जवा न दे

शा माटे जे एना समजवामां एम छे
पणो वामो तुटी जाय अने आपणा म
वृद्धि न थाय अने सखे आत्मज्ञानी
ते वारे आपणो मत केम चाले? माटे
आपणा वामामांथी नीकळ्या देवो न
मोह राजानी साथे कोइ जीव सद्गुरु
ते वारे महा संताप थाय जे आपणुं ना
जशे एम जाणीने घणो शोकमां पमे
लौकिक पंमित छे. ते पण कोइ जीव
ज्ञान पाम्यानी खबर सांजळे तेवारे तेना
केवुं थाय छे के जेम कोइ घरमांथी अत्य
खम वस्तुनो नाश थातां तेनुं जेटलुं दुःख
तेथी अनंत गणुं दुःख वेदे छे ते माटे एमने
किक पंमित कहीए. अने लौकिक पंमित
वामाना मतनां चलावनारा छे तेना थकी
मार्ग गणो दूर छे तेथी कोइ जीव धर्म पा
शके नहि तथा लोकोत्तर पंमित ते तो एक अ
त्मा स्वरूपनी ओळखाण करावे अने धर्म पमाम
मोक्षे पहोचामे.

शिष्यवाक्य—स्वामी तमे जे लौकिक पं

शुद्ध [illegible] साक्षात परमानंद पोते वि-
राजमान [illegible] सर्व [illegible] तत्त्वमांहे तत्त्व रह्युं छे
[illegible] आत्मा [illegible] साक्षात परमब्रह्म पु-
[illegible] स्वरूप विराजमान स्वरूप छे तथा
[illegible] अग्नि रह्यो छे ते
[illegible] काष्ठना कटकटका करी
[illegible] आव नहि शामाटे के ए
[illegible] त्यारे पना क-
[illegible] मळे त्यारे
[illegible] परमात्म स्वरूप
[illegible] जाणे छे तेहीज
[illegible] जाण्या विना जे
[illegible] नाम धरावे छे ते
लौकिक पंडित [illegible] पंडित तो
आप [illegible] आत्म स्वरूपनुं जेने जाणपणुं थयुं
तेने लोकोत्तर पंडित कहाय.

शिष्यवाक्य—लौकिक पंडित अने लो-
कोत्तर पंडितमां शो फरक हशे?

तेनो उत्तर—जे लौकिक पंडित छे ते सं-
सारी जीवने संसार थकी छूटीने मोक्ष जवा न दे

शा माटे जे एना समजवामां एम छे के जे आ-
पणो वाडो तुटी जाय अने आपणा मतनी मान
वृद्धि न थाय अने सर्वे आत्मज्ञानी थइ जाय
ते वारे आपणो मत केम चाले? माटे हरेक रीते
आपणा वाडामांथी नीकळवा देवो नहि. जेम
मोह राजानी साथे कोइ जीव सद्गुरुने मेळवे
ते वारे महा संताप थाय जे आपणुं नाटक तुटी
जशे एम जाणीने घणो शोकमां पडे छे. तेम
लौकिक पंडित छे. ते पण कोइ जीव आत्म
ज्ञान पाम्यानी खबर सांभळे तेवारे तेना जीवने
केवुं थाय छे के जेम कोइ घरमांथी अत्यंत व-
ल्लभ वस्तुनो नाश थातां तेनुं जेटलुं दुःख वेदाय
तेथी अनंत गणुं दुःख वेदे छे ते माटे एमने लौ-
किक पंडित कहीए. अने लौकिक पंडित ए
वाडाना मतनां चलावनारा छे तेना थकी ज्ञान
मार्ग गणो दूर छे तेथी कोइ जीव धर्म पामी
शके नहि तथा लोकोत्तर पंडित ते तो एक आ-
त्मा स्वरूपनी ओळखाण करावे अने धर्म पमाडी
मोक्षे पहोचाडे.

शिष्यवाक्य-स्वामी तमे जे लौकिक पं-

म्ति कह्या ने पण समकित आदिक पामे महा व्रत धर्म जेलखावे जे. चारित्र तथा तप तथा व्रत पाळे एटोर ने कंइ सर्व एवा प्रमादी नथी अने कारण तो धर्मनांज बनावे छे तो एमने धर्म मार्गमां कम न गवेर्या ?

गुरुवाक्य–हे देवाणुप्रिय ! जे बाह्य थकी धर्म देखाय छे. जे व्यवहार समकित तथा पंच महाव्रत तथा तप आदि देइने धर्म कहे छे पण कंइ ते धर्म नथी श्यामाटे जे समकित गुण ते तो आत्म स्वभावमां रह्यो छे ते कंइ व्यवहार समकितमां छे नहि. अने आत्मस्वभाव तेज समकित अने आत्मस्वभाव तेज ज्ञान अने आत्मस्वभाव तेज चारित्र पण आत्मा थकी भिन्न छे नही अने भिन्न गवेखे ए व्यवहारनय छे. अने व्यवहारनयने, माटे तेमां धर्म नथी धर्म तो सद् नयथीज छे माटे चारित्र तो एक आत्मानुंज नाम छे अने आत्मानेज चारित्र छे.

उक्तं च.

आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथ यवा यते,
यत्तदात्मक एवैष शरीरमधितिष्ठति ॥१॥

आत्मानमात्मनावेत्ति मोहत्यागोपदात्मनि ।
तदेव तस्य चारित्रं तज् ज्ञानं तच्च दर्शनम्॥१॥
आत्मा ज्ञान भवं दुःख मात्मज्ञानेन हन्यते ।
तपसाप्यात्माविज्ञानहा नशक्तुन शक्यते ॥२॥
तं अन्नाणी कम्मंयमात्मै चयि दुव सरीरी
कर्म्म योगत ।
ध्यानाग्नी दग्ध कर्म्मनु शुद्धात्मास्या निरंजना॥४॥

हवे ए चार गाथानो अर्थ लखीए छीए. हवे चारित्र कहेतां जे साधु मुनिराजनो जे जीवात्मा तेनेज चारित्र कहीये छीए. जे आत्मा एव कहेतां आत्मा ए प्रकारे एटले आत्मा एज दर्शन, ज्ञान, चारित्र कहीए छीए. एटले ज्ञान दर्शन चारित्र ते कंइ आत्माथकी जुदा नथी एटले आत्म ज्ञान दर्शनने चारित्र तद्वत् एक रूपज छे. ते साधु मुनिराजनुं जे शरीर छे ते अचिह्नित छे, एटले शरीरमां रह्या छे पण आत्मा तो ज्ञान दर्शन चारित्रमां एकरूप थशे अने जे वारे जुदु नहि माने ते वारे मोक्षनो मार्ग ते मुनि साधशे. पण ज्ञान दर्शन चा-

त्रि आत्माथकी अळगु रालीने जे मोक्षनुं साधन करवा चाहना करे छे ते अज्ञान छे, अने कोइ दहाडो मोक्षनु साधन थशे नहीं. एवातमां कंइ शंका राखवी नही. हवे जे ज्ञान दर्शन चारित्र अने आत्मा ए चारे अभेद रुपज छे ते देखाडे छ.

पहेला श्लोकनो अर्थ—आत्मज्ञान महात्मानां कहेतां जे जाण जीव एटले जेणे पोताना आत्मानु स्वरुप पोते पोताना मांहलीकोरे जाण्युं छ पण ते क्यारे जाणे जे वारे मोहनीय कर्मनो त्याग थाय एटले जेटलो जेटलो मोहनो त्याग थाय ते नवुं जाणपणु थाय, समकीत पाम्या पछी मोहनो त्याग थाय, जेटलो मोहनो त्याग तेटलुं स्वरुपनुं जाणपणुं थाय तेनेज चारित्र कहीए. त्यां मोहत्यागना बे भेद छे १ एक बाह्य थकी मोहत्याग जे शरीर स्त्री पुत्र कुटुंब परिवार धन धान्यादि उपर थकी वैराग्य आवे मोह छांडे, पण केवळ ज्ञान विनाना एवा जीव संसारमां घणा प्रवर्ते छे. ते थकी कंइ तेना आत्मानुं कल्याण थाय नही,

अने जे जीवने पोताना आत्मस्वरूपनुं जाणपणुं थयुं छे, ज्ञान दर्शन चारित्र एक रूपे जाणे छे ते धणीने मोह तथा रागादिक परिणति आ लोक परलोक शुभ अशुभ पदार्थ उपरथी विरक्त पणुं होय एम तत्त्वनो जे जाण थयो तेनी पासे चारित्र होय. शा माटे ? जे परवस्तु उपरथी रागभाव गयो. अने आत्म स्वरूप सहजानंद ज्ञानरूप ते उपर ए साची श्रद्धा वेठी छे जे मारो आत्मा केवळ तत्त्व छे. एम जाणे अने मनादिक जे पदार्थ ते सर्व मारा थकी भिन्न जुदा छे. एम जाणी मननो व्यापार बाहिर पसरताने रोके, अने पोताना आत्म स्वभावने विषे रमे. तद्वत कहेतां तेहीज जाणपणुं आत्मानु तेनेज चारित्र कहीए, अने ते सर्व संवरत्व जाणवुं. अने तेहीज जे जाणपणुं तेनेज ज्ञान कहीए अने ते ज्ञानवडे जे वस्तुने जाणी ते साची वस्तु उपर जे श्रद्धा थइ ते दर्शन कहेतां आत्म स्वरूपनुं जाणवुं तेनेज दर्शन कहीए. शामाटे जे सम्यक् सद्दहणानुं नाम छे. ए-

टला माटे सद्दहणापूर्वक सम्यक्त्वदर्शन कहिए एटले ए बीजा श्लोकनो अर्थ कह्यो.

हवे त्रीजा श्लोकनो अर्थ कहे छे. आत्मा ज्ञान कहेतां जे आत्मानु अज्ञानपणु एटले आत्मस्वरुपनो अजाण थको जे जे कष्टादिक करे अथवा धर्म धर्म पोकारे ते थकी आत्माने दुःखनी वृद्धि करे. पण ए थकी एनो आत्मा सुखी न थाय.

॥ उक्तंच ॥

उत्तमा आत्मचिंता च मोहचिंता च मध्यमा ॥
अधमा कामचिंता च परचिन्ताऽधमाधमा ॥ १ ॥

एटले शुं कह्युं जे उत्तम जीव केनु नाम छे जे आत्मस्वरुपनो विचार करी परस्वरुप थकी आत्माने भिन्न करे स्वस्वरुपमां रमण करे तेने उत्तम कह्या छे, पण ते थकी उपरांठा आत्मस्वरुपना अजाण मोहदशामां रच्या पच्या तेने धर्म जे माने तेने अज्ञान कहिए, शामाटे?–जे आत्मस्वरुप जाण्या विना जे व्रत नियम परजीवनी दया ते जीवोने विषे रमणता तेवा जीवोने अ-

ज्ञान कहिए. ते जीव घणा काळ सुधी संसारमां रखमशे अने ते जीवनुं ए जवमां रह्यां कोइ दीन कल्याण थवानु नथी. एवा जीवने शास्त्रकारे तो अधममां अधम कह्या छे माटे ए उपरना श्लोक थकी विचारी लेजो. ते कारण माटे आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं करवुं अने आत्मज्ञानने विषेज रमणता करवी, जेम पोतानो आत्मा स्थिर वेसे अने बाह्य अन्यंतरमां त्याग थाय तेज ज्ञानवमे करीने सर्व कुःखनो नाश थायछे, माटे एवुं समजीने राग द्वेष मोह थकी उपशमवु, एटले सर्वे कुःखनो नाश थाय. जेम रविने आव्ये प्रजातकाळ दीसे ने अंधारानो नाश थाय अने उद्योत प्रगट थाय, तेम आत्मज्ञानने प्रगटवे शुजाशुज कर्मनो नाश थाय ने कुःख मटे, अने संपूर्ण आत्मिक सुखने जोगवे. थोमा काळमां ते जीव मुक्तिना सुखने जोगवे. तथा तपस्या एटले तपस्या कहेतां आत्मविज्ञान रहित ते कर्मनो नाश न करे. अहीयां कोइ जीव शंका करे अने एवुं कहे जे. तपस्या थकी पण नीकाचित कर्म जाय. अने तमे तो अहीयां कंइ कहेता नथी अने

धर्म करतो थको क्षण आध केहेतां जे आंख्य मीचीने उघाडीए तेने क्षण कहीए तेनुं अरध तेने अर्धी क्षण कहीए ए अर्धी क्षणज एवुं एसमजावीक धर्मने विषे स्वस्वनावने आलंबीने तेटली वखतमां जेटलां कर्म भणिहंति केहेतां हणे एटले अर्धी क्षण समजावे ज्ञानमां थीर भावे रहेतां टुटे एटलां कर्म बीजा थकीन टुटे ते कहीए छीए एटले जे कोइ जीव समजाव विना राग द्वेष परीणतिनुं उगाण जाणतो नथी स्थीर स्वजाव थयो नथी अने तीव्र आकरा तप करतो थको भवकोडिहिं केहेतां कोधनकोडी भव सुधी एटले बाह्य तपनो विचार कहुंतुं श्री रीखवदेवने वारे वरशी तप हतो, तथा श्री महावीरने सासने छमासी तप हतो वचला बावीश तीर्थंकरने वारे आठमासी तप हतो ते मध्ये श्री रीखवदेवस्वामीना सासननो भाव लक्ष्ने कहुंतुं जे कोइ आठ वर्षनी उमर थए थके व्यवहार धर्म पाम्यो होय तेनुं कोड पूर्वनुं आउखु छे त्यांसुधी वरस दहामा सुधी उपवास चोवीआहारा करे अने एक दहाडो पारणुं करे, एवी रीते क्रोड पूर्वनुं आउखुं पु-

र्ण करे, एवा कोटीनकोटी भव सुधी एवो तप करे अथवा कायक्लेशादीक अनेक रीतना तप करे तोपण कर्म खपे नहि एटले अर्धी क्षणे ज्ञानीनां जेटलां कर्म खपे तेटलां ए तप थकी न खपे. शा कारण माटे जे ए तप छे ते कर्मबंध हेतु छे पण मुक्ति हेतु नथी जेम श्री बाहुबलस्वामी सम्यग् गुण सहीत अथवा सम्यग्ज्ञान सहीत अथवा व्यवहार चारीत्र सहीत तथा छठ्ठा सातमा गुणठाणाना निश्चय चारीत्र सहीत तथा काउस्सगादीक अभ्यंतर तप सहीत व्यवहार थकी अणसणादीक वरशी तप सहीत हता, तोपण कर्म खप्यां नहि. शा माटे जे यथार्थ समभाव ना आव्यो रागद्वेष परंणतिनो उठाओ रह्यो, तेथी करीने कर्म खप्यां नहि जेवारे रागद्वेष परीणतीनुं उठाण गयुं, अने समभाव स्वभावीक आत्मस्वरुपमां गुणपर्यायनो भीन्न भीन्न विचार थयो तेवारे पछी एकत्वभाव थयो. गुणपर्यायने द्रव्य एक रुपे ध्याया ते अवसरे कर्म क्षय थइने केवलज्ञान उपन्युं. तो जुओ के वर्ष दीवस सुधी भुख तृषादीक बावीसे परीसह सह्या पण कर्म खप्यां नहि

अने समजावे अर्थी क्षणे कर्म क्षय कर्यां तो एतो समकीतादि ज्ञान दर्शन चारित्र हतुं आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं गुणठाणानी परिणति प्रमाणे हतुं, तोपण कर्म क्षय थयां नहिं, अने आज तो समकीत रहीत जीवो प्रायः दीसेछे ते जीवनां कर्म शायकी खपशे माटे तप कष्टादिकथकी कर्म खपे नहि. अही कोइ केहेशे जे ए श्लोकमां अडधीक्षणे जे ज्ञानी कर्म खपावे एटलां क्रोमो भवे पण तपवाळो कर्म न खपावे एवुं कह्युं तो अही एवो न्याय माख्म पमे छे जे थोमां पण कर्म खपावे अने तमो कहो छो कर्म न खपे तेनुं कारण शुं छे? तेनो उत्तर जे कर्म खपवानां थानक पहेले गुणठाणेथीज छे पण जे कर्म उदय आवे ते भोगवीने खेरवे, पण ते ज्ञान गुणठाणां सात छे ते कर्म उदय आव्यां वा अणआव्यां सर्वेनो नाश करे पण नवुं कर्म न बांधे, अने पहेला जे खेरवे ते नवां कर्म बांधता जाय माटे एने कर्म खेरव्यां न कहेवाय, शा माटे जे नवां बांधे तेने शुं कहेवुं? जेम नदीनु पाणी वह्युं जाय छे तेम नवुं आवे छे पण कंइ नदी खाली थइ नहि तेम ए

जीव कंइ कर्म रहीत थयो नहिं, अने ज्ञान गुणठाणावाळा तद्यावना पाणीने दृष्टान्ते छे जे पाणी एमांथी गयुं ते ओतुंज थयुं अंते सरोवर सुकाइ जाय तेम ज्ञान गुणठाणावाळो जीव कर्म क्षय करे अने नवां कर्म न बांधे अने सर्व कर्म रहीत थइने मोक्षे जाय एम समजवुं. अही कोइ कहेशे के तीर्थंकरादिके तप कर्यु ते ज्ञानगुणठाणां नहि? तेनो उत्तर, प्रथम तो ज्ञान गुणठाणानां नाम कहूं छुं अवीरतीसम्यक्दृष्टि १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिबादर ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथाख्यात ५ सयोगीकेवली ६ अयोगीकेवली ७ ए सात गुणठाणा मध्ये छठ्ठं जे सयोगकेवली छे ते पण कर्म खरवे नहि एटले ए गुणठाणे कर्म खरववानी सामर्थ्य नथी अने ए साते गुणठाणामां व्रतनियम तप इत्यादि कंइ छे नहि. अही कोइ कहेशे जे उपशांतमोहगुणठाणुं ते तमे ज्ञानमां केम लीधुं नहि? त्यां पांचमुं छठ्ठुं सातमुं गुणठाणुं ने पण समकीत पाम्या पछीज होय ते ज्ञान गुणठाणांज छे ते तमे ज्ञानमा केम गवेस्यां नहि? तेनो उत्तर, जे पांचमुं छठ्ठुं तथा सा-

तमुं गुणठाणु ए नव आदी ने एटले नव पुरो था-
य त्यां सुधीज रहे. पण आगल नव लेगुं जाय
नहि अने ए गुणठाणामां जेटली कर्मनी प्रकृति-
नो क्षयोपशम थाय एटली ए प्रकृति आवते
नवे नाश थाय, तथा आ नवने विशेष ए व्यव-
हारचारित्रना जावमां क्षणक्षण जन्नति करे,
अने क्षणक्षणमां उपशम माटे ए गुणठाणां
ज्ञानजावमां शीरीने गणीए ? केमके ज्ञानजाव-
मां जे कर्मनी प्रकृतिओनो क्षयोपशम थयो अ-
थवा क्षय थयो, ते प्रकृतिओ फरी पाछी आवती
नथी, शामाटे जे क्षय उपशमनी प्रकृतिओ अंने
क्षायकजावमां क्षय पामे छे एटले आठमे गुण-
ठाणेथी ते दसमा गुणठाणा सुधी क्षयोपशम
जावनी केटली प्रकृतिओ छे ते गुणठाणानी वृद्धि
थये थके तेते प्रकृतिओनो क्षय करता आवे ते
वारे बारमे क्षायकजावनुं चारित्र थाय अने बार-
माने अंते क्षायकजावनु ज्ञान तथा दर्शन तथा
वीर्य प्रगट थाय, माटे एज ज्ञानगुणठाणांज कह्यां.
गयां कर्म पाछां न आवे. अहीं कोइ तर्क करशे
जे समकीत गुणठाणुं पण तमे ज्ञानमां गण्युं छे

ते गुणठाणाना गएलां कर्म तो पाछां आवे छे तो एने ज्ञानमां शायकी गण्युं? तेनो उत्तर, जे तमने समजवामां कसर रही शामाटे जे समकीतनुं प्राप्त थवुं तेतो अनादिमिथ्यात्व ज्यारे समकीत थाय छे ते अनादिमिथ्यात हवे पाछु आववानुं नथी अही कोइ कहेशे जे मिथ्यात्व तो पाछुं आवे छे तेने कहीए के तमो मिथ्यात्वना भेद समज्या नथी, केमके मिथ्यात्वना तो अनेक भेद छे, केमके जीव अनादि प्रमुख अनेक भेदे छे ते अहिआं लखता नथी. केमके ग्रंथ बोहोळो थइ जाय परंतु मिथ्यात्वना चार भेद छे. ते मध्ये अनादिअनंतमिथ्यात्व अभव्यने छे, अने अनादिसांतमिथ्यात्व भव्यने छे, तथा सादि सांत मिथ्यात्व समकीतीने छे, शामाटे के समकीत पामीने वमे तेवारे मिथ्यात्व आवे पण ते सादिसांत भांगे होय अने सादिअनंत भांगो मिथ्यात्वमां लागे नहि, माटे अनादि मिथ्यात्व गयुं ते पाछु नज आवे ते माटे ए समकीतगुणठाणु ज्ञानमां गण्युं छे, अने पांचमु छठुं तथा सातमुं गुणठाणु एतो समकीतना मांहेला भेदज छे ए

ते गुणठाणाना गएलां कर्म तो पाठां आवे ले तो एने ज्ञानमां शायकी गण्युं? तेनो उत्तर, जे तमने समजवामां कसर रही शामाटे जे समकीतनुं प्राप्त थवुं तेतो अनादिमिथ्यात्व ज्यारे समकीत थाय ले ते अनादिमिथ्यात हवे पाछु आववानुं नथी अही कोइ कहेशे जे मिथ्यात्व तो पाछुं आवे ले तेने कहीए के तमो मिथ्यात्वना नेद समज्या नथी, केमके मिथ्यात्वना तो अनेक नेद ले, केमके जीव अनादि प्रमुख अनेक नेदे ले ते अहियां लखता नथी. केमके ग्रंथ वोहोळो थइ जाय परंतु मिथ्यात्वना चार नेद ले. ते मध्ये अनादिअनंतमिथ्यात्व अजव्यने ले, अने अनादिसांतमिथ्यात्व जव्यने ले, तथा सादि सांत मिथ्यात्व समकीतीने ले, शामाटे के समकीत पामीने वमे तेवारे मिथ्यात्व आवे पण ते सादिसांत नांगे होय अने सादिअनंत नांगो मिथ्यात्वमां लागे नहि, माटे अनादि मिथ्यात्व गयुं ते पाछु नज आवे ते माटे ए समकीतगुणठाणु ज्ञानमां गण्युं ले, अने पांचमु छठ्ठुं तथा सातमुं गुणठाणु एतो समकीतना मांहेला नेदज ले ए

[illegible] आदि घणा ग्रन्थो कह्या [illegible] गुणस्थानकक्रमारोह ग्र- [illegible]

॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥ २ ॥

[illegible] समभावरूप कहेता [illegible] समपरिणाम [illegible] कहेतां पो- [illegible] कहेता [illegible] आत्मधर्मरोचि [illegible] [illegible] समभावीक [illegible] जन्मा [illegible] [illegible] पण [illegible] समभाव [illegible] परंतु [illegible] समभाव विना रागद्वेष परिणतिनुं [illegible] नथी स्थिर स्वभाव थयो नथी [illegible] करनो थको [illegible]

तोपण कर्म खप्यां नहि, शामाटे जे यथार्थ सम्भावना थाव्यो. रागद्वेष परिणतिनो उगाव्यो खो तेथी करीने कर्म खप्यां नहि जे वारे रागद्वेषपरिणतिनुं उगाण गयुं अने समभाव स्वजातिक आत्मस्वरूपमां गुणपर्यायनो भिन्नभिन्न विचार ते वारे पछी एकत्वभाव थयो. गुणपर्यायने द्रव्य एकरूपे ध्याया ते अवसरे कर्मक्षय थइ केवलज्ञान उपन्युं तो जुओ के वरसदीवस सुधी क्षुधादिक बावीस परिसह सह्या पण कर्म खप्यां नहि. अने समभावे अडधी क्षणे कर्म खपाव्यां तो एतो समकीतादि ज्ञान दर्शन चारित्र हतुं. आत्मस्वरूपनुं जाणपणुं गुण ठाणानी परिणति प्रमाणे हतुं तोपण कर्मक्षय गयां नहि अने था तो समकीतरहित जीवो प्रायः दीसे छे, ते जीवनां कर्म शा थकी खपशे. माटे तपकष्टादिक थकी कर्म खपे नहि. अहीं कोइ केहेशे जे ए श्लोकमां अडधी क्षणे जे ज्ञानी कर्म खपावे एटला करोडो भवे पण तपथावो कर्म न खपावे एवुं कह्युं तो अहीं एवो न्याय मालुम पडेछे जे थोडां पण कर्म खपावे, अने तमो कहोछो कर्म न खपे

ध्यानाग्नि कहेतां जे चिदानंदस्वरूप वस्तु स्वभावे मिळतो साधर्मी एवो जे पोतानो धर्म छे तेनुं ध्यान करे ते वारे ध्यानरूप अग्नि प्रगट थाय द्रव्य कर्मनुं कहेतां ए कर्मनो नाश करीने जे स्वरूप पोतानुं वस्तु स्वभाव हतुं ते प्रगट थाय ते वारे शुद्धात्मामां ते अंजन कहेतां शुद्ध स्फटीक रतन जेवो रागद्वेष रूप मळयकी रहित निरंजन कहेतां कर्म रूपअंजन रहित सिद्ध परमात्मा पोते थइने वसे एटले ए चोथा काव्यनो अर्थ कह्यो. ते कारण माटे लौकिक गुरु तेने तजीने लोकोत्तरगुरु जे आत्मानो शुद्ध मार्गनो देखाडनार तेने तजो तथका स्वभावे मुक्ति थाशे एवी रीते ज्ञानस्वरूपमां चिंतन राखवुं एटले चित्तमांथी अज्ञाननी वासना वमज अने निश्चय चारित्र ज्ञाननुंज नाम छे. माटे ए चारित्र तो सदाए पोतानी पासेज छे ए वात पूर्व श्लोकमां देखाड्यो छे, माटे व्यवहार चारित्र थकी ए हीन छे तोपण एने दूषण छे नहि ए चारमी गाथानो संबंध समाप्त थयो.

आत्मस्वरूपनी ओलखाण करवी ते ज्ञान,ने पर भाव थकी भिन्न रहेवुं ते चारीत्र अने ए भावनी श्रद्धा करवी ते समकीत छे माटे ए त्रणे भाव अन्योअन्य एकरूपज छे, पण प्रथम ज्ञान थए सर्वे गुण प्रगट थाय एटले अहिंयां प्रथम समकीतनुंज आववुं त्यांज ज्ञान कहेवुं ने ज्यां ज्ञान त्यां समकीत होय एटले ज्ञान कोइ बारेथी आवतुं नथी ए तो आत्मस्वभाव थकीज प्रगट थाय माटे ज्ञान थकीज प्रगट्युं. बाह्य थकीज शास्त्रादीकनुं वाचवुं सांभळवुं भणवुं ते निमित्त ज्ञान, एक विद्यारुप छे शामाटे के निमित्तमां जो ग्रहण नहि करे अने आत्मअभ्यास न करे तो ए कंइ नीत्तिमां छे नहि, ए तो एक विद्या रुपज छे एम समजवुं. हवे जे ज्ञानादीक गुणनी प्राप्ति ते व्यवहारनयने मते चउद गुणठाणां कह्यां छे, ते मध्ये बे गुणठाणांने विषेज छे अने त्रण गुणठाणां ए वृद्धिनां कारण छे अने एक गुणठाणुं ते ऋद्धिने भोगववावाळुं छे अने एक गुणठाणुं ते अविनाशी सुखनुं दातार छे ते गुण

[illegible] क्रियाना स्वरूपे जायछे ते वात मिथ्या [illegible] गाथामां क्रियानी गति हती ते [illegible] ज्ञान यानवाळो जाय ते आत्म- [illegible] आत्मउपयोग रहीत [illegible] मिथ्यात्वादिक आत्म [illegible] जतो जाय छे, अने ते [illegible] आत्मा आत्मा पोकारे [illegible] आत्म[illegible] पाम्या नथी एवा [illegible] ज्ञान [illegible] यानी देखाय छे ए सर्व [illegible] अन्य मतिमां केइक [illegible] स्वमतिने विषे तो [illegible] नोगी छे अने धमाधम [illegible] नांखे नांखे कारणे [illegible] ज्ञान ध्यानमां तो कोइ जवल्लो [illegible] तथा आत्मा देखीक [illegible] तो कांइक संख्याने [illegible] जगतमां [illegible] मनुष्यज [illegible] तथा [illegible] देखाडवा [illegible] मिथ्यात्वा छे अने ते देखनां

नाम [illegible] गणनाणां पूर्वे
[illegible] ग्रने चतुर्दमे
[illegible] हर्षने म्यम्-
[illegible] पग्मात्म-
[illegible] म्यास कग्वो
[illegible] मुक्ति होय
[illegible] ज्ञानने ए गयो
[illegible]

[illegible] साधक ॥
[illegible] ॥१॥
[illegible] प्रमुखां॥
[illegible] आगम ॥२॥

[illegible] मां-
[illegible] ?
मुमु [illegible] ज्ञान तथा
[illegible] परन्तु
[illegible] ज्ञान [illegible] पुनर्गो
ज्ञान [illegible] साधक [illegible]

साधन एटले ज्ञाननुंज साधन करवुं एटले साधन तेज सद्ते मुक्ति कहेतां एज मुक्तिनुं साधन छे ने एज मुक्ति मथाइ रही. माटे एवा ज्ञाननुं साधन सदा करवुं. तथा तेवा ज्ञाननुं यथार्थ साधन न थाय तोपण ए ज्ञान स्वर्गादि भोगन सुख एटले जो सर्वार्थसिद्धना सुख आदे देइने जे सुखनी प्राप्ति थाय अने ते सब सुखे सुखे काढे अने पछी मोक्षनुं सुख पण पामे एवो ए ज्ञानने जीव संसारी छे ते जीवोने ज्ञाननोज अभ्यास करवो आ माटे जे ज्ञान केवुं छे? दृष्टांतसंग कहेतां साक्षात् कल्पवृक्षरूप छे. एटले जेम कल्पवृक्ष मनोवांछित पुरे तेम ए ज्ञान पण मनोवांछित पुरे, माटे ज्ञाननो अभ्यास करवो, अने जो ज्ञाननो अभ्यास नहि थाय अने आत्मस्वरूपनुं जाणवुं नहि थाय तो तेनी पासे समकित पण नथी. आ माटे जे आत्मस्वरूपनी श्रद्धा एने तेनी नहि, तेथी एनी पासे समकित नथी, केमके समकित एवुं नाम तो श्रद्धानुंज छे अने ज्यारे श्रद्धा न होय तो ए जीव मुक्ति

क्यारे पामशे ? एतो ज्यारे सम्यग्ज्ञान थशे त्यारे मुक्ति प्राप्त थशे. ए कारण माटे हे भव्य जीवो आत्मस्वरुपनो अनुभव अने जाणपणुं एनुंज नाम ज्ञान छे. माटे तेनोज अभ्यास करजो तो तेथीज तमारी मुक्ति थशे, एटले ए तेरमी गाथानो अर्थ कह्यो.

क्रिया तो मिथ्यात्वी करेछे । तेम अभवि जाणोरे ॥
असंजति कहीने बोलाव्या । पंचमे अंगे चित्त आणोरे ॥ १४ ॥

हवे ए चौदमी गाथानो अर्थ कहीए छीए जे क्रिया कहेतां जे साधु श्रावकनी करणी एटले ते व्रत, नियम, तप, आवश्यकादि क्रिया ए सर्वे मिथ्यादृष्टि जीवो पण करे, तथा समकिती जीवो पण करे, तथा अभव्य जीव पण करे. माटे ए कर्तव्यमां कांइपण धर्म नथी. ए तो एक कल्पनो व्यवहार बंधायो छे ते व्यवहार प्रमाणे चाले. जेम कोइ एक नातिना व्यवहार अथवा कोइक गामनी रीत प्रमाणे व्यवहार कोइ जीवने रुचे छे, कोइ जीवने नथी रुचतो

पण ते व्यवहार प्रमाणे चालवुं पडे. ते मध्ये जे जीवने रुचे छे ते जीव कंइ सर्व परमार्थने जाणता नथी पण तेमां रच्योपच्यो रहे छे ए पण एक लोकरूढी प्रमाणे मार्ग छे. तेमज अहियां मिथ्यात्वी आदि चार प्रकारना जीवोनुं कर्तव्य एक रीतनुंज होय ते मध्ये कोइ रुचियी कोइ अरुचियी ते मध्येथी पण कोइ समजीने कोइ वणसमजाए सर्व कुळाचार उपर चाले छे ते मध्ये केटलाएक नवा नवा मार्ग द्रष्टिगोचरमां सारा कहेवाय ते मार्गने लोक वळगी पड्युं छे ते तो मार्ग अमत्यज छे, तथा आ क्षेत्रने विषे पूजा जिनमंदिरे नणावे तेनी पाछळ जमवानुं जरुर जोइए. ए कोइ देशप्रवर्तने पण चाल नथी. तथा कोइ शास्त्रे पण ए वात नथी तथा सैकमो घेरथी नील मागीमागीने एम पूजाजमण उर्दु करवुं अने कहेवुं जे जिनशासननी शोभा छे ए शास्त्र रीते अथवा देशचाल जोतां कोइ रीतथी धर्मनो मार्ग नथी तथा पुन्यनो पण मार्ग नथी. जे लोको ए काम आगेवान थइने चलवे

छे तेनी आजिविका छे अने जे जमवा भेगा थाय छे तेने पेट भरवानो स्वार्थ छे अने शास्त्रे तो एवुं कह्युं छे के श्रावक अजाची होय कोइ काळे श्रावक याचना करे नहि. अने आ काळे अहियांना लोकोने जोइए छीए तो वरसदिवसने विषे एक दिवस पण एवो जणातो नथी जे आज तो भीख नहि मागे एवो तो अवसर लाधतो नथी तथा कोइनो काळ आवी पहोंच्यो होय तो तेना घरनां छोकरां तथा सगांवहालां तेने मालम न पडवा देतां तेना घरनुं सुंथियुं तथा साथरणी सुधां लइ जाय छे अने पाछळथी इनकार पण जाय छे ए सर्व देराने ओठे कमाइ खाय छे अने जे पेला पेटभरा कह्या ते लोको तेनी प्रशंसा करता फरे छे पण जिनशासननी रीत ने शास्त्र जोतां तो एमां मिथ्यात छे अने अनंतानुबंधीनी चोकडी साबित भासन थाय छे. शा माटे शास्त्र तो मानवुं नथी तथा परमात्मानी आज्ञा पण मानवी नथी पोतानुं दील चाहे तेम तोफान करता फरे छे ते

॥ उक्तंच ॥

सेकिंतेकिरियावाइयाविजन्नति अहियवादि आहियपन्ने आहियदिठि सम्मावादी नीयावादी संतिपरलोगवादि अत्थिइहलोए अत्थिपरलोगे अत्थिमाता अत्थिपिता अत्थिअरिहंता अत्थिचक्क-वट्टी अत्थिबलदेवा अत्थिवासुदेवा, अत्थिसुकडदु-कडाणं, फलवित्ती विशेषसुचिणाकम्मा सुचि-णाफलाभवंतिदुचिणा दुम्माःदुचिणफलाभवंति, सफले कल्लाणे पावए पिचायति जीवा अत्थीनि-रइया, अत्थीदेवा, अत्थीसीद्धीसिएवंवादि एवंपन्ने एवंदिठ्ठा छंदए गमनिनीविठे आविलवंति सेभ-वंतिमहि जावउत्तरगामिएनेरइए ॥

अर्थः—एहवे ए क्रियावादी आत्मा बोल सर्व सद्दहे अने क्रियामां राग रहे ते मरीने न-रकने विषे उपजे. हवे उपर लखेला सूत्रपाठनो अर्थ कहुं छुं. सेकंतं कहेतां कोण ते क्रियावादी ए प्रश्न थए थके भगवान हवे कहे छे जे क्रिया वादी गुरु ते क्रियाने आस्तीकपणे माने छे अने क्रियामां मग्न रहे छे अने क्रियानोज उपदेश

करे छे. एवं नवप्रकारे तत्त्व कहेता एवुंज स्व-
रूप होय अने अष्ट पदादि कहेता अक्रियवादी
ने अहितकारी छे अर्द्ध तिम कहेतां अहीतपरी-
णामी ते रूप आदरवाजोग्य आहपदिही कहेतां
सम्यकत्व ने दर्शन ने दृष्टि कहीए तथा म-
मावादी कहेतां समरू नजर कहे छे. नीआवा-
दी कहेतां ने ने मोक्षनेज माने छे पुनरागा-
नो ने मनना प्रकार माने छे तेम परलोगा वांदे
परत्र परलोकने माने छे आत्माकने माने छे पर-
लोकने आस्तीपणे माने छे मातान आस्तीपणे
माने छे पिताने आस्तीपणे माने छे अरिहंतने
आस्तीपणे माने छे चक्रवर्त्तीने आस्तीपणे माने
छे. बळदेवने आस्तीपणे माने छे वासुदेवने आ-
स्तीपणे माने छे सुकृत जे सामायकादिक तेने
आस्तीपणे माने छे दुकृत जे पाप कर्मने माने छे
एना फळनी वस्ती विशेष करी जाणे छे तेमां वि-
संवाद नथी पवीत्र कर्म तप संजमादीक तेनुं फ-
ळ शुभ कर्मज माने छे वळी पाप कर्मनुं जे फळ
ते माठां कर्म रूपज माने छे जेवुं जेवुं कृत्य तेवुं
तेवुं फळ माने छे कल्याण ते धर्मनुं फळ ते सत

जाणे छे पावीश्र केहेतां पापनुं फळ दुर्गती एट-
ले नरकादीक पचाथंती केहेतां तेने विशे पचे
छे एटले नरकने विषे दूख भोगवे छे जीवनुं श्रा-
स्तीपणुं जाणेछे नरकने श्रास्तीपणे जाणे छे देव-
ने श्रास्तीपणे जाणेछे सिद्धने श्रास्तीपणे जाणे
छे सएववादी केहेतां एवो जेए क्रियावादी ते पु-
र्वोक्त जे कह्या ए बोल सर्वने सत् करी माने छे
श्रने मुख थकी पण बोल्ने केहेछे एवुं ए प्ररुपे छे
एवी छे द्रष्टी जेनी एवो थको पण छंद केहेतां
जे पोतानी खुशीए एटले पोताना श्रन्निप्राये क-
रीने क्रियाने विशे छे राग जेने एवी मतीए करी
नीवीट केहेतां जेनुं चीत छे तेवा जे पुरषो सेव-
ती मही छे एटले मोटी इछा वंछा रहीत छे. श्र-
हियां एटली क्रियाने विशे तथा कोइक जीवने
परलोके रीद्धी पामवादीकनी इछा इत्यादीक मो-
टी इछा होय ते माटे ते जीव ए क्रियावादीज क-
हीए ते जीव मरीने जाव उतरागामीने रह्या ए-
केहेतां जावत ए जीव मरीने उत्तर नरकने विषे
उपजे. शिष्य वाक्यः हे स्वामी उत्तर नरकमां उ-
पजे त्यारे दक्षण नरकमां कोण उपजे एम श्र-

शिष्यः नरकनो भेद पाडवानुं शुं काम छे? गुरुवाक्य. हे देवानुप्रिय दक्षिण नरकने विषे पुर्वे जे आज्ञा रहित जवाडी कह्या ते उपजे ते अभावो आ सुत्रमांहे पण अहीआं लखाव्यो नथी पण आज्ञा रहित जे जीवो ते पोताने छंदे प्रवर्ते छे ते धर्म धर्म पोकारे छे ते जीव दक्षिण नरकने विषे उपजे अने जे जीव आज्ञा माने छे अने क्रीया उपरंत करता रहे ते जीव उत्तर नरकने विषे उपजे एवो आ सुत्रनो अभिप्राय छे तथा शो फरक छे ते सांभळ जे दक्षिण नरक अने उत्तर नरक बेनो कहेनामां सिद्धांतनो रहस्य जोतां केटलो सामान्य विशेष हशे बीजो फरक एटले जे ए आज्ञा रहित प्रवर्ते ते जीवो कृष्ण पक्षी कह्या छे अने दुर्लभ बोधी कह्या छे अने अनंता काळ संसारमां रखडशे तथा आज्ञा सहित जे जीव क्रीयावादी कह्या ते जीव शुक्लपक्षी छे अने सुलभबोधी कह्यां छे अने थोडो काळज संसार्युं थाशे एवो आ सिद्धांतनो रहस्य छे माटे ए शिष्यानो पक्ष तमने ओळखाव्यो हवे जे असंजती कहीने बोलाव्या कहेतां जे म-

मकीतादिक गुण नथी पाम्या अथवा पामीने वम्या छे अथवा अनवि छे ए सर्वेने जैनमार्गनी आस्था छे एटले जेने पुर्वे कहेला सिद्धांतना बोल ते सत्य करीने जाणे छे पण आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं नथी तेने अज्ञानीज कहीए अने ते जीव जे नवग्रैवेक सुधी जाय एवुं पांचमुं अंग केहेतां भगवतीजीमां कह्युं छे.

॥ उक्तंच ॥

भगवती असंजय भवियदव्व देवाणजहन्नेणं भवणवासीसुं उक्कोसेणं उवरिम गविज्जेसु ॥ एटले ए अधावाने विशे असंजतीने नवग्रैवेके उत्कष्ट जावानुं कह्युं ते जीव समकीतादिक गुण रहित छे. पण जैनमतने विषे दिक्षा अंगिकार करी छे अने वेहेवार ज्ञान ध्याननें विषे रच्या पच्या होय एवो जीव कोइक जवह्यो जाय अहियां कोइ केहेशे जे क्रिया कष्टादिवालो जाय ते वात तो सर्वया मिथ्या छे शामाटे जे कीया कष्टवालानी गती जघन्य बीजु देवलोकने उत्कृष्टु आठमुं देवलोक तो परीहार वीशुद्ध चा-

रित्र वाळाने श्रीपन्नवणांजीमां कयुं छे हवे ते थकी अधिक सामायक चारित्र तथा छेदोपस्थापन चारित्रमां तो कष्ट अधिक छे नहि के ते घणी कंइ अधिक जाए तथा सुक्ष्म संपराय चारित्रवाळो तो अनुत्तर विमान विना जातो नथी एवुं प्राये कहीए छइए. पण ए गुणठाणामां मरण नथी, पण अगिआरमा गुणठाणानी अपेक्षाए बोल्या छइए तथा यथाख्यात चारित्र वाळो तो मोक्षेज जाय माटे विचारी जुवो के ज्ञान ध्यान विना आत्मा उपर कोण जाय? माटे ज्ञान ध्यानवाळोज जाय कदापि तमे केहेशो जे ज्ञान ध्यान वाळाने तमो असंजती केम कोहो छो तेनुं कारण अमे कंइ ज्ञान ध्यान निश्चेथी कीधुं नथी अने ए वेहेवार ज्ञान ध्यान तेनुं कंइक जो मननी स्थीरता होय तो फळ पामे अगर जथारथ मन स्थीर न रेहेतो ए ज्ञान ध्याननुं कांइ पण फळ छे नहि.

॥ उक्तंचः ॥

ज्ञाने ध्याने दाने माने मौने सदोद्योतो भवतु॥
यदिनिर्मलंन चीत्तं तदहुनं भस्मनि समग्रं ॥१॥

के जेनुं चित्त केहेतां ज्ञान आत्म स्वभा वमां स्थीर नथी थयुं तेनुं ज्ञान ध्यान करीने प्र स थइ जाय छे एवो ए श्लोकमां अर्थ छे मो ज्ञान ध्यान विनातो एटले जाय नहि शामाटे पुर्वे भगवतीनो अलावो लखाव्यो ते घणो छे ण ते मध्ये सर्व जीव आश्री देवगतिनो भाव हो छे ते जोतां असंजती केहेतां जे गति अव ती हरे पण ते भाव अहिंआं नथी शामाटे श्रावकने तो बारमा देवलोक उपर बताव्युं न तथा सम्यक्त्वादिक पामेला जे त्रीजंच तेने ठमा देवलोक उपरांत बताव्युं नथी अहिंआं इ केहेशे जे अन्य मतना श्रमणादिक जना शे तेपण वात अहिंआं छे नहि शा माटे जे न्य मतना परिव्राजकने पांचमा देवलोक उ जवानुं कह्युं नथी तथा बीजा तो सर्वे एथी चाल छे, तथा आजिवीकामतिने बारमुं देव क कह्युं छे माटे ए ठेकाणे तो जैनना मा जाय बीजो कोइ जाय नहि, पण जेनुं ज्ञान त्मस्वभावमां स्थीर थयुं ते जायते पण एक ए वचन छे. शा माटे जे ए उत्कृष्टी जे ग

कह्यो छे त्यां कोइ पण जीव गया मालम पड-
तां नथी शा माटे जे तीर्यंच पंचेंद्री आठमे दे-
वलोक जाय तेवो कोइ सूत्रमां गयो जणातो न-
थी तथा श्रावकने बारमुं देवलोक कह्युं ते पण
कोइ सूत्रमां श्रावक बारमे देवलोक गयो जणा-
तो नथी [illegible] तपस्वीनो जवाना मनां होय ? शा
माटे [illegible] आठमा देवलोकने विशे देवतो
[illegible] पण एक पल्योपमने असंख्यातमा
भागे [illegible] अने [illegible] देवोनुं आवखु जघन्य अराढ
सागरोपमनुं उत्कृष्टु एकत्रीस सागरोपमनुं छे ए
[illegible] जघन्य अराढ सागरोपमनुं
[illegible] उत्कृष्टु एकत्रीस सागरोप-
मनुं [illegible] सागरोपमनो तो दश कोडा-
कोडी [illegible] थाय त्यारे एक सागरोपम थाय
छे अने [illegible] देव थइने एक
पल्योपमने असंख्यातमा भागे देवता छे. तो ए
[illegible] थाय ने बीजो उपजे माटे
[illegible] जाय छे. माटे ए पण
[illegible] निषेध कह्युं छे अ-
[illegible] इति चउदमी गा-
थानो अर्थ संपूर्ण ॥

॥ गाथा ॥

प्रमाद भावे क्रिया भाखी।
स्वभावे ज्ञान ते दाख्युंरे,
एह वचन शम्मति आदिक देखी।
ज्ञानशु चीतरु राख्युं रे ॥ १९ ॥

अर्थः-हवे ए गायानो अर्थ कहीए छइ ए एटले प्रमादभावे क्रिया केहेता जे क्रिया छे तेतो परस्वभावने ग्रहीने छे अने सस्वभावनी गती जे आतम उपयोगनी रमणता तेतो थीरता भावमां छे अने तेतो अप्रमादी कहेवाय छे ए तो अहीयां छे नहि अने एतो परभावनोज उपयोग ने परभावनीज रमणता छे तेनो छठा गुणठाणानी करणी अथवा पहेलां गुणठाणानी करणी बंने एकज छे शामाट ? जे निश्चे थकीतो समकीत फरसतो नथी अने मिथ्या दृष्टीज छे अने ते व्यवहार थकी चारीत्र अंगीकार करे छे अने बाह्य थकी व्यवहार क्रिया साधुनी करे छे परंतु निश्चे जोतां तो ए मिथ्यात्विज छे. माटे पहेला गुण ठाणानी करणी छे तथा कोइक जीव

समक [illegible] करे ने जीव
पण प्रमाद [illegible] करणी
करे [illegible] अने ए कर-
णी [illegible] नहि साधु
नो [illegible] ध्यानवंत आ-
त्म [illegible] साधु कह्या छे.

॥ [illegible] ॥

पाप [illegible] कल्पया ॥
अनन्य [illegible] तेवन्मुनिः ॥

[illegible] कहेतां परणा-
[illegible] केहे-
[illegible] अने परमा-
त्मा [illegible] मुनी
केहेतां [illegible] सम्यक्त्व-
मां [illegible] करे स-
दा [illegible] जे
जीवन मुनी कह्या छे [illegible] परमात्मा थाय ने
[illegible] क्रिया करे ने
[illegible] जे जीव
छे ते तो नरक गामी छे

॥ उक्तंच: ॥

अकारणं यस्य मुहुर्विकल्पैर्हतं मनः शास्त्र विदोपि नित्यं ॥ घोरैरघैर्नि ॥ अतनारकायुर्मृत्यौ प्रयाता नर केसनूनं ॥ १ ॥ योगस्य हेतु र्मनसः समाधिः पर्रनिदानं तपसश्चयोगः ॥ तपश्चमूलं शिवशर्मवल्यामनाः समाधी भ्रज तत कथंचित् ॥ २ ॥ स्वाध्याय योगेश्वरण क्रिया सुव्यापारणै द्वादश भावनाभिः ॥ सुधी स्त्रियोगी सदसत्प्रवृतिः फलोपयोगैश्च मनोनिरुंध्यात् ॥ ३ ॥

एना अरथ ए उपला श्लोकने विशे जे ज्ञान जोगी भवेन मुनी केहेतां जे ज्ञान जोगी तेने साधु कह्या. पण माहाव्रतादी लेवावाळाने साधु कह्या नहि माटे अहींयां ज्ञानीने साधु कह्या पण जे विद्या भणे ने शास्त्र वांचे तेने साधु कह्या नहि. शामाटे जे प्रथम श्लोकमां एवु कह्युं जे शास्त्र विलोकीनीत्यम शास्त्र केहेतां सिद्धांत प्रमुख वांचे ठे सर्व लोकोने समजावे ठे पोते पण जाणे ठे के अमे धरम पाम्या छइए पण ज्यां सुधी मन दूर विकल्प थकी हणाएह्यु छे ए-

एटले अकारण एटले ते तंदुलमत्स्यादिक कंइ कारण आव्युं नथी ते विनाज जेनां मन मात्रा विकल्पमां प्रवर्ते छे ते ते सातमी नरकने विषे जइने पडे छे. अने कारण ते कंइ पण थाय नथी कंइ साधुपणुं थाय नहि अने पानु धर्म पण जाय नहि ते पण मात्र मन पण जाय नहि सुमंगळ साधुवत ते कारण मात्र रागरूप कारण जेनुं मन दुर्ध्यानमां रहे छे ते जइ नरकने विषे जाय ए श्लोकमां ए भावार्थ कह्यो एटले चाहे तो सूत्र वांचो चाहे तो पंचमहाव्रत पाळो. पण मनना मात्रा विकल्प ते मटया ना नरकज जाय. एटले ए कारण सर्वे प्रमाद तावनाज छे अने घणां शास्त्र वांचे तेणे घणी प्ररूपणा करे घणा शिष्य शिष्यणीओ करे घणा श्रावक श्राविकाओ मेळवे. इत्यादिक करे अने आत्मस्वरूपनुं जाणपणुं नथी अनुभव ज्ञान नथी आत्मस्वरूपनी रमणता नथी ते जीव मरीने माठी गतीएज जाय एवुं संमत्ति ग्रंथमां कह्युं छे ॥

॥ उक्तंचः ॥

सम्मतो जइ जइ बहुसु असमज ॥ सीस गुण संपरि वुडोय अविणीज्ज असमए ॥ तइ तइ सिद्धंत पम्णिज ॥

एटले ए श्लोकने विषे एवुं कह्युं छे जे मोटो आर्मबर करे घणी संप्रदा मेळवे पण आत्मस्वरुपनो अजाण छे ने अनुभव ज्ञान प्रगट्युं नथी तो ए माठी गतिए जाय ते कारण माटे बीजा काव्यने विशे मन शुद्धनो विचार छे ते कहुं एटले मननी शुद्धता केहेतां जे समाधिमां मन रेहे तेनुं नाम जोग कहिए नीदानम केहेतां निश्चे करीने ए तपनुं मुळ ते ए जोग छे माटे तपस्या ते मन थीर करवुं एनुंज नाम छे माटे मननी समाधिमां रेहेवु एज मोक्षनु मूळ एज मुक्ति रुपणी वेल एज मोक्ष जवानी शरम केहेतां मरजादा एवी रीते मननी समाधिमां रेहे ते जीव मोक्षे जाय. ते विना बीजे प्रकारे मोक्षे जवानो नथी. ते कारण माटे हे भव्य जीवो ॥ तमे मननी समाधिनुं भज केहेतां एनुज रखोपु करो ए थकी तमारुं कल्याण छे ए बीजा काव्यनो अर्थ

[illegible]

[illegible] आचार्य कहे- [illegible] थाय मन अके [illegible] कहतां पनुं- [illegible] ज्ञान जोगमां [illegible] ज्ञान [illegible] शके [illegible] तावती [illegible] [illegible] मां वा [illegible] ज्ञान [illegible] कारण छे. पण [illegible] नहि [illegible] पण [illegible] [illegible] ज- [illegible] कहो के [illegible] पण मन. वचन कायाना जोगने शुद्ध क- रवा अने [illegible] आत्मस्वरूप [illegible] भावना [illegible] पण मनजोगने [illegible] नहि अने [illegible] मुकरा [illegible] असत्य व

रीतमां प्रवर्त्तशे, तेवारे फळोपयोगे शचः कहेत
फळनी प्राप्ति थशे एटले शुभ मने शुभ फ
पामशो अने अशुभ मने अशुभ फळ पामशे
ते कारण माटे मनःनिरुध्यात् कहेतां मनने
धवुं एटले मनने शुभाशुभ कारणमां घाल
नहि. अने शुभाशुभ कारणमां घालशो तो ए
क्रिया पाछी तमने लागु पडशे अने प्रमादभ
नी क्रियामां पड्या तो चार गतिमां रखड
पडशे ते माटे ए क्रियाने विषे प्रवेश करवो न
तोज अप्रमादी आत्मा थशे ए पूर्व श्लोक
णस्थान क्रमारोहनो लखाव्यो छे ते मध्ये
खाव्युं छे के अप्रमादीने खट आवश्यक प्र
क्रिया होय नहि, माटे क्रिया ते प्रमाद भा
होय. 'स्वभावे ज्ञानते दाख्युं रे' ए पदनो
कहीए छीए एटले ज्ञान छे ते वांचवा भणव
आवतुं नथी, कोइनुं दीधेलुं आवतुं नथी.
तो ज्ञानावर्णी कर्मनो क्षय उपसम अथवा
थाय तो ज्ञान प्रगटे ते तो स्वभावमां रह्युं
ते स्वभाव प्रगट्यो ते तो आत्मानुं ध्यान

?. ते वस्तुने जाणे अने तेनी श्रद्धा करे, ते जीव नमांज रमण करे ते पामे ।

॥ चुर्कंच ॥

नयप्रकरणे अनंत धर्मात्मकस्य । वस्तुन एकांशव्यवसायात्मकं ॥ प्रकाशात्मकंज्ञानंनयः । श्रीमर्वज्ञमतेसकलवस्तुअनंत धर्मात्मकंवर्णितम स्तमयुगंस्वत ॥ यथामयुगंस्मस्य नानावर्णत्वम स्ति ॥ तदामयुरेजाते ॥ तत्पक्षादीनानावर्णत्वं ॥ जवति । असक्त मपितेनाभ्यते ॥ आकाशकुसुम वत शशशृंगवत ॥ ददप्रा‍‍नवती ॥ यथास्तनपिं म्घटघटशिगव तदचनादि नामत्तास्ति ॥ तदास्त पिंम् ॥ तेनघटादिपर्यायातत्पाद्यते ॥ चेत्पर्तस्य नंतधर्मत्वंवस्तुन्यस्ति ॥ तर्हिवस्तुएकधर्मत्वनक थमुच्यते ॥ सत्वमनंतधर्मत्ववस्तुनिसत्तास्ति ॥ परंएकस्मिन्काले वस्तुनः ॥ परिणामान्संख्येया असंख्येयावाजवंति ॥ तथायस्मिन्कालेयःपरि णामोऽस्मितस्मिन् ॥ कालेमएवजवति ॥ नापरः यद्द्रव्यं ॥ यदायेनरूपेणपरिणतं ॥ तदातेनैव रुपेणपरिणमतितनुरूपांतरेणनिवचनात् ॥ यथा र्थप्रमाणमित्युच्यते ॥ अयथार्थ अप्रमाणमिति

नय ॥ प्रमाणस्यैकांशःयतन्नप्रमाणःप्रमाणःप्रमा णं ॥ वाप्रमाणांशस्तथैवहिनासमुद्रवासमुद्रा सोयथैवहि ॥ १ ॥

एनो अर्थ जे सर्वज्ञना मतने विषे सकळ वस्तु अनंत धर्म आत्मिक वरणव्या छे ते आ- स्तिस्वजावे छे तेनो विवरो कहुं छुं के छ द्रव्य छे ते मध्ये अनंता धर्म रह्या छे. परंतु पांच द्र- व्य अहियां कहेवानी जरुर नथी. एक आत्म- स्वजावने विषे अनंता धर्म रह्या छे ते स्व कहेतां पोताना धर्म छे ते अनंता धर्म कहेतां अनंता गुण अनंता प्रजाय अनंता स्वजाव अनंता ल- क्षण इत्यादिक अनंता धर्म छे ॥ शिष्यवाक्य॥ स्वामी ए तो समुदाए वात थइ. खुलासो क- रीने अमने समजावो तो समज पडे. तेनो उ- त्तर के हे देवाणुप्रिया जे अनंता धर्म ते कंइ कथनीमां कहेवाय नहि. शा माटे जे अनंता धर्म कहेतां अनंतो काळज कहीए अने आपणो तो काळ संख्यातो छे माटे कंइ अनंतु धर्म तो कीधामां न आवे. ए केवळीजगवान जाणे छे, तथा अनुजवी पुरुष छे ते ए धर्मने रुडी रीते

[illegible] मुखयकी
[illegible] प हुं तने
[illegible] अनंताण पण
[illegible] छे. हवे जे
[illegible] परंतु जे
[illegible] आ माटे जे
[illegible] परपदार्थ
[illegible] ते तेना
[illegible] यादिक
[illegible] तथा
[illegible] तथा आ·
[illegible] त पना
[illegible] तेज
[illegible] द्रव्य
[illegible] गुणपर्याय
[illegible] अनंता
[illegible] ज्ञानादिक
[illegible] जणाय
[illegible] अनंत
[illegible] पदार्थने

ए ग्रहण करे छे माटे ए अनंता गुण पण थया अथवा अस्तित्वादिक जे सामान्य विशेष गुण कह्या छे ते मध्ये पण ज्ञानगुणमांही गर्भीत छे माटे एने अनंता गुण पण कहीए तथा एक प्रदेश स्वभावादिक अनंता स्वभाव जीवद्रव्यमां रह्या ठे ते पण सर्व ज्ञानगर्भीत ठे तथा अगुरु लघु आदे जे प्रजायादिक ठे ते पण सर्व ज्ञानगर्भीत छे माटे एने अनंता गुण अनंता प्रजाय अनंता स्वभाव अनंता लक्षण ए सर्वमां ज्ञानगर्भीत ठे, माटे ए ज्ञानने अनंत गुण पण कहीए. इत्यादिक जे गुण अनंता ठे, ते सर्व प्रथम गुण अस्तित्व ठे, ए पोताना स्वभावमां कोइ काळे एनो नाश थतो नथी तेम नवो कंइ थतो नथी. अहींयां कोइ कहेशे जे अस्तित्व स्वभाव तो प्रदेशना समुदायनुं नाम ठे ते तो मांही प्रदेश कहाज ठे केमके ए प्रदेशना समुदायने कहेवुं ठे ए तो सामान्य वचन छे अने आ तो विशेषवचन ठे. शा माटे जे आत्माना एक प्रदेशे अनंता गुणादिक रह्या छे, अहींयां एवुं नथी के आत्माना सर्व प्रदेशे साथेज ज्ञान

उपजे [illegible] नहि अने एवी वात [illegible] नहि [illegible] एक केवळज्ञान सर्व प्र- [illegible] ज्ञान उपजे बीजां ज्ञान तो कोइ प्रदेशे उपजे [illegible] न उपजे ए अवधिज्ञानना [illegible] समजाजो तथा मतिआदिक ज्ञान [illegible] नु नोखनोखे प्रदेशे छे माटे [illegible] न उपजे अने ज्यारे सर्व प्रदेशे [illegible] प्रदेशना एकज प्रदेश [illegible] ज्ञानी पमी जाय अने [illegible] प्रदेशनां तीव्र तीव्र [illegible] तथा प्रदेशव्याख्या [illegible] अनंता गुणा- [illegible] ज्ञा माटे जे पुद्गल [illegible] तथा उपचरित [illegible] प्रदेशोथी मां- [illegible] नो जातिस्व- [illegible] मां [illegible]. वर्ण [illegible] अने गंध २. ते [illegible] अनंत भेद [illegible] अने [illegible] अनंत [illegible] नार्मा नार्मा [illegible]नना ए

स्कंध छे तथा ए स्कंधने विषे केटलाएक समी जाय छे, केटलाएक गळी जाय छे, केटलाएक पमी जाय छे, केटलाएक मळे छे. केटलाएक विखरे छे, केटलाएक स्कंध जीवग्राही छे तेने विषे अनेक जातना रोगव्यापित छे, केटलाएक दोषव्यापी छे, केटलाएक शोकव्यापित छे इत्यादिक सर्व पदार्थने जाणवुं. ते भीन्न भीन्न द्रव्यप्रजाय अनंता छे, तेनुं जाणपणुं ते ज्ञान कहीए, ते ज्ञान पण भीन्न भीन्न जेवो ज्ञेय पदार्थ तेवुं ज्ञान एटले अनंत ज्ञान तेज अनंता गुण थया, माटे अनंत ज्ञान छे ते सत्य छे, अने ज्ञान शब्दवाच एकज छे. अहियां कोइ कहेशे जे गुणनी व्याख्या श्वेतांबर पक्षमां नथी जणाती ते वात खरी छे के कोइक कोइक पक्षमां ना पण पामी छे ते धणी ए ज्ञानने प्रजायमां गवेख्या छे ए वात अहियां कंइ विरोधी नथी. शा माटे जे घणा प्रजायनो समुद्र तेने गुण कहीए छीए एटले गुण कंइ नोखी वस्तु छे नहि एटले अनंत धर्म आत्मिक कह्या तो

एक ज्ञानगुणज अनंता धर्म प्रगट थया अने एवा तो अनंता गुण आत्मामां छे पण मुख्य-पणे एक ज्ञानगुणज छे ते वर्णवीने देखाड्यो एम सर्व गुणादिक समजजो तथा पूर्वे ए ग्रंथमां अमे संमतिनो अधिकार नांख्यो ते मध्ये दश सामान्यगुण तथा सोळ विशेषगुण तथा अगीयार सामान्य स्वभाव तथा दश विशेष स्वभाव इत्यादिक त्यां कह्या छे तथा बीजा ग्रंथमां नोखी नोखी रीते कह्या छे ते भीन्न भीन्न रीतना छे ते सर्व एक जग्याए कंइ कहेवाता नथी पण सर्व गुण आत्मामां अस्ति स्वभावे छे ने पण ए गुण कह्यो ते पर अपेक्षाए छे अने स्वअपेक्षाए ज्यां आगळ कारण आवशे त्यां कहेवाशे ते समजी लेजो एटले वस्तुनुं धर्म अनंतु कह्युं ते स्वअपेक्षाएज छे ते परअपेक्षाए नथी अने परअपेक्षाए कहीए तेवारे वस्तुनो नाश थइ जाय, अने वस्तुनो स्वभाव तो एवो छे के पोतानो धर्म छोडीने परधर्मने सर्वथा ग्रहे नहि अहियां कोइ कहेशे जे जीवद्रव्य तो पु-

फलनुं धर्म विशेषे ग्रहीने वेगो ठे अने तमे पर-धर्म ग्रहवानी केम ना कहो गो? तेनो उत्तर जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्युं जोवामां आवे ठे ते उपरथी जोइने तमो कहो गो पण तमे वस्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने एम भासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे धरजो. हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे हतो त्यां तो काइ जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम कोइ जीव असाध्य पड्यो छे तेने गमे तेम करो तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने जीवितव्यपणानी कांइपण खबर नथी. हवे ते कोइ जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते. अजाणथको बाळपणे मातापितानो वियोग थयो अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते गोकराने जे लेइ

एक ज्ञानगुणज अनंता धर्म प्रगट थया अ
एवा तो अनंता गुण आत्मामां ठे पण मुख्य
पणे एक ज्ञानगुणज ठे ते वर्णवीने देखाड्यं
एम सर्व गुणादिक समजजो तथा पूर्वे ए ग्रंथम
अमे संमतिनो अधिकार नांख्यो ते मध्ये दश
सामान्यगुण तथा सोळ विशेषगुण तथा अ
गीयार सामान्य स्वन्नाव तथा दश विशेष स्व
न्नाव इत्यादिक त्यां कह्या ठे तथा बीज
ग्रंथमां नोखी नोखी रीते कह्या ठे ते न्नीन्न
न्नीन्न रीतना ठे ते सर्वे एक जग्याए कंइ कहे
वाता नथी पण सर्वे गुण आत्मामां अस्ति
स्वन्नावे ठे ते पण ए गुण कह्यो ते पर अपेक्षाए
छे अने स्वअपेक्षाए ज्यां आगळ कारण आवशे
त्यां कहेवाशे ते समजी लेजो एटले वस्तुनुं धर्म
अनंतु कह्युं ते स्वअपेक्षाएज ठे ते परअपेक्षाए
नथी अने परअपेक्षाए कहीए तेवारे वस्तुनो
नाश थइ जाय, अने वस्तुनो स्वन्नाव तो एवो
ठे के पोतानो धर्म ठोमीने परधर्मने सर्वथा ग्रहे
नहि अहियां कोइ कहेशे जे जीवद्रव्य तो पु·

फलनुं धर्म विशेषे ग्रहीने बेठो छे अने तमे पर-
धर्म ग्रहवानी केम ना कहो छो? तेनो उत्तर
जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी
अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्युं जोवामां आवे छे
ते उपरथी जोइने तमो कहो छो पण तमे व-
स्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता
नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
एम भासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे ध-
रजो. हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे
हतो त्यां तो कांइ जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं
हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम
कोइ जाव अबाध्य पन्यो छे तेने गमे तेम करो
तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
जीवितव्यपणानी कांइपण खबर नथी. हवे ते
कोइ जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे
आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते.
अज्ञाणयको बाल्यपणे मातापितानो वियोग थयो
अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते छोकराने जे लेइ

एक ज्ञानगुणज अनंता धर्म प्रगट थया अ
एवा तो अनंता गुण आत्मामां छे पण मुख्
पणे एक ज्ञानगुणज छे ते वर्णवीने देखाड्
एम सर्व गुणादिक समजजो तथा पूर्वे ए ग्रंथम
अमे संमतिनो अधिकार नांख्यो ते मध्ये दश
सामान्यगुण तथा सोळ विशेषगुण तथा अ
गीयार सामान्य स्वभाव तथा दश विशेष स्व
भाव इत्यादिक त्यां कह्या छे तथा बीज
ग्रंथमां जोखी जोखी रीते कह्या छे ते भिन्न
भिन्न रीतना छे ते सर्व एक जग्याए कंइ कहे
वाता नथी पण सर्व गुण आत्मामां अस्ति
स्वभावे छे ते पण ए गुण कह्यो ते पर अपेक्षाए
छे अने स्वअपेक्षाए ज्यां आगळ कारण आवशे
त्यां कहेवाशे ते समजी लेजो एटले वस्तुनुं धर्म
अनंतु कह्युं ते स्वअपेक्षाएज छे ते परअपेक्षाए
नथी अने परअपेक्षाए कहीए तेवारे वस्तुनो
नाश थइ जाय, अने वस्तुनो स्वभाव तो एवो
छे के पोतानो धर्म छोडीने परधर्मने सर्वथा ग्रहे
नहि अहियां कोइ कहेशे जे जीवद्रव्य तो पु

फलनुं धर्म विशेषे ग्रहीने बेठो छे अने तमे परधर्म ग्रहवानी केम ना कहो छो? तेनो उत्तर जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्युं जोवामां आवे छे ते उपरथी जोइने तमो कहो छो पण तमे वस्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने एम भासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे धरजो. इवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे हतो त्यां तो कांइ जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम कोइ जीव असाध्य पड्यो छेतेने गमे तेम करो तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने जीवितव्यपणानी कांइपण खबर नथी. हवे ते कोइ जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते. अजाणथको बाळपणे मातापितानो वियोग थयो अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते छोकराने जे लोइ

एक ज्ञानगुणज अनंता धर्म प्रगट थया अने एवा तो अनंता गुण आत्मामां छे पण मुख्यपणे एक ज्ञानगुणज छे ते वर्णवीने देखाड्यो एम सर्व गुणादिक समजजो तथा पूर्वे ए ग्रंथमां अमे संमतिनो अधिकार नांख्यो ते मध्ये दश सामान्यगुण तथा सोळ विशेषगुण तथा अगीयार सामान्य स्वभाव तथा दश विशेष स्वभाव इत्यादिक त्यां कह्या छे तथा बीजा ग्रंथमां नोखी नोखी रीते कह्या छे ते भीन्न भीन्न रीतना छे ते सर्वे एक जग्याए कंइ कहेवाता नथी पण सर्वे गुण आत्मामां अस्ति स्वभावे छे ते पण ए गुण कह्यो ते पर अपेक्षाए छे अने स्वअपेक्षाए ज्यां आगळ कारण आवशे त्यां कहेवाशे ते समजी लेजो एटले वस्तुनुं धर्म अनंतु कह्युं ते स्वअपेक्षाएज छे ते परअपेक्षाए नथी अने परअपेक्षाए कहीए तेवारे वस्तुनो नाश थइ जाय, अने वस्तुनो स्वभाव तो एवो छे के पोतानो धर्म छोडीने परधर्मने सर्वथा ग्रहे नहि अहियां कोइ कहेशे जे जीवद्रव्य तो पु·

ळखनुं धर्म विशेषे ग्रहीने वेगो छे अने तमे पर-
धर्म ग्रहवानी केम ना कहो छो? तेनो उत्तर
ने परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी
अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्युं जोवामां आवे छे
उपरथी जोइने तमो कहो छो पण तमे व-
नो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता
थी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
भासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
ने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे ध-
. हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे
त्यां तो कांइ जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं
तहि एनो एक केवुं स्थानक छे के जेम
जाव अवाच्य रूपे छे तेने गमे तेम करो
व मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
व्यपणानी कांइपण खबर नथी. हवे ते
जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे
तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते.
यको बाळपणे मातापितानो वियोग थयो
त्यु पाम्या पछी ते छोकराने जे कोइ

एक ज्ञानगुणज अनंता धर्म प्रगट थया अने एवा तो अनंता गुण आत्मामां छे पण मुख्य-पणे एक ज्ञानगुणज छे ते वर्णवीने देखाड्यो एम सर्व गुणादिक समजजो तथा पूर्वे ए ग्रंथमां अमे संमतिनो अधिकार नांख्यो ते मध्ये दश सामान्यगुण तथा सोळ विशेषगुण तथा अगीयार सामान्य स्वभाव तथा दश विशेष स्वभाव इत्यादिक त्यां कह्या छे तथा बीजा ग्रंथमां जोखी जोखी रीते कह्या छे ते भीन्न भीन्न रीतना छे ते सर्व एक जग्याए कंइ कहेवाता नथी पण सर्वे गुण आत्मामां अस्ति स्वभावे छे ते पण ए गुण कह्यो ते पर अपेक्षाए छे अने स्वअपेक्षाए ज्यां आगळ कारण आवशे त्यां कहेवाशे ते समजी लेजो एटले वस्तुनुं धर्म अनंतु कह्युं ते स्वअपेक्षाएज छे ते परअपेक्षाए नथी अने परअपेक्षाए कहीए तेवारे वस्तुनो नाश थइ जाय, अने वस्तुनो स्वभाव तो एवो छे के पोतानो धर्म छोमीने परधर्मने सर्वथा ग्रहे नहि अहियां कोइ कहेशे जे जीवद्रव्य तो पु-

ऋात्मनुं धर्म विशेषे ग्रहीने बेठो छे अने तमे पर
धर्म ग्रहवानी केम ना कहो छो? तेनो उत्त
जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथ
अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्युं जोवामां आवे छे
ते उपरथी जोइने तमो कहो छो पण तमे व
स्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोत
नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमन
एम भासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासे
करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे ध
रजो. हवे जे जीव निगोदादिक गतिने वि
हतो त्यां तो कांइ जीवितव्यपणानुं प्रगटप
हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जे
कोइ जीव असाध्य पड्यो छे तेने गमे तेम कर
तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवन
जीवितव्यपणानी कांइपण खबर नथी. हवे
कोइ जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभा
आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी
अजाणथको बाळपणे मातापितानो वियोग थय
अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते छोकराने जे लो

ाया ने जेवो तेनज मानपना जाणे छे तेम
आ जेव निगोदथ आव्या ते ज्यां सुधी म-
ुष्य नथी थया अने स्वभावनी ओळखाण
नथी थइ त्यां सुधी परभावने वळगीने रह्यो छे
अने तेने स्वभाव माने छे परंतु ए परभाव ते
परभावज छे अने स्वभाव ते स्वभावज छे
ये ते जड ने आत्मा छे. एक ज्ञानगुण
ामेळा स्वअनुभव सहित छे. अने एक
ड ते ज्ञानगुण नथी तथा ते स्वअनुभव
सहित छे पण ते बेन जड मोहगजाने वश छे
ते बेनना विचार नथी तेथी समजातुं ते जाणो
ते जड ज्ञान नथी तथा ते जीव परवस्तुने व-
ळगेला छे ते जड ना स्वस्वभाव वळग्या छे जे
जीव ज्ञान सहित छे ते परवस्तुने वळग्या छे,
ानु पण शुद्ध जीवना ज्ञानमां तो सरखुंज आवे,
परंतु ए जेमां फरक पणो छे ते कहुं ते सांभळ.
जेम कंचन छे तेमां अन्य धातु पडी छे हवे ते
कंचनने सर्व जात कंचन कहे एम कोण कहे?
क. जे अजाण पुरुष छे ते कहे पण जे चोकशी

लोको एना जाणपुरुष ठे ते तो ए जोइने कहे के एमां आटलुं सोनुं छे अने तेटलाज दाम एना उपजे अने वाळे तोपण कुधातु बळी जाय अने कंचन होय ते रहे तेम अहियां जे जीव अजाण एवा अज्ञानी जीव जेवा जेम कुधातु साथे कंचन बधुं मान्युं तेम ए अजाणपुरुष अज्ञानी तेवी रीते शुनाशुन जे कर्म चेतनने वळगेलां ते पोते पोता रुपज माने ठे अने तेना उदयवशे जे जे कर्म करे ठे ते पोते एम जाणे ठे के हुंज करुं छुं, मनेज सुख ठे. मनेज दुःख ठे, एम ते वेदे छे. एकरुपे माटे ए जीव ज्ञानरहित ठे, हवे जे जीव ज्ञानसहित ठे ते पण करणी कर्म तो एना सरखांज करेठे पण ते धणीन आत्मस्वरुपनो अनुनव छे तेथी ए आत्माने ने कर्मने बन्नेने नीन्न नीन्न जाणे ठे अने बन्नेनुं वस्तुधर्म अन्योअन्य अनावज जाणे ठे, तेथी ए पोते मांही लपटातो नथी एटले पोते मांही न्यारो रहीने उदय माफक काम करे पण तेमां कंइ हर्ष वा शोक ठे नहि जाणे ठे के पूर्वोक्त कर्म ते

स्वज्ञाव छंमेज नहि अने ज्ञाननय तो पोतानो आत्मस्वज्ञाव प्रकाशज करे अने पोतानी मुक्ति पण ए स्वज्ञाव थकीज थाय ते वस्तुनुं धर्म न-मुच्यते कहेतां कोइ काळे गमे नहि सतमतं क-हेतां जे पोते सत्य यथार्थ वस्तुनी सत्ता अ-स्तिरुपे ठे ते काळ पामीने प्रगट थशे एटले प्र-णमवानो एनो स्वज्ञाव ठे जेम आंबो वावीएने तुरत केरी मागीए तो तेम न थाय ए काळेज आंबो फळे ने केरी आपे स्त्री पण तुरत गर्ज धरे नहि काळेज गर्ज धरे अने गर्ज धर्यो तो पण कंइ तुरत छोकरुं थाय नहि ते पण काळे ज ठोकरानी प्राप्ति थाय पण ते प्रणमीअ स्व-ज्ञाव होय तेज प्रणमे जेनामां ए प्रणमवानो स्वज्ञाव न होय ते न प्रणमे तेम आ जीवस्वरुपनो प्रणमीअ स्वज्ञाव ठे ते पोताना स्वज्ञावमांज प्र-णमे अन्य स्वभावमां न प्रणमे पण ज्यां सुधी ते प्रणमवानो काळ नथी आव्यो त्यां सुधी न प्रणमे एटले त्यांसुधी अज्ञानपणे पराधिन छे. हवे जे जीवने प्रणमवुं ठे ते जीवने समकिता-

जवमां रमशे तेनुं कल्याण थशे अथवा जे जीवने क्षय उपसम तेवमो न होय तोपण ए वस्तु उपर जेना चित्तमां श्रद्धा स्थिर करशे तो तेनुं पण कल्याण थशे एटले ए पंदरमी गाथानो अर्थ कह्यो.

ज्ञान विना साधु नहि नाख्यो ।
तो क्रिया कष्ट शुं होवे रे ॥
पंचम अंगे शतक पचीशमे ।
तेम वळी संमतिमां केवे रे ॥ १६ ॥

अर्थ जे परमात्माना नाखवामां तो एवुं छे जे ज्ञानी पुरुष होय तेनेज साधु कह्या छे अथवा तेनी आज्ञा प्रमाणे चाले तेने साधु कह्या छे पण बाह्य थकी क्रिया आर्मंबर घणो करे छे तेने कंइ साधु कह्या नथी साधु तो एक ज्ञान भावने विशे रमे अने मन थीर राखे तेनुं नाम साधु छे पण क्रियानुं नाम तो कंइ साधु छे नहि ए श्री भगवतीजीना पचीसमा सतकमां कह्युं छे.

॥ उक्तंच ॥

गीयत्थाय विहारो बीओगीयत्थ निस्सिअणीउ ॥
इत्तो तइय विहारो नाणुन्नाओ जिणवरेहिं ॥ १ ॥

अभ्यास करता, कोइ तपस्या करता एमनो खानोखा चोख छे, तेथी कंइ साधु सर्वेनी क्रिया एक होय नहि अहिंआं वेहेवार थकी मुळ गुण एक सरखा जोवां उत्तर गुणने विषे कोइ साधु ज्ञानना अभ्यासी छे कोइ साधु तपना अभ्यासी छे, कोइ साधु ध्यानना अभ्यासी छे कोई क्रियाना अभ्यासी साधु छे इत्यादिक भेद त्यां छे माटे जे साधुने जेनी रुचि होय ते ते मार्गे चाले ए वातमां जे चरचावा निंदा करे ते अज्ञान छे शा माटे जे कल्पसूत्रादि क्रियानां जे सूत्र तेने विषे तो एवुं कह्युं छे के आचार्य तथा उपाध्याय तथा थीवीर तथा गणी तथा क्षुल्लक आदेदइने सर्वे जुदाजुदा छे शा माटे के कोइ वैयावचनो करनार साधु होय, कोई ज्ञानअभ्यासी होय, कोइ तपस्वी होय इत्यादिकने क्रियानो अवसर सचवाय नहि, केमके जे अवसर क्रियानो आव्यो होय तेज अवसरे कोइक चरचा अथवा प्रश्न पूछवा आव्यो होय तेने जो उत्तर नहि आपे तो ते मूर्खमां ठरशे ने शासन लाजशे माटे

तेने क्रियानो अवसर सचवाय नहि तथा वैयावच्चीओ छे तेने क्रियानो अवसर आवेयके कोइ साधुनुं शरीर बगडयुं होय तो ते वखत त्यां जवुं जोइए माटे पछी पण क्रियानो अवसर न सचवाय तथा ध्यानी पुरुष होय ते तो ध्यानमांज होय ते क्रियानो अवसर क्यां साचवे? शा माटे के कोइ पडीमा चार पहोरनी कोइ पडीमा आठ पहोरनी कोइ पडीमा बार पहोरनी कोइ पडीमा सोल पहोरनी इत्यादिक पडीमाओ छे ते जेने जेटला वखतनी पडीमा होय ते ध्यानमांज रहे त्यां सुधी पनुं चित बीजामां पेसे नहि तो क्रियाने शाण संताप्या जाय? माटे सर्वेनी एक क्रिया होय नहि आ माटे जे गीतार्थनी आज्ञाए चालवुं त्यां तो करवानुं कार्य होय तोए करे ने न करवानुं कार्य होय तोए करे. कंइ आज्ञा लोपाय नहि अने आज्ञा लोपे तो ते साधु नथी आ माटे जे संवृतिविजयजी युगप्रधान तेमनी सामर्थी जोतां आवेयके चार साधुए आज्ञा मार्गी ते एक तो सिंहगुफाए रह्यो,

बीजो सर्पना बीळ उपर रह्यो, त्रीजो कूवाना भारवटीआ उपर रह्यो, चोथो साधु जे स्थुलीभद्र ते पोतानी पूर्वस्नेही कोश्या नामे जे गणिका तेने घेर चोमासु रहेवानी आज्ञा मागी ते गुरुए आज्ञा आपी. हवे ए ठेकाणे एने रहेवायकी क्रियामां केटला दोषण छे ते समजो के वेस्याने घेर जवुं ए दुषण १, बीजुं ग्रहस्थीना घरमां चार्तुमास रहेवुं ए दुषण २, एकली स्त्री हारे रस्ते पण चालवुं नहि ते ठेकाणे ए पोते एकली स्त्री हारे रह्या ए दुषण ३, तथा साधुने चित्रशाळीमां सर्वथा न पेसवुं शा माटे के चित्रशाळी देखतांज विषय उत्पन्न थाय माटे चित्रशाळी जोवानी मनेज छे अने ते साधु चित्रशाळीमां रह्या ए दुषण ४, तथा आधाकर्मी आहारनुं दुषण, रती शक्तिवाळाने ए दुषण महाभारत लखे छे ५, अने मादक आहार निषेध छे अने ते पोते ते कोस्याने घेर रह्या ते कोस्यानो चारित्र मुकाववाना उपायमां छे शा माटे जे पूर्वे ए कोश्या साथे एना घरमां बार वरस रह्या

अने सामाचारी करण मेनिया साधा छे एवी रीतनां तो सुख एनी साथ जोगवेलां छे अने तेने वगर पूछे चारित्र आरोसार लीधुं छे अने ते सांजळीने गनदिन कुर्या करे छे तेवे आ साधुनुं जयुं त्यां थयुं छे. हवे न करवी करवी जातना आहार त्यां करावनी दश ए डुषण छे. इत्यादिक घणां डुषण अहियां लागु छे तोपण आज्ञासहित छे माटे अहिया डुषण कहेवाय नहि तथा धनगिरि ए गुरुने पूछी गोचरीए गया ने अवसरे गुरुए कह्युं जे मचित अचित जे मळे ते लइ आवजो अहिया एणे ते न कर्युं पण ए वातनी शंका करी नथी माटे गीतार्थनी आज्ञा प्रमाणे जे विचरे तेने दश समाचारीमां ते ते समाचारी पदार्थमांज जोइए नाज तेनाथी गीतार्थनी आज्ञा पळे, नहि तो पळे नहि एटला माटे जे गीतार्थनी आज्ञाए विचरे तेने साधु कह्या. हवे त्रीजुं पद जे इत्तोनएव्यवहारो नाणुन्नाआजिणवरेहि एटले एवा जे गीतार्थ विना अथवा तेनी आज्ञा विनाना त्रीजा कंइ साधु कहेवाय नहि

अने मासावार करेल सोनैया साधा छे एवी रीतनां तो मुख एनी साथे भोगवेलां छे अने तेने वगर पूछे चारित्र वागेवार लीधुं छे अने ते सांभळीने गतदिन क्रिया करे छे तेवे आ साधुनुं जवुं त्यां थयुं छे. हवे ते केवी केवी जातना अहार त्यां करावतनी हश ए दुषण छे. इत्यादिक घणां दुषण अहियां लागु छे तोपण आज्ञासहित छे माटे अहिया दुषण कहेवाय नहि तथा धनगिरि ए गुरुने पूछी गोचरीए गया ते अवसरे गुरुए कह्युं जे सचित अचित जे मळे ते लइ आवजो अहिया एणे ते न कर्यु पण ए वातनी शंका करी नय। माटे गीतार्थनी आज्ञा प्रमाणे जे विचरे तेने दश समाचारीमां ते ते समाचारी पदार्थमांज जोडए तोज तेनाथी गीतार्थनी आज्ञा पळे, नहि तो पळे नहि एटला माटे जे गीतार्थनी आज्ञाए विचरे तेने साधु कह्या. हवे त्रीजुं पद जे इत्तोतएव्यवहारी नाणन्नाआजिणवरेहि एटले एवा जे गीतार्थ विना अथवा तेनी आज्ञा विनाना त्रीजा कंइ साधु कहेवाय नहि

अने सामाचार करीने मोनैया साधा छे एवी रीतनां तो सुख एनी साथे भोगवेलां छे अने तेने वगर पूछ चारित्र वारोवार लीधुं छे अने ते सांभळीने रातदिन क्रुर्या करे छे तेवे आ साधुनुं जवुं त्यां थयुं छे. हवे ते केवी केवी जातना अहार त्यां करावनी हशे ए दुषण ६. इत्यादिक घणां दुषण अहियां लागु छे तोपण आज्ञासहित छे माटे अहिया दुषण कहेवाय नहि तथा धनगिरि ए गुरुने पूछी गोचरीए गया ते अवसरे गुरुए कह्युं जे सचित अचित जे मळे ते लइ आवजो अहिया एणे ते न कर्युं पण ए वातनी शंका करी नथी माटे गीतार्थनी आज्ञा प्रमाणे जे विचरे तेने दश समाचारीमां ते ते समाचारी पदार्थमांज जोइए तोज तेनाथी गीतार्थनी आज्ञा पळे, नहि तो पळे नहि एटला माटे जे गीतार्थनी आज्ञाए विचरे तेने साधु कह्या. हवे त्रीजुं पद जे इतोतगच्छववहारो नाणुन्नाआजिणवरेहि एटले एवा जे गीतार्थ विना अथवा तेनी आज्ञा विनाना त्रीजा कंइ साधु कहेवाय नहि

एज गाथा छे एटले बे ठेकाणे गाथा एकनी एकज छे हवे क्रियाकष्ट शुं होवे कहेतां जे ए गीतार्थ तथा गीतार्थनी आज्ञामां विचरे ए बे विना त्रीजा जे रह्या तेने साधु तो कह्या नथी अने ते क्रियाकष्ट करे छे तेमधे केटलाएक तो शास्त्रना वाकेफ नथी अने गीतार्थनी सेवा करी नथी तेथी विचारा अज्ञानपणे करीने तपस्या तथा क्रिया करे छे तथा केटलाएक कपटसहित ज्यां जेवुं क्षेत्र ज्यां जेवो साधुनो समुदाय तेवी तेवी रीतनी क्रिया करे छे अथवा ज्यां जेवा श्रावकनी रीत प्रवर्त्तती होय तेवी रीतनी क्रिया करे छे एटले ए चोथुं कुपण पासथामांहिंयुं छे ते साधु पण वांदवा पूजवामां लप लागे नहि. हवे जे प्रथम अजाण कह्या ते साधु जे क्रियाकष्ट करे छे तेने पण फळ आकाश कुसुमवत् छे माटे तेनुं पण कंइ कल्याण थयुं नहि कल्याण तो एक आत्मज्ञान स्वभावमां रमवुं तेनुं नामज साधुत्र पण ज्ञान विना साधु कोइ काळे कहेवाय नहि ते श्रीउत्तराध्ययनजीथकी जोइ लेजो एटले साधु

तो आत्मज्ञानना स्वस्वभाव रमणी होय तेने जाणवा ते विना जे क्रियाकष्टादि करे छे अने कहेछे के अमे धर्म साधीए छीए ते सर्व मिथ्या छे शा माटे के श्रीस्याद्वाद रत्नाकरमध्ये कह्युंछे.

॥ उक्तंच ॥

संदिग्धविपक्षवृत्तीकोयथ्याविवादायन्नःपुमानूसर्वज्ञोनभवतिवक्तृत्वात ॥ साधर्म्योणदृष्टंताभासोनवप्रकारे साध्यधर्माविकल ॥ साधनधर्मविकल ॥ उभयधर्मविकल ॥ संदिग्धसाध्यधर्म ॥ संदिग्धसाधनधर्म ॥ संदिग्धोभयधर्मोअनत्वयो॥

एनो अर्थ संक्षेपमात्र कहुं छुं. संदग्धो कहेतां जे डाह्युं एटले अर्धबळ्युं कहीए ते शुं के एक तो ए धर्म तथा ते धर्मनुं साधन क्रिया ए बेए दग्ध कहीए ते केनुं ते कहीए छीए. ज्यां ज्ञान रुप निर्णय नथी कर्यो एटले ते ज्ञाननो विपक्षी एटले एथकी उपरांठो एटले बीजो पक्ष ते क्रियापक्ष जाणवो तथा ज्ञाननयरहित अथवा कुनय ग्रहीने विवाद करतो फरे अने सर्वज्ञनो आडम्बर राखे पण कंइ सर्वज्ञ छे नहि अने स

धर्म पोताने विषे पण ठे नहि एकत्रासरुप दीसे ठे ते पुरुषने स्वधर्म कहेतां पोताना धर्मने विषे विकळ कहेतां गांभो ठे एटले जुली गयो ठे तथा एनुं जे साधन धर्म जे तेनी क्रिया प्रमुख करे ते पण जुलेलो ठे विकळ कहेतां गांभोज कह्यो ठे तथा उन्नयधर्म कहेतां साध्यधर्म तथा साधन धर्म ते बे धर्मविकळ कहेतां तेना गांभाज ठे तथा संदग्धो कहेतां जे दग्धः एटले साध्य जे धर्मने पोते साधे ठे तेज धर्म दाफेलुंज ठे तथा सदग्धासाधनधर्म एटले तेनुं जे साधन करवुं ते धर्म एटले क्रियाकष्टादिक ते दाफोमीयुंज थइ गयुं छे सदग्धोन्नयधर्म कहेतां तेनुं जे साध्य तथा साधनधर्म बन्ने दाफोमीयां थइ गयां ठे इत्यादिक आ ग्रंथमां विचार घणो छे. पण में तो अहियां संक्षेपे देखाड्यो ठे. अने ए ग्रंथनी टीका ऐंशी हजार श्लोक ठे तेमांहेलुं आ ठगा परिठेदमांहेथी जराक वात नांखी ठे. पंमित होय ते ग्रंथ जोइने समजजो माटे अहियां कह्युं जे क्रियाकष्ट करवाथी शुं थाय एक ज्ञाननय ठे ए

[illegible]

जे [illegible] आत्मानुं कल्याण जे ए[illegible] [illegible] हवे मत्सरमी तथा [illegible] मांटे नेगो [illegible]

[illegible] जे मुनि ज्ञान [illegible] जे जाणे। [illegible] करणी [illegible] उपदेशमा [illegible] निर्वाह ॥ [illegible]

[illegible] ते तेम [illegible] जेन [illegible] बोल [illegible] तथा करणमी [illegible] प्रमुख [illegible] अधिक [illegible] एक[illegible] [illegible]

ए थयो होय तोपण जो ज्ञानी पुरुष छे, तो ए
वहेवारनयने मते तेनेज मानवो कह्यो छे. शा
माटे जे छेदग्रंथमध्ये वहेवारसूत्र छे तेमध्ये साधुने
आलवण लेवानो अधिकार बहुश्रुत ज्ञानी होय
तेनी पासे छे ते बहुश्रुतज्ञानी साधुनी जोगवइ
न होय तो पछाकडा पासे लेवी. पछाकडा क-
हेतां जेने पूर्वे साधुपणुं लीधेलुं छे अने बहुश्रुत
थएलो छे ते धणी कोइ कर्मना उदयथी चा-
रित्र छोडीने घरमां पेठो तेने पछाकडो कहीए
तेनी पासे आलवण लेवानी कही छे, श्राद्धवि-
धिमां एवुं कह्युं छे के सातसें गाउ सुधी गीता-
र्थनी खोळ करीने गीतार्थ पासे आलवण लेवी
पण ते विना जे साधु गीतार्थ न थयो तेनी पा
से सर्वथा न लेवी तथा आ काळे केटलाएक
गृहस्थीओ आलवण आपे छे तथा व्रतपचखाण
उचरावे छे ते तो पामात्माना मार्गथकी बाहेर
छे एने जैनधर्मी न कहीए अने एना वेननाग
कहे ते जेम गोसाग्याने जिन कहेता त्यां तद्वत
तेने पण जाणवा एटले चरणनोतरी करणनोत-

॥ उक्तंच ॥

चरणकरणप्पहाणा । ससमयपरसमयमुक्कवावारा ॥ चरणकरणस्ससारं । णिच्छयसुद्धंनयाणंती ॥ १ ॥

अर्थ-हवे ए गायाने विषे एवुं कहुं छे जे चरणसीत्तरी करणसीत्तरीयकी एटले पांच महाव्रत तथा पांच सुमति तथा त्रण गुप्ति तथा दशविध यतिधर्म इत्यादिक मुळगुणथकी हिण छे तथा पडीलेहण प्रमुख उत्तरगुण करणसीतरीनां तेथकी पण हिण छे तथापि स्वसमयपरसमय कहेतां जे जैनआगम बहु शास्त्रनो जाण होय अने परसमय कहेतां अन्य जे पांचे दर्शननो जाण होय तथापि बीजे प्रकारे स्वसमय कहेतां पोताना आत्मस्वरुपनुं गुणप्रजायलक्षण स्वभाव इत्यादिक स्वस्वरुपनुं जाणपणुं छे तथा परसमय कहेतां अन्य जे पांचे द्रव्य कहेतां जे पुद्गलादिक तेना गुणप्रजाय लक्षण स्वभावादिकनुं जाणपणुं छे ते पुरुष सदाए महा उत्तम पुरुष छे अने ते पुरुषनोज आत्मा शुद्ध छे अने

ते पुरुष मोक्षे जाय शा माटे चरणकरण संसार कहेतां ए जे चरणसीत्तरी तथा करणसीत्तरीना करनार तथा पालनारा तेने तो संसार सतावे छे. परंतु संसार कहेतां जे चार गति संसारमां भमता ए जीवनुं कल्याण थाय नहि. नथी ए सुधी कहेतां एनो आत्मा शुद्ध नथी. तेथीकरीने ए जीवनी मुक्ति पण थाय नहि. ए जीवनुं कल्याण नथी तेथीकरीने समजवुं जे बाह्यदृष्टि ते न सारी छे अने अंतरदृष्टि छे ते ए णी श्रेष्ठ छे माटे एक ज्ञानमांज चित्त राखवुं एथीज आपणुं काम थशे ए शास्त्रसंमतिनो लेश देखाडयो तथा उपदेशमालामांहि जे कह्युं छे ते हुं कहुं छुं.

॥ उक्तंच ॥

नाणाहिउवरतरं । हीणोविहुपवयणंपभावंतो॥ नयदुक्करंकरंतो । सुठ्ठविअप्पागमोपुरिसो ॥ १॥

अर्थ—हवे ए गाथाने विषे शुं अर्थ कह्यो छे ते कहुं छुं नाणाहो कहेतां जे ज्ञानकरीने सहित पुरुष बाह्यज्ञान तथा अभ्यंतरज्ञान बंने

ज्ञानमां वाकेफ छे एटले चारे अनुयोगनुं ज्ञान कहेतां जे धर्मकथानुं योग कहेतां जे ज्ञातादि सूत्र तथा चरित्रादि कह्या ते कथानुयोगने विषे जेनी वाकेफी छे १ तथा बीजा अनुयोग जे गणितानुयोग एटले चंद्रपन्नति प्रमुख तथा द्वीप समुद्र तेना मापागणत्राने विषे जाणपणुं छे एटले घनमूळ वर्गमूळ करी जाणे छे परधीखाम्वा चोरसां इत्यादिकने विषे वाकेफ छे ते बीजो अनुयोग कहीए २ तथा चरणकरणानुयोग कहेतां आचारांग प्रमुख सूत्रनुं जाणपणुं छे चरणसीत्तरी करणसीत्तरीने विषे कल्प, अकल्प, उत्सर्ग अपवाद इत्यादिक जाणपणुं छे तथा ते मध्ये जे दुषण लागे तेनी आलोवण निसियसूत्र तथा बृहत्कल्पसूत्र प्रमुखना जाण छे आलोवण आपवालायक ए गीतार्थ छे ए त्रणे अनुयोग व्यवहारथकी छे तथा द्रव्यानुयोग ते मध्ये षट्द्रव्यपंचास्तीकायनी व्याख्या अने जो आत्मस्वरुपनुं जाणपणुं न होय तो ए सर्व व्यवहार ज्ञान छे एने बाह्यज्ञान कहीए अने जो आत्म-

स्वरूपनुं जाणपणुं होय तो ते अत्यंतरज्ञान छे एम ज्ञानसहित जे मुनिराज छे. पण व्रतथकी हीन छे परंतु व्रतादिक कंइ पाळता नथी तोपण बहु कहेतां घणाज उत्तम छे शा माटे प्रवचनना प्रभावक छे परंतु जैनशासन स्थापवामां ते अग्रेसरी छे माटे एने उत्तम कहिए. शा माटे जे नय दुःकर कहेतां जे दुःकरकरणीनो कर्ता एनेज कहिए परंतु जे कष्ट क्रिया आतापना प्रमुख करे छे तथा पंचमासखमन चौलां पाळे छे वेतालीस दोषरहित आहार ले छे इत्यादिक जे कष्ट करे छे तेने कंइ दुःकर करणी कहीए नहि. एतो साधना मात्र छे ए बाळजीवनी करणी छे ए क्रियानय छे, ते दर्शनना उच्चाण आसरी तथा बाळजीव छे तेने वाडामां राखवा वास्ते छे. माटे ए क्रियानय छे ते सामान्य छे ने ए क्रियावाळा ने कंइ दुःकर कहेवाय नहि. अने ज्ञाननय छे ते तो दुःकर छेज शा माटे जे क्रियाना करनार सो नर कन्ये थाय ज्ञानना जाणनार एक नीकळे तो दृष्टांत माटे ज्ञाननुं जाणवुं एज मोटा दुःकर छे

अने ज्ञानी पुरुषनी सेवामां रेहेवुं ए पण डुःकर ठे तथा अन्यदर्शनीउ तथा स्वदर्शन दिगंब-रादि मतवाला इत्यादिकनी सन्नाउ थाय ठे ते सन्नाउने विषे सामानी वात जुठी नराववी अने पोताना दर्शननुं स्थापन करवुं ते कंई ठोकरानी रमत नथी. केमके ते पण सामा पंडित ठे माटे शासनतो ते थकी रहे पण कंइ क्रिया प्रमुख-वाल्या थकी रहे नहि. माटे ज्ञान नय छे ते डु-क्करज ठे. माटे तेने डुष्कर कहिने बोलाव्या पण जो सदाए आत्मा नीरमणता होय तो तो ए डुक्कर करणनो कर्ता ठे. पण क्रिया कष्टनां क-रनारने डुक्कर करणीनां करनारा केहेवाय नहि एटले ए बे गाथानो नेगो अर्थ कह्यो.

॥ गाथा ॥

इत्यादीक बहु शास्त्र जोइ, आलपंपालने टालोरे ॥ प्रमादनावने दूर करीने, ज्ञानवामीमां मा'लोरे ॥ ज्ञा० ॥ १ए ॥

हवे ए गाथानो अर्थ कहीए ठीए इत्या-दिक केहेतां पूर्वे कह्यां ते शास्त्रनी साख्यो ते

शास्त्र तथा बीजां पण अनेक शास्त्रने विषे ए ज्ञान तेज मुख्य कह्युं छे. ते वस्तुने हृदयने विषे धरीने तेनीज श्रद्धा करीने आळपंपाळ कहेतां जे नैगमादिक नयना पक्ष धर्मव्यवहार विनाना तथा कुनयना पक्ष जे पासत्थादिकना बांधेला ग्रंथो ते मार्ग ते सर्वे आळपंपाळ कहीए तेने टाळवा नाम दूरे करो एटले प्रमादभाव कहेतां जेने विषे वस्तुधर्मनो विचार नहि तेने प्रमादभाव कहीए. ज्यां आत्मउपयोग छे त्यां अप्रमादभाव कहीए ए आत्मउपयोग विनानां जे कारण करवा ते सर्वे प्रमादभाव जाणवो. तेने अळगो करीने ज्ञानवाडीमां महालवुं कहेतां जे ज्ञानरूप वाडी छे तेने विषे क्रिडाविनोद करूं. हवे ते ज्ञानवाडीनुं किंचित् स्वरूप देखाडुं छुं. अहियां स्वभावपुर नाम पाटण तेने विषे ए ज्ञानवाडी छे, ते केवी छे ते वाडीनुं नाम ज्ञान तेने फरतो कोट संवररूपी छे एटले ज्यां मन, वचन कायानो जोग तथा अशुद्ध उपयोग, ए अहियां रोकाणो एटले त्यां राग, द्वेष, मोह, विषयकषायादिक चो-

टा ए कोटने विषे कोइ पेसी शके नहि. तथा उपयोगद्वार छे तेनी अंदर जे गुणरूपीओं वृद्ध ते अनंता छे ते बे जातनां छे. एक समवोइ ले- वारुप कुसुमनुं झाड छे. एक आस्वादन लेवा- जोग फळवृद्ध छे. हवे तेनो विवरो कहुं ते सां- भळो. जे ज्ञानादिक अनंता गुण आत्माना छे ते रुप तो वृक्ष छे अने जे आत्माना अनंता प- जायरुप एनां पांतरां प्रमुख छे. शुद्ध व्यवहार रुप एनां पुष्प छे, अने शुद्धनिश्चयरुप एनां फळ छे ते वाडीनीमांहेली कोरे अनुभवरुपी एक म- हेल छे तेने विषे अनेक जातनां क्रिया करवानां स्थानक छे. त्यां आतमाराम बेसीने क्रिया करे छे एटले ज्यांसुधी सुखवोइनी इच्छा छे त्यांसुधी भेदज्ञानमां रमे जने फळना अस्वादननी इच्छा छे ते अभेदज्ञाने स्थिर थाय. अहियां कोइ कहेशे जे फळ मुकीने पुष्पसुगंधनी इच्छा कोण राखे? तेनो उत्तर जे जेनी पासे थोडी पुंजी होय तेनाथी ए फळ लेवाय नहि, केमके ते बहु मोघा मुलनां छे अने थोडी पुंजीवाळा छे ते पुष्पादि-

कनी सुगंध लइने खुशी थाय छे. अहियां कोइ कहेशे जे ज्ञानभावने विषे बे जाति केम बतावो छो? जे पुष्पवृक्ष फळ न आपे एवुं ज्ञान कोण छे. ज्ञानवृक्ष तो सर्वे फळ आपेज. तेनो उत्तर जे ज्ञान छे ते बे प्रकारनुं छे. भेदज्ञान १ अभेद ज्ञान २ ते मध्ये ज्ञान छे ते पुष्पवृक्षरुप छे एटले तेनी सुगंध घणी उत्तम छे पण फळनी प्राप्ति अहियां थाय नहि तेनो विवरो सांभळ. जे प्रथम चतुर्थ गुणठाणे भेदज्ञान प्रगटे त्यां जीवनो ने जडनो भेद नोखो पामे तेवारे जीवरुप वृक्षने प्रागभावरुप पुष्पनी फूट थाय पछी तेज गुणठाणामां वृद्धि पण थाय कोइने तेटलुं पण रहे त्यार पछी अष्टमगुणठाणे जाय त्यां श्रेणीरूढ कहीए त्यां ते पुष्पनी वृद्धि घणी थाय. शा माटे पूर्वे तो जडचेतननो विभाग कर्यो हतो अने अहियां तो जे चेतनभाव आत्मा छे तेना गुणप्रजाय लक्षण स्वभाव ए सर्वे भिन्न भिन्न करे अने ते विचारने विषे स्थिर भाव होय तथा ते प्रजाय प्रमुख गुणने विशे पण संक्रमावे ए या-

वत् दशमा गुणठाणा सुधी ज्ञेदज्ञान छे ते ज्ञेद ज्ञानरुप पुष्पनी सुगंध घणीज वृद्धि पामे पण अहियां सुधी फळनी प्राप्ति नथी माटे एने पुष्पवृक्ष कहीए तेज आत्मा अज्ञेदज्ञाने पहोंचे, तेने फळवृक्षनी प्राप्ति थाय अने त्यांज आस्वादन ले एटले त्यां मुक्तिरुप फळनी प्राप्ति थइ! अहियां कोइ कहेशे मुक्ति तो चौदमा गुणठाणाने अंते ठे अने तमे वारमे गुणठाणे केम वतावी? तेनो उत्तर जे फळ थाय ते एक साथे फळ परिपक्व थतुं नथी जेम केरी फळरुप ठे ते आंबाने प्रथम मगीओ थाय, पठी मरवा थाय, त्यार पठी केरी थाय ते पठी साखतो थाय. पण ज्यांथी मगीओ वेगे त्यांथी फळ कहेवां तेम अहियां वारमे गुणठाणे वीतरागज्ञावरुप मगीओ प्रगट थयो. मुक्ति कहेतां रागद्वेषनी मुक्ति थइ एटले रागद्वेष टळी गयो, माटे अहियां फळनुं आस्वादन थयुं एवां जे वे प्रकारनां वृक्ष ते वाडीमां ठे तेमां अनुज्ञवरुपी आ महेलने विषे वेसीने ए पुष्पनी सुगंध ठउं वुं अने त्यां अनेक जातनां क्रिडा-

वेनाद ते प्रत्ये करुं तुं एटले ए ज्ञानवाम्ही श्रो-
ध्वार्वी एटले श्रीगणीमर्मी गाथानो अर्थ संपूर्ण
थयो. ॥ गाथा ४० ॥

नव्य जीवना हितने अर्थे । एह संबंध ते
रान्योरे ॥ श्रीगणीने चोवीमनी माले । माहा
द दशमीए नान्योरे ज्ञा० ॥ ४० ॥

ए गाथानो अर्थ एटले आ जे स्तवन कर्युं
एक नव्यजीवने उपकारनिमित्त कर्युंछे, तथा
ानना महिमा देखाडवा वास्ते कर्युं हतुं. पण
ताप्रमुख ज्ञानअर्थी जीव ते वळगया जे आ-
ने ए स्तवनथ वग वग खुलासो न थाय माटे
पा करने स्तवन उपर ग्रंथ बांधी आपो. ते
ोनाना आग्रहथकी ग्रंथ बांध्यो छे. अहियां
ाड कहेश जे स्तवनना गाथा नो एकवीसज
अने ग्रंथ ना तेम वह नार करी नांख्या तेनो
ुत्तर जे न्यायग्रंथ छे ते ना एकेक पद उपरथी
ठाप थइ जाय तोपण कम ना ग्रंथ नार थ-
ाना नयथकी विचार विचारीने संक्षेप वार्ता
ांनी छे. यद्यपी जो जोशो ना स्याद्वादमंजरी-

ना मुळगा श्लोक बत्रीश ठे ते उपर टीका त्रण हजार ठे तथा संमतिग्रंथनी मुळ गाथा श्रोगणचालीस ठे. बाकी प्रेदक गाथाश्रो ठे तोपण पांचसेंने श्राशरे ठे ते उपर टीका एकतो बत्रीशहजारी ठे तथा एक पचीसहजारी ठे तथा एक पांचहजारी ठे. माटे श्रहियां न्यायग्रंथने विषे मुळ सर्वेनुं थोडुंज होय ने श्रर्थ तो घणोज होय तथा व्यवहारशास्त्रमां पण एमज ठे. शा माटे के श्रावश्यकनुं वसें श्लोकनुं पण पुर जणातुं नथी ने ते उपर टीका बावीसहजारी ठे. तथा बृहत्कल्पनुं मूळ पांचसें श्लोकने श्राशरे ठे ते उपर टीका पंचावन हजारी ठे तथा बेंताळीश हजारी ठे माटे शास्त्रना मुळ उपर टीकानो नियम नहि एम समजवुं. हवे ए सर्व ज्ञाननो महिमा देखाडयो एटखे ए स्तवन श्रोगणीसेने चोवीशनी सालमां माहा वद दशमने दिवसे करेखुं ठे एटखे ए वीशमी गाथानो श्रर्थ कह्यो ॥

ते कारण बहुश्रुतने जोइ । सेवा तेहनी कीजेरे ॥ मुनि हुकम कहे ज्ञानने पामी ॥ सेजे

शिवसुख लीजे रे ज्ञा० ॥ २१ ॥

एनो अर्थ.—अहो भव्यजीवो! अमारो हेतु उपदेश तमने सर्वने छे माटे बहुश्रुतगुरु जोइने तेनी सेवा करो तथा तमने धर्मनी प्राप्ति थशे, अने तेज तमने ज्ञानमार्ग देखाडशे. पण जेनी पासे आत्मउपयोग नथी ते तमने ज्ञानमार्ग क्यांथी देखाडशे? ते कारण माटे एवा बहुश्रुत स्वस्वरूपना उपयोगवंत तेनी पासेथी तमो आत्मस्वरूपने ओळखो अने तेने विषे रमणता करो तेने ज्ञानअभ्यास कहीए ते तमे करो. हवे मुनि केहेता जे अरिहंतपरमात्मा तेनो हुकम केहेतां जे आज्ञाने एवीज रीते फरमावी छे ते कारण माटे एवी आत्मस्वरूपज्ञाननी रमणता करनारने निश्चय थशे तो एमज केहेतां स्वभावज मुक्ति थशे ने शिवरमणीनां सुख भोगवशो अनंतासुख अनागतकाळ अनंता छे त्यां सुधी तमे सदायकाळ सुखमां रहेशो. ए एकवीसमा गाथानो अर्थ संपूर्ण. तथा स्तवननो अर्थ पण समाप्त थयो. अहियां कोइ कहेशे जे तमे

ज्ञाननुं बहुमान तो घणुं कर्युं अने क्रियानुं तो अपमान कर्युं, तेनो उत्तर-जे आ संसारमां ए रीती छे के जे पक्षमां बेसे तेनुं बहुमान करे अने सामा पक्षनुं अपमानज थाय एक तो एज कारण छे. हवे बीजुं कारण समजो जे आ ग्रंथनुं नाम ज्ञानभुषण छे एटले ए ज्ञाननुंज आभरण छे. जेम आभरणवडे मनुष्य शोभे छे, तेम आ ग्रंथवडे करीने ज्ञान घणुं दीपी उठे छे माटे ज्ञाननयने विशेष करतां कोइ रीतनुं दुषण नथी ए तो धर्मनी वृद्धिकरता छे ने महानिर्जरानुं कारण छे. अहियां कोइ तर्क करे के भगवाने सात नय कह्या छे ते कंइ खोटा ? तेनो उत्तर जे-भाइ तें तर्क करी पण तुं कंइ सात नयमां समजतो नथी अने भगवाने जे सात नय कह्या छे ते तो सत्यज छे पण अज्ञानी जे नयने नथी समजता अने मुखथकी सात नय सात नय पोकार्या करे छे ते धणी नयनी वातमां शुं समजे? ने धर्मनी वातमां पण शुं समजे? हवे जे परमात्माए सात नय कह्या छे ते तो सत्यज छे

माटे ए नय देखीता पदार्थने विषे ए नय सत्य छे तथा रुजुसूत्रनय छे ते तो मनना परिणामने ग्रहे छे ते तो सिद्धसंसारी तेने करीने माने छे, एटले जे समये जेवा पणिाम तेने तेवा कहे छे ए वात ग्रहणने विषे ए नय सत्य छे परंतु परिणाम छे ते तो जम छे ने क्षणभंगुर छे एटले क्षणक्षण परिणामनुं परावर्तन धर्म छेज एम समजवुं माटे ए चार नय सुधी तो कंइ धर्म तो छेज नहि अने धर्म तो परमात्माए उपली त्रण नयमांज परुप्युं छे माटे ए साते नय सत्य छे पण ते सर्वने स्थानके छे माटे धर्मअर्थी जीवोने उपली त्रण नयनोज खप विशेष करवो. अहियां कोइ कहेशे के एतो एकांतवाद थाय तेनो उत्तर जे शुगडांगजीने विषे कह्युं छे जे " एकांते होयमिथ्यात" ते एकांतपक्ष बोले तेने मिथ्यात्वी कह्यो छे ते क्रियापक्षने कह्युं छे जेम कोइ जान लइ जाय ने मही वर नथी ने मोटो आआडंबर करे अने कहे जे वरनुं शुं काम छे ते जान कोइ ठेकाणे आदरमान पामवानी नथी

अने जो वर नेगो हशे गांमेघेलो तोयपण ए जान मान पामशे अने वर तो एकलो जशे तोए मान पामशे. तेम अहियां क्रियापदी आत्मज्ञान विनाना ते जीवनुं कल्याण पण नथी ने मारी गति पण नथी अने जो गांमोघेलो वरयो ग्य आत्मज्ञान थोडुं पण हशे तो ते जीवने शु नगति थशे अने जे ज्ञानअनुजव जेने प्रगटयो ने तो सर्वथा प्रकारे क्रियानो संग नहिज करे ए जीव तो एकांतपदें पोताना आत्मस्वनावनी ज तेमां रमणता करे अने ते जीव मुक्ति पामशे शा माटे जे अप्रमादिगुणठाणेथी क्रिया बिलकुल ने नहि अने मुक्ति तो ते गुणठाणामांज छे अने गुणनी वृद्धि पण ते गुणठाणामां ने माटे ज्ञा नपदव्याख्याने एकांतवादी शास्त्रग्राह्य कहेता नथी ने तो महाधर्मीष्ट ने अने महा उत्तम पुरुष ने. अहियां कोइ कहेशे जे व्यवहार तो तेरमा गुणठाणामां रह्यो ने तेनो उत्तर जे तेरमे गुणठाणे कांइ नवो गुण तो प्रगट थवानो नथी अने अहियां क्रियाव्यवहार पण कंइ ने नहि

अने क्रिया करे तो शुं फायदो आवे ते बतावो अहियां तो जे गुण प्रगट्या छे ते गुण मुक्तिमां पण लागवाना छे अने अहिया जे क्रिया छे ते पूर्वकृत्यकर्म चार बाकी रह्यां छे ते कर्मना उदयने विषे प्रवर्त्तवुं ते क्रिया छे पण प्रतिक्रमण पडीलेहण प्रमुख तमारी क्रिया ते तो कंइ छे नहि. अहियां कोइ कहेशे जे भगवाननो मार्ग तो स्याद्वाद छे अने आ वचनथकी स्याद्वाद रहेतो नथी तेनो उत्तर जे जेने अनुभवज्ञान प्रगट्युं छे ते तो जाणे जे स्याद्वाद सहितज वचन छे अथवा जेणे न्याय प्रमुखनां शास्त्र जोयां होय तेना पण समजवामां आवे के वचन स्याद्वाद छे पण जेने ए वस्तुनी खबर नथी ते बिचारा स्याद्वादमां शुं जाणे. हवे जे स्याद्वाद शब्द छे ते कहुं ते समजजो साते नयनुं स्वरुप छे तेज स्याद्वाद छे तथा द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक पक्षप्रमाण प्रमुख स्याद्वादज छे तेनुं स्वरुप जाणे तेने स्याद्वाद कहीए अने तेनुं वचन ते स्याद्वाद विना होय नहि. हवे स्याद्वाद कहेतां कोइ सप्तभंगीना स्व-

रुपने माने ते पण सर्व आ ग्रंथने विषे आवेलो छे तथापी स्याद्वाद कंइ क्रियापदमां लागु पडतो नथी एनो निष्केवळ एक नास्तिकभावमां पामीए एटले ज्ञान अने क्रिया ए बेनी सप्तभंगी करीए त्यां पण नास्तिकभावेज लाधे तथा संवर तथा आश्रवनी सप्तभंगी करीए त्यां पण क्रिया नास्तिकभावज होय शा माटे जे स्वस्वभावे अस्ति ने परस्वभावे नास्ति एटले ज्ञानना स्वभावमां क्रियानुं नास्तिकपणुं रह्युं छे अने ज्ञान छे ते तो आत्मस्वभावज छे अने क्रिया छे ते पुद्गल स्वभाव छे माटे स्वस्वभावे अस्ति अने परस्वभावे नास्ति त्यां क्रिया नास्ति भावमां रही तथा ज्यां संवरभाव छे ते तो स्वस्वभाविक छे अने आश्रवभाव छे ते परस्वभावि छे माटे संवर छे ते आत्मा छे अने आश्रव छे ते जडभाव छे अहियां कोइ कहेशे जे आश्रवभाव तो मिश्रस्वभाव छे ते वात खरी छे पण ते तो व्यवहारनयने मते छे पण ज्ञानने मते तो ते अजीव छे माटे ज्यां संवरभाव छे त्यां आश्रव नास्तिभावे

रह्यो छे अने क्रिया छे ते आश्रवभावज छे ते संवर थवानो नथी. हवे जे आस्तिनास्ति सप्तभंगी छे तेने विषे तो परभावनुं गवेखवुं थाय ते तो नास्तिभावे थाय माटे स्वस्वभावने परस्वभाव ए बे मळीने सप्तभंगी थाय एटले ए स्वपरग्राही सप्तभंगी छे जे सप्तभंगी स्वग्राही छे ते कहुं ते सांभळ. सामान्य तथा विशेष तेनी सप्तभंगी थाय तथा ते नित्यअनित्यनी सप्तभंगी थाय तथा एक अनेकनी सप्तभंगी थाय तथा सत्यअसत्यनी सप्तभंगी थाय. इत्यादिक घणी सप्तभंगी थाय छे ते सत्य छे ने स्वग्राही छे माटे ते स्वग्राहीसप्तभंगी तेने स्याद्वाद कहीए एटले ए स्याद्वाद सत्य छे, ते सप्तभंगीनुं स्वरुप संक्षेपे करी देखाडुं छुं. स्यादसामान्य १ स्यादविशेष २ स्यादसामान्यविशेष ३ स्यादअव्यक्तव ४ स्यादसामान्यअव्यक्तव ५ स्यादविशेषअव्यक्तव ६ स्यादसामान्यविशेषजुगपतअव्यक्तव ७ एटले ए सात भांगा थया एनुंज नाम सप्तभंगी कहीए. हवे एनो अर्थ कहुं ते समजो सामान्य कहेतां जे सरखो भाव सर्वमां

लाधे एटले जेम चेतनालक्षण निगोदथकी ते सिद्ध सुधीमां सरखो जाव ले. ए सामान्य कहीए ते सामान्य ७ प्रकारे कह्या ले तेनां नाम कहीए छीए. अस्तीत्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ सत्त्व ५ अगुरुलघुत्व ६ ए ६ सामान्यगुण ले पण ते तो सर्व द्रव्यने आश्रीने ले ने अहियां तो चेतनद्रव्यनुंज कहेवुं ले माटे अहियां बे गुण बीजा पण लेवा. चेतनत्व १ अमुर्तत्व २ ए आठ लक्षण सामान्य जीवद्रव्यने विषे ले ते अमे पूर्वे सामान्यगुणमां कह्यां ले. ए सर्व लक्षण होय तेने सामान्य कहीए. ए सामान्य बे प्रकारे करीने ओळखावुं छुं. बाह्यथकी १ अभ्यंतरथकी २ जे जीव चेतनालक्षणमात्र ले ते केवळी वचने प्रमाण ले एवा जे अव्यक्त निगोद पृथ्वि आदिक अव्यक्तजावे ए जीव सामान्य कहेतां सरखे जावे ले तथापि जे त्रसजीव ले ते त्रास पामे छे तथा ट्हाड़, ताप, क्षुधा, तृषा प्रमुख वेदे ले ते ए जाव ए सरखां सामान्यस्वजावे चारे गतिमां ले ए बाह्यथकी जाणवा तथा अ-

भ्यंतरथकी जीवमात्र अरुपी गुण सरखो ठे अमुर्त्ति तथा अविनाशी तथा अरागी अद्वेषी तथा ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य इत्यादिक सामान्य स्वजाव सर्वे जीव निगोदथी ते सिद्ध सुधी सरखा गुण लाधे छे ते सामान्यस्वजाव कहीए पण शक्तिजावे ठे. हवे जे विशेष गुण ठे तेना बे प्रकार ठे एक बाह्यथकी १ तथा एक अन्यंतर थकी २ हवे बाह्यथकी जे निगोदीआ करतां पृथ्वी आदि जीव तेनी काया प्रत्यक्ष जोवामां आवे ठे तो निगोदीआ करतां ए विशेपज ठे अने ते मध्ये पण वनस्पतीने विषे चारे संज्ञा आदि जोवामां आवे ठे तो ए प्रत्यक्ष विशेषपणुं जोवामां आवेछे ते करतां त्रसजीव ठे तेमां विशेषपणुं जोवामां आवेठे तेथी तिर्यचपंचेन्द्रि तेथी मनुष्य एक एकथकी एक एकमां विशेषपणुं जोवामां आवे ठे ए सर्वे बाह्यथकी समजी लेवुं तथा अन्यंतर विशेष जे ठे ते मनुष्य देवगतिथी नीचली गतिवाळा जीवोने ज्ञान ओछुं जासन थाय ठे अने देवनी गति करतां मनुष्यनी गतिने विषे

केवळज्ञान तथा केवळदर्शन ए घणो विशेष गुण वे एटले ए बन्ने सामान्य विशेष ओळखावा वास्ते कह्युं तथा बीजे प्रकारे सामान्य विशेष ओळखावुं ते समजो. हवे जीवद्रव्यने विषे सामान्य विशेष लक्षण कहुं छुं. त्यां प्रथमथकी सामान्यविशेषनुं लक्षण कहुं छुं जे जीवद्रव्य प्रथमथकीज पोताना द्रव्य ते विशेज व्याप्तो होय तथा गुणप्रजायमां पण सदाय पोतेपणामां एटले व्यापक पण सदाय एने विषे छेज तेने सामान्यस्वभाव कहीए छीए ते सान्यस्वभाव तो एकज होय एनो बीजो भाग थाय नहि ते सदाय काळ नित्य होय, अविनाशी होय तथा अवयव अविभाग रहित सर्वगत कहेतां सर्व जीवद्रव्य आप आपणामां व्यापकपणेज रहे छे तेने सामान्यस्वभाव कहीए एटले सामान्यस्वभाव कहेवानो सार शुं छे के जीवद्रव्य एक पिंडपणेज छे एम सर्वगुणप्रजाय ए सर्व मळीने एकज द्रव्य छे ए सदाय नित्यज छे एने सामान्यधर्म कहीए. ए जीवद्रव्य एक एवा अनंता निगोदथी ते सिद्धपर्यंत एकसरखाज जा

णवा. अहियां कोइ कहेशे जे गुणप्रजाय प्रदेश अनेक छे तेने एकरुपे केम कह्यो छो? तेनो उत्तर जे ए गुणप्रजाय प्रदेश छे ते सर्व एक पिंड रुपेज छे ए कंइ भिन्नरुपे थाय नहि अने पोतानो सामान्यस्वभाव छोडे नहि माटे एने सामान्यज कहीए, ए सामान्यस्वभावनुं प्रणमन कह्युं ते सामान्यस्वभावना बे भेद छे ते शास्त्रप्रवर्तन तथा लोकव्यवहारे ग्रहण थाय छे ते कहुं छुं महासामान्य १ तथा अवांतरसामान्य २ ए बे भेद छे. तेमध्ये जे अस्तित्वादिक सर्व पदार्थने विषे ए छेज तेने माहासामान्य कहीए एनी श्रुतज्ञानवडे करीने प्रतित थाय पण जाणवा देखवामां आवे नहि एने महासामान्य कहीए तथा केवलदर्शनवालो होय तेज जाणे. हवे जे परोक्ष न ग्रहवाय ते माटे एने माहासामान्य कहीए तथा अवांतरसामान्य ते चक्षुदर्शन तथा अचक्षुदर्शन तथा अवधीदर्शन करी ग्रहण थाय एटले जेम वृक्षप्रमुख तथा जनावर प्रमुख तथा मनुष्यप्रमुख तथा देवप्रमुख अनेक जातिओ छे. तेमध्ये वृक्षपणुं तथा जानवरपणुं तथा मनुष्यपणुं

नहि. माटे माहासामान्य केवळी विना बीजो न जाणे अने श्रुतकेवळी तथा देव जे उपरना मोटी रिद्धिवाळा छे ते जाणे पण केवळीना वचनथकी जाणे पण पोताना प्रत्यक्षज्ञानथी तथा पोताना प्रत्यक्ष दर्शनथी देखवुं जाणवुं न थाय एटले ए संक्षेपथकी सामान्यस्वनाव ओळखाव्यो एटले पहेलो नांगो स्यात् सामान्य ते नांगानो अर्थ कह्यो हवे जे विशेष धर्म ठे ते पण ज्ञानगुणेकर ने ग्रहण थाय ठे ते विशेषनुं लक्षण कहीए ठीए के एक एक जीवद्रव्यने विषे केटलाएक धर्म नित्य ठे केटलाएक धर्म अनित्य ठे केटलाएक ठेकाणे अवयव सहित ठे कोइक रीते अवयवरहित पण ठे एटले जे स्वपर्याए सामर्थ्यपर्याए करी निरअवयव ठे अने अविनाग पर्याएकरी सअवयव छे कोइ जगाने विषे सक्रिय ठे एटले सक्रिय कहेतां क्रियारुप हेतु, मळवाय की देशगत कहेतां कोइ कहेशे ए गुणमां व्यापे छे पण गुणांतर कहेतां पोताना गुणनी अंतर्भूत व्यापी शकता नथी ते माटे एने देशगतज कहीए ए देशगत ते आखा द्रव्यमां व्यापकज होय

एटले जीवद्रव्यना असंख्यात प्रदेश ते व्यापे तेथी एने सर्वगत पण कहीए एम विशेष धर्मने विषे ज्यां जेवुं कारण होय त्यां तेवुं जोमी लेवुं जे कार्य जे कारणथकी विशेष थाय ते गुणने पण विशेष धर्मज जाणवुं ए सर्वने विशेष स्वभावज कहीए तथा पूर्वे विशेष धर्मनी ओळखाण कही हे ते सर्व आ भागामां लेवी एटले ए स्यात् विशेष ए बीजो भांगो कह्यो. हवे त्रीजो भांगो स्यात सामान्य विशेष नामे हे ते सामान्य जे जगाए हे तेज जगाए विशेष पण हे जे जगाए विशेष हे, ते जगाए सामान्य पण हे एटले सामान्य विना विशेष कोइ काळे होय नहि अने विशेष धर्म सामान्य सत्तामां रह्योज हे जो हतिपर्याए हे तो सामर्थ पर्याय थाय हे माटे ए त्रीजो भांगो थयो स्यात् सामान्यविशेष कह्यो. हवे स्यात् अवक्तव्य कहेतां मुखथकी जे उच्चारण न थाय तेने अवक्तव्य कहीए, एटले आत्मधर्मना असंख्याता प्रदेश अनंता गुण अनंता पर्याय ए सर्व मुखथकी उ-

चारण थाय नहि. जेटला मुखथकी उच्चारणमा आवे तेने वक्तव्य कहीए जे उच्चारणमां न आवे तेने अवक्तव्य कहीए ।। शिष्यवाक्य।। स्वामी ए ते सामान्यने अवक्तव्य कहोगो के विशेपने अवक्तव्य कहो गो? तेनो उत्तर जे सामान्य छे तेमां पण अनंता पर्याय अवक्तव्य छे माटे तेने सामान्यअवक्तव्य पांचमो भांगो कहीए तथा विशेपमां पण अनंतापर्याय अवक्तव्य छे माटे ए छहो भांगो विशेपअवक्तव्य नामे कहीए तथा सामान्यविशेपयुगपत् कहेतां जे भेगुं बोलवुं ते पण अवक्तव्य छे एटले ए सामान्यविशेपयुगपत नामे सातमो भांगो कह्यो एटले सामान्यविशेपनी सप्तभंगी कही तेमध्ये छेल्ला चार भांगानो विस्तार कर्यो नथी ते पंमितो पोतानी बुद्धिथी करजो, अथवा शास्त्रथी करजो एटले ए प्रथम सप्तभंगी कही. हवे बीजी सप्तभंगी नित्यअनित्य ते नामे कहुं छुं।। स्यात्नित्य १ स्यात्अनित्य २ स्यात्नित्यानित्य ३ स्यात्अवक्तव्य ४ स्यात्नित्यअवक्तव्य ५ स्यात्अनित्यअवक्तव्य ६ स्यात्नित्यअ-

नित्ययुगपत्अवक्तव्य. ७ हवे तेनो अर्थ नित्य कहेतां जे सदाय काळ छे ने छे कोइ काळे एवुं अनित्यपणुं नहि थाय एटले सदाय काळ जीव द्रव्य नित्य छे तथा चेतनालक्षण जीव ते पण नित्य छे तथा गुण कहेतां ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ वीर्य ४ ए गुण सदाय नित्य छे. अहियां कोइ कहेशे जे केटलाएक जीवद्रव्यमां ए गुण जोवामां आवता नथी. केटलाएक जीवद्रव्यमां सामान्यविशेष जोवामां आवे छे तेनो उत्तर जे जोवामां नथी आवता ते अव्यक्तव्यभावे रह्या छे एटले केटलाएक द्रव्य छतीपर्याय छे ने सामर्थ्यपर्याय नथी थया ते जोवामां न आवे अने सामर्थ्यपर्याय जे पामेला तेमध्ये सामान्यविशेष नजरे आवे ते क्षयउपसमभावनुं लक्षण छे तथा जे क्षायकभावे सामर्थ्यपर्याय थया होय ते सर्वना सरखा जोवामां आवे एम समजवुं पण कोइ जीवद्रव्य पोताना ज्ञानादिक गुणथकी रहित नथी सदाय ए गुण तो मही रह्याज छे माटे ए गुण पण नित्यज कहेवाय. एवुं श्रीभगवतीसूत्रे कह्युं छे.

॥ उक्तंच ॥

हे गौतमअथ्थीत्तं अथ्थीतेपरिणमइनत्थीत्तं नत्थीतेपरिणमइ ॥

एनो अर्थ के हे गोतम एवुं श्रीवीरपरमात्मा कहे छे अथ्थीत्तं कहेतां अस्तिपणे प्रणमेलो छे अने नत्थीत्तं कहेतां नास्तिपणे प्रणमेलो छे एटले जे प्रणामिकपणुं एटले स्वधर्मने विषे जे प्रणमवुं ते अस्तिधर्म छे तेने नित्यधर्म कहीए एटले स्वद्रव्य १ स्वक्षेत्र २ स्वकाळ ३ स्वभाव ४ प्रणामिकपणे जे प्रणमे तेने प्रणामिकपणुं कहीए, ते प्रणामिकपणुं ए वस्तुनो मुळस्वभाव ते नित्यधर्म छे तेने स्यातनित्य कहीए तथा तेज श्री ठाणंगजीने विषे चोभंगी कही छे.

॥ उक्तंच ॥

सियअत्थि १ सियनत्थि २ सियअत्थिनत्थी ३ सियअवत्तवं ४. एटले ए भांगामांहेलो पहेलो भांगो सियअत्थि कहेतां अवितथ एटले निश्चे एटले ते सदाय नित्यस्वभावे छे एटले ए पहेलो भांगो कह्यो. हवे स्यातअनित्य कहेतां जे पर्यायने विषे

अनित्यपणुं छे शा माटे जे उत्पाद व्यय ने ध्रुव ए त्रिलंगी जे छे तेमध्ये ध्रुवपणुं ते नित्यस्वभावे ग्रहण थाय अने उत्पादने व्यये ते अनित्यपणे ग्रहण थाय माटे उपजवुं तथा विणसवुं ए पर्यायनो धर्म छे ते पर्याय बे प्रकारना छे क्रमभावि १ स्वभाविक २ क्रमभावि जे नरनरकादिक गतिनुं उपजवुं तथा विणसवुं तथा मतना जे पर्यायनुं परावर्तनधर्म ते क्षणक्षण उपजवुं ने क्षणक्षण विणसवुं ए बन्नेथकी एटले उत्पात ने व्ययथकी ए पर्याय ग्रहण थाय छे तेने क्रमभाविपर्याय कहीए तथा स्वभाविकपर्याय कहेतां जे ज्ञानादिक गुणना पर्याय ते समये समये उत्पात ने व्यय थाय छे एटले षट्गुण हाणि वृद्धि ते अगुरुलघुपर्याय कहेवाय ते उत्पात ने व्ययथकी ग्रहण थाय छे अने अगुरुलघु ते ध्रुवथकी ग्रहण थाय छे ते सदाय नित्यज छे जे ज्ञानादिकना पर्याय कह्या ते मतिज्ञानादिक चारे ज्ञान सुधी ए क्षयउपसम उपयोगी छे ए कोइ समे अनंतगुणी वृद्धिनो पण उपयोग होय कोईसमे अनंतगुण

हाणीनो पण उपयोग होय एम अहियां खट्गुणी हाणिवृद्धिनो पण उपयोग होय तथा जे केवळज्ञान छे ते क्षायकभावि उपयोग छे, ते सदाय काळ लाधे ते जे जे द्रव्य क्षेत्र काळ ने भावने विषे सर्व द्रव्यने विषे ए चारे प्रकारे खट्गुणी हानिवृद्धि थइ रही छे ए केवळने पण खट्गुणी हानिवृद्धि छे एटले ज्ञेयविनाशे ज्ञाननो पण विनाश थाय तथा ज्ञेयने उत्पाते ज्ञाननो उत्पात थाय अहियां कोइ कहेशे जे परनी अपेक्षाए हानिवृद्धि थाय छे पण स्वअपेक्षाए तो थइ नहि तेनो उत्तर जे स्वस्वभावमां अगुरुलघु पर्याय सदाय छेज ते पर्यायवडे ज्ञानादिक जे उपयोग ते स्वपरनुं जे जाणवुं ते ए पर्यायवडे छे अने जो ए पर्याय न होत तो ए ज्ञानादिकनुं जाणवुं ते कुटस्थ थात शा माटे जे संसारनी मांहेली कोर जीवपुद्गळ घणा ते द्रव्योनुं समये समये परावर्त्तनधर्म छे ते जो तेनी साथे ज्ञानादिकनो उपयोग नहि करे तो ए उपयोगने शुं कहीए केमके जे जगाए सामो दीठो ते छे-

वक्तव्य कहेतां वचनथकी उच्चारण न थयुं माटे एने अवक्तव्य कहीए ते नित्य द्रव्यादिक अनंता पदार्थ छे अने अनंतागुणादिक पण छे. ते नित्य छे पण ते मुखथकी वधा उच्चारण थाय नहि तेथी ते स्यात् नित्यअवक्तव्य पांचमो भांगो जाणशो तथा जे पर्याय पण अनंता तथा केटलाएक गुण लक्षण स्वभाव ते पण अनित्य छे ते अनंता छे ते पण कंइ मुखथकी कह्या जाय नहि तेथी एने अवक्तव्य कहीए एटले स्यात् अनित्यअवक्तव्य छट्ठो भांगो थयो तथा नित्य-पदार्थने अनित्यपदार्थ युगपत् कहेतां एवे भेगा जे एक समये उच्चारण थता नथी माटे एने युगपत्अवक्तव्य सातमो भांगो कहीए अहियां कोइ कहेशे जे त्रीजा भांगा ने सातमा भांगामां कंइ फेर पडतो नथी. तेनो उत्तर जे त्रीजे भांगे कंइ वक्तव्य अवक्तव्य कहेवानुं कारण नथी पण नित्य कहीए त्यारे अनित्य बोलाय नहि. नित्य कहेतां अनित्यनुं मृषावाद लागे अनित्य कहेतां नित्यनुं मृषावाद लागे शा माटे के बन्ने

साधे तो बोलायज नहि तेनो अनुक्रमे बोलाय ए माटे स्यात्पद लइने बोलीए के कंइ दूषण लागे नहि एटले ए त्रीजा भांगानो विचार कह्यो हवे जे सातमो भांगो छे ते अवक्तव्य आश्री छे एटले जे वचनथकी उच्चारण नथी थया एवा जे पदार्थ गुणपर्याय प्रमुख जे नित्य पण अवक्तव्य छे ने अनित्य पण अवक्तव्य छे एकेको बोलवाने पण अवक्तव्य छे तो बेगां बन्ने बोलवा ते तो शेना होयज माटे ए युगपत्अवक्तव्यज छे एटले ए नित्यअनित्यनी सप्तभंगी देखाडी ए सप्तभंगी जे जाणे तेने समकिती कहीए जेणे ए सप्तभंगीनुं स्वरुप जाएयुं नथी तेने मिथ्यात्वी कहीए ए श्री विशेषावश्यक ग्रंथमध्ये कह्युं छे.

॥ उक्तंच ॥

सदसदविशेषणाउ । भवहेउजदृछीउवलं-उनाणफलाभावाउ मिथ्यादिठीसअन्नाणं॥ १॥

ए गाथानी टीकामध्ये स्याद्वादोपलक्षिता वस्तु स्याद्वादमत्र सप्तभंगी परिणाम इत्यादिक अर्थ छे तो मुळ ए गाथामां सदसद् एवुं जे पद

तेथकी सत्य असत्यनुं जाणवुं तेने समकिती
ह्या ले एटले सदसद् कहेतां जे सप्तभंगी अ-
क जातनी वस्तु ग्रहण थाय अने असत्य व-
तु दूर थाय तेने समकिती कह्या ए विनाना जे
ह्या तेने मिथ्यादृष्टि कहीए तेमज रत्नाकराव-
तारीकाने विशे कहुं ले.

॥ उक्तंच ॥

एके कस्मिन द्रव्ये गुणे पर्याये च सप्त सप्त
भंगाभवंत्येवःअनःअनंत पर्यव परिणते वस्तुनि
अनंताः सप्तभंग्योभवंति.

एनो अर्थ एने विषे एवुं कहुं जे एक एक
द्रव्यगुण प्रजायने विषे सप्तभंगीओ थाय अनं-
ता प्रजायनुं परिणमवुं वस्तुमां अनंतु छे तेथी
सप्तभंगीओ पण अनंती थाय माटे जैनधर्मने
विषे जे स्याद्वाद धर्म स्वग्राही पणाने विषे छे
ते सत्य ले ते उपली ए टीकाना अर्थ थकी सम-
जी लेजो माटे ए स्याद्वाद वीना जे मार्ग च-
लवे ले ते अज्ञानी ले एटले ए स्याद नित्यानि-
त्यनी सप्तभंगी पुर्ण थइ एटले ए बीजी सप्तभंगी

पुर्ण थइ हवे त्रीजी सप्तभंगी एक अनेकनी कहुं हवे एक कहेतां जे आत्मद्रव्य ते एकज छे ते श्री भगवतीजीमां कह्युं छे के दव्वठ्ठी आएसासीआ एटले आत्मद्रव्य सदाए साश्वतो छे तेनो विचार कींचीत् मात्र कहू छुं तथा सव जीव द्रव्य सकरमी तथा अकरमी ते मध्ये संसारी सकरमीने द्रव्य कहीए क्षेत्र थकी क्षेत्रांतरगमन काळ थकी काळांतरगमन भाव थकी भावांतरगमन ए चारे प्रकारे संसारी जीव एकत्वपणे भोगवे छे तेज जीव जेवारे सम्यकदर्शन पामे तेवारे सम्यकज्ञान पण प्रगट थाय सम्यक चारीत्र पण प्रगट थाय तेवारे ते जीव पुर्वे द्रव्यादीक चारे भाव हता ते परभाव ग्राही हतां ते द्रव्यादीक चारेनो आहिंयां नाश करे अने परयुक्तापणु दुर करे त्यारे पोतानुं आत्मस्वरुप नीर्धारपणे स्वरुप भासन थाय त्यारे पोताना स्वरुपमां पोते रमणता करे त्यारे स्वरुप एकत्वपणेज स्वधर्मनो कर्ता पोते थयो अने स्वधर्मनो भोक्ता पण ते थाय त्यारे संपुर्ण परभावने तजे त्यारे नीरावर्ण नीसंग नी-

गमय नीर्धय नीर्मळ सर्व कलंक रहीत एवुं पोतानुं सरुप प्रगट थाय त्यारे अनंत चतुष्टयनी प्राप्ती थाय माटे ए सर्व पद कह्यां ते सर्व मळीने एक आत्मद्रव्य छे माटे स्यात् एक ए पहेलो भांगो थयो हवे बीजो भांगोस्यात् अनेक ते कहीए छइए ज्ञान आत्मा दर्शण आत्मा चारीत्र आत्मा वीर्य आत्मा इत्यादीक अनेक भेद छे तो पण अहियां गुण अनंता छे ते मध्येथी एक ज्ञानगुणना अनेक भेद देखाडुं हुं ते संक्षेप थकी जाणजो हवे ज्ञान एवो एकगुण तेना पांच भेद छे मतीज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधीज्ञान ३ मनपर्यवज्ञान ४ केवळज्ञान ५ ते मध्ये मतीज्ञानना बे भेद छे इंद्रीग्राही १ मनग्राही २ तथा बीजे प्रकारे व्यंजनावग्रह १ अर्थावग्रह २ ते व्यंजनावग्रहनां चार भेद छे ते कहीए छइए श्रोतइंद्री १ घ्राणइंद्री २ रसइंद्री ३ फरसइंद्री ४ ए चार इंद्रीए करीने जे ग्रहण थाय तेने व्यंजनावग्रह कहीए ते अवक्तव्य भावमां जाय हवे अर्थावग्रह कहुं छुं श्रोतइंद्री १ चक्षुइंद्री २ घ्राण-

इंद्री ३ रसइंद्री ४ फरसइंद्री ५ छट्ठुं मन ए छ वस्तु ग्रहण थाय तेने अर्थावग्रह कहीए हवे ग्रहणना चार भेद छे ते अर्था १ इहा २ अपाय ३ धारणा ४ ए चार प्रकार ग्रहण थाय ते मध्ये अर्था तेहना पूर्वे जे छ बोल कह्या ए छ बोल वडे जे वस्तुनी प्राप्ती थइ तेने अर्थ कहीए हवे ते अर्थ वडे प्राप्ती थइ पण वस्तु ओळखी नहि त्यारे तेनो विचार करे तेने इहा कहीए ते [illegible] रूप कोण छे [illegible] आ रस केवो छे ४ आ फरस शा वडे [illegible] आ मन सांभ गयु ६ ए [illegible] आ [illegible] विचार करे त्यार पछी अ-पाय [illegible] जे अमुक वस्तु अथवा अमुक [illegible] इत्यादि [illegible] करे तेने अपाय कहे [illegible] जेने जेवो दीठो [illegible] घणा काळ सुधी धारणा रहे पछी [illegible] इत्यादि [illegible] बोल पूर्वना जोडना चारवीश भेद थाय अने चार बोल पूर्वे व्यंजना वग्रहना कह्या ए जोडतां अठावीश

भेद मती ज्ञानना थया तथा मती ज्ञाननां त्रण-सेने छतरीस भेद पण थाय ते त्रणसेने छतरीश भेद विवरीने कहिए छिए ते तत्वार्थ ग्रंथ थकी

॥ उक्तंच ॥

वहू १ वहुविध २ क्षीप्रा ३ अनिसृता ४ अनुक्त ५ ध्रुवाणं ६ सेयराणं ॥१६॥ एना अर्थ वहु कहेतां एक शब्दने विशे घणा पदार्थ आवे जेम पुरुष छे एटलुं कहेतां घणा पुरुषनो समावेश मही थइ जाय अथवा जेम धानो ढगलो कहेतां घणा धान मही आवे १ अथवा वहु वीध कहेतां तेज धाननो ढगलो वहु वीध कहेतां ए धान चोखा दाळ मग जुवार आदे ए सर्वे एक पदमां समाय अथवा वहु वीध माणश बेठां छे तो ते मध्ये स्त्री पुरुष नपुसक छोकरा अथवा मनुष्यनी अनेक जाती मही समाइ २ क्षीप्रा कहेतां उतावळो अर्थने जाणे तेने क्षीप्रा कहीए ३ अनिसृता कहेतां निश्चे वीना जे जे वस्तुनु ग्रहण करवुं तथा अर्थनु ग्रहण करवुं तेने अनीस्रता कहीए ४ अनुक्रम कहेतां कांइक कहेतुं अथवा सर्वने

कहेवुं ते अनुक्रमे ब बोल ५ एकवार वस्तुग्रही ते कालांतरे भूले नहि ६ ए छए बोल थकी उ- पगांठा एटले विपरीत ए छए बोल कहेवा एक केवो १ एक विधिकेवुं २ घणाकाळे केवुं ३ नीश्री- तकेवुं ४ शंकनकेवुं ५ अध्रुवकेवुं ६ ए बार बोल- नुं ओळखाण करवुं एटले कोइ पुरुष कोइ वातने जाणी एटले थोडु कहेवा थकी घणा प- दार्थने समजे तेने बहु कहीए १ तथा कोइ पुरुष एक वात जाणे ते सर्व घणा पदार्थनुं जाणपणुं थाय तेने बहुविध कहीए २ क्षिप्र कहेतां जे कोइ पदार्थ देखवो तथा इत्यादिक करवुं सांभळवुं ते तरत अर्थने ग्रहण करे ३ अनिश्रीतना कहेतां जे वस्तु पदार्थना कांइपण न अ कर्या नथी तेने अनी- श्रीत कहीए ४ जे एक वचन कोइने कहेवुं अ- थवा सांभळवुं इत्यादिक अनुक्रम करीने समजवुं ते अनुक्रम ते कहीए ५ हवे जे कोइ वस्तु मां- भळी जे या देखी जे इत्यादिक तेनी धारणा घ- णा काळ सुधी पण भूले नहि तेने ध्रुव कहीए ६ हवे जे प्रथम बहु कीधा तो ते एक वचनमां

यणुं समजता तोपण आनो ए थकी उपरांत ठए बोले ठे ते मध्ये एक वचने एकज समजे १ हवे एकविध कहेतां एकज पदनी वात जाणे बीजा पदनी वात जाणे नहि २ एक वात समजतां घणीवार लागे तेने चीरकाळ कहीए ३ निस्यात कहेतां वस्तु तथा अर्थ यथार्थ समजे नहि ४ अनुक्रम विना आगळ पाठळ समजे ५ अने अध्रुव कहेतां ए वातनी यादी रहे नहि ६ ए बार बोल थया ते पुर्वनां अठावीस बोलने बारगुणा करीए एटले त्रणसेंनेठत्रीस बोल थाय तथा तेज त्रणसेंनेठत्रीस बोलने उतपातादीक चार बुद्धिद्वारे गणीए त्यारे तेरसेंनेचुमाळीश भेद थाय ए रीते मतीज्ञानना भेद समजवा. ए बोल सर्व समकीतीमां लाघे. कोइमां ठंग, कोइमां वत्ता, कोइमां सामान्य, कोइमां विशेष ते समकीतनो भेद कींचीत् देखामीए ठइए के,–

॥ उक्तंच ॥

तत्वार्थे निर्देश १ स्वामित्व २ साधना ३ अधीकरण ४ स्थिती ५ विधान ६ सतसंख्या २

क्षेत्र ३ स्पर्श ४ कालं ५ ल्लर ६ न्नावा ७ अल्प बहूत्वेश्च ॥

एनो अर्थ लखीए डइए. प्रथम जे नि-र्देष एवो जे शद्र छे एटले ते जीवादिक स्वरुपनुं कहेतां तत्वार्थनुं सदहवुं एटले कोइ अहिंआं पुछे जे सम्यक् दर्शन उपजे ते शुं एटले तत्व कहेतां जे नव पदार्थ ते मध्ये जीवादी तत्वनी श्रद्धा एटले नवे तत्वनी श्रद्धा सर्व सर्वने स्थानके जीवतत्व एटले आत्मा अरुपी ज्ञानादीक गुणे करी सहीत तेने सत्य करीने जाणवो बाकी सर्वे असत्य. अहियां कोइ कहेशे जे संवरादिकने असत्य केम कहो छो? तेनो उत्तर जे संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए तो पोतेज छे ए कांइ भिन्न नथी, अने जे निर्जरा पद छे ते अधुरो छे त्यां सुधी छे. अहिआं कोइ कहेशे जे मोक्षथी मुकाय त्यां सुधी होय, मुकाया पछी तो कंइ मुक्ति थवानी नथी ए पण अधुराने दीसे छे. तेनो उत्तर जे नीर्जरा तो तेरमा चउदमा गुणठाणा सुधी छे अने मुक्ती तो चउदमाने अंते छे, जे

जीव इंद्रियांथकी मुकाइने सीद्धिपद वर्या तेने
फरी मुकावुं नथी ते सदाए मुक्तज छे अने नि-
र्जरा छे त्यां सुधी बंध पण छे एटले पेहेले गुण-
ठाणेथीज निर्जरातो लागु छेज, माटे अधुराने
निर्जरा छे ने मुक्ति संपुरणने छे माटे ए आत्म-
थकी भिन्नपद नथी माटे एवी आत्मस्वरुपनी जे
ने श्रद्धा वेठी तेने समकीत उपज्युं कहिये ए
पहलो भेद. १ हवे बीजो भेद जे स्वामीत्व के-
हेतां ए समकीतनो स्वामी कोण छे ने समकीनो
स्वामी जीव आत्मा पोतेज छे तेने गति आसरी
स्वामीत्वपणुं देखाडीए छइए, हवे ते जीव साते
नरकने विषे समकीत पामे छे, शा कारणथकी
ते कहीए छइए, जे नरकनी वेदना घणी आ-
करी छेने आगेरशी ने उश्न क्षुधा तृषा प्रमुख
वेदतां थकां दुःखथी गभराणो थको दुःखथी छुट-
वानो उपाय पोते न दीठो तेवारे भावी उपर चीत्त
देइने संतोप करे अने समभावे वेदना वेदे ते मध्ये
कोइ जीव जातिस्मरणज्ञान पामे कोइ न पामे ते-
वारे पोताना पुर्व कृत्य कर्म जाणीने दुःख भोगवतो

समभावे थाय ने वैराग्यनी वृद्धि थाय संसारने अनित्य जाणे, एम करतां कोइक जीव मोहनी कर्मने उपसमावतो उपसम समकीत पामे १ क्षयोपसम समकीत २ क्षाएक समकीत ३ ए त्रणे समकीत नरकगतीनि आश्री लाभे तथा तिर्यंचगतिमां तथा मनुपगतिमां तथा देवगतिमां एटले चारे गतीमां लाभे. अहियां कोइ प्रश्न करे छे जे क्षाएक समकीत एक मनुष्यगतिमांतो लाभे छे पण बीजी त्रण गतिमांतो क्षाएक समकीत लाभे नहि तेनो उत्तर गत आयुबंध क्षाएक समकीतवाळो चारे गतिमां लाभे एटले ए स्वामीत्वपणुं देखाड्युं ३ साधन केहेतां समकीतनुं साधन एटले कारण ॥ ते कारण बे प्रकारे छे एक अंतरथकी बीजुं बाह्यथकी ते मध्ये अंतर कारण छे तेतो समकीत मोहनीनां तथा मोहनीकर्मनी प्रकृतिओनो उपसम ते थकी उपसम समकीत थाय १ तथा मिथ्यात्वादीकने कंइक क्षय करे, कंइक उपसमावे तेने क्षयोपसम समकीत थाय २ तथा साते प्रकृतिनो क्षय करे तेने क्षाएक समकित थाय

ते अंतरंग कारण छे तेनो आत्म स्वभावनो खप करतां मोहनी खपे ते विना मोहिनी सर्वथा खपे नहि एटले ए अंतर कारण कह्युं हवे बाह्य कारण कहीए छीए जे चारे गतिने विषे वेदना प्रमुख अनुभवतां थकां वैराग्य प्राप्त थाय अथवा जातिस्मरणादिक उपजवाथकी कोइ जीवने वैराग्य उत्पन्न थाय एवांज कारण मळवाथकी वैराग्य तथा आत्म स्वभावनी गवेषणा ते थकी मोहनीने उपसम १ अथवा क्षयोपसम २ अथवा क्षायक ३ ए समकीतनी प्राप्ती थाय. एटले ए त्रीजो हेतु कह्यो. हवे चोथो अधिकरण एटले समकीतनो आधार ते शुं ? समकीतनो आधार एक आत्मा छे ते विना बीजोकोइ आधार नथी एटले समकीत ते गुण छे, अने आत्मा ते द्रव्य छे ते गुण द्रव्य विना रहेतो नथी, जेम घट ते द्रव्य, अने जळधारण ते गुण, ते जळ धारण घट विना होय नहि. एटले घटने आधारे जळ रहे छे. तेमज आत्माने आधारे समकीत रहे छे. अहियां कोइ कहे छे जे,–द्रव्य

तथा गुण भिन्न पमी गया, ए जोता अभेद स्वभाव असत्य ठरे. तनो उत्तर जे घट अने जळनो दृष्टांत दीधो, ते दृष्टांत तो देशेज होय पण साकरनी मीठाश ते भिन्न होय नहि, ते एक रुपेज ठे तेम आत्मा अने समकित एकत्व भावेज होय पण भिन्नभाव न होय. अहियां जे भिन्नभाव वचन उच्चारण कर्युं तेनुं कारण एम ठे जे हेतु ए ठए बताबाना ठे तेथी ए व्यवहारनयनी परुपणा ठे ने व्यवहारनय थकी सदाए भिन्नभाव होय निश्चे थकी अभिन्न वस्तुज छे एटले ए अधिकरण चोथो हेतु कह्यो. ५ पांचमो स्थिती हेतु केहेतां समकीतना काळनुं प्रमाण जघन्यथकी अंतर्मुहूर्तनी स्थिती कही छे अने बंध आउखानी स्थिती आसरीने त्रण तथा चारभव सुधी समकीत रहे ए क्षाएक समकीतने आसरीने कह्युं ठे एटले एनी स्थिती उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपम झाझेरी जाणवी तथा क्षयोपसम समकीतवाळानी स्थिती ठासेठ सागरोपम झाझेरी जाणवी जघन्य अंतर्मु

हूर्त जाणवुं २ तथा उपसम समकितनी स्थिती जघन्य तथा उत्कृष्टी अंतरमुहुर्तनी जाणवी ए. टले ए स्थिती हेतु पांचमो भेद कह्यो. ५ हवे छठो भेद विधान एवे नामे त्यां निसर्ग केहेतां कोइक गुरु उपदेश विना समकित पामे छे. कोइक गुरु उपदेश थकी पामे छे तथा उपसमादिक समकीतना अनेक भेदे जीव छे ते विधान कहिए एटले हेतुविधान कह्या ६ एटले ए छए हेतु संक्षेपथी कही देखाड्या तथा बीजे प्रकारे पण समकीतनो जीवने निर्णय थाय एवा आठ भेद छे ते थकी समकीत थवानी ते कहिए छीए ॥ सत्य १ ते द्रव्यादि जीवसत्ता १ संख्याने गणवुं. २ क्षेत्र ते चलवानुं स्थानक. ३ स्पर्श ते चौदराजलोकने फरसवानुं. ४ कालमुग तथा वेहेवार. ५ अने व्यवहार काल अंतर. ६ भाव ते उपसमादिक. ७ अने अल्प बहुत ते आत्मो. ८ ए आठे प्रकारे करी जीवनो निश्चे थाय. ते हवे वेवरीने देखाडीए छैए. त्यां सामान्यपणे एवो शब्द केहेतां सत्र जीव मिथ्यादृष्टी प्रथमना छ

गुणठाणा सुधी छे एटले वेहेवारथकी व्रत नेम चारित्रीय श्रावक समकीती ते सर्व मिथ्यादृष्टी छे वेहेवार नयना पक्षथकी उत्तम कहीने बोलावीए छीए तथा सास्वादन गुणठाणाथकी उत्तम उपला गुणठाणां छे ते पुरसाकार जेनो प्रगट थयो होय तेवा जीवोने जोइ ते केवुं नरक तथा देवताउ ए चोथा गुणठाणा सुधी होय. तिर्यंच पांचमा गुणठाणा सुधी तथा मनुष्य चौदमा गुणठाणा सुधी जाणवा. ए सतजीव जाणवा. ए प्रथम भेद थयो ॥१॥ हवे संख्या कहेतां बीजो भेद कहिए छिए. ते संख्याना बे भेद छे सामान्यपणे मिथ्यादृष्टि जीव अनंताने अनंती संख्या विशेष पणे चौद गुणठाणाना जीव संख्याता जाणवा. एवुं आ टीकामांतो छे, परंतु चौद गुणठाणा ते चौदमा गुणठाणाना जीव संख्याता छे पण चौदे गुणठाणाना भेगा करता तो जीव अनंता छे माटे चौदमा गुणठाणाना संख्याता ते सत्य छे तथा पांचमा गुणठाणाथी मांडीने चौदमा गुणठाणा सुधीना जीव संख्याता छे पण चो-

ा गुणठाणाना जेगा लइए तो असंख्याना
जीव जाणवा शा माटे के उत्तम गुणठाणुं चो-
थाथी केहेवाय छे माटे उत्तम गुणठाणाना जीव
असंख्याता छे. ए वात सत्य छे ए बीजो जेद २
तथा क्षेत्रथकी संख्या बे प्रकारनी छे सामान्य-
पणे मिथ्यादृष्टी आदे देइने चौद राजलोक प्र-
माणे क्षेत्र छे अने सास्वादनादिक गुणठाणाना
जीवोनुं क्षेत्र लोकने असंख्यातमा जागे छे.
एटले ए जे मिथ्यादृष्टी जीव छे ते लो-
कव्यापी छे एटले थावरादिक जीव चौद रा-
जलोकमां व्यापीने रह्या छे अने सास्वादन गुण-
गणाना जीव ते विकलेंद्रीथी निचि गतिमां नथी
अने त्यांपण उत्पन वखत छे तेपण पृथ्वीने आ-
धारे छे अने समकीत गुणठाणाना जीव चार
गतिमां लाधे तेपण पृथ्वीने आधारे रह्या छे अने
पांचमा गुणठाणाथी जे जीव रह्या छे तेनो मनुष्य
क्षेत्रमांज लाधे छे माटे ते लोकने असंख्यातमां
भागेज होय एटले ए त्रीजो जेद कर्यो हवे स्प-
र्शनो चोथो जेद तेना बे प्रकार छे ते मध्ये मि-

थ्याती जीव सघळोए लोक फरस्यो छे अने उत्तम गुणठाणाना जीवो पोतपोतानुं स्थानक फरशीने रह्या छे ते मध्ये केवळी परमात्मा समुद्घात करे ते वखत आखो लोक पण फरसे एम ए विशेष प्रकारे जाणवो एटले ए फरसनो विचार कह्यो हवे पांचमो भेद काळ स्वरुपनो तेना बे भेद छे एक सामान्यकाळ बीजो विशेपकाळ ते मध्ये सामान्यकाळ पणे जे मिथ्या द्रष्टी जीव तेने सर्व काळ लेवो एटले अभविने तो अनादि अनंतकाळ छे अने भवी जे मिथ्याती रह्या ते कंइ सर्व जीव नो मोक्ष जवाना छेज नहि माटे तेने पण अनादि अनंत भांगा जेवुं छे माटे एने पण सर्व काळ लेवो एटले ए मिथ्याती जीवनी अपेक्षा आश्री कह्यो ते मिथ्याती जीवना काळना त्रण भेद छे ते कहुंछुं कोइक जीव तो अनादि अनंतकाळना छे १ कोई अनादि संतकाळना छे.२ केटलाएक सादी संतकाळना छे ३ मिथ्याती आश्रीने त्रण भांगा जाणवा तथा जे समकीती जीव छे ते मध्ये सास्वादन समकीतनो छआवलीना

काळ छे अथवा उपसमक्षयोपसमक्षायक ए त्रणेने गुणठाणाने आश्रीने सादी संतकाळ छे अने नव्य जीवने अनादि संतकाळ होय एटले ए काळनो पांचमो भेद कह्यो हवे आतुर नामे छठो भेद कहीए छीए आतुर केहेतां विवक्षित गुणठाणाथी अपर गुणठाणानी प्राप्ती तेनी आतुर छे ते केहेतां जे पाम्या चोथुं गुणठाणुं त्यां थकी आगळ जावानी इच्छा होय त्यांसुधी जे उपरला गुणठाणानी प्राप्ती न थाय त्यांसुधी तेने आतुरभाव कहीए तथा तेमज समकीत पाम्यानंतर कोइक जीव वमी जाय कोइक न वमे जे वमी जाय तेने अर्धपुद्गल परावर्तननुं आंतरु कहीए अथवा जे नथी वम्या ते जीव उपरलुं गुणठाणुं न पामे त्यांसुधी तेने आतुर कहीए ए आतुरनो छठो भेद कह्यो हवे सातमो भेदभाव एवे नामे छे तेना पांच भेद छे उपसम १ क्षयोपसम २ क्षायक ३ ओदयिक ४ परिणामीक ५ ते मध्ये मीथ्यादृष्टी जीवने ओदयिकभाव संपुर्ण भेद ते नामे लाधे उदीक केहेतां कर्मना फळनी प्राप्ती उदे

आवे ते उपसम तेने उदीक भाव कहीए ने मिथ्याती जीवोने वीशे एकवीशे प्रकार लाभे समकीती जीवमां कोइ लाभे कोइ न लाभे ए प्रथम भावनुं लक्षण तथा उपसम भाव प्रथम समकीत पामतां चपल जीवने होय तथा उपसम श्रेणीए होय तथा क्षायक भाव चोथा गुणठाणाथी मांडीने सीद्ध पर्यंतने होय ते नवे भेद लाभे तथा आठ लाभे तथा केवलापेक्ष आतापेन मने आठमे गुणठाणेथीज पामीए एटले क्षायकभाव कह्यो तथा क्षयोपसम भाव ते चोथा गुणठाणाथी ते समकीत आसरीने तो आठमा सुधीज पामीए, चारीत्रादीक आसरीने दशमा सुधी पामीए, ज्ञानादिक आसरीने बारमा गुणठाणा सुधी पामिये ते उपरांत क्षायकभाव पामिये तथा सासवादन गुणठाणे पण उपसम क्षयोपसम भाव कीचित् लाभे एटले क्षयोपसम भाव कह्यो तथा परणामीक भावतो आ ग्रंथ आसरीने समकीतने कह्यो छे तथा बीजां शास्त्र आसरीने सर्व जीवने परणामीक भाव होय ए-

ताव सातमो कह्यो पण ए मात्र स्वरूपने विषे
जे गुणठाणानो विचार छे ते मध्ये एक एकगु-
णठाणे उपर चमतां अध्यवसायनां थानक अ-
संख्यातां तथा अनंता अत्यंत सुक्ष्म वार्ता जे न
वात समजणमां आवे तो तेने तो कल्याणकारी
छेज अथवा समजमां न आवे तो ते वचन उ-
परीए रुची राखवी अने ते वातनी श्रद्धा करीने
सदाय तेने पण कल्याणकारी छे अहियां कोइ
कहेशे जे संजमश्रेणीमां अध्यवसायनां थानक
सर्वमांहे आवी गयां छे तेने कहीए के ए वात
ठीक पण संजमश्रेणी जे छे ते देश थकी छे
पण संपुर्ण अध्यवसायने ग्रहण करता नथी
तथा संजमश्रेणीनां जे शास्त्र तेने विशे आत्मा-
ना अध्यवसायज ग्रहण कर्या नथी एतो कर्मनां
बंध प्रकृतिना पर्यवछेद प्रमुख ग्रहण करेला छे
माटे अहियां आल अध्यवसाय कहेवाना नथी
अने आज थानकने विशे आत्म अध्यवसायने
ग्रहण कर्या छे शा माटे के अहियां तो भावनी
ग्रहणता छे द्रव्यनी ग्रहणता नथी एटले ए

मानमां भेद नाव नाम कह्यो. हवे आठमो अ-
[illegible] नाम भेद कहीए छीए त्यां मर्वथकी
[illegible] ज्ञान मामवादन ममकीतवाळा छे
[illegible] नावना छे ने थकी
[illegible] ने थकी अ-
[illegible] थकी अनंतगुण
[illegible] आत्मा वांग्र अल्प बहु-
[illegible] ज्ञाननी छेळ-
[illegible] ममज पडे
[illegible] ममकीतना हेतु छे
[illegible] गुण थाय अने
[illegible] ममकीतनि
[illegible] ते वि-
[illegible] सुक्ष्म ममजवा
[illegible] ममजवुं होय
[illegible] भेद पण थाय ज्ञा-
[illegible] भेद [illegible] ज्ञानना पण ते तथा श्रुत-
ज्ञानना [illegible] भेद ते त्यां चवद तथा
[illegible] भेद कह्या [illegible] आदीक कह्या

छे, ते तो द्रव्यथकी तथा भावथकी श्रुतज्ञानी जीवो असंख्याता छे अने असंख्याता ए श्रुतज्ञानना उपयोगने वीषे सामान्य विशेषपणुं भासन थाय छे नेथी ए श्रुतज्ञानना पण असंख्याता भेद थाय छे तथा अवधीज्ञानना पण असंख्याता भेद छे. अहियां कोइ कहेशे जे छ भेद कह्या छे ते तमे केम बोल्या नहि तेनो उत्तर जे एतो परावर्तन काळ आसरी छे अने अवधीना भेद तो जेटला आत्माना प्रदेश एटला ए भेद अवधीना जाणवा. ते अधीकार नंदीसुत्र थकी तथा ज्ञान अधीकार थकी जोइ लेजो. तथा मनपर्यवज्ञानना बे भेद छे तथा केवळज्ञान तो एकज छे एटले एक ज्ञान गुण तेना पर्याय असंख्याता कह्या तथा संख्याता पण छे तथा अनंता पण छे एटले केवळज्ञानना अनंता पर्याय कह्या छे तथा चउद गुणस्थानक ए पण चउद आत्मा कहीए ए सामान्यथकी छे अने तेज गुणस्थानकना भावने वीचारीने करीए तो अनंता आत्मा थाय तथा बासेठ मार्गणाने वा-

सेठे नेद आत्मा थाय. इत्यादीक अनेक नेद आत्म स्वनावना थाय माटे स्यात् अनेक नांगो थयो एटले जे समे एक छे तेज समे अनेक ठे अने जे समे अनेक ठे ते समे एक ठे एटले ए स्यात् एक अनेक ए त्रीजो नांगो थयो तथा स्यात् अवक्तव्य ए चोथो नांगो एटले एक ड्व्यनुं पण सर्व वक्तव्यतामां न आवे तथा अनेक जे गुण पर्याय नेद अनेक आत्मा मानीए ते पण वक्तव्यतामां जे न आवे तेने अवक्तव्य कहीए ॥

॥ उक्तंच ॥

अनीलप्पा जे नावा अणंतनागोय अणनिलप्पाणं अनिलप्पाणंतो नागमुयनिबद्धोय ॥१॥

अर्थ–एटले अनीलाप एटले मुखथकी जे उच्चारण करवुं ते अक्षरनो सन्नीपात कहेतां संजोगीनाव ग्रहण करीए, ते असंख्याता अक्षर सन्नीपातने ग्रहेवाय एवा जे पदार्थादीकना नाव ते अनंतगुण छे तेनो वक्तव्य स्वनाव कहेवाय. ते थकी अवक्तव्य स्वनाव अनंतगुणो ठे श्रा

माटे जे मतीज्ञान तथा श्रुतज्ञाननुं अभिलाप कहेतां जे भासन करवुं ते तो परोक्ष प्रमाण ग्राहक छे तथा अवधिज्ञान पुद्गळने वीशे प्रत्यक्ष प्रमाण छे एटले पुद्गळ परमाणु प्रत्यक्षपणे ए जाणे तेपण परमाणुना सर्व पर्यायने जाणे नहि ने केटलाएक पर्याय जाणे ते पण असंख्याते काळे जाणवामां आवे अने केवळज्ञान तो छए द्रव्यना सर्व पर्यायने एके समे जाणे ए प्रत्यक्ष ज्ञान माटे ए द्रव्यमां वक्तव्यपणुं पण छे तो श्रुतज्ञानथकी ग्रहण थाय छे अने ए थकीज ग्रंथ तथा उपदेश सर्व थाय छे ए सर्वे कामसीद्धी छे ते कारण माटे वक्तव्यभाव पण सीद्ध छे तथा अवक्तव्यभाव पण सीद्ध छे. अहियां कोइ कहेशे जे अवक्तव्यभाव जोवामां नथी आवतो ते केम मनाय? तेनो उत्तर जे अवक्तव्यभावने नहि माने तो अतीत पर्याय तथा अनागत पर्याय जुदा पडे शा माटे जे वस्तुमां कारणता परंपराए रही छे वस्तुमां छती पर्याय छे पण सामर्थ्य पर्याय छे नहि तेथी जोवामां

आवे नहि माटे जेवारे अतीत पर्यायने अनागत पर्याय मानीए तो वर्तमान वस्तु नीराधार थइ जाय तेवारे कुटस्तपणु आवे अने वस्तुधर्म ने विशे अनंता कारण रह्यां छे तथा अनंता धर्म पण रह्या छे माटे अतीत अनागत पर्याय अवश्ये मानवा जोइए. ए सर्व जोग त्यां रह्या छे अहियां एक दृष्टांत कहीए छिये जेम कोइ जीव जन्म पाम्यो तेने वर्तमानकाळे बाळ अवस्था छे, तेथी एनो पुरुषाकार अवक्तव्य नाव छे, ते अनागतकाळे एनो पुरुषाकार प्रगट थशे ते वात हाल वर्तमानमां कंइ दीसती नथी माटे एने न मानवो तो ए हाल वर्तमानमां अवक्तव्यनाव दीठामां आवे छे तथा अतितकाळे एनो पुरुषाकार हतो ते पण अहियां दीठामां आवतो नथी अने एने पुर्वे शुनाशुन कर्म कर्यां ते पुरुषाकारपणामां कर्यां छे अने ते कर्म अहियां शुनाशुन वेदे छे ते तो प्रत्यक्ष वक्तव्यनाव छे अने अतीत पुरुषाकार ते अवक्तव्य छे माटे ते वस्तु नहि मानीए तो ए शुनाशुन शा वडे वेदे छे

तेनो स्वामी खोळी लावो. माटे अवक्तव्यभाव ठे ते सत्य ठे हवे एनो उपनय जोमाए ठेए. जेम ए बाळक तेम अहियां द्रव्य अने तेना जे पर्याय. जेम ते बाळक मोटो थाय तेम बाळभावनो नाश तरुणभावनी उत्पत्ति तेम अहियां द्रव्यने विशे पूर्व पर्यायनो नाश ने नवी पर्यायनी उत्पत्ति एटले अतीत अनागतना पर्याय तेज केटलाएक वक्तव्य कटलाएक अवक्तव्य भावे ठेज, एम मानवुं जोइए. अने जो वक्तव्य अवक्तव्य भाव नहि मानो तो शुं देखीता भावने मानशो तो नास्तीकपणु आवशे, माटे अवक्तव्य भांगो चोथो ते सत्य ठे. तथा एक अवक्तव्य ए पांचमो भांगो तथा अनेक अवक्तव्य ए ठठो भांगो तथा एकअनेक जुगपत अवक्तव्य ए सातमो भांगो एनो अर्थ पुर्वना संबंधमांथी समजी लेजो. एटले एक अनेकनी सप्तभंगी कही॥ हवे चोथी सप्तभंगी सत्य असत्यनी कहु छुं॥ स्यात् सत्य १, स्यात असत्य २, स्यात् सत्यअसत्य ३, स्यात् अवक्तव्य ४, स्यात् सत्य अवक्तव्य ५,

स्यात् असत्य अवक्तव्य ६, स्यात् सत्य असत्य जुगपत अवक्तव्य ७ ॥ ते मध्ये स्यात् सत्य केहेतां जे जीव द्रव्य चेतना लक्षणरुप अनंत चतुष्टीए करी सहित सर्व जीव सत्य छे कोण संसारी तथा सिद्ध सर्व जीव सत्य छे ते हवे द्रव्यक्षेत्र काळ भावे करीने उळखावुं छुं ॥ हवे जीव द्रव्य केहेतां एक द्रव्य छे ते केवो छे, निरमळ छे जेवुं फटक रतन निर्मळ तेवो ए जीव द्रव्य निर्मळ छे एने विशे कोइपण बीजा द्रव्यनो प्रवेश नथी ए द्रव्य एकज छे, एनो भेद बीजो थाय नहि १ क्षेत्र थकी जीव द्रव्यना असंख्याता प्रदेश छे ते क्षेत्र रुप अवगाही छे जीव द्रव्य रह्यो छे ते एकत्व भावे छे २ तथा काळ थकी जीव अनादि अनंत छे एटले जीव द्रव्यनी आधपण नथी अने अंत पण नथी ए सदाय काळ छे छेने छे ३ भाव थकी अस्तित्वादिक अनेक स्वभावे करीने सहित छे तथा ज्ञानादिक अनंत गुणे करी सहित छे ४ ए चारे लक्षणे करीने सदाए काळ शोभित रहेछे ते जीव द्रव्य सत्य छे

एरखे स्यात् सत्य पेहेलो नांगो कह्यो हवे स्यात् असत्य बीजो नांगो देखामीए बीए हवे ते प्र- जाय बे प्रकारना बे एक स्वनाविक बीजा क्रम- नावि क्रमनावि ते नरकादिक चारे गतिने विषे शरीरादिक जोग मेळववां ते सर्वे क्रमनावि प्र- जाय बे ते जीवे अदियां ग्रहण करयां बे शामाटे जे पुर्व वंधना उदय माफक तथा विषयकसाय प्रमुख ए सर्वे पुर्व माफक अहियां कोइ केहे- शे जे तमे स्वग्राहीनी वात करी हती अा पुद् गल ग्रहण केम करो गे तेनो उत्तर जे अहि- यां पुद्गल द्रव्यनुं ग्रहण पणुं नथी अहियां तो जीवनुं ग्रहण बे ते कहुं ते सांनळो जे जीव अशुद्ध प्रणतीने वश थया थकां कर्म दळ मेळ- व्यां ते कर्मदळ चार प्रकारे वंधाणां अने आठ विनागे वेंचाणां ते दळ उदे आवे तेवा जोग तेवा कषाय प्रमुखने विशे प्रवर्त्त माटे एनो कर्त्ता जीवज बे माटे एने स्वग्राही कहीए पण ए सर्वे असत्य बे शामाटे जे ए पुद्गल दळ पोतानां अज्ञानपणेथी पोतानुं मानीने बेठा बे परंतु ए

वस्तु तो पर छे माटे ए क्षणनाशी पर्याय असत्य जाणवां तथा जे राग द्वेष ते अशुद्ध परणती कहीए तेना पर्याय अनंता छे ते समे समे उत्पातने व्यय थइ ग्या छे माटे असत्यज छे अहियां कोइ केहशे के परणति पोतानी छे ते वात खरी छे पण ए परणति तो पोतानी पण ते परणतीना बे भेद छे एक शुद्ध ने बीजी अशुद्ध ते अशुद्ध परणतिने काढ्या विना शुद्ध परणती थाय नहि. जेम इक्षुना सांठो प्रथम स्वादे रस होय अने स्वादे रस फरे ने ज्यारे मधुर रस थाय त्यारे ए इक्षु मान पामे तेम ज आत्माने रागद्वेष वळग्या तथी ए परणति अशुद्ध थइ ते अशुद्धता ज्यारे जाय त्यारे आत्मा शुद्ध थाय. अने परमात्माना मतामां समता पामे माटे ए अशुद्धपणुं तपण कंइ आत्माना वस्तु नथी तेथी अंते पण ए छोडवानुंज छे माटे एने छोडेज आत्मा सुखी थाय. ते कारण माटे ए अशुद्ध परणती ते पण ए असत्यज छे. माटे पण अमारो केहवानो आशय अहियां एवो छे जे ए अशुद्ध परणती

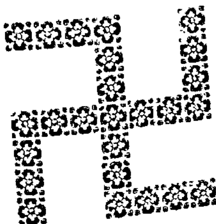
थकी ए चेतनना पर्यायनुं उगाण अनंतु
ज छे ते उगाणरूप जे ए पर्याय ने तेने विशे
व्यवहार समे समे थाय छे तेथी ए सत्यज वे के
मके सत्य पदार्थनो कोइ काळे नाश थाय नहि
जे नाश थाय ए असत्य पदार्थनो थाय, माटे ए
अशुद्ध प्रणतीना पर्याय ते पण असत्यज वे ए-
टले ए परवस्तुना ग्रहणपणाना पर्यायनुं असत्य-
पणुं देखाड्युं. हवे स्वभाविक पर्याय कहेनां जे
स्ववस्तुना पर्याय तेना ग्रहणनुं स्वरुप देखाडुं छुं
हवे जे आत्माद्रव्य तेना अनंत गुण वे अने
एकेक गुणना अनंत पर्याय छे ते पर्याय ते अ-
गुरु लघु कहीए कोइ कहेशे जे सर्व गुण अने
सर्व पर्याय थइने एक अगुरु लघु पर्याय कह्यो
वो तेनो उत्तर जे ज्ञानादिकना पर्याय ग्रहण
आश्री पुर्वनी सप्तभंगीमां कह्योछे तेथी अहियां
अगुरु लघु पर्याय एक कहीए वे पण ते अगुरु
लघु प्रजाय ते सर्व गुणामां तथा सर्व प्रजायमां
ए रह्यो वे, अने आत्मानो स्वभावि प्रजाय ते
अगुरुलघुज वे अने ए अगुरुलघुनो अर्थ क-

[illegible] अगुरुलघु
[illegible] आ माटे कु ए
[illegible] समयमात्र आत्मा-
[illegible] आमाना स ठाव छे.
[illegible] ह्य ज अमत्य छे
[illegible] यथा तथा ज प्रजाय
[illegible] कहेता नथी.
[illegible] अगुरु लघु
[illegible] पण स-
[illegible] अनंता छे ते प्र-
[illegible] अवस्थान विषे समये
[illegible] सर्व स्थापेक्षा-
[illegible] ज्ञानना जाणवा
[illegible] छे ते पण स-
[illegible] छे अने ते
[illegible] स्थापेक्षा छे एम
[illegible] विचार कहुं छुं जे प्र-
[illegible] अनंत नाग हाणी हती सूक्ष्म
[illegible] अनंतमा नाग हिण हतो तेज १ बीजा

समयने विषे असंख्यातमे भागे हिण थइ गयो २ त्यारे पूर्वपर्यायनो नाश थयो ने नवा पर्यायनी उत्पत्ति थइ ए प्रमाणे सर्व जागामा समजी लेजो. हवे जे बीज समये असंख्यामे भागे हिण हतो तेज त्रीजे समये संख्यातमे भागे हिण थइ गयो. ३ तेज चोथे समये संख्यात गुणहिण थयो ४ ते पांचमे समये असंख्यातगुणो हिण थयो. ५ अने छठ्ठे समये अनंतगुणो हिण थयो. ६ ए छए बोल हाणी आश्रीने कह्या. हवे वृद्धिना छए बोल कहुं छुं. ने मध्ये जे मूळ पर्याय हता तेथी पहेला समये अनंतमे भागे वृद्धिने पाम्या. १ अने बीजे समये असंख्यात भाग वृद्धि थइ. २ त्रीजे समये संख्यात भाग थइ ३ चोथे समये संख्यातगुणी वृद्धि थइ ४ पांचमे समये असंख्यातगुणी वृद्धि थइ. ५ अने छठे समये अनंतगुणी वृद्धि थइ. ६ एरीते ए छए बोल वृद्धिना कह्या. ए हाणी वृद्धि मळीने बार बोल अगुरुलघु पर्याय कहीए. हवे बार बोल जे कह्या छे ते आकाशनी रीते साधारण पणे कह्या

वचों कोइ समये श्रोतां एम हाणिवृद्धिनां कारणथकी असत्य कहीए छीए पण जे समये ए सत्य छे ते समये असत्य पण छे अने जे समये असत्य छे ते समये सत्य छे. माटे ए त्रीजो नांगो स्यात् सत्य असत्य. ३ हवे चोथो नांगो स्यात् अवक्तव्य ते सत्य असत्य पदार्थना अनंता गुण अनंता पर्याय ते सर्व कंइ उच्चारणमां आवे नहि माटे जे उच्चारणमां आवे ते वक्तव्य नावमां छे जे उच्चारणमां न आवे ते अवक्तव्य नाव छे एटले स्यात् अवक्तव्य नांगो चोथो कह्यो ४. हवे पांचमो नांगो स्यात् सत्य अवक्तव्य एटले सत्य जे ड्रव्यादिक तेना अनंता सन्निपात प्रमुख प्रकार छे ते कंइ उच्चारणमां आवे नहि. माटे स्यात् सत्य अवक्तव्य पांचमो नांगो थयो. ५ तथा स्यात् असत्य अवक्तव्य छठो नांगो कहीए छीए एटले असत्य जे पर्यायादिक अनंता छे. तेना विनाग पण अनंता छे तेना प्रकार सन्निपात ते पण अनंता थाय ते कंइ उच्चारणमां आवता नथी तेथी स्यात् असत्य अ-

वात सत्य ठे पण कंइ कोइने देखाडवानी नथी एनो साक्षी तो अनुभवीए अनुभवी ठे. माटे एवी रीते समजीने स्याद्वाद धर्मनो खप करजो एथी तमारा आत्मानुं कल्याण ठे ए मारो हित उपदेश ठे एटले ए ग्रंथ संपूर्ण थयो ॥



॥ इति श्री ज्ञानभूषण ग्रंथ संपूर्णम् ॥

वहुश्रुतने चरणे रही, अहोनिश करजो जप ॥९॥
गुण घणा ए ग्रंथना, कह्या मुखशूं न जाय;
कोइक वीरला जाणशे,जेणेसेव्या ज्ञानीपाय॥१०॥
केवली पण एक जीभथी, कोमपुरवनुं आय;
केहेतां पार आवे नहि, नाव ग्रंथ उपाय ॥११॥
छद्मस्थतो केम करी, कही न शके निरधार;
गुण अनंता ग्रंथना, केहेतां न आवे पार॥१२॥
केहेवुं तो अल्पुं रह्युं, पण समजवुं दुर्लभ;
क्षयोपसम खरो लागतां,विरला अर्थ ने लभ्य॥१३॥
ते कारण भव प्राणीउं, मानजो ए उपदेश;
स्वर्गअपवर्गनोखपहोये,समजजोग्रंथनोरेश॥१४॥
बाजडछिने नवि रुचे, तेम अज्ञानी जाण;
अन्नविनेपणनवरुचे,तेममिथ्यात्वीचित्तआण॥१५॥
आजीविकाअर्थीजीवमां, चतुर मा हम्माउ;
तेने पण रुचे नहीं, तेम मान पुजाविचार॥१६॥
सम्यक्दृष्टी जीवना, तेने रुचशे एह;
ग्रंथ हाथथी छोडे नही, जाणी गुणनो गेह॥१७॥
तेम सुखन चोधी जीव, अथवा नुसंगतीः
तेम ज्ञान खरी रही, ते पामे सांचा रती ॥१८॥

एम ए ग्रंथने जाणीने, करजो मंथ अभ्यास
आपमते नवि चालजो, धारजो बहुश्रुत पास ॥
ज्ञानने आत्म स्वरुप जे, तेने दीपावनहार;
ज्ञानभूषण ते जाणीए, नाम भव्युं मनोहार ॥
मुनी हुकम रचना करी, भव्यजीवने काज;
जे समजीने आदरे, ते पामे शीवराज ॥
संवत ओगणीसेचालीसमां, उत्तम श्रावणमास
शुक्रपक्ष तृतिय तिथी, वार भ्रगु ए खास ॥
हुकम मुनीनो मानजो, माथे चडावजो आ
भवभ्रमण मटी जशे, एवो ग्रंथ विजाण ॥
सुरतशेहेर सोहामणुं, सुंदर श्रावक वास;
श्रोता अध्यात्मतणा, माहारी पासे खास ॥
तेहतणे आग्रहे करी, रह्या अहियां चोमास;
ग्रंथ अहियां पुरण कर्यो, प्रगट ज्ञाननी रास ॥
ए ग्रंथ जे भणशे सही, सांभळशे धरी हेत;
शुभभाव ते पामशे, शुद्धपणुं पण चेत ॥
शुद्धभाव निज स्वरुपमां, ते ए ग्रंथ मोजार;
मुनी हुकम ते पामशे, ग्रंथथकी नीरधार ॥
माटे मंथ अभ्यास करो, भोमशो नहि क्षणएक

प्रमादत्नावन दुर करी, ग्रंथ रमणनी टेक ॥२७॥
एह ग्रंथ अत्यासथी, पामे स्वर्गनां सुख;
सद्दहणा जो एवी रहे, तो जाए नवदुख ॥२८॥
एहनुं फल ते स्वर्ग छे, अने शुजपण ए केहेवाय;
तेविना जे चाखवुं, ते अनोपमो अधमाय ॥३०॥
शुक्लध्यान पण एह छे, ज्ञान पण उत्तम एह;
उत्तम चारीत्र एहछे, एम समजो गुणगेह ॥३१॥
फल एहनुं जाणीए, पामे शीव स्वरुप;
अनंत सुख ते नोगवे, जेनुं रुप अनुप ॥३२॥
पुनर्पी जन्म लेवे नही, गयो रोगने दोप;
आधिव्याधी होवे नही, हुवो गुणनो पोप ॥३३॥
सुख अनंत आतमतणुं, अव्यावाध स्वरुप;
सादी अनंत नांगे करी, नोगवतां तद्रुप ॥३४॥
एम जाणी तमे सेवजो, ग्रंथ ए सुखकार;
मुनी हुकम पद पामशो, शीवसुंदरी जरथार ॥३५॥

॥ इति श्री ज्ञानजूपण ग्रंथ समाप्त ॥